भूमिका।

एक विख्यात कवि का कहना है—

यूनान, मिश्र, रोमा सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

इस पद्यांश से कवि क्या कहना चाहता था, नहीं मालूम। इस पर भी जो कुछ इससे समझ में आता है वह एक अति गम्भीर सत्य है। न यूनान मिटा है, न मिश्र। रोम भी ज्यों का त्यों अभी बना है। इन देशों में मनुष्य अभी भी रहते हैं और अपने को यूनान आदि देशों का रहने वाला मानते हैं। उनमें अभी भी अपने देशों के लिए भक्ति और प्रेम की भावना विद्यमान् है। तो उक्त वाक्य के यदि शाब्दिक अर्थ लिए जायें तो पद्यांश निरर्थक-सा प्रतीत होता है। इस पर भी कवि के उक्त कथन में तथ्य है।

यूनान, मिश्र और रोम ये प्राचीन काल में महान् राष्ट्र थे। इन देश वालों ने भारी समर विजय किये थे और अपने देश की मान-मर्यादा, इसका प्रभुत्व और इसका दबदबा बहुत विस्तृत किया था। केवल यही नहीं, प्रत्युत इन देशों के रहने वालों ने अपनी सभ्यता और आचार-विचार का प्रचार और विस्तार किया था। ये देश अभी भूतल पर हैं। इनमें मनुष्यों का भी वास है, परन्तु वे विचार और सिद्धान्त नहीं रहे जिनको ये देश वासी मानते थे।

इसके विपरीत भारतवर्ष की बात इससे सर्वथा भिन्न है। भारत के रहने वाले भी अपनी एक सभ्यता रखते थे। इनकी भी एक संस्कृति थी। ये अपनी संस्कृति और सभ्यता की प्रेरणा वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों और वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि कथा-सागरों से ले रहे हैं। भारत विजित हुआ। विदेशियों ने इसपर आक्रमण पर आक्

मण किये और यहाँ के लोगों की स्फूर्ति के स्रोतों पर कुठाराघात करने का यत्न किया। उस विचार और आचार के लोगों ने, जिन्होंने मिश्र, यूनान तथा अफ्रीका के उत्तरी किनारे के साथ-साथ के सब देशों को पददलित कर वहाँ के आचार-व्यवहार को मलियामेट कर दिया था, भारत पर भी आक्रमण किया। यहाँ सात सौ वर्ष तक राज्य भी किया और कोई उपाय नहीं छोड़ा जिससे यहाँ के रहने वालों का आचार-विचार वैसा ही न बन जाये जैसा कि यूनान, मिश्र और ईरान इत्यादि देशों के विजित होने पर बन गया था। परन्तु वह प्रेरणा और स्फूर्ति जो भारत के रहने वाले लोगों को वेदों, पुराणों, उपनिषदों और प्राचीन साहित्यों और कथाओं से मिलती थी, अभी भी स्थिर है। आज भी ऐसे लोग विद्यमान् हैं जो वेदों को निर्भ्रान्त मानते हैं। रामायण और महाभारत में लिखी श्रेष्ठ बातों को श्रद्धा, भक्ति और आदर से देखते हैं और उन पर आचरण करने का यत्न करते हैं।

इससे कवि का कहना कि यूनान इत्यादि जहान से मिट गए हैं पर हम अभी भी अपना नाम और निशान रखते हैं, सोलह आने सत्य है। एक विशेष विचारधारा है, जिसके अनुसार भारत की पूर्ण श्रेष्ठ जनता अपना आचरण बनाने में यत्नशील रहती है और वह विचारधारा वैदिक काल से आज तक अटूट चली आ रही है। इससे कवि के यह कहने का अभिप्राय कि 'हस्ती मिटती नहीं हमारी', मनुष्यों की हस्ती से नहीं, प्रत्युत भारत की भारतीयता से है।

जातियों का अस्तित्व भौगोलिक सीमाओं से नहीं बनता। यह विचार कि हिमालय से हिन्दमहासागर तक रहने वाले भारतीय हैं और इनका परस्पर गठबन्धन रहना ही चाहिये, इतिहास से और युक्ति से ममूलक सिद्ध हुआ है। यह न कभी रहा है और न रहेगा। इंग्लि-न, जर्मनी, फ्रांस इत्यादि छोटे-छोटे देशों में कभी यह विचार कि एक देश में रहने मात्र से एक हैं, कुछ काल के लिए चल सकता है न्तु भारत जैसे विशाल देशों और साम्राज्यों में लोग केवल मात्र

भौगोलिक बन्धनों से बंध नहीं सकते। लोगों को बांधकर रखने के लिए तोप, बन्दूक अथवा अन्य शस्त्रास्त्र भी सफल नहीं होते। यदि विशाल देशों में लोग एक बन्धन में बँध सकते हैं तो वह अपने आचार-विचार और व्यवहार के नाते ही बँध सकते हैं। इसको सांस्कृतिक ऐक्य अथवा सांस्कृतिक गठबन्धन कहना चाहिए।

भारतवर्ष में संस्कृति वैदिक काल से अटूट चली आती है। नाम बदले, राज्य बदले और प्रजा भी बदली परन्तु संस्कृति ज्यूं की त्यूं चली आरही है। वैदिक काल में देश ब्रह्मावर्त नाम वाला था, पश्चात् आर्यावर्त हुआ। इसके पीछे भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, अन्त में इंडिया बना। इसी प्रकार सूर्यवंशी राजा हुए, चन्द्रवंशी राजा हुए। हूण, सीदियन, मुसलमान इत्यादि आक्रमणकारी आये और या तो वापिस लौट गए अथवा इसी भारतीय सागर में भारतीय हो गए। जो वस्तु स्थिर रही, वह वैदिक, भारतीय अथवा हिन्दू संस्कृति है। ऐसा क्यों सम्भव हुआ? जब दूसरी संस्कृतियां काल का ग्रास बन गईं तो यह क्यों नहीं बनी?

यह कोई चमत्कार नहीं है। न ही इसमें कोई अनहोनी बात है। इसमें भारतीय संस्कृति की विशेषता ही केवल कारण है। यह संस्कृति परमात्मा के विश्वास पर, कर्मफल मीमांसा पर, पुनर्जन्म सिद्धान्त पर अवलम्बित होने से सर्वश्रेष्ठ है ही, साथ ही राम, कृष्ण और अनेकानेक अन्य महाजनों के पावन चरित्रों से प्रेरणा प्राप्त कर भारतीयों को सत्य मार्ग पर आरूढ़ करने में सफल होती है।

ऐसी संस्कृति के एक निम्न प्रकार की संस्कृति से, एक छोटे से पारिवारिक क्षेत्र में संघर्ष की यह कथा लिख दी गई है। सब पात्र काल्पनिक हैं और यह उपन्यास है। सत्य है तो केवल विचारधाराओं में संघर्ष। एक ओर वे लोग हैं जो अपने प्रत्येक कर्म के फल की प्राप्ति को अनिवार्य मानते हैं। इस कारण प्रत्येक कार्य में अपने व्यवहार को ऐसा बनाने में लगे रहते हैं जैसा कि वे चाहते हैं कि लोग उनसे व्यवहार करें। दूसरी ओर वे हैं, जो यह मानते हैं कि वर्तमान जीवन में ही सब कुछ है

इससे पूर्व और पश्चात् कुछ नहीं। इस प्रकार वे अपना जीवन अपने सुख और आनन्द के हेतु व्यतीत करते हैं। किसी दूसरे प्रकार से यदि वे कभी सद्व्यवहार करते हैं तो अपने ही हित की कामना से अथवा विवश होकर। एक भारतीय हैं, दूसरे अभारतीय।

—गुरुदत्त

प्रवंचना

भूमि

पंजाब यूनिवर्सिटी सिनेट हाल के बाहर विद्यार्थियों की भीड़ लगी थी। लड़के एक-दूसरे के कन्धे पर चढ़-चढ़कर एक लकड़ी के बोर्ड पर चिपकाये हुए पर्चे को देख रहे थे। इस पर पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिक परीक्षा का फल लिखा हुआ था।

लड़कों की भीड़ में एक सुकुमार लड़का जो तेरह-चौदह वर्ष से अधिक आयु का प्रतीत नहीं होता था, आगे जाकर अपना फल देखना चाहता था परन्तु दूसरे लड़के, जो उससे आयु में बड़े और शरीर में बलिष्ठ थे, उसको आगे जाने नहीं देते थे।

बालक प्रेमनाथ कई बार आगे जाने का यत्न कर चुका था परन्तु प्रत्येक बार पीछे धकेल दिया गया था। वे लड़के, जिनका नाम उत्तीर्ण लड़कों में होता था, कूदते-फांदते निकलते थे और जिनका नाम उस बोर्ड पर लगी सूची में नहीं होता था, मुंह लटकाये निकलकर चुपचाप चले जाते थे। कई लड़के ऐसे थे, जो देखने के लिये बार-बार भीड़ में घुसते थे, देखते थे, और बाहर आकर अनुत्तीर्ण होने वालों पर हंसी करते थे।

प्रातः सात बजे का आया हुआ प्रेमनाथ मध्याह्न के ग्यारह बजे तक अपना नाम सूची में देखने में असफल हो हताश एक ओर खड़ा था। एक-दो ने उसको आकर कहा भी था कि वह उत्तीर्ण हो गया है पर वह अपनी आंखों से देखकर विश्वास करना चाहता था।

ग्यारह बजे के लगभग भीड़ कम हुई और वह बोर्ड के समीप पहुंचने में सफल हुआ। वहां अपना रोलनम्बर, नाम और प्राप्त अंक पढ़कर उसके चित्त को शान्ति हुई और घर की ओर चल पड़ा।

उसका घर शाहदरे में था। शाहदरा लाहौर से पांच मील के अन्तर पर एक छोटा-सा गांव है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने से उसका चित्त

हल्का और प्रसन्न था। चिरकाल से लदा बोझ मन से उतर गया प्रतीत हो रहा था। इस हल्के चित्त से चलते हुए उसकी, अपने होश सम्भालने से लेकर, जीवन-स्मृतियाँ जीवित हो उसके सन्मुख आने लगीं।

वह चार वर्ष का बालक था। यह उसकी पहली स्मृति थी। वह अपनी छोटी बहिन इन्द्रा के साथ अपने मामा की दुकान पर बैठा सरसों के तेल में बने 'अन्दरसे' खा रहा था। मामा ने उनको ये खाने को दिये थे और बहुत शोकग्रस्त मुख से उनकी ओर देख रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि कुछ बात हुई है जो उसके मामा को रुचिकर प्रतीत नहीं हुई।

उसका मामा शाहदरे में हलवाई की दुकान करता था। तेल की पूरी और तेल की मिठाई देहातियों के लिए बनती थी और बिकती थी। प्रेमनाथ और उसकी माँ पहले भी शाहदरा, मामा के यहाँ आया करते थे और उनके आने पर मामा का मुख खिल जाया करता था। परन्तु उस दिन, यह स्मृति १६०५ की थी, वह अपनी माँ और बहिन के साथ आया था। पहले की भाँति मामा ने उसको दुकान पर रखी चौकी पर बिठाया और चावल के आटे और गुड़ के तेल में तले अन्दरसे खाने को देकर गम्भीर हो उसके मुख पर देखने लगा था। उसकी माँ दुकान के ऊपर मामी के पास चली गई थी।

मामा को शोकग्रस्त देख प्रेमनाथ को कुछ ऐसा लगा था कि उस दिन उनका पहले से कुछ भिन्न प्रकार का स्वागत हो रहा है। इससे उसको उस दिन की बात आज भी याद थी। उसने पूछा था, "मामा! तुम क्या देख रहे हो, क्या हो गया है?"

मामा ने केवल यह कहा था, "अब तुम लोग वापिस लाहौर नहीं जाओगे।"

"क्यों?" प्रेमनाथ का प्रश्न था।

"भगवान् की ऐसी ही इच्छा है।"

प्रेमनाथ के मस्तिष्क में यह बात सर्वथा स्पष्ट अंकित थी कि व

इस पर रो पड़ा था। इससे उसके मामा ने उसको गोदी में बिठाकर अपने मैले, तेल लगे कुर्ते से उसकी आंखें पोंछकर कहा था, "प्रेम बेटा! रोओ नहीं। जिस भगवान ने ऐसा विधान किया है कि तुम लोग शाहदरे में रहो उसने कुछ और भी प्रबन्ध किया होगा। वह बेमतलब और बिना विचारे कोई बात नहीं करता। अच्छा, देखो एक अन्दरसा और लोगे?"

प्रेमनाथ को धुंधली-सी स्मृति उस घर की भी थी जिसमें वे शाहदरा आने से पहले रहा करते थे। एक बड़ा विशाल मकान था। उसमें कई कमरे थे। प्रेमनाथ और इन्द्रा घर वालों से पृथक एक कमरे में सोया करते थे। रात मां उनको सुला जाती थी और प्रातः उनके जागने से पूर्व उनके पास आती और सिर पर प्यार दे, मुख चूम अथवा कभी गुदगुदी कर जगाया करती थी। बड़े-छोटे बहुत-से लोग घर में और भी रहते थे। किसी को वह बाबा कहा करता था, किसी को काका। कोई अम्मां थी और कोई चाची। अपनी मां को जो उन सब से अधिक स्नेह रखती थी, केवल मां कहकर पुकारा करता था।

यह मकान दो छत का था। मकान के सामने कुछ थोड़ा-सा स्थान खाली था जिसमें घास लगा था और फूलों के गमले और क्यारियां थीं। वह कई बार उन फूलों पर उड़ती रंग-रंग के पंखों वाली तितलियों को पकड़ने का यत्न किया करता था। कभी पकड़ पाता तो मां डांट कर छुड़ा देती थी। इससे छोड़ने की इच्छा न रहते हुए भी छोड़ दिया करता था।

घर में और बच्चे भी थे परन्तु वे प्रायः इससे खेलना पसन्द नहीं करते थे। इस कारण वह अपनी बहिन इन्द्रा से ही खेल सकता था। घर में एक वृद्ध व्यक्ति भी थे। उनकी लम्बी दाढ़ी और मूंछें उसको स्मरण थीं। वह वृद्ध अपनी दाढ़ी को खुजलाने का बहुत शौकीन था। और बात करते समय दाढ़ी खुजलाते हुए प्रायः कहा करता था, 'देखो न। मैं कहता हूं।'

इस पर प्रेमनाथ को हँसी भी आती परन्तु उससे सब घर वाले और विशेष रूप में उसकी माता घूंघट करती थी और डरती थी। इस कारण मन में उसकी, 'देखो न, मैं कहता हूं।' पर हँसता हुआ भी वह प्रत्यक्ष में कभी नहीं हँसता था।

एकाएक यह चित्र विलीन होगया, वह अपनी माता और बहन के साथ शाहदरा के छोटे से और गन्दे गाँव में आकर रहने लगा। शाहदरा में एक प्राइमरी स्कूल था। उसमें उसको भरती करवा दिया गया। लड़कियों का कोई स्कल नहीं था। इस कारण इन्द्रा घर पर ही मां से पढ़ने लगी।

जीवन एक साथ चलता गया और कोई ऐसी घटना नहीं घटी जो उसके मस्तिष्क पर किसी प्रकार का विशेष प्रभाव छोड़ सकी हो। हाँ, शाहदरा गांव के समीप ही एक विशाल इमारत थी जिसमें बड़े-बड़े लम्बे-चौड़े घास के मैदान थे, फूलों की क्यारियाँ थीं और संगमरमर के एक विशाल चबूतरे पर लाल पत्थर की चौकोर इमारत थी। इस इमारत के चार कोनों पर चार मीनार थे और उन पर चढ़ने को सीढ़ियाँ बनी थीं। यह जहाँगीर का मकबरा था। कभी-कभी उनकी मां उसको, इन्द्रा को और उसके मामा के लड़के ज्योति को वहां ले जाया करती थी और खेलने का बहुत ही सुखप्रद अवसर मिलता था।

अगली घटना जो उसको स्मरण थी वह पांचवीं श्रेणी की पढ़ाई समाप्त कर स्कूल में सबसे अधिक अंक लेकर पास करना था। इन्द्रा जो उससे दो वर्ष छोटी थी वह हिन्दी की पांचवीं पुस्तक घर पर ही पढ़ती थी। गणित उसके बराबर जानती थी और भूगोल यद्यपि पढ़ती नहीं थी पर मुख्य-मुख्य बातें उतनी ही जानती थी जितनी प्रेमनाथ जानता था।

वह स्कूल से जब पांचवीं कक्षा का परीक्षाफल सुन घर आया और उसने जब मां को बताया कि वह स्कूल में प्रथम रहा है और स्कूल कमेटी की ओर से उसको छठी श्रेणी में पढ़ने के लिये पांच रुपया वजीफ़ा

मिलेगा, तो प्रसन्नता से फलने के स्थान मां उसको गले लगा फूट-फूट कर रोने लगी थी।

इन दिनों वे मामा के घर के साथ वाले मकान में रहते थे : दो रुपये मासिक उसका भाड़ा देते थे। इस मकान में दो कमरे और रसोई थी : मकान बहुत छोटा और अंधेरा था पर इसका उनको अधिक कष्ट नहीं था। वे प्रायः मकान के बाहर ही खेलते रहते थे।

मां को रोते देख प्रेमनाथ को बहुत ही विस्मय हुआ था परन्तु मां के इस कहने पर विस्मय मिट गया था, "यहां तो स्कूल है ही नहीं, पढ़ोगे कैसे और वज़ीफ़ा कैसे लोगे ?"

"तो मां मैं लाहौर जाकर पढूंगा।"

"वहां रहोगे कहां ?"

"एक मकान था न वहां। बहुत बड़ा था। तो उसमें चलकर रहेंगे।"

"वह मकान अब नहीं है।"

"क्या हुआ है उसको ?"

"छिन गया है बेटा।"

"किस ने छीना है ?"

"भगवान ने।"

'यह भगवान कौन है ? उसने क्यों छीना है मकान हमारा ?"

"वह मकान तुम्हारा था, यह किसने बताया है तुमको ?"

"प्रेमनाथ इस प्रश्न का उत्तर सोचने के लिए गम्भीर विचार में पड़ गया। वह उसमें रहता था, मां ने माना है। क्यों रहता था और फिर किसने वह उनसे छीन लिया है ? इस समय उसको बूढ़े, श्वेत दाढ़ी-मूंछ वाले, आदमी की बात याद आई, जो कहा करता था, 'देखो न, मैं कहता हूं।' इस बात के स्मरण आते ही उसने मां से पूछा, "मां, एक थे न, बहुत बूढ़े। सफेद दाढ़ी वाले। मूंछें लम्बी-लम्बी थीं क्या वही भगवान् थे ?"

मां की आंसुओं में मुस्कराहट निकल आई। उसने कहा, "बेटा, नहीं, वह भगवान नहीं था। वह तो भगवान का बन्दा था। परन्तु अब वह नहीं है। पर मकान उसका दिया नहीं है और न उसने छीना था।

इतना कह मां ने एकाएक प्रेम को गोदी से उतारा और परनाले पर जा मुख धोकर आंसू पोंछने लगी। प्रेमनाथ विस्मय में उसका मुख देखता रह गया।

अगले दिन जब वह उठा, माँ घर पर नहीं थी। उसकी मामी ने उसको जगाया और स्नान आदि करवाया। प्रेमनाथ ने मामी से पूछा, "मां किधर गई है ?"

"लाहौर गई है। शाम तक आ जायेगी।"

प्रेम को समझ नहीं आया कि किस कारण वह वहां गई है। इस पर भी वह उत्सुकता से माँ की प्रतीक्षा करता रहा था। इन्द्रा तो दिन-भर रोती रही थी। जब मां लौटी तो सायंकाल होने वाला था।

प्रेम ने देखा, मां का मुख बहुत उदास था। प्रेम ने जब पूछा, "मां कहां गई थी ?"

मां ने उत्तर दिया था, "रोटी खाई है प्रेम ?"

"हां मां"

"इन्द्रा कहां है ?"

"रोती-रोती सो गई है।"

"क्यों ? रोई क्यों थी ?"

"मां-मां करती थी।"

मां के मुख पर क्षीण मुस्कराहट की रेखा दिखाई दी और शीघ्र ही लोप हो गई। रात को जब प्रेम अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था तो उसको सो गया समझ उसके मामा ने, जो वहाँ आया हुआ था, उसकी मां से पूछा, "क्या हुआ, बहिन ! वहां ?"

"एक बने मकान में भेंट हुई। वे अपनी मेम को साथ ले मिलने आये, उससे मेरा परिचय कराया, पश्चात् मेरे वहां आने का कारण

पूछा। मैंने जब बताया कि लड़के को पढ़ाई के लिए लाहौर में भरती होना है और मेरे पास बोर्डिंग-हाऊस में भरती कराने के लिए खर्चा नहीं, तो वह बताने लगे कि उनके पास इस समय देने के लिए रुपया नहीं है। इस पर मैंने कहा कि लड़के को यहां अपने पास रख लें। रोटी में रोटी खा लिया करेगा और कपड़ों में से कपड़े पहन लिया करेगा। फीस और पुस्तकों का प्रबन्ध मैं अपने खर्च में से कर दूंगी, तो उन्होंने कहा, "नहीं, यह ठीक नहीं। प्रेम तो बिगड़ेगा ही साथ ही दूसरे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।"

"मेरे लिए और कुछ कहने को नहीं था और मैं वापस लौट आई।"

"समय तो बहुत लगा है?"

"हां, नदी किनारे बैठ विचार करती रही हूं कि क्या किया जाय?"

"तो क्या करोगी अब?"

"प्रेम पढ़ेगा कैसे? यह तो भगवान के अधीन है।"

प्रेम इस बात को सुन, समझने का यत्न करता रहा था कि वह कौन है जो मेम लेकर मां से मिलने आया था। उससे मां क्यों मिलने गई थी? इत्यादि।

अगले दिन प्रेम ने मां से पूछा, "मां, मैं कैसे पढ़ने जाऊंगा?"

"देखो प्रेम! प्रातःकाल पांच बजे 'दीन' की टमटम में तुम शहर चले जाया करो। वह तुमको हीरामण्डी उतार दिया करेगा। वहां मैं तुम्हें दयालसिंह स्कूल में भरती करवा दूंगी। दोपहर को वह तुमको ले आया करेगा। वह एक स्थान बता देगा। तुम स्कूल के बाद वहां बैठे रहा करना, वहां से तुमको टमटम में बैठा लाया करेगा।"

प्रेम को स्मरण था कि इस प्रबन्ध से जो प्रसन्नता हुई थी उसको, पांच वर्ष पश्चात् आज भी, वह अनुभव करता था। पांच वर्ष तक शाहदरा से नित्य टमटम में बैठ हीरामंडी के अड्डे पर जाना, वहां से स्कूल जाना और दोपहर के समय अथवा सर्दियों में चार बजे

हीरामण्डी के टमटमों के अड्डे पर पीपल की छाया में बैठ टमटम की प्रतीक्षा करना, तीन की टमटम में बैठ घर आना, स्नान कर भोजन करना और पश्चात् स्कूल का पाठ स्मरण करना। यह एकरस कार्य पांच वर्ष तक चलता रहा। इसमें एक दिन दूसरे के इतना समान था कि वह अब एक से दूसरे में भेद नहीं कर सकता था।

हां, एक दिन एक और घटना हुई थी। रविवार का दिन था, वह गांव के कुछ लड़कों को साथ ले जहांगीर के मकबरे में गुल्ली-डण्डा खेल रहा था। उनके खेल से कुछ दूर एक पढ़े-लिखे परिवार के लोग सैर करने आये हुए थे। प्रेमनाथ के खेलने की बारी थी। एक बार उसने टुल इतने जोर से लगाया कि गुल्ली उन सैर करने वालों में जाकर गिरी। वह किसी को लगी अथवा नहीं, प्रेमनाथ ने देखा नहीं था, परन्तु वह यह देख रहा था कि गुल्ली बहुत दूर गई है। इससे वह प्रसन्न हो इन लोगों की ओर देखने लगा था। दूसरे लड़के जो इस समय प्रेम को खेला रहे थे, वहां से गुल्ली लाने में डरते थे, प्रेम ने कहा, "अब जाओ लाओ।"

"तुम ही ले आओ न? वे मारेंगे।"

"क्यों मारेंगे?"

"तो स्वयं ही जाकर ले आओ न।"

प्रेम के हाथ में डण्डा था। वह उसको लिए हुए ही वहां जा पहुंचा। सैर करने वालों में गुल्ली गिरने से, कुछ विघ्न तो उनके मनोरंजन में पड़ा था—यह वह उनके मुख पर क्रोध को देख, अनुभव कर रहा था। इस पर भी वह इसमें अपना कोई दोष नहीं समझता था। उसने जाकर कहा, "गुल्ली दे दीजिये।"

एक औरत जो गौर वर्ण की थी और अँग्रेजी ढंग का पहरावा पहने थी, प्रेम के पास आई और एक चपत उसके मुख पर लगाकर बोली, "भाग जाओ।"

चपत का बदला लेने के लिए अनायास ही उसका डण्डे वाला हाथ उठ गया, फिर तुरन्त ही उसका हाथ नीचे हो गया और उसने दूसरे

हाथ से गाल मलते हुए कहा, "औरत हो, नहीं तो मज़ा चखा देता। मेरी गुल्ली दे दो।"

इस समय एक पुरुष वहां आया और उसने उसको पीटने के लिये हाथ उठाया, प्रेम लपककर पीछे हटकर बोला, "शर्म नहीं आती? इतने बड़े होकर बच्चे को मारने दौड़े हो।"

"तुमने गुल्ली क्यों यहां पर फेंकी है?"

"आप को ज़रा दूर हटकर बैठना चाहिए था।"

"ओह! तुम इस स्थान के मालिक मालूम होते हो?"

"आप भी तो मालिक नहीं हैं? हम पहले आये थे आप पीछे आये हैं। गुल्ली दे दीजिये और आप अपना सामान उठाकर ज़रा दूर ले जाइये फिर गुल्ली वहां नहीं आयेगी।"

"बहुत ही ढीठ और गंवार मालूम होते हो। किसके बेटे हो?"

प्रेमनाथ ने दयालसिंह स्कूल में भरती होते समय अपने पिता का नाम लिखाया था। इससे बोल उठा, "श्री अमरनाथ चोपड़ा के।"

"कहां रहते हो?" उस आदमी ने कुछ विस्मय से पूछा।

"शाहदरा में।"

"मेरा मतलब, तुम्हारा पिता भी वहां रहता है क्या?"

"नहीं।" इतना कह प्रेमनाथ चुप कर गया। आदमी विस्मय में प्रेम का मुख देखता रहा। उस औरत ने भी इस उत्तर पर कुछ विस्मय प्रकट किया। पश्चात् वह आदमी अपने सामान में पड़ी गुल्ली उठा लाया और प्रेमनाथ को देकर बोला, "देखो!……।" वह आदमी कुछ सोचने लगा। पश्चात् बोला, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"इससे आपका क्या मतलब? मेरे पिताजी का नाम जान लिया अब मेरा नाम पूछ रहे हैं? मैं बताने की आवश्यकता नहीं समझता।" इतना कह वह जाने लगा परन्तु उस आदमी ने पुकारा, "हां! प्रेमनाथ! सुनो!"

प्रेम अपना नाम सुन विस्मय में पड़, लौटकर देखने लगा, "ज़रा दूर चले जाओ, यह गुल्ली किसी की आंख में भी लग सकती है।"

"तो श्राप ही, ज़रा पीछे हट जाइये। एक चपत मुफ्त में लगा ली है, श्रौर क्या चाहते हैं ?"

"अच्छा देखो !" उस श्रादमी ने कहा, "एक रुपया ले लो श्रौर थोड़ी दूर चले जाश्रो।"

"हम भीख नहीं लेते। । जब श्राप नरमी से कहते हैं तो हम पीछे हट जाएँगे।"

लड़के दूसरे घास के मैदान में चले गये।.जब खेलते-खेलते थक गये तो बैठकर बातें करने लगे। एक लड़के ने कहा था, "उस मेम ने मारा था तो एक डंडा तो टिका देना था।"

"मेरा हाथ उठा तो था पर श्रादमी श्रौरतों पर हाथ नहीं उठाते।"

"तुम श्रादमी हो क्या ? यह कह सब हँसने लगे, "तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ कहाँ है ?"

प्रेम श्रादमी शब्द की यह विवेचना सुन लज्जा से लाल हो गया। वे अभी इस प्रकार की बातें कर ही रहे थे कि वही श्रौरत श्रौर दो बच्चे कागज़ में कुछ लपेटा हुश्रा लेकर इनकी श्रोर श्राते हुए दिखाई दिये। लड़के भयभीत होकर भागना चाहते थे कि प्रेम ने कहा, "बहादुर श्राद-मियो ! अब भागते क्यों हो ? बैठे रहो श्रौर देखो वह क्या कहती है।"

वह श्रौरत श्राई श्रौर कागज़ में लपेटा हुश्रा सामान सब लड़कों के बीच रख बोली, "ये तुम लोगों के खाने के लिये है।"

"हमको क्यों दे रहे हो ?" प्रेम ने पूछा, "हमको यह क्यों लेना चाहिये ?"

"तुम अच्छे लड़के हो, इसलिये। देखो प्रेमनाथ ! मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम श्रौरतों का मान करते हो न ? इसलिये।"

सब लड़के ललचाई श्राँखों से मिठाई श्रौर फलों की श्रोर देख रहे थे। प्रेमनाथ ने अपना नाम पुनः सुन अचम्भे से पूछा, "श्राप मेरा नाम कैसे जानती हैं ? मैंने तो बताया नहीं।"

"मैं तुम्हारे बाप को जानती हूँ। इसलिये मुझे शोक है कि मैंने

तुमको मारा है। अच्छा अब खाओ। खाकर तुम अब उधर आना, हम तुमको ग्रमोफ़ोन रिकार्ड सुनायेंगे।

इतना कह वह औरत और बच्चे चले गये। उन बच्चों में दो लड़के और एक लड़की थी। प्रेमनाथ और उसके साथी विस्मय से उस औरत को जाते देखते रहे। जब वे दूसरे लान में चले गये तो प्रेमनाथ ने मिठाई और फल सब में बांट दिये। पश्चात ग्रामोफ़ोन के बजने की आवाज़ आई तो सब वहां जा पहुंचे।

रात जब प्रेमनाथ ने मां को यह कहानी सुनाई तो वह रोने लगी थी। प्रेमनाथ ने मां के गले में बाहें डालकर पूछा, "मां तुम रोती क्यों हो, हमको मिठाई नहीं खानी चाहिये थी न ?"

मां ने आंखें पोंछकर कहा, "यह मैंने नहीं कहा, प्रेम।"

"तो फिर तुम रोई क्यों हो ?"

मां ने बात बदल कर कहा, "अब सो जाओ। बहुत थक गये होगे। देखो, रविवार को बड़े लोग मकबरे में सैर करने आते हैं तुमको उधर खेलने नहीं जाना चाहिये।"

इसके उपरान्त मैट्रिक की परीक्षा में पास होने की घटना थी। यह सन् १९१५ था।

२

प्रेमनाथ को स्कूल में भरती कराते समय उसकी मां को इस सब खर्चे का ज्ञान नहीं था, जो हुआ। इस पर भी उसने अपना पेट काटकर, पड़ोसियों के कपड़े सीकर और दिन-रात मेहनत से खरबूजों के बीजों से गिरियां निकाल कर, प्रेमनाथ को पढ़ाने का प्रबन्ध किया था। प्रेमनाथ इस बात को भली-भांति समझने लगा था।

इन्द्रा उसकी बहिन अब बारह वर्ष की हो गई थी। वह स्कूल नहीं जा सकी थी। मां से हिन्दी पढ़ वह रामायण पढ़ने लगी थी। प्रेमनाथ से अंग्रेज़ी पढ़ उसकी किताबें पढ़ने योग्य हो गई थी और फिर घर का काम-

काज भी करती थी।

इस सब कठिनाई तथा दरिद्रता के जीवन में एक बात अति-मधुर थी, जिसको प्रेमनाथ स्मरण कर पुलकित हो उठा करता था। माँ यह सब मेहनत करते हुए हँसती रहती थी और रामायण में से चौपाई, दोहे, छप्पय आदि गाती रहती थी। उसका सबसे प्रिय दोहा था—

रघुपति राघव राजा राम।
पतित पावन सीता राम॥

फिर कभी गाती थी।

अवगुन तजि सबके गुन गहहि।
विप्र धेनु हित संकट सहहि॥
नीति निपुन जिन्ह कह जग लीका।
घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका॥

प्रेम भी अपनी माँ की संगत में रहता हुआ यह श्लोक गाता रहता था।

शान्तं शाश्वतमप्रमेयनघं निर्वाण शान्तिप्रदम्।
ब्रह्मा शम्भु फणीन्द्र सेव्यमनिशं वेदान्त वेद्यं विभुम्॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिम्।
वन्देहं करुणाकरं रघुवरं भूपाल चूड़ामणिम्॥

जब इस प्रकार रामायण का पाठ अथवा कीर्तन करते थे तो माँ, पुत्र और पुत्री अपनी निर्धनता तथा परिस्थिति भूलकर भगवान में लीन हो आनन्द-विभोर हो उठते थे। प्रेमनाथ के बाल्यकाल की यह घड़ियाँ अत्यन्त सुख की वेला होती थीं।

आज परीक्षा में अपने को फ़र्स्ट डिवीज़न में उत्तीर्ण पा वह भावी-जीवन की रूपरेखा बांधते-बांधते अतीत काल की स्मृतियों में विलीन हो गया। सिनेट हाल से चलकर शाहदरा पहुंचने में तीन घंटे लग जाना एक साधारण बात थी और इस सारे समय में अपने विषम भूत को उज्ज्वल भविष्य में परिवर्तित करने की योजनायें सोचता चला आया था।

जब वह घर पहुँचा तो बाजार में उसके मामा ने उत्सुकता से पूछा, "प्रेम, परीक्षा फल निकला ?"

"हाँ मामा जी ! मैं पास हो गया हूँ ।"

"शाबाश बेटा । जाओ अपनी माँ को बताओ, बेचारी तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठी सूख रही है ।"

प्रत्यक्ष में तो माँ ने उसके अनुत्तीर्ण होने की न तो आशंका की थी, और न ही चिन्ता । वास्तव में ऐसा नहीं था । आज मामा से यह सुन उसको अनुभव हुआ कि सत्य ही माँ की हड्डियां और मांस पिघल-पिघल-कर उसकी पढ़ाई में लगा हुआ है । उसको अपने अनुत्तीर्ण हो जाने की आशंका पर कपकपी हो उठी । उसने सोचा कि कहीं वास्तव में ऐसा होता तो, माँ का देहावसान ही हो जाता । इस सम्भावना के असत्य सिद्ध होने पर प्रसन्नता ने उसकी आंखों में आंसू भर आये ।

जब वह माँ के सामने उपस्थित हुआ तो उसकी आंखें डबडबा रही थीं । माँ ने उसको देखा तो उसका मुख विवर्ण हो उठा । उसे अपने तले से मट्टी खिसकती प्रतीत हुई । इस पर भी कांपते हुए उसने प्रेम को छाती से लगा मुख चूम लिया । चूमते समय उसके होंठ कांप रहे थे और पूर्ण शरीर शिथिल होता जाता था । इस समय प्रेम ने कहा, "माँ ! मैं पास हो गया हूँ ।"

"पास हो गये हो ? अच्छा हुआ । भगवान को धन्यवाद दो ।" इस प्रकार हांफती हुई, मन की एक पराकाष्ठा की अवस्था से दूसरी पराकाष्ठा की अवस्था पर पहुँच रही थी ।

प्रेम की आंखों से अविरल आंसू बह रहे थे और मां भी लगभग अचेतनता की अवस्था से धीरे-धीरे चेतनता की ओर आ रही थी । एकाएक उसने प्रेम को अपने से पृथक कर कहा, "प्रेम, भगवान का धन्यवाद करो । उसने हमारी नाव डूबते-डूबते बचाई है ।" मां अपनी शक्ति और साहस की अन्तिम सीमा पर पहुँच गई थी ।

"माँ ! हम बहुत निर्धन हैं न ?"

इस पर माँ ने कहा, "हम लाखों में एक श्रेष्ठ हैं। धन श्रेष्ठता का लक्षण नहीं। चरित्र और चलन ही किसी मनुष्य के मूल्य आंकने में प्रमुख वस्तु होती है। चरित्र, विपरीत परिस्थितियों में भी अपने कार्य में संलग्न रहने को कहते हैं।"

अगले दिन से ही विचार होने लगा कि प्रेमनाथ कहीं नौकरी करने लग जाए तो मां को सुख मिलेगा। प्रेम के मामा ने कहा, "देखो बेटा प्रेम! अब मां को और कष्ट न दो। ज्योति जो पांचवी श्रेणी से अधिक नहीं पढ़ सका अब मेरा बहुत आश्रय बना हुआ है।"

प्रेम नियमित रूप से नौकरी ढूंढ़ने लगा। प्रातः खाना खाकर घर से निकल जाता था और सायंकाल घर लौट आता था। इस प्रकार लाहौर की सड़कों पर मिट्टी छानते-छानते तीन मास व्यतीत हो गये।

इस काल में प्रेम को अपरिमित अनुभव प्राप्त हुआ। वह सैंकड़ों अफ़सरों और बीसियों सेठों-साहूकारों से मिला। जहां भी किसी ने उसे टोह दी कि कोई स्थान रिक्त है, वह पहुंचता और यत्न कर अधिकारी से मिलता। लोग उसकी सूरत और कपड़े देख यह सन्देह करते, कि वह मैट्रिक पास भी है अथवा नहीं। उनको विश्वास दिलाने पर वे समझते कि उत्तीर्ण किया भी होगा तो थर्ड डिवीजन में। जब प्रेमनाथ उनको विश्वास दिलाता कि वह फ़स्ट डिवीजन में पास हुआ है तो वह परीक्षा लेकर उसके कहने की सत्यता जानने का यत्न करते। जब वे जान लेते कि प्रेमनाथ की योग्यता किसी साधारण ग्रेजुएट के बराबर है तो कह देते कि उनके यहां स्थान तो रिक्त होने वाला है, उसका नाम और पता लिख लिया है और आवश्यकता पड़ने पर बुला लिया जायेगा।

कुछ भले लोग कह देते कि बिना सिफ़ारिश नौकरी नहीं मिलेगी। वह उनसे प्रसन्न तो होता परन्तु जब कहता कि वे ही उसकी सिफ़ारिश कर दें तो लोग हँस पड़ते। एक भद्र पुरुष ने तो यह भी कह दिया कि उसका लड़का इस स्थान के लिये प्रार्थी है, भला वह उसकी सिफारिश

क्यों करे ?

"इसलिए कि मैं उससे अधिक योग्य हूं।"

वह हंस पड़ा। उसने कहा, "लड़के, अभी संसार का ज्ञान प्राप्त करो। तुमको यहां नौकरी नहीं मिलेगी।"

एक दिन ज़िला कचहरी में डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय के बाहर एक 'नोटिस' लगा हुआ था। "बीस क्लर्क चाहियें। योग्यता कम-से-कम मैट्रिक सैकिंड डिवीजन, अंग्रेजी और उर्दू शुद्ध लिख सकता हो।"

प्रेमनाथ हाथ से लिखे प्रार्थना-पत्र सदैव अपनी जेब में रखता था। यह पढ़ उसने एक प्रार्थना-पत्र निकाला और डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय में जाकर पेशकार से पूछने लगा, "जनाब, यह बाहर जो इश्तिहार लगा है उसकी अर्ज़ी कहां दी जानी चाहिये ?"

"उसका वक्त निकल गया है।"

प्रेम उदास हो लौटने लगा था। फिर उसके मन में एक विचार आया और उसने कहा, "श्रीमान जी ! उस इश्तिहार पर तो यह बात नहीं लिखी।"

"तो क्या मैं झूठ कहता हूं ?" पेशकार ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा—

"जी नहीं, मेरा यह मतलब नहीं। मैंने कहा है कि उस इश्तिहार लिखने वाले ने प्रार्थना-पत्र मांगने पर सीमा न बांध भूल की है। आइन्दा ऐसा न करिये। हम लोगों को, जो प्रार्थना-पत्र देने वाले हैं बहुत कष्ट होता है।"

"ओह ! साहब बहादुर की भी भूल निकालने लगे हो। ज़रूर नौकरी पा जाओगे। जाओ, निकल जाओ कमरे से बाहर।"

"प्रेमनाथ कमरे से बाहर निकल आया। वह अति उदास मन खड़ा था और अब मन में सोच रहा था कि किधर का चक्कर काटे कि उस समय कचहरी का चपरासी लाल वर्दी पहिने और उस पर सुनहरी चपरास लगाये हुए आया और प्रेमनाथ के कन्धे पर हाथ लगाकर बोला,

"ओ लड़के ! पेशकार साहब बुलाते हैं।"

"क्या कहते हैं ? जरा-सी बात पर कैद कर लेंगे क्या ?"

चपरासी ने प्रेम को बाजू से पकड़ लिया और कहा, "भाई चुपचाप चले आओ।"

प्रेमनाथ का मन कांप उठा। विवश पुनः अदालत के कमरे में चला आया। चपरासी ने उसको ले जाकर पेशकार के सामने खड़ा कर दिया। पेशकार ने उसको सिर से पांव तक देखा और कहा, "इस कठघरे के भीतर आ जाओ।"

प्रेमनाथ इसका अर्थ नहीं समझा। वह कांपता हुआ कठघरे का किवाड़ खोल भीतर चला गया। पेशकार ने उसको एक स्टूल की ओर संकेत कर कहा, "बैठ जाओ।"

प्रेमनाथ बैठ गया। पेशकार ने कहा, "अपनी अर्जी दिखाओ।"

कांपते हाथों से प्रेमनाथ ने सुलेख में लिखा प्रार्थना-पत्र पेशकार के हाथ में दे दिया। पेशकार ने प्रार्थना-पत्र पढ़ा और फिर प्रेमनाथ को सिर से पांव तक देख सिर हिलाकर पूछा, "अंग्रेजी लिख सकते हो क्या ?"

"हां जनाब ?"

"लिख सको या न लिख सको" पेशकार ने इतना धीरे से कहा मानो वह अपने-आपसे बातें कर रहा हो, "तुम नौकर तो हो गये हो।"

"मैं नौकर हो गया हूं ?"

"हां ! यहां ही बैठो। मैं अभी मंजूरी लिखवाकर लाता हूं।" इतना कह पेशकार अपनी कुर्सी से उठ पीछे के कमरे में चला गया। दो मिनट में वह प्रेमनाथ की अर्जी पर एक बड़ी-सी मुहर लगवा और उस पर किसी के अंग्रेजी में हस्ताक्षर करवा कर ले आया। आकर कुर्सी पर बैठ, उस अर्जी को एक टीन के डिब्बे में रख, बोला, "तुम्हारी उमर कितनी है ?"

"चौदह वर्ष।"

"तुम नौकर कैसे हो सकते हो ? अट्ठारह वर्ष से कम उमर में
कारी नौकरी नहीं मिल सकती।"

"तो अर्जी वापिस कर दो।"

"पर अर्जी तो मंजूर हो गई है। साहब ने दस्तखत कर दिये हैं।"

"तो उन्होंने आयु नहीं पूछी ?"

"अर्जी पर लिखी नहीं है। अच्छा ठहरो, इतना कह वह पुनः भीतर
कमरे में चला गया। अबकी बार एक ही मिनट में लौट आया और बोला,
चालीस रुपये महीना, और शाहदरा में कानूगो मुकर्रिर होगए हो—
हसीलदार के पास चले जाओ। यह परवाना यहां से लेते जाओ।"

३

"शाहदरा में कानूगो। चालीस रुपया महीना। इतनी छोटी आयु में
ह भगवान के अतिरिक्त और कौन कर सकता है।" प्रेमनाथ की माँ
सको कह रही थी।

"यह कैसे हुआ मां ! मैं समझ नहीं सका। पेशकार ने तो कमरे से
ाहर निकाल दिया था। जब चपरासी भीतर बुलाकर ले गया तो ऐसा
तीत होता था कि पेशकार को तो मेरी सूरत-शक्ल भी पसन्द नहीं,
रन्तु कोई अदृश्य शक्ति उसके गले में अंगुली देकर यह शब्द निकाल
ही है कि मैं नौकर हो गया हूं।"

"डिप्टी कमिश्नर को देखा है तुमने ?"

"नहीं माँ, मुझको उसके सामने उपस्थित नहीं किया गया।"

"परवाने पर क्या लिखा था ?"

"लिखा था, प्रेमनाथ वल्द अमरनाथ चोपड़ा, साकन हाल शाहदरा,
को कानूगो, २ जून १९१५ से मुकर्रिर किया जाता है। ट्रेनिंग पीरियड
तीन मास के बाद इम्तिहान होने पर नौकरी मुस्तकिल की जायेगी। नीचे
डिप्टी कमिश्नर लाहौर के कार्यालय की मुहर थी और अंग्रेज़ी में
हस्ताक्षर थे जो पढ़े नहीं जाते थे। इस परवाने के साथ एक बन्द

लिफ़ाफ़े में चिट्ठी थी, जिस पर लाख की मुहर थी और ऊपर प्राइवेट लिखा था।

"मैं तहसीलदार के कार्यालय में पहुँचा और जब जाकर परवाना दिया तो तहसीलदार विस्मय में मुझे देखने लगे। मां, एक तो मेरी दाढ़ी-मूंछ नहीं। सब मुझको बच्चा समझते हैं। दूसरे मेरी आयु अभी चौदह वर्ष की है। लोग कहते हैं कि अट्ठारह वर्ष से कम आयु वाले को नौकरी नहीं मिलती। तीसरे मेरे कपड़े आज बहुत मैले थे उन्हें देख मुझे स्वयं लज्जा आती थी।"

"तहसीलदार अभी सोच ही रहा था कि उस परवाने का क्या करे कि मैंने वह प्राइवेट चिट्ठी दे दी। उसने लिफ़ाफ़ा खोलकर पढ़ा। पढ़ते ही उसका विस्मय मुस्कराहट में बदल गया। उसने बिना एक भी शब्द कहे परवाने को अपने मुहर्रिर को दे दिया और मुझको यह नई चिट्ठी दे कर कहा कि "कल दो जून को, दिन के ग्यारह बजे शाहदरा के कानूगो से चार्ज ले लो।"

मां यह सुनकर गम्भीर विचार में पड़ गई। प्रेमनाथ इसका अर्थ नहीं समझ सका, इससे उसने पूछा, "क्या है मां ?"

"कभी-कभी भगवान अपना कार्य सिद्ध करने के लिए विचित्र साधन बना लेता है। हमको तो उसका ही कृतज्ञ होना चाहिये। साधन एक निष्प्रयोजन वस्तु है।"

"मां! तुम कभी-कभी इतनी असंगत बातें करती हो कि उसका अर्थ समझ में नहीं आता।"

"देखो प्रेम! वह भगवद्गीता निकालो! वही हमारी इस निःसहाय अवस्था में आश्रय देने में सबल है।"

प्रेमनाथ मां की बात अगाध श्रद्धा और विश्वास से स्वीकार किया करता था। मां के कहने पर उसने कभी विवाद नहीं किया था। इस पर भी अब उसका अनुभव और संसार का ज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धि कर रहा था। इससे उसके मन में अनेकानेक प्रश्न उपस्थित हो रहे थे। वह दिल मसोस

कर उठा, अलमारी में से भगवद्गीता गुटका उठा लाया और माँ को दे कर वोला, "माँ ! एक वात मुझको वता दो।"

"मैं जानती हूँ कि तुम क्या जानना चाहते हो। मैं चाहती थी कि अभी दो वर्ष और ठहरकर तुम को वताऊँ, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि तुम समय की गति से अधिक गति से बुद्धि-शीलता प्राप्त कर रहे हो। इस कारण अव अधिक काल तक तुम को अंधकार में रखना तुम्हारे ही अहित में होगा। इससे सुनो।"

प्रेम की माँ ने एक हाथ गीता की पुस्तक पर रखे हुए, मानो वह विद्युत-प्रवाह की भांति उस पुस्तक से साहस और स्फूर्ति प्राप्त कर रही हो, कहने लगी।

"जव मेरा विवाह हुआ था मैं वारह वर्ष की थी, हम जात के खन्ने थे। चोपड़ों के परिवार में मेरा विवाह मेरे सौभाग्य का सूचक माना गया था। उस समय मैं हिन्दी और कुछ संस्कृत पढ़ी थी।"

"यह सन् १८९५ की वात है। आर्यसमाज का प्रभाव लोगों पर आरम्भ हुआ ही था और पिताजी ने मेरे पढ़ने के लिए एक पंडित नियुक्त कर दिया था। मेरे श्वसुर, शायद तुमको याद होगा, एक वृद्ध श्वेत दाढ़ी-मूंछ वाले व्यक्ति थे। उन्होंने ही एक दिन मेरे विषय में कहीं से सूचना पा, आकर मुझको देखा, मुझसे प्रश्न पूछे, मुझसे रामायण सुनी और विवाह पक्का कर चले गये।"

"मेरे विवाह के समय तुम्हारे पिता मैट्रिक में पढ़ते थे। उस समय तो वे मुझसे वहुत अच्छा व्यवहार करते थे, जव उन्होंने वी० ए० की परीक्षा पास की तव तुम्हारा जन्म हुआ। यह सन् १९०० की वात है। इस समय तक उनके विचारों में अन्तर आना आरम्भ हो गया था। मुझको कभी कहते, 'अंग्रेजी पढ़ा करो।' मैं पूछती, 'किससे पढ़ूं ?' तो वे चुप हो जाते। अपने पिता के सम्मुख उनको कुछ कहने का साहस नहीं होता था। एक दिन उनके पिता ने मेरी पुस्तकों में अंग्रेजी की पहली पुस्तक देख ली। मुझसे पूछा, 'यह तुम पढ़ती हो ?' मैंने सिर हिलाकर स्वीकार

क्या । उस रात बाप-बेटे में झगड़ा हो गया। मैं अपने कमरे में बैठी हुई बाप की बेटे को डांट सुनती रही । बाप ने कहा था, 'औरतें घर का भूषण होती हैं । उनको अपने धर्म-शास्त्र पढ़ने चाहिएं । अंग्रेजी पढ़कर ये क्या करेंगी ? नौकरी तो करेंगी नहीं ।"

"बेटे ने कहा, "पिताजी ! अंग्रेजी पढ़ने से संसार का ज्ञान हो जाता है ।"

"मतलब यह कि अगर अंग्रेज यहां न आते और हमको विवश हो कर अंग्रेजी न पढ़नी पड़ती तो हम मूर्ख ही रहते ।"

"हम जाहल तो हैं ही । यह बहु आपने लाकर दी है । मैं इसको अपने साथ कहीं ले जा नहीं सकता । यह किसी से बातें नहीं कर सकती और जब भी किसी को देखती है तो घूंघट निकाल लेती है ।"

"तो तुम क्या चाहते हो ? सबके सामने निर्लज्ज औरतों की भाँति बातें किया करे ?"

"क्या-क्या बातें बाप-बेटे में हुईं । मैं अपने मुख से कह नहीं सकती । परिणाम यह हुआ कि तुम्हारे पिता मुझ से नाराज़ होगये । मैंने बहुत कहा कि मेरा कुछ भी दोष नहीं है । मुझ को पढ़ाने वाली औरत ला दीजिये मैं अंग्रेज़ी पढ़ लूंगी अथवा आप पढ़ा दिया करें ।"

"पर वे विलायत जाने वाले थे । इससे स्वयं पढ़ा नहीं सके । उनके पिता मेरे अंग्रेजी पढ़ाने के विरोधी थे। परिणाम यह हुआ कि वे विलायत चले गए और कभी पत्र भी नहीं लिखा ।"

"सन् १९०३ में, जब तुम तीन वर्ष के थे, तुम्हारे बाबा मुझको ले, विलायत गये । उनको सूचना मिली थी कि तुम्हारे पिता वहां दूसरा विवाह करने वाले हैं । विवश हो उन्होंने मुझको समय के फ़ैशन के अनुसार कपड़े पहिनने को कहा और मुझको घूंघट उठाकर विलायत चलने को कहा। मुझको अपने हाथों से उन्होंने शृंगार-प्रसाधन ला कर दिये ।"

"मैं जब उनके साथ जाने को तैयार हुई तो उनकी आंखों से आंसू

टपक पड़े। गाड़ी में बैठे हुए उन्होंने मुझ को कहा, "बेटी, यह सब कुछ तुमको करने को मैं विवश कर रहा हूं। इसका मुझ को बहुत दुःख है। वास्तव में मैं इस प्रकार के कपड़े पहिनने में हानि नहीं समझता, परन्तु जो तुमको यह पहिनने को कह रहा है वह इस उद्देश्य से नहीं कि इससे तुम अधिक सुन्दर प्रतीत होगी अथवा तुमको इससे अधिक सुख-सुविधा मिलेगी, परन्तु उसका प्रयोजन केवल मात्र यह है कि तुम एक अंग्रेज महिला प्रतीत हो। अपने पुत्र की मानसिक दासता देख मेरी आत्मा उत्पीड़ित हो उठी है।"

"तुम्हारे बाबा स्वामी दयानन्द जी की संगत में रह चुके थे और देशभक्ति के भावों से ओतप्रोत थे। इसी से अंग्रेजियत से उनको घृणा थी। यह घृणा इतनी दूर तक चली गई थी कि अंग्रेजों की अच्छी बात को पहिले हिन्दुस्तानी जन्म और नाम दे देते और तब ग्रहण करते थे।"

"हम विलायत पहुंचे और लंदन के एक होटल में ठहरे। वहां उनकी पुत्र से भेंट हुई। बहुत बातें हुई। मेरे सामने भी और परोक्ष में भी। तुम्हारे बाबा का कहना था कि उनके पुत्र को भारतीय आचार-व्यवहार का आदर करना चाहिये। उन्होंने उसको जापानियों, जर्मनों और संसार की अन्य महान् जातियों की स्त्रियों के उदाहरण देकर बताया कि वे अंग्रेजी न जानने से जाहिल नहीं हो गई और फिर जब वह हिन्दुस्तान में आएगा तो जैसा भी चाहे मैं रहूंगी।"

"मुझको ऐसा प्रतीत हुआ कि तुम्हारे पिता एक अंग्रेज़ लड़की से विवाह करने वाले थे, परन्तु हमारे समय पर पहुंच जाने से विवाह रुक गया। मैं तुम्हारे बाबा के साथ लन्दन तीन मास रही। तुम्हारे पिता बोर्डिंग हाउस में रहते थे। बीच-बीच में हम से मिलने आते रहे और उस समय उनका व्यवहार सभ्यता-पूर्ण और प्रेममय रहा।"

"हम जब लौटे तो वे हमको मारसेल्ज़ तक छोड़ने आये। मैं अति प्रसन्न थी। तुम्हारे बाबा भी अपनी युक्ति की सफलता पर प्रसन्न थे।

वहां से आकर इन्द्रा का जन्म हुआ।"

"१९०४ में तुम्हारे पिता आई० सी० एस० की परीक्षा में प्रथम रहे और भारतवर्ष में उनकी सरकारी नौकरी लग गई। उनकी नियुक्ति रावलपिंडी में डिप्टी कमिश्नर के पद पर हुई।"

वे लाहौर आये तो एक अंग्रेज़ बीवी को साथ ले आये। एक विकट समस्या यह उत्पन्न हो गई कि विलायत में विवाह के समय उन्होंने यह घोषित किया था कि उनका पहले विवाह नहीं हुआ। वहां पर एक पुरुष दो विवाह नहीं कर सकता। उनकी अंग्रेज़ बीवी तो यह जानती थी कि उनका एक विवाह पहले हो चुका था परन्तु वह यह धमकी दे रही थी कि यदि मुझको अपने पास रखेंगे तो वह सब भांडा फोड़ देगी और उनकी नौकरी चली जाएगी।"

"उनके पिताजी का कहना था कि नौकरी जाती है तो जाए पर विवाहित बीवी और बच्चों की मां को घर से निकाला कैसे जा सकता है। इस पर घर में वह उधम मचा कि मेरा वहां रहना असम्भव होगया।"

"एक दिन मैं तुम्हारे बाबा जी के पास गई और पांव पर सिर रख कर यहां शाहदरे आ जाने की स्वीकृति मांगने लगी। वे पूर्ण घर-भर को तुम्हारे पिता का पक्ष लेते देख सर्वथा निःसहाय अनुभव कर रहे थे। मेरे कहने को न तो स्वीकार कर सके और न ही विरोध कर सके। उनकी अवस्था श्रीराम के पिता दशरथ के समान देखकर मुझे दया आई, परन्तु अपनी, तुम्हारी और परिवार की भलाई का विचार कर तुम दोनों को ले, यहां चली आई। मेरे वहां से आने के दूसरे दिन तुम्हारे बाबा का देहान्त हो गया।"

"जब मैं आने लगी तो तुम्हारे पिता ने यह कहा कि वे मुझको बीस रुपये मासिक गुज़ारे के लिए भेज दिया करेंगे। मैंने इस विषय में कुछ नहीं कहा और अपने मन में दृढ़ संकल्प कर कि अब उनका मुख नहीं देखूंगी, यहां चली आई।"

"मैं समझती हूं कि एक दिन जहांगीर के मकबरे में तुमको एक

आदमी ने एक रुपया देने का यत्न किया था और फिर एक औरत ने तुम लोगों को फल और मिठाई खाने को दी थी। वे तुम्हारे पिता और विमाता थी। मेरा मन कहता है कि आज जिसने तुमको नौकरी दी है वे तुम्हारे पिता हैं। मेरे लिए अति विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। उस औरत की उपस्थिति में मैं अपने को उनकी स्त्री भी नहीं कह सकती। तुम्हारे बाबा के पश्चात् अब उस घर में हमारा कोई मित्र नहीं है और मैं समझ नहीं सकती कि इस नई परिस्थिति में क्या करना चाहिये।"

"मां!" प्रेम ने दृढ़ता से कहा, "यदि तुम कहो तो मैं नौकरी अस्वीकार कर देता हूँ। उनके तुम्हारे साथ किए व्यवहारके पश्चात् उनके अहसान में मैं रहना नहीं चाहता।"

इस समय मां ने प्रेम के मुख पर हाथ रखकर उसको कुछ और कहने से रोक दिया। पश्चात् कुछ सोचकर कहा, "मैं बीस रुपये मासिक उनसे अभी तक लेने पर विवश हूँ। अब उस बीस रुपये को लेन से इन्कार करने के लिए तुम्हारी इस नौकरी को स्वीकार करना आवश्यक हो गया है, यह भी एक विवशता है।"

"मैं यह कहती हूँ कि काम मेहनत और ईमानदारी से करना। उस पर यह चालीस रुपये उसका दाम होगा। इसमें तुम्हारे पिता का अहसान नहीं होगा।"

४

प्रेमनाथ को नौकरी देनेवाला, सत्य हो, मिस्टर ए० एन० चोपड़ा, आई० सी० एस० डिप्टी कमिश्नर लाहौर था। एक विख्यात बात है कि धनी-मानी आर्यसमाज के सदस्यों की सन्तान प्रायः नास्तिक और अभारतीय हुई है। कारण इसका कुछ भी हो, लोगों के मन में एक ओर तो यह विश्वास बैठ गया कि आर्यसमाज एक वागाडम्बर है, दूसरी ओर लोग यह समझने लगे कि पाश्चात्य सभ्यता भारतीय विचारधारा पर

एक सुधार है।

जब अमरनाथ मैट्रिक में उत्तीर्ण हुआ तो उसका विवाह शाहदरा के खन्ना परिवार की लड़की, शान्ता से हो गया। अमरनाथ पढ़ाई में बहुत ही प्रतिभाशाली सिद्ध हुआ। उसने गवर्नमेंट कालेज से प्रान्त में प्रथम रहकर बी० ए० किया और आई० सी० एस० के लिए विलायत चला गया।

विलायत जाने से पूर्व वह एक बालक का पिता हो चुका था। जाने से पूर्व ही उसको अपने पिता का प्रातः उठकर वेद-मंत्र-उच्चारण, सन्ध्या-हवन और प्रेम से सत्यार्थप्रकाश पढ़ना अखरने लगा था। उसको शेक्सपियर, मिल्टन, बायरन और वर्ड्सवर्थ अधिक रुचिकर हो रहे थे। अपनी स्त्री को रामायण पढ़ते देख वह नाक-भौं चढ़ाता था।

आर्यसमाज ने रामायण और महाभारत पर अश्रद्धा तो उत्पन्न कर दी थी परन्तु उसके स्थान पर किसी अन्य पुस्तक पर विश्वास नहीं बनाया था। वेदों की बहुत महिमा थी परन्तु उनको पढ़ सकने की योग्यता किसी म नहीं थी। फिर जो लोग आर्यसमाज में आये वे अपनी सन्तान को अंग्रेजी शिक्षा देने में विवश थे। सांसारिक उन्नति उसके बिना असम्भव थी।

मिस्टर अमरनाथ गवर्नमेंट कालिज में पढ़कर न केवल नास्तिक हुआ प्रत्युत् पाश्चात्य रहन-सहन का भक्त भी हो गया। विलायत जाने से पूर्व ही उसको अपनी स्त्री को अपने साथ घूमने ले जाना बहुत पसन्द था परन्तु शान्ता कहती रहती थी, पिताजी नाराज़ होंगे।

विलायत जाकर तो अमरनाथ के विचारों में पूर्ण परिवर्तन हो गया। उसकी भारतीय पहिरावे, भारतीय भोजन, भारतीय भाषा और भारतीयता पर श्रद्धा सर्वथा लोप हो गई। वह शान्ता से घृणा करने लगा, जो श्वसुर और बड़ों के सामने घूंघट काढ़ती थी। इस पर उसका प्रेम अपने एक मित्र की बहिन से हो गया।

दूसरी सूचना लाहौर पहुंची तो उसका पिता उसकी बीवी को

लेकर लन्दन जा पहुँचा। कुछ काल के लिए तो मुसीबत टल गई और शान्ता के एक लड़की उत्पन्न हुई। इस पर भी अमरनाथ के परीक्षा में प्रथम रहने ने उसके मस्तिष्क में हलचल मचा दी। वह समझने लगा था कि उसका भारत के एक फ़र्स्ट क्लास ज़िला में डिप्टी कमिश्नर बनना निश्चित है। वहाँ पर अपनी पुराने विचारों की, अँग्रेज़ी से सर्वथा अनभिज्ञ, बीवी को रखकर कैसे निर्वाह कर सकेगा।

एमिली जान्सन, एक अन्य लड़की से विवाह पक्का हो गया और सिविल मैरिज हो गई। इस बात की सूचना लाहौर नहीं भेजी गई। कारण यह कि अमरनाथ को डर था कि वहाँ समाचार पाने पर भांडा फूट जायेगा और विवाह में विघ्न पड़ जायेगा।

लाहौर पहुंचकर जो परिस्थिति उत्पन्न हुई वह उसकी स्त्री एमिली चोपड़ा से छिपी नहीं रह सकी।

अमरनाथ का यह कहना था कि शान्ता चुपचाप अपने मायके चली जाये अन्यथा एमिली उससे विलायत जाकर झगड़ा करेगी और कम-से-कम उसकी नौकरी छूट जायेगी।

शान्ता मन में यह सोचती थी कि यदि वह उसका कहना नहीं मानती तो एमिली विलायत लौट जायेगी, अमरनाथ की नौकरी छूट जायेगी, और साथ ही वह उसका शत्रु बन जायेगा और उस अवस्था में भी वह उसके साथ रह नहीं सकेगी। साथ ही वह स्वयं भी अमरनाथ से घृणा करने लगी थी। इस कारण मन पर पत्थर रख वह शाहदरे चली आई। वह तो बीस रुपये मासिक भी स्वीकार नहीं करती परन्तु बच्चों का पालन और शिक्षण आवश्यक मान वह यह सहायता स्वीकार करने लगी।

जिस दिन शान्ता ने ससुराल छोड़ी, तो वह घर से सिवाय उन कपड़ों के जो वह स्वयं और बच्चे पहिने हुए थे और कुछ नहीं लाई थी। वह अपने भूषण भी उतारकर वहां छोड़ आई थी। एमिली को जब यह पता चला तो वह चकित रह गई।

वह अमरनाथ के साथ ही लन्दन से आई थी और अमरनाथ ने उसे नीडोज होटल में ठहराया था। अमरनाथ स्वयं भी उसके साथ रहता था। जब शान्ता चली गई और यह समाचार अमरनाथ के पिता को मिला तो अमरनाथ भी उनके पास बैठा था। अमरनाथ के बड़े भाई के लड़के विनोद ने यह समाचार उनको दिया था उसने आकर कहा, "चाचा ! चाची चली गई।"

"कैसे गई है ?" अमरनाथ के इस पूछने का आशय था कि घर की गाड़ी में गई है या भारे की गाड़ी में। लड़के ने इसका आशय न समझ कहा, "रोती हुई गई है।"

अमरनाथ के पिता ने कहा, महापातकी हो तुम अमरनाथ ! अब मुझको अपना काला मुंह नहीं दिखाना।"

"पर पिताजी आप जरा मेरी बात तो समझने का यत्न करिये। वह अनपढ़, गंवार औरत मेरी जिन्दगी में बाधा बनी रहती। गई है तो अपने स्थान पर शोभा पावेगी। निर्धन हलवाई की बहिन अपने स्तर के आदमी से विवाह······।"

बूढ़े बाप से यह सुना नहीं जा सका। उसने एक चांटा अपने, होने वाले डिप्टी कमिश्नर, पुत्र के मुख पर लगाकर कहा, "चले जाओ यहां से···।" वह इससे अधिक नहीं कह सका और अचेत हो वहीं, जहां बैठा था, लेट गया। अमरनाथ को यह अति गवांर-पूर्ण और मूर्खता-पूर्ण व्यवहार लगा। इससे बिना इस बात का विचार किये कि उसका पिता अचेत हो गया है उठकर नीडोज़ होटल चला गया।

उसने जाकर अपनी अंग्रेज बीवी से अपने अपमान की बात कही तो उसको भी दुःख हुआ। वह अमरनाथ की बात को ठीक समझती थी। इंगलैंड के आचार-विचार में पली होने के कारण वह उस विवाह को विवाह ही नहीं मानती थी, जिससे पूर्व प्रेम उत्पन्न न हुआ हो। इससे उसको शान्ता के अपने भाई के घर चला जाना ठीक ही प्रतीत हुआ। इस पर भी जब अमरनाथ ने यह बताया कि वह अपना सब कुछ, जो वह

अपने माता-पिता के घर से लाई थी और जो कुछ उसे ससुराल से मिला था, छोड़ गई है और बहुत ही साधारण कपड़े, जो वह नित्य पहनती थी वही पहन कर गई है, तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ।

"क्यों ? ऐसा क्यों किया है उसने ? क्या आप लोगों ने उसको सामान ले जाने से मना किया था ?"

"नहीं ! इसके विपरीत दो दिन हुए मैंने उससे कहा था कि जो भूषण-वस्त्र उसके पास हैं, दस सहस्र रुपये के होंगे, उनको बेच वह बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध कर सकेगी ।"

"अब आप उसको मासिक क्या देना चाहेंगे ?

"मैंने उसे बीस रुपया मासिक देने का वचन दिया है।"

"बस ?"

"वह तो इतना भी शायद नहीं लेगी।"

"मैं समझती हूँ। भारी मूर्ख औरत है। शायद उसकी इच्छा दूसरा विवाह कर लेने की होगी ?"

"हिन्दुओं में औरतें दूसरा विवाह नहीं करतीं। विधवा हो जाने पर भी वह दूसरा विवाह नहीं करेगी।"

एमिली के लिए यह सब कुछ विस्मय में डालने वाला था। वह तो इस व्यवहार को अयुक्ति-संगत मानती थी।

पश्चात वे दोनों पंजाब क्लब में, जिसका अमरनाथ सदस्य बन गया था, चले गये। वहां एक-दो खेलें 'ब्रिज' का खेल और 'पैग व्हिस्की' पी रात को खाने के समय से पहले होटल में आगये। वहां होटल के नौकर ने उनको कागज़ का एक टुकड़ा जो उनके लिए कोई छोड़ गया था, दिया। यह कागज़ उसके बड़े भाई कैलाशनाथ का लिखा था। उसमें लिखा था, 'पिताजी की हालत बहुत खराब है। चले आओ।'

अमरनाथ ने समझा कि शान्ता को वापिस बुलाने के लिए, बहाना कर, उसको घर बुलाया जा रहा है। इससे उसने चिट्ठी फाड़कर रद्दी की टोकड़ी में फेंक दी और एमिली को बिना कुछ बताये खाने के कमरे में

चला गया। खाने के पश्चात् होटल में 'बाल' था, दोनों ने उसमें भाग लिया और रात के बारह बजे आकर सो गये।

प्रातः उठने पर उसको सूचना मिली कि उसके पिता का देहान्त हो गया है। इससे एक क्षण तक अमरनाथ को शोक हुआ। परन्तु तुरन्त ही अपने को सावधान कर उसने एमिली को इस घटना की सूचना दे दी और दोनों ने कपड़े पहन, प्रातः की चाय पी। पश्चात् दाह-संस्कार में सम्मिलित होने के लिए चले गये।

पिताजी का देहान्त हृदय की धड़कन बन्द हो जाने के कारण हुआ, ऐसा विख्यात किया गया। शान्ता के घर से चले जाने की बात किसी सम्बन्धी अथवा परिचित को नहीं बताई गई। सब लोग आये और शोक प्रकट करते रहे। किसी ने पूछा कि शाहदरे वाले नहीं आये, तो बता दिया गया कि उनकी लड़की दुराचारिणी है। अपने-आप घर छोड़ चली गई है। इस कारण उसके भाई को आने में लज्जा लगती है।

अमरनाथ, पिता की तेरहवीं के पश्चात् अपनी नौकरी पर रावलपिंडी चला गया। वहां जाकर उसने अपनी रुचि विशेष दो बातों में प्रकट की। एक वहां के अंग्रेज़ समाज से मेल-जोल। वह वहां की अंग्रेज़ी क्लब का सदस्य बन गया। साथ ही फ्री-मेसन भी होगया। दूसरी बात जो उसकी रुचि की पात्र हुई वह लड़के और लड़कियों की अंग्रेज़ी ढंग पर शिक्षा थी। उसने सीनियर कैम्ब्रिज परीक्षाओं को प्रचलित कराने में भारी सहायता दी। ईसाइयों ने, जो अमीर हिन्दुस्तानी लड़कों और लड़कियों के लिए स्कूल खोले हुए थे, उनको निःशुल्क भूमि और दान-दक्षिणा दिलाने में वह विशेष रुचि प्रकट करता था। इन दोनों बातों के कारण सरकरी अफ-सरों में उसका बहुत मान था।

एमिली चोपड़ा यद्यपि इंगलैण्ड की प्रथाओं को पसन्द करती थी, इस पर भी उसकी रुचि हिन्दुस्तानी रस्मो-रिवाज को समझने में थी। यह उनमें अच्छाई जानने के लिए नहीं, प्रत्युत हिन्दुस्तान से परिचय प्राप्त करने के लिए थी। इसके लिए उसने हिन्दुस्तानी बोलना और पढ़ना सीखा,

एमिली के विचारों को सबसे बड़ी ठेस उस दिन पहुँची जब वह एक स्त्रियों का ग्राश्रय-स्थान जो तपोवन के नाम से विख्यात था देखने ग्राई। यह वास्तव में एक विधवा-ग्राश्रम था ग्रौर इसमें वे हिन्दू विधवाएँ रहती थीं, जिनके पालन-पोषण का प्रबन्ध नहीं था।

तपोवन वालों को कई बार यह सुझाव दिया गया कि डिप्टी कमिश्नर साहब की बीबी को अपने ग्राश्रम में निमन्त्रित करें। तपोवन की व्यवस्थापिका, गायत्रीदेवी, बहुत यत्न करने पर भी यह समझ नहीं सकी कि क्यों उसको बुलाया जाये। ग्रार्यसमाज के प्रधान श्री बानाराम की स्त्री चेतनकौर ने ग्राकर गायत्रीदेवी से कहा था ग्रौर जब उसने इसमें लाभ पूछा तो वह कहने लगी, "बड़े अफसर की बीबी है। साथ ही हिन्दुस्तानी ग्रौरतों की भलाई में रुचि रखती है।"

मुझको उसके कामों से सहानुभूति नहीं। वह उस दिन सेन्ट मेरी स्कूल में गई थी ग्रौर उसने विधवा प्रथा पर हँसी उड़ाई थी। उसको हमारी संस्था के उद्देश्य से सहानुभूति ही नहीं तो वह यहां ग्राकर क्या करेगी। देखो चेतन बहिन! मुझको उसके पति से कुछ लेना नहीं। हम संसार से बाहर होकर बैठी हैं, मैं नहीं चाहती कि वे लोग ग्राकर हमारी शान्ति को भंग करें।"

"ग्राश्रम के लिए किसी वस्तु की ग्रावश्यकता हो तो उसकी प्राप्ति में सहायता मिल सकती है।"

"मैं उन लोगों से, जो हमारे उद्देश्यों को ठीक नहीं समझते, एक दमड़ी की भी सहायता लेना नहीं चाहती।"

सब संसार, पैसे वालों से पैसा लेता है, जो देते हैं भगवान उनका भी भला करता है जो गाली देते हैं हम उनका भी भला चाहते हैं।

गायत्री देवी ने बात समाप्त करने के लिए कह दिया, "हमारे ग्रौर ग्रापके विचारों में भेद है। भगवान क्या करता है, यह जानने की मुझमें क्षमता नहीं। पर मैं क्या करती हूँ यह मैं जानती हूँ। हम दुखियारियों को किसी प्रकार की बीबी से सहायता की ग्रावश्यकता नहीं।"

"इस पर भी वह आवेगी, मैं जानती हूँ। वह बहुत हठी औरत है। जहां उसको बाधा प्रतीत होती है, उसको लांघकर जाने में उसको आनन्द आता है।"

"आप उनसे मिली प्रतीत होती हैं।"

"हां! लालाजी मुझको ले गए थे। बहुत ही मिलनसार औरत है। बात करती है तो मालूम होता है कि मानो मुख से मोती झरते हैं। हमने आर्यसमाज के विषय में उनको बताया और वह यह जानकर प्रसन्न हुई कि आर्यसमाज हिन्दू-धर्म में सुधार करने वाली संस्था है।"

"और इतना बड़ा झूठ आप बता आईं?"

"यह झूठ है क्या?"

"मैं जो कुछ जानती हूँ उससे तो आपका कथन सत्य प्रतीत नहीं होता। महर्षि दयानन्द ने प्राचीन वैदिक धर्म के प्रचार के लिए आर्य-समाज की स्थापना की है। सुधार का इसमें कहीं नाम तक नहीं है। हिन्दू-धर्म में जो कुछ प्रचलित है, उसमें जो कुछ अवैदिक है वही तो बदलना है। जो बदलना है वह हिन्दू-धर्म नहीं। इससे हिन्दू-धर्म में सुधार की बात कहां से आगई? सुधार तो तब कहते, जब वास्तविक हिन्दू-धर्म में परिवर्तन की आवश्यकता मानते।"

चेतनकौर बेचारी युक्ति करना नहीं जानती थी। उसने जो कुछ अपने पति से सुन रखा था वही कह दिया करती थी। वास्तव में हिन्दु-धर्म क्या है, उसी पर मतभेद का उल्लेख गायत्री देवी ने किया था। अपने विचार को और स्पष्ट करने के लिए गायत्री देवी ने कहा—'महर्षि स्वामी दयानन्द ने कपोल-कल्पित हिन्दू-धर्म का खंडन किया है। वह हिन्दू-धर्म जो सनातन है, शाश्वत है, और सत्य है, उसमें आर्यसमाज क्या सुधार करेगा?"

इस अवहेलना के किए जाने पर भी एमिली वहां आई। आश्रम के द्वार पर चपरासी ने रस्सी खेंच भीतर की घंटी बजा दी। गायत्रीदेवी आई और एक अंग्रेज महिला को देख समझ गई। उसने कहा, "आइये।

कार्यालय में आ जाइये।"

एमिली उसके साथ द्वार लांघ कार्यालय में पहुंच गई। वहां उसको लकड़ी की सीट वाली एक कुर्सी पर विठाते हुए गायत्रीदेवी ने कहा,—"क्षमा करिये, यहां गद्देदार कुर्सी नहीं है। आप के लिए जल मँगवाऊँ ?"

"नहीं ! धन्यवाद !"

"मैं समझती हूं कि आप जिलाधीश की धर्म-पत्नी हैं। मैं भूल तो नहीं कर रही ?"

"आप ठीक समझी हैं। पहले तो आप यह बताइये कि आपने मेरे यहां आने को पसन्द क्यों नहीं किया ?"

"मैंने आप के आने को पसन्द नहीं किया। मैंने तो अपनी ओर से आपको यहां आने का कष्ट देना उचित नहीं समझा। इस आश्रम में कोई ऐसी बात नहीं जो आप के मन में विनोद उत्पन्न कर सके।"

"इसके विषय में जानकर मेरी ज्ञानवृद्धि तो हो सकती है।"

"उसके लिए यहां से कोई बाधा नहीं है, परन्तु हम कैसे आपको निमंत्रण दे सकती थीं कि आकर हम दुखियारियों की दशा देख अपनी ज्ञानवृद्धि करें ?"

"आप के आश्रम को कुछ सरकारी सहायता की आवश्यकता हो तो मैं......।"

"यह काम सरकारी नहीं होना चाहिए। हम सब स्त्रियां यहां एक परिवार की भांति रहती हैं। यहां का प्रत्येक काम हम आपस में मिल-कर कर लेती हैं। हम सब, दिन में तीन घण्टा ऐसा काम करती हैं जिससे आय होती है और हमारा निर्वाह हो जाता है। शायद यह आपको पता नहीं कि मनुष्य को अपनी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत कम काम करने की आवश्यकता होती है।"

"फिर मैं आप के लिए क्या कर सकती हूं ?"

इसने एमिली के मन पर भारी ठेस पहुंचाई और वह इन औरतों के विषय में विचार करने लगी। वह आश्रम देखने लगी। सौ के लगभग विधवाएं रहती थीं। सब अवस्थाओं की थीं। अच्छी, सुन्दर, सुडौल, युवा, वृद्ध, साधारण और कुरूप। एक बात जो उसको विशेष प्रतीत हुई, वह संतोष की मुद्रा थी जो सब के मुख पर झलक रही थी।

आश्रम देखते हुए उसने एक युवतीसे पूछ ही लिया, "तुम पुनः विवाह क्यों नहीं कर लेती ?"

"विवाह के बिना मुझको यहां कोई कष्ट नहीं, मेरी आत्मा में शान्ति है, सुख है और इस सुख के स्थिर रहने का विश्वास है।"

"सब औरतें विवाह करती हैं।" एमिली का कहना था।

"हमने भी किया था।"

"फिर भी तो हो सकता है ?"

"विवाह के अतिरिक्त भी तो करने को काम हैं। जीवन का परम कर्त्तव्य, आवागमन से मुक्ति प्राप्त करना, भी तो करने को काम है।"

"ये आप लोग कैसे करती हैं ?"

"ज्ञान-प्राप्ति से और निष्काम-भाव से कर्म करने से।"

एमिली इन बातों को समझने की योग्यता नहीं रखती थी। उसने देखा कि वह तपोवन में गई और बिना किसी प्रकार से भी वहां रहने वाली विधवाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किए लौट आई। उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि उन लोगों के लिए उसका वहां आना कोई विशेष बात नहीं हुई।

एमिली को तपोवन की घटना से विलायत में एक सहेली की बात याद आ गई। उसने स्कूल फाइनल कर विवाह कर लिया था। वह लड़की और उसका पति परस्पर बहुत प्रेम करते थे। उसकी सहेली ने एक दिन, उसको बताया था; कि वह अपने पति को अपनी आंखों से ओझल कर जीती नहीं रह सकती। दुर्भाग्य की बात थी कि उसका पति एक रेल की दुर्घटना से मर गया। पति-पत्नि दोनों एडिनबरा से लन्दन

तक रेल में यात्रा कर रहे थे कि दुर्घटना हो गई और पत्नी के देखते-देखते पति का देहान्त होगया। एमिली ने और उसकी अन्य सहेलियों ने अति-विस्मय किया था, जब अपने पति के मरने के एक मास के भीतर ही उसने दूसरा विवाह कर लिया था।

तपोवन में वह यह देखकर आई थी कि स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं उनका अपने पति से प्रेम उसकी सहेली के प्रेम से एक अंश-मात्र भी नहीं था। इस पर भी वे पुनः विवाह के लिए उत्सुक प्रतीत नहीं होती थीं।

वह जानती थी कि योरूप में विधवाओं की ऐसी संस्था की न तो जरूरत है और न होगी।

५

जब अमरनाथ की बदली रावलपिंडी से गुजरांवाला में हुई तो वहां के लोगों ने और अनेक संस्थाओं ने उसकी विदाई में दावतें दीं और उसको स्मृति-उपहार दिए। एमिली को इनसे बहुत प्रसन्नता हुई। इस पर भी जैसी वह आई थी वैसी वह गई नहीं।

एक तो उनके एक लड़का हो चुका था और दूसरा बच्चा होनेवाला था। दूसरे वह हिन्दुस्तानी विचारधारा की एक ठोकर खा चुकी थी। गायत्रीदेवी का उसको कहना कि उनके काम में सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। उनको शान्ति से अपने दिन व्यतीत करने देना ही उनकी भारी सहायता है, उसके हृदय में चुभ गया था। बच्चा पैदा होने के समय उसने घूमना बन्द कर दिया था, इस कारण घण्टों ही घर बैठी हुई वह हिन्दुस्तानी मानसिक अवस्था पर मनन करती रहती थी।

गुजरांवाला में एक दिन, जब वह सातवें महीने में थी, उसकी कोठी के बाहर 'नारायण हरि' का शब्द सुनाई दिया। उसकी कोठी के बाहर चौबीस घंटे चपरासी या चौकीदार बैठा रहता था। चपरासी ने साधु को कहा, "जाओ बाबा! यह बड़े साहब का बंगला है।"

भीतर आजाइये।"

"मां! पिताजी घर पर हैं?"

"हां, अपने काम में लगे हुए हैं।"

"तो उनको कहिए कि आजावें तब मैं आ सकता हूं।"

"तो जरा ठहरिए।"

वह कोठी के दूसरी ओर गई और अपने पति को बुला लाई। अमरनाथ ने आकर कहा, "बाबा जी, आजाओ" और चिक उठा दी।

साधु भीतर चला आया। उसको एक कुर्सी पर बैठाकर अमरनाथ और एमिली दूसरी कुर्सियों पर बैठ गए। साधु ने कहा, "आज्ञा करो मांजी!"

"आपने रुपया क्यों नहीं लिया। इससे तो कई दिन के लिए रोटी मिल जाती।"

"पर मुझको तो केवल दो रोटी की ज़रूरत थी।"

"तो शेष दाम अगले दिन और फिर उससे अगले दिन के लिए व्यय हो जाता।"

"और तब तक उस दाम को सुरक्षित रखने की चिन्ता मोल ले लेता।"

"पर यह नित्य मांगने की चिन्ता तो कई दिन के लिए मिट जाती।"

"इसकी चिन्ता तो आधा घन्टा से अधिक कभी नहीं हुई। स्नान आदि और नित्य से छुट्टी पा मैं नगर के एक ओर चल पड़ता हूं। किसी एक घर से 'नारायण हरि' की आवाज़ देता हूं और वहां से खाने भर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता। उस दिन भूखा रहता हूं। समझता हूं भगवान को ऐसा रखना ही स्वीकार होगा, इस पर भी चिन्ता नहीं रहती। ऐसा दिन कभी वर्ष में एक-आध बार ही आता है।"

"भूखा रहने से चिन्ता नहीं होती क्या?"

"भूखा रहने से कष्ट होता है। चिन्ता नहीं। कष्ट होता है शरीर

को, चिन्ता होती है मन को। यह भयंकर वस्तु है।"

"कष्ट, चिन्ता को उत्पन्न करने वाला नहीं होता क्या ?"

"होता है। परन्तु उनको जो शरीर को ही जीवन का मुख्य ध्येय मानते हैं। मेरे लिए शरीर उस परम उद्देश्य की प्राप्ति में साधन है। कम खाता हूँ, मोटा पहनता हूँ। इस शरीर को किसी परोपकार के कार्य में लीन रखता हूँ। इस प्रकार इसको कुमार्ग पर जाने से रोकता हूँ।"

"शरीर को दुर्बल कर कुमार्ग से हटाना भी भला कोई अच्छी बात है ? क्या यह अच्छा न होगा कि शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाया जाय फिर इससे परोपकार कार्य किया जाय। कभी उच्छृङ्खलता से शरीर-सीमा का उल्लंघन कर दे तो इसको क्षमा कर पुनः सीधे मार्ग पर रहने के लिए प्रेरणा दी जाए ?"

"आप ठीक कहती हैं। परन्तु हमारी जीवन-मीमांसा इससे भिन्न है। शरीर का स्वस्थ और सबल होना आवश्यक है, परन्तु उतना ही जितना कि मन और आत्मा के नियंत्रण में रह सके। आत्मा इस शरीर रूपी रथ का मालिक है। मन सारथि है और शरीर की इन्द्रियाँ रथ के घोड़े हैं। घोड़े बलवंत होने से रथ वेग से चल सकता है परन्तु बलशाली घोड़े तब ही रथ और रथ के मालिक को ठीक मार्ग पर रख सकते हैं जब सारथि घोड़ों को काबू में रखकर चला सके और सारथि भी मालिक के आदेश में रह सके।"

एमिली को हिन्दुस्तानी विचारधारा का ज्ञान होने लगा था। अमरनाथ एमिली में यह परिवर्तन देख चकित हो रहा था। उसने एक अंग्रेज़ लड़की से विवाह इसलिए किया था कि वह उसके साथ पार्टियों में, नाच-खेल-तमाशों में और सरकारी आयोजनों में जा सकेगी, परन्तु जब तक वे गुजरांवाला में आये एमिली रात को नाच पर जाने के स्थान घर बैठ पुस्तक पढ़ना अधिक पसन्द करने लगी। पहले वह अपने पति के साथ क्लब में जाती थी, ब्रिज खेलती थी और ह्विस्की पीती थी, परन्तु अब उसकी इन बातों में अरुचि हो गई थी।

जब शान्ता प्रेमनाथ की पढ़ाई के लिए सहायता लेने आई थी, अमरनाथ रावलपिंडी में काम करता था। वह क्लब में भारी रकम हार चुका था और लाहौर रुपये का प्रबन्ध करने आया हुआ था। उस समय एमिली में अभी परिवर्तन आरम्भ नहीं हुआ था।

जब अमरनाथ, प्रेमनाथ से जहाँगीर के मकबरे में मिला था तब वह गुजरांवाला से लाहौर आ चुका था। इस समय तक एमिली के तीन बच्चे हो चुके थे। सबसे बड़ा लड़का था सोमनाथ। मँझली लड़की थी। उसका नाम सरस्वती था और सबसे छोटा भी लड़का था। उसका नाम रामनाथ था।

लाहौर का डिप्टी कमिश्नर होना एक बड़ी बात थी। प्रेमनाथ को जब पता लगा कि गुल्ली फेंकने वाला लड़का उसकी बीबी से तकरार करने लगा है तो वह वहाँ चला आया परन्तु आकर वह उसके वार्त्तालाप से प्रभावित हुआ था। उसके बाप का नाम और निवास-स्थान जानने पर वह जान गया था कि वह लड़का उसका अपना ही पुत्र है। इससे उसने उसको एक रुपया देने का विचार किया, परन्तु लड़के को लेने से इन्कार करते देख वह क्रुद्ध भी हुआ और प्रसन्न भी। एमिली तो उसके कहने पर कि वह औरत न होती तो मज़ा चखा देता, बहुत ही प्रभावित हुई थी।

इसके पश्चात् एमिली कई बार कहती रही कि अमरनाथ अपनी पहली बीबी को बुलाकर मिलाए, परन्तु वह इतने असमंजस में पड़ गया था कि किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका। एक बार वह केवल दस-बीस रुपया महीना प्रेमनाथ की पढ़ाई के लिए मांगने आई थी और उसने देने से इन्कार कर दिया था। यह तब था जब वह रावलपिंडी में डिप्टीकमिश्नर था और हज़ारों रुपये रिश्वत ले रहा था।

इस प्रकार रहते हुए दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे कि जब एक दिन अपनी अदालत के निजी कमरे में बैठे हुए उसने एक लड़के की आवाज़ सो पर उसने सुना कि इश्तिहार लिखने वाले ने प्रार्थना-पत्र देने की

अन्तिम-तिथि न लिखकर गलती की है। उसको कुछ ऐसा समझ आया कि यह वही लड़का है जो जहांगीर के मकबरे में कह रहा था कि हम पहले आये हैं, आपको ज़रा दूर बैठना चाहिए था। इस विचार के आते ही वह कमरे से उठ बाहर आया। इस समय प्रेमनाथ कमरे से बाहिर जा रहा था। अमरनाथ ने पहचान लिया और पेशकार को यह कह दिया कि इस लड़के की अर्ज़ी ले लो और मेरे पास ले आओ।

पेशकार ने चपरासी के द्वारा प्रेमनाथ को बुलवाया और प्रेमनाथ की अर्ज़ी लेकर डिप्टी कमिश्नर साहब के सामने गया। उसके अचम्भे का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने देखा कि उस लड़के की नौकरी लग गई।

६

प्रेमनाथ को अपने पिता के रहस्य का पता चला तो वह गम्भीर विचार में पड़ गया। आधे घण्टे की इस कथा ने उसको कई वर्ष का बूढ़ा कर दिया। वह ऐसा अनुभव करने लगा कि उसको कोई ऐसा काम संसार में अपनी मेहनत से करना है जिससे उसके पिता को पता चले कि उसने प्रेमनाथ आदि का तिरस्कार कर अपने जीवन की महान् भूल की है।

यह कैसे हो ? वह यही विचार कर रहा था। मां ने उसको चुप और गम्भीर देखकर पूछा, "क्या सोच रहे हो प्रेम ?"

"मां," प्रेम ने चेतनता प्राप्त करते हुए कहा, "ऐसे बाप का बेटा होने से मैं लज्जा से भूमि में धंसता हुआ अनुभव कर रहा हूं। मैं क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आता।"

"तुम, बेटा मेहनत और ईमानदारी से काम करो। अपनी ज्ञानवृद्धि में तल्लीन रहो। इसीसे ही तुम अपनी मान-मर्यादा को बना सकोगे।"

"तुम्हारे नाना, एक दुकानदार थे परन्तु जब स्वामी दयानन्द लाहौर में आये तो उनके व्याख्यानों को सुनने वहां से जाते रहे। पुण्यस्मृति महर्षि जी के प्रभाव से एक अनपढ़ हलवाई के मन में यह भावना जागी

कि उसने न केवल स्वयं पढ़ना आरम्भ किया प्रत्युत अपनी लड़की को
भी हिन्दी और संस्कृत पढ़ानी आरम्भ कर दी। तुम्हारे मामा यद्यपि
कुछ अधिक पढ़े नहीं, तथापि सोने का हृदय रखते हैं। वे यदि न होते
तो मैं आज से बहुत पहले ही रावी में डूबकर मर गई होती।"

"हमारी मुसीबत में जितना साहस और आत्म-विश्वास उन्होंने
मुझको दिया उसके लिए तुम्हें उनका आभारी होना चाहिये। इस समय
वही तुम्हारे पिता के तुल्य हैं और उनके व्यवहार पर तुम्हारा सिर अभि-
मान से ऊंचा होना चाहिए।"

प्रेम सब समझ गया। उसको मामा का उस दिन का मुख स्मरण
हो आया जब दस वर्ष पूर्व वह उसको और अपनी बहिन इन्द्रा को दुकान
की चौकी पर बिठा अन्दरसे खिला रहा था।

वह अपने मन में अपनी अवस्था को उन्नत करने का निश्चय कर
उठ पड़ा और बोला, "मां, विश्वास रखो तुम कि प्रेम के किसी काम पर
लज्जित नहीं होना पड़ेगा।"

वह मकान के नीचे उतर आया। उसका मामा दुकान के नीचे कहीं
जाने के लिए खड़ा था। ज्योति दुकान पर बैठा जलेबी निकाल रहा था।
प्रेम ने समीप आ झुककर मामा के पांव छुए और कहा, "मामा जी!
मुझको आशीर्वाद दो न।"

मामा प्रेम की इस बात से विस्मय में उसका मुख देखता रह गया।
पश्चात् मुस्कराकर पूछने लगा, "प्रेम, तुम्हारा विवाह हो रहा है क्या?"
ऊपर खिड़की में से प्रेम की मां यह देख रही थी। उसने कह दिया,
"हां भैया! आज नौकरी लगी है। अब विवाह भी तो करोगे ही।"

ज्योति ने जब सुना कि प्रेम की नौकरी लग गई है तो वह प्रसन्नता
से उतावला हो कूदकर दुकान से नीचे उतर आया और प्रेम को गले
लगाकर बोला, "प्रेम भैया, अब तो दावत होनी चाहिए।"

"हां, ठीक कहा है ज्योति ने।" प्रेम के मामा ने कहा। वह जहां
जा रहा था वहां जाना भूल गया और पास-पड़ोस के लोगों को आवाज

दे-देकर बुलाने लगा, ओ दीन भैया ! हो सन्तु बेटा ! अजी चौधरी गिरधारी ! आओ जी आओ ! प्रेम की नौकरी लगी है।"

लोग धीरे-धीरे आने लगे। गांव-भर में शोर मच गया और जो आता था पाव-भर जलेबी बधाई देने को पाता था। सब जलेबियां समाप्त हो गईं। ज्योति ने और बनाईं। वह भी समाप्त हो गईं। फिर सायंकाल और बनाईं।"

उस गांव वालों को पता चला कि चौदह वर्ष का बालक कानूगो नियुक्त हुआ है तो सब विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। जलेबी खाते और भगवान का गुणानुवाद करते जाते थे।

अगले दिन सफ़ेद धुले हुए कपड़े पहन प्रेम कानूगो के कार्यालय में गया और तहसीलदार की आज्ञा दिखा चार्ज मांगा। पहला कानूगो एक मुसलमान, करीमबख्श नाम का था, जो तीस वर्ष से वहां काम करता था। उसने बुढ़ापे के कारण काम से छुट्टी पाने की अर्जी दी हुई थी। आज एकाएक गांव के छोकरे को चार्ज देते समय, जहां उसे विस्मय हुआ वहां उसे खुशी भी। उसने उठकर प्रेम को गले लगाया और पीठ पर हाथ फेर कहा, "मैं यहीं गांव में ही रहूंगा। कुछ दिन मुझसे आकर काम सीख जाना बेटा ! यह काम तुमको सौंपते हुए आज मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस काम में तनख्वाह तो सिर्फ़ चालीस ही रुपये है, पर आमदनी, जितनी चाहो हो सकती है। खुदा करे जल्दी ही शाहदरा में एक आलीशान कोठी खड़ी हो और उसमें प्रेम बाबू अपनी छोटी-सी बीवी के साथ सुख और आनन्द से रहे।"

करीमबख्श ने प्रेमनाथ को काम बहुत अच्छी तरह समझाया। क़ानून, लगान, पैमायिश, दाखिल, ख़ारिज इत्यादि सब बातें बताईं। खेत के नक्शे समझाये। वह उसको अपने साथ बाहर ले गया और खेतों के झगड़ों में फ़ैसला करने की तरकीबें बताईं। इस प्रकार पुराने क़ानूगो ने नये क़ानूगो को अपनी गद्दी पर बैठा दिया।

साप्ताहिक रिपोर्ट तहसीलदार के पास जाने लगी और दूसरे-तीसरे

दिन प्रेम को तहसीलदार के इजलास में स्वयं भी उपस्थित होना पड़ता।

हर रोज़ मां प्रेमनाथ से पूछती, "बताओ बेटा! काम कैसा चल रहा है?"

"ठीक है मां! आज तहसीलदार साहब से मिलने गया था। वे मेरे कद और उमर का विचार कर तो मेरा मुख देखते रह जाते हैं। इस पर भी काम से पूरा सन्तोष प्रकट कर रहे हैं। आज मैंने कर्मु जुलाहे के झगड़े पर नक्शा और जिरह पेश की तो तहसीलदार ने मेरे कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "शाबाश प्रेमनाथ! तुम किसी दिन अपने बाप का नाम रोशन करोगे।"

मां इससे बहुत प्रसन्न हुई। उसने पूछा, "क्या झगड़ा था कर्मु का?"

'कर्मु के बाप का नाम मीरा था। उसकी दरिया के किनारे बीस बीघा ज़मीन थी। उसमें से चार बीघा के लगभग दरिया के नीचे आगई है। बाकी सोलह में कर्मु तीन भाई और बहिनें हैं। बहिनों ने अपना भाग विवाह के समय दाखल-खारिज करवा लिया था। दोनों ने तीन-तीन बीघा ऊंची ज़मीन ले ली है। बाकी दस बीघा में कर्मु कहता था कि उसको पांच बीघा ऊंची ज़मीन मिल जावे। मुकद्दमा तहसीलदार की अदालत में दो वर्ष से लटक रहा था। मैंने ज़मीन का मोल लगाकर साथ रुपये देने-लेने का हिसाब बना दिया। तीनों भाइयों को मंज़ूर हो-गया और तहसीलदार ने मुझको शाबाश दी।"

"बाबा करीम बख्श कहता था कि सौ रुपये आमदन का मुकद्दमा था।"

"तभी?" प्रेमनाथ की मां ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "कर्मु की बीवी कल आई थी। दो तरबूज और बीस रुपये लाई थी। मैंने पूछा यह कैसे हैं, तो कुछ उत्तर नहीं दे सकी। मैंने नहीं लिए, उसको वापिस भेज दिये थे।"

"मां, ठीक किया है तुमने। पर मुझको आज तहसीलदार का पेशकार कहता था, 'बाबू प्रेमनाथ! इस महीने तुम सरदार साहब को सलाम

करने नहीं आये ?"

मैंने कहा—"अभी कल ही तो अदालत में हाजिर हुआ था; आज भी आया हूं।"

पेशकार हंस पड़ा और मेरे कान में बोला, "हर जैल से सौ रुपया महीना आया करता है। भाई, पीछे न रहना, नहीं तो कुछ गड़बड़ हो सकती है।"

"पर मैं चालीस रुपये का मुलाजिम सौ रुपया कहां से लाऊंगा।"

"यह कर्मू से क्या लिया है ?"

"कुछ नहीं।"

"तो मूर्ख हो। एक सौ रुपये का काम था। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो इतने मुकद्दमों में, जितने तुमने एक महीने में निपटाये हैं, पांच सौ बनाता। चार सौ अपने पास रखता और एक सौ रुपया सरदार साहब की नज़र करता।"

मैंने कहा, "भैया मुझसे यह न हो सकेगा।"

"तो नौकरी कर चुके। कोई और काम ढूंढ़ लो।"

"मां, यह एक नई मुसीबत है। तुम क्या कहती हो ?"

मां ने प्रेम की आंखों में देखते हुए कहा, "क्या करना सोच रहे हो ?"

"मैं नौकरी छोड़ने का विचार कर रहा हूं। पर मां, बिना तुम्हारी आज्ञा के यह भी नहीं कर सकता। इस नौकरी के मिलने से पहले तीन महीने जो सड़कों की धूल छानी है, उसे मैं जन्म-भर नहीं भूल सकता। फिर तुम्हारी कठिनाई भी मुझको स्मरण है। क्या करूं कुछ समझ नहीं आता।"

मां ने प्रेम का माथा चूमकर उसको प्यार दिया। पश्चात् कहा, "प्रेम, मेरी चिन्ता न करो, मैं तो भगवान के सहारे इस मंझधार में पड़ी हुई हूं। घूंस कदापि न लेना। हां, एक बात करो, कल तहसीलदार के घर जाकर उसको सफ़ा कहदो कि यह तुम से नहीं हो सकेगा। यदि उसको

ज़बान में थथलाहट सुनना, या बल देखना तो घर आकर इस्तीफ़ा दे देना।"

मां की इस दृढ़ता को देख प्रेम का मन प्रसन्नता से उमड़ने लगा। उसने प्रसन्नता से उबलते हुए कहा, "मां, तुम विश्वास रखो, तुम्हारा प्रेम कोई ऐसी बात नहीं करेगा जिससे तुम्हारी शिक्षा पर कोई भी कलंक लगा सके।"

७

अमरनाथ ने प्रेम को नौकरी दे, घर जाकर एमिली को बताया कि उसने क्या किया है। एमिली ने तो यह समझ रखा था कि उसका पति अपनी पहली स्त्री से घृणा करता है। तभी तो न कभी उसे बुलाता है और न कभी उससे मिलने जाता है। परन्तु उसके लड़के को इस प्रकार नौकरी देते देख उसको संदेह होगया कि उसके हृदय के किसी छिपे कोने में अपने लड़के के लिए प्रेम विद्यमान है। उसने पूछा, "आपको इस प्रकार उससे रियायत करने की क्या आवश्यकता थी?"

"मैंने रियायत नहीं की। जितने भी प्रार्थी और थे उन सबसे यह लड़का अधिक योग्य और समझदार प्रतीत होता है।"

"यह कहना भी शायद रियायत ही प्रतीत होती है। अपनी वस्तु सबको भली प्रतीत होती है।"

"यह आज तुमको क्या होगया है एमिली! पहले तो तुम उसकी मां से मिलने के लिए बहुत ही लालायित प्रतीत होती थीं?"

"हां, और अब भी हूं। परन्तु मैं तो आपसे पूछ रही हूं कि तीन वर्ष से तो मेरी बात मानी नहीं। आज एकाएक कैसे उस लड़के पर दयालु हो पड़े? चौदह वर्ष के छोकरे को इतनी ज़िम्मेदारी की जगह दे दी।"

अमरनाथ इसका उत्तर देना नहीं चाहता था। वह चुप रहा और बात बदलकर बोला, "सोमनाथ कह रहा था कि उसके स्कूल का ड्रामा

हो रहा है और उसमें भाग लेने के लिए अपने खर्च में से विशेष पोशाक बनवा रहा है। उसको उसके लिये पचास रुपये चाहियें, तुम कल उसके स्कूल चली जाना और पता कर रुपये दे आना।"

एमिली समझ गई कि उसका पति अपनी पहली बीवी के विषय में बात करना नहीं चाहता, इससे वह चुप रही। अमरनाथ ने अपनी बात को जारी रखा जिससे एमिली पुनः प्रेम की बात न पूछ ले। उसने कहा, "आज लैफ्टिनेन्ट गवर्नर ने अपनी कोठीमें एक पार्टी देनी है। युद्ध के विषय में क्या-क्या करना चाहिये, इस विषय पर विचार हो रहा है। इस कारण जब तक मैं स्नान कर तैयार होता हूँ, तुम भी चलने के लिए कपड़े पहन लो।"

"मेरी आज वहाँ जाने की रुचि नहीं हो रही।"

"क्यों?"

"आज यहाँ कोई साहब मिलने आ रहे हैं।"

"कौन हैं वे?"

"बंगाल के एक विख्यात महात्मा हैं। निरूपानन्द जी सरस्वती एम० एस० सी०।"

"उनको फिर किसी दिन आने को कहा जा सकता है। गवर्नर की पार्टी से अनुपस्थित रहना ठीक नहीं होगा।"

"वह पंजाब के गवर्नर हैं, आप डिप्टीकमिश्नर हैं लाहौर के। पर मैं क्या हूँ? मेरे लिये वहाँ जाना क्यों ठीक है?"

"तुम एक अफ़सर की बीवी हो। एक अफ़सर की बीवी का उत्तर-दायित्व तुमको उसके साथ चलने को कहता है।"

एमिली यह सुन गंभीर विचार में पड़ गई। उसने कहा, "यद्यपि मैं यह अपना कर्त्तव्य नहीं समझती, तो भी आपके कहने से आपके साथ चलती। परन्तु मैंने बहुत मिन्नत कर स्वामीजी को आने के लिये मनाया है। वह बहुत ज्ञानी आदमी हैं।"

अमरनाथ यह देख रहा था कि एमिली दिन-प्रतिदिन इन साधुओं के

चक्कर में पड़ती जाती है। उसने स्वयं इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया था। वह आत्मा-परमात्मा, द्वैत-अद्वैत इत्यादि बातों को व्यर्थ का मस्तिष्क का व्यायाम मानता था। इस पर भी आज तक उसने एमिली की किसी बात को मना नहीं किया था।

आज वह चाहता था कि एमिली पूर्णरूप से शृंगार कर उसके साथ पार्टी में चले और सौन्दर्य से उसकी शोभा बढ़ाए, परन्तु एमिली को हठ करते देख उसने कहा, "यदि पार्टी पर नहीं चल सकतीं तो रात को 'वारफ़ंड' एकत्र करने के लिये बाल में तो चलोगी ?"

"हां, वहां चलूंगी। पर एक शर्त पर। आपने शराब नहीं पीनी होगी।"

"मैं पीकर अन्ट-सन्ट बोलने लगता हूं क्या ?"

"नहीं, यह बात नहीं। मुझको कुछ शराब पीने से अरुचि होती जाती है।"

"तो तुम नहीं पीना।"

"पर मुझको पीकर झूमते हुए के साथ चलने में लज्जा लगती है।"

"पर वहां तो सब पीते हैं।"

"इसी से तो कहती हूं कि आप वहां जाने वालों में सबसे श्रेष्ठ दिखाई दें। मेरी यही इच्छा है।"

"अजीब औरत हो तुम ? क्या तुम यह चाहती हो कि मैं सब अफ़सरों में भेंडू बनूं और सब मेरी हँसी उड़ायें ? और फिर दिनप्रतिदिन उन्नति करने के स्थान पर मेरी अवनति होने लगे ?"

"मैं ऐसा नहीं चाहती। परन्तु मुझको अचम्भा तो इसी बात का है कि बुरे काम करने वालों को आप दण्ड देते हैं और स्वयं ऐसे समाज में घूमते हैं जहां शराब पी मद-मस्त हो लोग दूसरे की बीवियों से नाच करते हैं और बेहूदा ढंग से एक-दूसरे से बातें करते हैं।"

"सब देशों में शासक-श्रेणी का रहन-सहन ऐसा ही है।"

"भगवान ही उनकी रक्षा करे।"

"तो तुम भगवान को मानने लगी हो ?"

"इसके बिना मुझको कोई मार्ग ही नहीं सूझता । आप बाल पर किस समय चलेंगे ?"

"रात साढ़े नौ बजे चलना होगा ।"

"मैं तैयार रहूँगी ।"

अमरनाथ गवर्नर की पार्टी पर गया ही था कि स्वामी निरूपानन्द और उनके दो शिष्य एक पचीस हज़ार की 'विल्लज नाइट गाड़ी' पर वहाँ आ पहुँचे ।

एमिली ने बंगले के बाहर आ स्वामीजी का स्वागत किया । उनको भीतर ड्राइंग रूम में ले गई । वहाँ बिठाया और चाय का प्रबन्ध करा दिया ।

चाय पीते-पीते स्वामीजी ने एमिली के जन्म से लेकर उस दिन तक की मुख्य-मुख्य बातों के विषय में पूछ-ताछ कर ली । एमिली ने बता दिया —

"वह बरमिंघम के एक धनी परिवार की लड़की है । उसने कैम्ब्रिज से ग्रेजुएशन किया है और पश्चात् वह लंदन में लॉ का अध्ययन कर रही थी कि उसकी मिस्टर चोपड़ा से भेंट हुई । दोनों के सम्पर्क में आने के कई कारण बनते गये और वे परस्पर प्रेम करने लगे । जब मिस्टर चोपड़ा आई० सी० एस० की परीक्षा में प्रथम आये तो दोनों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया । उस समय मिस्टर चोपड़ा ने नहीं बताया कि इनका एक विवाह पहले भारतवर्ष में होचुका है ।

"यह मुझको यहाँ आकर पता चल गया परन्तु मैं उनसे इतना प्रेम करती थी कि मैंने उनके इस झूठ को क्षमा कर दिया । मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि बाबू अमरनाथ और उनकी पहली बीवी में कुछ ऐसी बात है जो वे मुझसे छिपाते हैं । मैंने कई बार उनसे अपनी पहली बीवी को बुलाने को कहा है, पर वे, जब भी उसकी बात आती है, चुप कर जाते हैं । यह लुकाव-छिपाव मुझको पसन्द नहीं । इसके

अतिरिक्त मैं स्वयं भी विचार करती हूँ कि इस सम्पूर्ण जीवन का लाभ क्या है ? साहब रिश्वत नहीं लेते, यह विख्यात है। पर मैं यह भी जानती हूँ कि हमारे बंगले की पूर्ण सजावट का सामान, जो एक लाख रुपये से कम दाम का नहीं, उन लोगों की भेंट है जिनको वे अनुचित लाभ पहुँचाते रहे हैं।

"मैं जब किसी सभा-सोसाइटी में उनके साथ जाती हूँ तो लोग, उनको भेंट देने के स्थान मुझको भेंट देते हैं। अर्थात् मेरे द्वारा उनको घूंस देते हैं। प्रायः वे लोग उनसे काम बना ही लेते हैं।

"हमारे घर में जो आटा-दाल आता है वे लोग हमको उधार देते हैं और भगवान जानता है कि उधार बिना चुकाये ही जमा हो जाता है। यह सब जीवन मुझको पागल बनाये जा रहा है। इसी मन की अशान्ति को दूर करने का उपाय ढूंढ़ती-फिरती हूँ। इसी कारण आपकी शरण आई हूं।"

स्वामी निरूपानन्द इस कथा को सुन हैरान नहीं हुए। वे जानते थे कि बड़े अफ़सरों के घर कभी कोई ईमानदार पैदा हो जाये तब ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है। प्रायः तो ईमानदार आदमी नमक की खान में नमक बन जाने की भांति बेईमान हो ही जाता है और कभी ऐसा नहीं हो पाता तो घर में वैमनस्य और दुविधा उत्पन्न हो जाती है।

इस कारण स्वामी जी ने कहा, "देवी! तुम्हारी समस्या अति दुस्तर है। इस पर भी नदी में गिरे मनुष्य के लिये उसमें से बाहर निकलने के लिये यत्न करना अनिवार्य ही है। इसमें से बाहर निकलने के लिये दो ही मार्ग हैं। एक निवृत्ति का और दूसरा निर्लिप्तता का। निवृत्ति मार्ग तो है उसको छोड़कर बाहर आ जाओ। यह देखने में सुगम प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में इसको कर पाना अति कठिन है। दूसरा मार्ग है, निर्लिप्तता का। यह मन की एक भावना मात्र है। इसमें कमल रूप हो कीचड़ में रहने समान है। यह भावना तब बन सकती है, जब मनुष्य आत्मा को शरीर से पृथक् मानने लगे, और शरीर को आत्मा की प्रेरणा से चलाने

का अभ्यास कर ले।

"तुम जहां रहती हो, चारों ओर भ्रष्टाचार का वातावरण है, परन्तु आत्मा तो शरीर से पृथक् रहने के कारण, उस वातावरण से अलिप्त रह सकता है। निष्काम-भाव से कार्य करने पर अलिप्तता के भाव को पुष्टि मिलती है। साधु-संगत से अपने आत्मा को अपने वातावरण से अलिप्त रखो। कभी उस वातावरण में विचरना भी पड़े तो भी विना अपनी किसी कामना को लेकर जाओ, उसमें विचार से काम लो तो आत्मा को उस वातावरण से पृथक् रख सकोगी।

एमिली इस जीवन-मीमांसा से बहुत प्रभावित हुई। संसार माया है। स्वामी निरूपानन्द ने अपनी बात को और स्पष्टकर कहा, "इस माया में रत मनुष्य इससे मोह करने लगता है। जितना मोह अधिक होता है उतनी ही कठिनाई मनुष्य को उससे छुटकारा पाने में होती है।"

इस प्रकार की बातें रात के साढ़े आठ बजे तक चलती रहीं। पश्चात् भोजन के समय स्वामी जी विदा हुए।

इस शिक्षा ने एमिली के मन में क्रान्ति उत्पन्न करदी। वह समझ गई कि वर्तमान परिस्थिति से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है, 'संसार में निर्लेप हो विचरना।'

नौकरी

१

जर्मन का युद्ध अति भयंकर रूप धारण कर चुका था। हिन्दुस्तान से सिपाही फ्रांस के मोर्चे पर जा-जाकर मक्खियों की भांति मर रहे थे और भारत सरकार अधिकाधिक भर्ती करने में यत्नशील थी।

गवर्नर ने अपनी कोठी में सब बड़े-बड़े अफ़सरों और नगर के प्रसिद्ध रईसों को चाय-पार्टी दी थी। लाहौर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर चोपड़ा भी इस पार्टी में आये थे। आज मिस्टर चोपड़ा को अपनी अंग्रेज बीवी के बिना देखकर परिचित चिंता प्रकट कर रहे थे, "मिस्टर चोपड़ा, आज मिसेज नहीं आईं। तबीयत तो ठीक है ?"

"कुछ 'मैलन्कोलिया' की बीमारी हो रही है।"

"ओह ! बहुत ही भयंकर रोग है।"

"हां, रात-भर सोती नहीं। और कभी सोती हैं तो बहुत बड़बड़ाती रहती हैं।"

"चिकित्सा किस की चल रही है ?"

"एक संन्यासी हैं श्री निष्पानन्द। सुना है बहुत ही योग्य वैद्य हैं।"

"कब से चिकित्सा हो रही है।"

"अभी आज ही आरम्भ हुई है। कहते हैं बहुत शीघ्र स्वस्थ हो जाएंगी।"

चाय चल रही थी; कि गवर्नर महोदय उठकर उपस्थित नागरिकों और अधिकारियों को बताने लगे, "डीयर ऑफिसरज़, फ्रैण्ड्ज़ एण्ड लोयल सिटिज़न्स ! मेरा यह बहुत ही कटु कर्त्तव्य हो रहा है कि मैं आपको अपनी होम गवर्नमेंट की कठिनाइयों का वर्णन करूँ। जर्मन की पनडुब्बियों ने इंग्लैंड की भूमि का घेरा डाला हुआ है। आने-जाने वाले जहाज़ों को

निरन्तर डुबोया जा रहा है, और इसका परिणाम यह हो रहा है कि इंगलैंड के नर-नारी आधा पेट भर ही खा सकते हैं।

"इंगलैंड ने हिन्दुस्तान को जहालत से निकाला है। इस कारण हिन्दुस्तान इंगलैंड का अनन्तकाल तक कृतज्ञ रहेगा। मैं समझता हूं कि इस पृष्ठ-भूमि को समझकर आप उस ओर ध्यान दें तो आपको विश्वास आ जावेगा कि इंगलैंड को इस भीर के समय सहायता देना हिन्दुस्तान का कर्त्तव्य है।

"जर्मन एक पशुओं की कौम है। वे अपने फौजी बूटों के तले तमाम दुनिया को रौंद डालना चाहते हैं। इस समय जर्मनी को पराजय देना आज़ाद दुनिया की जीत करानी है। इन्सान को इन्सान बनाने के लिए इंगलैंड को इस युद्ध में सहायता देना एक बहुत ही पुण्य-कार्य है।"

पंजाब के गवर्नर सर माइकल ओर ड्वायर चाय-पार्टी में हिन्दुस्तान की जर्मन से युद्ध में सहायता मांग रहे थे। इस पर भी उनके प्रत्येक शब्द से यह गन्ध आ रही थी कि हिन्दुस्तान अंग्रेजों के अहसान में दबा हुआ है और उस अहसान के बदले में इसको अपना धन, जन, माल इंगलैंड के लिए देना चाहिये। इतना कहते-कहते गवर्नर बहादुर के कहने में कुछ बल आगया। वे कहने लगे, "इस समय एक बात मैं हिन्दुस्तानियों के मस्तिष्क में चित्रित कर देना चाहता हूं कि अमरीका से कुछ हिन्दुस्तानी इस आशा से यहां आ रहे हैं कि वे इंगलैंड को अपने घर की व्यवस्था रखने में व्यस्त देख, हिन्दुस्तान में विप्लव खड़ा कर दें। वे समझते हैं कि योरुप के युद्ध में लगे होने के कारण हमारी शक्ति यहां दुर्बल पड़ गई है। इन हिन्दुस्तानियों को समझ लेना चाहिए कि हम अब भी इतनी ताक़त रखते हैं कि इन मच्छरों को मामूली-सा बन्दूकों का धुआं दिखाकर उड़ा देंगे।

"मैं कृतज्ञ-प्रजा से यह अनुरोध करता हूं कि इन खटमलों को जहां देखे, कुचल डालने का यत्न करे।

आपको इंगलैंड की सहायता फ़ौजी भर्ती में वृद्धि कर करनी चाहिये।

हम चाहते तो इंगलिस्तान की भांति हिन्दुस्तान में भी सब नौजवानों को भर्ती हो जाने की आज्ञा कर देते, मगर यहां के लोगों की नेकनीयती और देशभक्ति का विचारकर हम आशा करते हैं कि स्वतन्त्रता से ही काफ़ी भर्ती हो जावेगी।

"सब ज़िलों के लिए हमने कोटा निश्चित कर दिया है। और ज़िला अधिकारियों को आज्ञा भेज दी है कि अपना-अपना कोटा पूरा करें। नागरिकों को चाहिये कि वे अपने-अपने ज़िला अधिकारियों की सहायता करें। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि पंजाब के सब जिले अपना अपना कोटा दो मास के अन्दर पूरा कर देंगे।"

पंजाब-गवर्नर के इस व्याख्यान पर सब हाल तालियों से गूंज उठा। पश्चात् 'गाड सेव दि किंग' बैंड ने बजाया और चाय-पार्टी समाप्त हुई।

पार्टी में आये हुए सब लोग यही अनुभव कर रहे थे कि यह भारत के लोगों के सामने प्रार्थना नहीं थी, प्रत्युत आज्ञा थी। यह प्रेरणा नहीं थी, प्रत्युत धमकी थी।

अमरनाथ हृदय से ऐसा ही विश्वास रखता था जैसा गवर्नर बहादुर ने अपने व्याख्यान में कहा था। अब वह मन में सोच रहा था कि भर्ती कराने में किस प्रकार यत्न करे।

जब वह घर पहुंचा तो स्वामी निरूपानन्द जा चुके थे। एमिली 'बाल' में जाने की तैयारी में लगी थी। उसने अपनी 'बाल' के लिये सबसे बढ़िया पोशाक निकाल कर बेरा को लोहा करने के लिये दे दी थी और पांव के जूते से लेकर सिर पर लगाने की पिन तक प्रत्येक पहरावे की देखभाल हो रही थी।

अमरनाथ ने पहुंचकर पूछा, "क्या हो रहा है ?

"आपने 'बाल' पर चलने के लिए कहा था न ? कपड़े ठीक करवा रही हूं।"

"थैंक यू ! आज वाले स्वामी जी कोई भी थे, भले आदमी प्रतीत होते हैं। वैराग्य की शिक्षा के स्थान नाच पर जाने की बात कह गये हैं।"

"हां, उनका कहना है कि संसार रूपी कीचड़ में कमल बनकर रहना चाहिये।"

"यह सब 'नान सैन्स' है। संसार ही एक सत्य है। खैर, छोड़ो इसको, भोजन को बताओ। यहां होगा या होटल में ?"

"डिनर करके चलेंगे। सप्पर होटल में लेंगे। बाई को कह दिया है कि बच्चों को सुला दे। हमें आने में देरी हो जावेगी।"

"वैरी गुड !"

इस समय कपड़े बैरा को देकर एमिली अमरनाथ के साथ बाहिर ड्राइंग रूम में आगई। वहां बैठते हुए उसने पूछा, "पार्टी में क्या हुआ था ?"

"गवर्नर बहादुर का व्याख्यान हुआ था। उन्होंने फ़ौज में भर्ती कराने के लिये आज्ञा दी है।"

"तो आप इस विषय में क्या कर रहे हैं ?"

"कल तक सरकारी तौर पर योजना पहुंचेगी। उसके अनुसार काम कराऊँगा।"

"आपको देहातों में घूम आना चाहिये। भर्ती तो वहां ही होगी।"

"मैं अभी एक बात सोच रहा था कि जिला के हर एक जेल में भर्ती करने का दफ़्तर खोल दूं और वहां पर लेक्चर दे-देकर लोगों को भर्ती होने की प्रेरणा दूं।"

"ठीक तो है। मैं आपके साथ चला करूंगी।"

"मैं भी तुम्हारे स्वामीजी से मिलना चाहता हूं। उन्होंने तुम में यह सब परिवर्तन कर मुझ पर भारी अहसान किया है।"

एमिली हंस पड़ी।

भोजनोपरान्त दोनों 'बाल' पर चले गए। रात को जब साहब बहादुर और एमिली लौटे तो घड़ी में दिन के साढ़े तीन बज रहे थे। एमिली थककर चूर हो रही थी और साहब शराब के नशे में चूर लुढ़कता हुआ भीतर आया था। दोनों पहुंचते ही बिस्तर पर सो गए।

२

भर्ती के लिये सरकारी योजना आने में और फिर उस योजना के चलाने के लिए साधनों के निर्माण में दो मास लग गये। इस योजना के सम्बन्ध में लाहौर के डिप्टी कमिश्नर ने तहसील के कार्यालय में तहसील-दारों, कानूगो और नम्बरदारों की एक सभा बुलाई थी। वहाँ पर जिले के बड़े साहब भर्ती की योजना समझाने वाले थे।

प्रेमनाथ को भी उपस्थित होने की आज्ञा मिली थी। साथ ही वह तहसीलदार से अपनी मां की आज्ञानुसार रिश्वत के विषय में बातचीत करने वाला था। उसने एक दिन पहले ही एक पत्र स्वयं इस आशय का तहसीलदार साहब को दिया था कि वह उनसे पन्द्रह मिनट के लिये प्राईवेट भेंट चाहता है। तहसीलदार सरदार सुन्दरसिंह प्रेमनाथ के काम से सब प्रकार से सन्तुष्ट था। केवल एक बात थी। जब से वह आया था उसकी आमदनी में एक सौ रुपया महीना की कमी हो गई थी। यह बात उसको खटकती थी और वह इस विषय में प्रेमनाथ को एक दिन बुलाकर समझाना चाहता था। अब उसको स्वयं ही पृथक् में मिलने के लिये आता देख उसने सन्तोष अनुभव किया।

जिस दिन जिला के कर्मचारियों की बैठक थी, उसी दिन प्रेमनाथ को भेंट के लिये बैठक से आधा घंटा पूर्व समय मिला।

डिप्टी कमिश्नर अभी नहीं आया था। इस कारण सभा का प्रबन्ध ठीक करके तहसीलदार प्रेमनाथ को साथ लेकर पृथक् कमरे में चला गया। वहाँ कुर्सी पर बैठ उससे पूछने लगा, "सुनाओ भाई, क्या चाहते हो ?"

प्रेमनाथ ने खड़े-खड़े ही कहना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "मुझको कई साथियों ने कहा है कि आपकी खिदमत में हर महीने कुछ नजर करनी चाहिए। मैं बिल्कुल अनजान हूँ। इस कारण मुझको इस बात का ज्ञान नहीं है। मुझको सरकार की तरफ़ से चालीस रुपया मासिक मिलते हैं और उससे अधिक कहाँ से लाऊँ, मैं नहीं जानता।"

तहसीलदार समझा था कि गांव के किसी झगड़े के विषय में बात-चीत करने आ रहा है और उसकी बात सुनकर वह स्वयं ही इस विषय में किसी ढंग से उसे समझायेगा, परन्तु उसको सीधे ही इस प्रकार की बात करते सुन वह भौंचक्का रह गया।

प्रेमनाथ उत्तर की प्रतीक्षा में सामने चुपचाप खड़ा रहा। तहसील-दार ने कहा, "प्रेमनाथ ! तुम्हारी आयु बहुत कम है। तुम दुनियादारी नहीं जानते। यद्यपि तुम्हारे काम से मैं प्रसन्न हूं, तो भी अनुभव करोगे कि एक अफ़सर को जिस ढंग से रहना होता है उसमें वह अपने वेतन म नहीं रह सकता। इस कारण कुछ-कुछ वेतन के अतिरिक्त आय करनी आवश्यक हो जाती है।

"तुम डिप्टी कमिश्नर साहब के खास आदमी हो इस कारण और तुम को अभी ऊपर से आमदनी करने का ढंग नहीं आता, इसलिये मैं अभी एक वर्ष तक तुमसे किसी प्रकार की आशा नहीं रखूंगा। इस पर भी तुमको जैसी दुनिया है, वैसा बनकर रहना होगा। अब तुम जा सकते हो।"

प्रेमनाथ बाहर निकल आया। वह सोच रहा था कि अभी एक वर्ष तक तो छुट्टी मिल गई। तब तक कहीं अन्य नौकरी ढूंढ़नी पड़ेगी। अन्यथा रिश्वत लेनी पड़ेगी। वह इसी चिन्ता में बाहर उस शामियाने के समीप जहां सभा होनी थी खड़ा था कि इस समय डिप्टी कमीश्नर साहब और उनकी स्त्री अपनी मोटर में वहां पहुंचे। मोटर से उतरें तो सब लोग झुक-झुककर सलाम कर रहे थे। प्रेमनाथ अपने विचारों में लीन डिप्टी कमिश्नर के आने से बेखबर, नाखून छीलता हुआ खड़ा था।

डिप्टी कमिश्नर ने प्रेमनाथ को, लोगों के पीछे किसी गम्भीर विचार में मग्न देखा और पहचान लिया। उसने एमिली के कान में कहा। एमिली ने भी प्रेम को देखा और पहचाना। उसको वहां सब उपस्थित लोगों से कम उमर का देख वह भी चकित रह गई। जब तक प्रेमनाथ को ज्ञान हुआ कि बड़ा साहब आ गया है और उसकी ओर देख

अपनी स्त्री से कुछ कह रहा है, वे दोनों तहसीलदार के कमरे की ओर चले गये थे।

तहसीलदार अभी भी वहां बैठा था जहां प्रेमनाथ से उसने भेंट की थी। डिप्टी कमिश्नर के आने की सूचना मिलते ही वह भागा हुआ आया; तब तक साहब और उनकी स्त्री कमरे के द्वार पर आ पहुंचे थे। वह उनको कमरे में ले गया और आदर से बैठाकर पानी इत्यादि पूछने लगा।

डिप्ट कमिश्नर ने कलाई पर बंधी सोने की घड़ी में समय देख कर कहा, अभी दस मिनट हैं। आपसे तब तक यहां बैठ ही बात करना चाहता हूं, पश्चात एमिली की ओर संकेत कर बोला, "इनके लिये 'सोडा' मंगवा दीजिये।"

तहसीलदार ने सब प्रबन्ध कर रखा था और क्लर्क को मेम साहिबा के लिये सोडा लाने के लिये कह दिया। डिप्टी कमिश्नर ने सबसे पहले प्रेमनाथ की ही बात चला दी। "कानूगो प्रेमनाथ का काम कैसा है?"

"लड़का होशियार है, पर अभी आयु कम होने से बचपन की बातें कर बैठता है। यह बात तो दो-तीन साल में ठीक हो जायेगी।"

"बचपन की क्या बात की है उसने?" डिप्टी कमिश्नर ने सतर्क हो पूछा।

"यही, अभी दस मिनट हुए आया था। कहने लगा कि वह रिश्वत नहीं ले सकता। इस कारण अफ़सरों को प्रसन्न करने में वह असमर्थ है। सब लोगों ने आपको और श्रीमतीजी को कुछ भेंट देने के लिये चन्दा किया था, ऐसा प्रतीत होता है कि वह उसमें कुछ दे नहीं सका।"

तहसीलदार ने अपने सौ रुपये महीने की बात टालकर जलसे पर भेंट की बात करदी। इसमें प्रेमनाथ ने दस रुपया चन्दा दिया था। इस पर भी डिप्टी कमिश्नर ने यह कह दिया। "ईमानदारी से बेईमानी करनी अधिक कठिन है। उसके लिये अधिक समझदारी और अनुभव की आवश्यकता है। वह अभी बच्चा है। उसकी बात की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।"

"हुजूर ! यह आपके किसी मित्र का सुपुत्र प्रतीत होता है ?"

एमिली हँस पड़ी। परन्तु उसने इस रहस्य को खोलना अपना कर्तव्य नहीं समझा। डिप्टी कमिश्नर ने यह कह, बात टाल दी, "हाँ, कुछ ऐसा ही समझ लेना चाहिए, मुझको इस लड़के की तरक्क़ी में रुचि है।"

बात समाप्त हो गई। तहसीलदार समझ गया कि इस लड़के को अधिक तंग करना उचित नहीं। इस पर भी वह विचार करता था कि इसको अपनी अवस्था में उन्नति करने के लिये चालीस रुपये पर सन्तोष करने से क्या हो सकेगा।

सभा हुई। सभा में साहब को जिले की ओर से एक चांदी की सन्दूकची और उसमें अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। अमरनाथ ने इस विषय में सबका धन्यवाद किया और सभा के असली प्रयोजन पर प्रकाश डाला। उस विषय में सरकारी योजना बताते हुए डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि सरकार ने यह निश्चय किया है कि प्रत्येक युवक को भर्ती कराने के लिये पचास रुपये भर्ती करने वाले अफ़सर को भी दिये जाएँगे।

सब ज़िलों में भर्ती के लिये इश्तिहार लगाने के लिये छप गये हैं। उन इश्तिहारों में लिखा गया है कि फ़ौज में भर्ती होने वाले को क्या लाभ होगा। अन्त में डिप्टी कमिश्नर बहादुर ने कहा कि वह आशा करता है कि ज़िला लाहौर में से तीन हज़ार युवक तीन महीने में भर्ती किये जायेंगे।

यह सभा बहुत बधाईयां और प्रसन्नता प्रकट करने पर समाप्त हुई। डिप्टी कमिश्नर और एमिली मोटर में सवार हो चले गये। प्रेमनाथ वैसे ही गम्भीर विचार में पूर्ण सभा की कार्यवाही सुनता रहा और वैसे ही गम्भीर भाव में सभा के पश्चात् खड़ा रहा। वह केवल यही विचार कर रहा था कि उसको शीघ्र ही किसी अन्य स्थान पर नौकरी ढूंढनी चाहिये। वह इस बेईमानी के अड्डे पर अधिक काल तक

रह नहीं सकता।

घर लौटते समय कामोकी के नम्बरदार और कानूगो उसके साथ थे। वे बहुत प्रसन्न थे। प्रेमनाथ सदा से अधिक गम्भीर था। शाहदरे का नम्बरदार टमटम की चौथी सवारी थी। उसने प्रेमनाथ को चुप देख पूछा, "बाबू, चुप क्यों हो ?"

"मुझको इसमें कोई खुशी की बात दिखाई नहीं देती।"

"वाह भाई !" कामोकी के नम्बरदार ने कहा, "मैं समझता हूं कि पांच सौ तो मैं भर्ती कराऊंगा और पचास रुपये फ़ी हिसाब से पच्चीस हज़ार रुपया कमाने का मौक़ा और कहां मिलेगा।"

पच्चीस हजार की बात सुन प्रेमनाथ के मुख से लार टपकने लगी, परन्तु युद्ध में भर्ती कर लोगों को भेजना उसको ऐसा प्रतीत हुआ जैसा 'बकरा-ईद' के लिये दल्लाल बकरों और भेड़ों की मंडी लगाते हैं। इस विचार पर उसके रोंगटे खड़े हो गये। वह आंखें मूंदकर आगे की ओर जिधर टमटम जा रही थी, मुख किये बैठा रहा। शाहदरा के मोड़ पर प्रेमनाथ और नम्बरदार उतर पड़े और टमटम आगे को चल पड़ी। उसमें कामोकी का कानूगो और नम्बरदार ऊंचे-ऊंचे बातें करते हुए चले गये।

३

प्रेमनाथ ने तहसीलदार से हुई सब बातें अपनी मां से कह दीं। मां ने बिना विचारे कह दिया, "प्रेम, नौकरी कहीं और ढूंढ़नी पड़ेगी।"

"मां ! एक और झगड़ा खड़ा हुआ है। युद्ध के लिये सिपाहियों की भर्ती भी हमारे द्वारा होगी और इसमें लोगों को तैयार करने के लिये हमको प्रत्येक आदमी के पीछे पचास रुपये मिलेंगे।"

"यह तो ठीक ही है। तुम अपनी ओर से किसी को मत कहना, पर जो स्वयं भर्ती होने के लिये आए उसको करा देना।"

"अपने-आप कौन आएगा, मां ?"

"नहीं आएगा तो न सही।"

"पर ज़िला-भर के सब कानूगो का मुकाबिला होगा, जो सबसे ज्यादा भर्ती करायेगा, उसको बढ़िया समझा जायेगा।"

"बेटा, तुम घटिया ही रहना। तुम को यहां इस महकमें में नौकरी नहीं करनी।"

मां को इतनी दृढ़ता से कहते देख उसका हृदय साहस से भर गया। वह उन्नति के अन्य साधन ढूंढने लगा।

अगले दिन बड़े-बड़े और सुन्दर छपे हुए पोस्टर उसके पास पहुंच गये। उसने वे अपने कार्यालय के सन्मुख, थाने के सामने और सरकारी हस्पताल के बाहिर लगवा दिये। इश्तिहार लगते ही लोगों की भीड़ लगने लगी। उसको दिन में कई बार पढ़कर सुनाना पड़ता था। इश्तिहार में लिखा था—

"शाहनशाह मुअज्जम इंग्लिस्तान के हुक्म से यह एलान किया जाता है कि जर्मनी के साथ लड़ाई लड़कर इन्सानियत और जम्हूरियत की हिफ़ाजत होगी। इसलिये हिन्दुस्तान के हर नौजवान से यह तवक्को की जाती है कि वह इस वक्त अपने मादरे-वतन की खिदमत के लिये कमर बस्ता हो जाय और जंग में हिस्सा लेने के लिये फौज में भर्ती हो जाय।"

"हर एक हुब्बे-वतन से यह उम्मीद करना कुछ भी ज्यादा नहीं कि वह खून के हर कतरे को मादरे-वतन की खिदमत में लगा दे।"

"यह वक्त बहुत नाजुक है और इस वक्त का चूका हुआ शायद एक सदी के हेर-फेर में पड़ जायेगा।"

'ऐ हिन्दुस्तानी नौजवानो! आओ, फ़ौज में भर्ती हो जाओ। तन्ख्वाह, भत्ता, पोशाक, खुराक, बहादुरी दिखाने पर इनामात, तमगे और ज़मीन मिलेगी।"

भर्ती होने के लिये यहां पर नाम लिखाओ। जिन्दगी का लुत्फ़ उठाने के लिये यही तरीका है।" बहुक्म

ए० एन० चोपड़ा आई० सी० एस०

इन इश्तिहारों को लगे कई दिन हो चुके थे। कुछ गरीब लोग लालच में फंसकर अपना नाम लिखा गये। प्रेमनाथ ने बिना किसी प्रेरणा के उनका नाम लिख लिया और एक दिन उनको तहसीलदार के कार्यालय में और वहां से चिट्ठी लेकर जिला कचहरी और वहां से फ़ौजी भर्ती के कार्यालय में ले गया। प्रति सप्ताह बिना किसी प्रकार का प्रयत्न किये भी आठ-दस आदमियों को भर्ती कराने के लिये प्रेमनाथ को शहर जाना पड़ता था। पहले महीने ही प्रेमनाथ को चालीस आदमी भर्ती कराने के कारण दो हज़ार रुपया मिला। दो हज़ार में से चुपचाप तहसीलदार के पेशकार ने पांच सौ रुपये रख लिये। इस पर भी पन्द्रह सौ रुपये एक ऐसी रकम थी कि जिसको वह अपनी नहीं समझता था। रुपया लेकर आया तो मां के सामने रखकर बोला, "मां, यह मिला है।"

"कहां से ?"

"भर्ती के दफ़तर से।"

"किसलिये ?"

"लोगों को फ़ौज में भर्ती कराने के बदले में।"

"कितना है ?"

"पन्द्रह सौ रुपया।"

"बेटा, इसको इन्द्रा के विवाह के लिये रख छोड़ो।"

"पर मां···।"

"क्यों ? क्या है बेटा !"

"मुझको यह रुपया नर-रक्त में रंगा प्रतीत होता है।"

"पर तुमने तो किसी को भर्ती होने के लिये कहा नहीं। तुम भर्ती न करते तो वे थाने में जाकर भर्ती हो जाते।"

"ठीक है मां ! पर मैं जानता हूं कि ये सब जीते वापिस नहीं आएंगे। कई लंगड़े-लूले होकर आएंगे।"

"पर इसमें तुम्हारा क्या कसूर है। देखो बेटा ! लड़ाई लड़ना यह किसी एक का काम नहीं। इसका उत्तरदायित्व भी तुम पर नहीं है।

फिर भी यह तो है ही कि जब लड़ाई होती है, बहादुर लड़ने वाले जाते ही हैं। यदि प्रत्येक यह देखने लगे कि लड़ाई में लोग मरते हैं तो लड़ाई आरम्भ करने वाले बदमाशों की बन जाए। शरीफ़ लोग मारे जाएं और फिर दास बना लिए जाएं।"

"देखो न, लंका के युद्ध में कितने मारे गए थे। स्त्री तो राम की चुराई गई थी पर लड़ने-मरने वाले असंख्य वानर, भालू और अन्य जातियों के लोग थे। इस प्रकार नर-रक्त देखकर डरने वालों के लिये संसार नहीं है।"

यह एक नई बात थी। प्रेमनाथ ने इस प्रश्न को इस दृष्टिकोण से देखा ही नहीं था। यद्यपि वह यह नहीं समझा था कि उसको पन्द्रह सौ क्यों मिला है। इस पर भी भर्ती करने की बुराई का विचार उसके मस्तिष्क से निकल गया।

वह अपने कार्यालय में बैठा खसरा में दाखल-खारिज कर रहा था कि कुछ युवक, जो किसी कालेज के विद्यार्थी प्रतीत होते थे, गांव में घूमते हुए आये और भर्ती के पोस्टर पढ़ने लगे। जहांगीर का मकबरा समीप होने के कारण सैर करने वाले लोग प्रायः गांव देखने चले आते थे। धर्मशाला के कुएं से पानी पीकर हलवाई की दुकान से जलेबी खा-कर घूम-घामकर चले जाया करते थे।

आज ये युवक पोस्टर पढ़कर परस्पर हँसी-मजाक करने लगे। प्रेम-नाथ की दृष्टि उनकी ओर गई तो वे युवक एक सुकुमार बालक को देखकर समझे कि इसका पिता वहां नौकर होगा और वह लड़का वहां बैठ अपने स्कूल का सबक याद कर रहा है। एक युवक ने कार्यालय में आकर पूछा, "तुम्हारे पिता कहां हैं ?"

"वह नहीं हैं।" इसका अर्थ वे समझे कि कहीं गये हुए हैं।

"तुम यहां क्या रहे हो ?"

"दफ़्तर का काम कर रहा हूं।"

"क्या काम करते हो ?"

"मैं यहाँ के जेल का कानूगो हूँ।"

"ओह ! तुम कानूगो हो और तुम्हारे बाप क्या हैं ?"

"कहा तो है कि वे नहीं हैं।"

अब लड़कों को समझ आई कि नहीं हैं का अर्थ है कि देहान्त हो गया है। इससे शोकातुर मुख बना कहने लगे, "यह भर्ती भी तुम करते हो ?"

"जी हां," प्रेमनाथ समझ गया था कि ये लोग उसकी कम आयु के कारण हँसी उड़ाना चाहते हैं। इसका उसे अभ्यास हो गया था। इस कारण उसने गम्भीर हो उनकी ओर देखना उचित समझा।

इस पर एक युवक जो सिर से नंगा था, कहने लगा, "मैं भी भर्ती हो सकता हूं क्या ?"

"मैं तो न नहीं कर सकता। आप इतने कोमल प्रतीत होते हैं, कि फ़ौजी अफ़सर आपको अस्वीकार कर देगा। आप की ऊँचाई भी कम है।"

इस पर एक और बोल उठा, "आपको इस काम का क्या मिलता है ?"

"पचास रुपये प्रत्येक भर्ती हुए पुरुष के लिए।"

"यह मनुष्यों की बिक्री की दलाली नहीं है क्या ?"

"मैं रुपये लेने नहीं जाता। मैं रुपयों के लिये काम नहीं करता। मैं तो सरकार का काम करने के लिये नौकर हूँ। जो कुछ मिलता है, वह उस नियम से मिलता है जो सरकार ने बनाया है।"

"इस पर भी है तो मनुष्यों की बिक्री ही ?"

"किसी अच्छे काम के लिये मनुष्यों की भर्ती करना उनकी बिक्री कैसे हुई ? युद्ध तो कौमों की हार-जीत के लिये लड़े जाते हैं ?"

"पर किस की हार और किसकी जीत ?"

"जर्मन की हार और अंग्रजों की जीत और किसकी ?"

"अंग्रेजों से हमारा क्या सम्बन्ध है, उनकी जीत के लिये हम क्यों

लड़ूँ ?"

"इसलिये कि अंग्रेज यहां राज्य करते हैं ?"

"इनका राज्य हटाना नहीं है क्या ?"

प्रेमनाथ को याद आ गया कि अंग्रेजों ने अपना राज्य बनाये रखने के लिये हिन्दुस्तानियों पर बहुत अत्याचार किये थे। इससे वह कुछ सोचने लगा। पश्चात् कहने लगा, "आप ठीक कहते हैं कि अंग्रेजों का राज्य हटाना है पर जर्मन की जीत से और अंग्रेजों की हार से हिन्दुस्तान का क्या होगा ? मैं नहीं जानता। मुझको जर्मन के विषय में कुछ पता नहीं, इससे मैं कैसे कह दूं कि जर्मन की जीत से हमारा राज्य हो जाएगा और फिर यह मेरे सोचने का विषय नहीं।"

"तो किसका है ?"

"किसी बड़े विद्वान् का। मैं तो केवल दसवीं जमायत पास हूं।"

सब हंस पड़े। इस पर भी वह आदमी जो प्रेमनाथ से बातचीत कर रहा था, उसकी युक्तियुक्त और विषयान्तर्गत् बात से प्रभावित हुआ था।

सब लोग चल पड़े परन्तु उसने प्रेम से पूछा, "कभी लाहौर आते हो ?"

"सप्ताह में दो-तीन बार जाना पड़ता है।"

"मेरा नाम दीनानाथ है। मेरा पता यह है। कभी मुझसे मिलना।" इतना कह उसने अपना कार्ड दे दिया और अपने साथियों के साथ चल पड़ा।

प्रेमनाथ आज के वार्त्तालाप से विचारों में पड़ गया। उसके सामने यह प्रश्न बन गया था, कि क्या अंग्रेजों का राज्य नहीं हटाना ? इस प्रश्न ने उसमें कई विचार उत्पन्न कर दिये।

वह सोचने लगा था, जब राम ने लंका पर आक्रमण किया था तो राम ने सुग्रीव, अंगद, हनुमान आदि की सहायता उचित समझी थी। उस समय सुग्रीव राजा नहीं था। राजा था बाली। इस कारण बाली से सहायता मांगी जाती तो बहुत जल्दी सीता वापिस आ जाती, पर राम ने

बाली से सहायता नहीं ली। कारण यह था कि बाली सबल और योग्य होते हुए भी ठीक आचरण का आदमी नहीं था। इस कारण रावण की हत्या कर पुनः एक आचरणहीन ही को राज्य पर बैठा देने से ही समस्या सुलझ नहीं सकती थी। अनाचारों पर चरित्रवानों का राज्य होना चाहिये था। इस मार्ग पर चलने से ही सीता जैसी स्त्रियों के अपहरण की समस्या सुलझाई जा सकती थी।

वह सोचता था कि यह ठीक है कि अंग्रेजों ने भारत पर अपना अनधिकृत-राज्य जमा रखा है परन्तु क्या अंग्रेजों को हटाकर जर्मनों का राज्य स्थापित करने से भारत की दासता कम हो जाएगी ?

इतना विचारकर उसने दीनानाथ से मिलने का विचार मन से निकाल दिया। वह जब लाहौर जाता था तो कभी-कभी उर्दू का हिन्दुस्तान समाचार-पत्र लेकर पढ़ा करता था और उससे अंग्रेजों की हार के समाचार मिलते रहते थे। इनसे उसके मस्तिष्क में अनेकों प्रकार के विचार उत्पन्न हुआ करते थे। उसकी इच्छा रहती थी कि वह यदि और अधिक पढ़ा होता और उसके पास और अधिक जानने के साधन होते तो वह मन में उठ रहे प्रश्नों का उत्तर पा सकता। वह अपनी परिस्थितियों से विवश था।

४

लाहौर से शाहदरा आने का एक और मार्ग था। मस्ती दरवाजे से निकलकर बादामी बाग़ के स्टेशन के आगे से होते हुए रेल की सड़क के साथ-साथ वृद्ध रावी का पुल पारकर जंगल में से होते हुए एक कच्ची सड़क थी जो रेल के पुल से पौन मील ऊपर जाकर रावी नदी को नौका से पारकर शाहदरा गांव को जाती थी। कभी प्रेमनाथ टमटम का खर्चा बचाना चाहता और उसके पास पैदल जाने के लिए समय होता तो वह इस मार्ग से गांव को अथवा गांव से नगर को जाया करता था। नदी पार करने के लिए नाव प्रातः छः बजे से रात सूर्यास्त तक चलती रहती थी।

एक दिन तहसीलदार ने ज़िला-भर के भर्ती करने वाले अफ़सरों की एक सभा, राजा साहब शेख़ुपुरा के महल में बुलाई थी। प्रेमनाथ सभा से सायं ६ बजे की छुट्टी पा गया था। राजा साहब का महल मस्ती दरवाज़े के समीप था और वहां से पैदल मार्ग ही समीप पड़ता था। इससे वह सभा से छुट्टी पाते ही लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ जंगल के मार्ग से नाव के घाट की ओर चल पड़ा।

वृद्ध रावी का पुल पारकर ज्यों-ही वह जंगल में घुसा कि उसको स्थान का अकेलापन खटकने लगा। यह भय पहले उसके मन में कभी नहीं आया था। आज ऐसा क्यों हुआ वह समझ नहीं सका।

जब कुछ दूर जंगल में चला गया तो कुछ-कुछ अंधेरा होगया। उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके पीछे सूखे पत्तों पर किसी के चलने का शब्द हो रहा है। वह खड़ा हो पीछे घूम देखने लगा। उसे कोई दिखाई नहीं दिया। इससे उसने मन में विचार किया कि उसको भागकर उस स्थान से नदी-किनारे पहुँच जाना चाहिये। इसके लिये जब उसने मुख आगे को किया तो दो आदमी, जिन्होंने अपने मुख पर पगड़ी ऐसे लपेटी हुई थी कि सिवाय आंखों के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था, हाथ में बरछे लिये आगे का मार्ग रोककर खड़े दिखाई दिये।

प्रेमनाथ का हृदय धक-धक करने लगा। इस पर भी मन को दृढ़कर पूछने लगा, "क्या चाहते हो ?"

"जो कुछ तुम्हारे पास है निकाल दो।"

"मेरे पास नौका का भाड़ा, दो पैसे के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।" इतना कहते हुए उसने अपने कुर्ते की जेब में हाथ डालकर दो पैसे निकाले और उनको दिखाने लगा।

इस पर एक ने कहा, "हमको विश्वास नहीं आता। तुमको आज सभा में भर्ती कराने का एलाउंस मिलने वाला था। हमें पता चला है कि अढ़ाई हज़ार रुपया मिलना चाहिये था।"

बात बिल्कुल ठीक थी परन्तु रुपया नहीं बांटा गया था। चैक दिये

गए थे। अपने चैक पर हस्ताक्षर कर प्रेमनाथ तहसील के मुन्शी को दे आया था। इस पर भी इन लोगों की इतनी जानकारी को देख विस्मय में बोला, "आप मेरी तलाशी ले सकते हैं। मुझको रुपया मिलने वाला था अवश्य परन्तु मिला नहीं।"

इस उत्तर पर वे दोनों अनिश्चिल-मन प्रेमनाथ का मुख देखते रह गये। इस समय दो आदमी और उसी प्रकार पगड़ी बाँधे पेड़ों के पीछे से निकल आये और प्रेमनाथ के पीछे खड़े हो गये इस समय उन चारों में से जो दूसरों का नेता प्रतीत होता था, कहने लगा, "यद्यपि इसका उत्तर ठीक प्रतीत होता है तो भी इसकी तलाशी ले लेनी चाहिये।"

इस आज्ञा के मिलते ही दो आदमियों ने प्रेमनाथ के हाथों को पकड़ लिया और एक ने उसकी जेबें देख डालीं। प्रेमनाथ के पास उस दिन दो पैसे ही थे इससे उनको बहुत निराशा हुई और उसी ने जो नेता प्रतीत होता था, कहा—"प्रेमनाथ, अब तुम थाने में रिपोर्ट कर देना कि डाकुओं ने तुमको घेर लिया था और तलाशी ली थी तो केवल दो पैसे जेब में देख तुमको छोड़ दिया।"

प्रेमनाथ चुप था, उसका हृदय धक-धक कर रहा। वह अभी भी अपने को सुरक्षित नहीं पाता था। उसके मन में यह था, कि ये लोग अपना भेद छिपाये रखने के लिये उसको जंगल में ले जाएँगे और मार डालेंगे। परन्तु नेता ने अपने साथियों को कहा, "इसको जाने दो।"

प्रेमनाथ छूट तो गया और वह शीघ्रातिशीघ्र नदी के किनारे पहुँचने के लिये लगभग भागने लगा, परन्तु उसका मस्तिष्क उन डाकुओं के नेता की आवाज़ से कुछ जाना-पहचाना-सा अनुभव कर रहा था। फिर उसने उसका नाम भी लिया था। इससे प्रेमनाथ को विश्वास-सा हो गया कि ये लोग उसको बहुत भली-भाँति जानते हैं। इस पर भी उसका मस्तिष्क तब तक काम नहीं कर सका जब तक कि वह नदी पार करने के लिये नाव में आराम से बैठ नदी की ठंडी मन्द-मन्द चलती हवा को अनुभव नहीं करने लगा था। नाविक कानूगो बाबू को भली-भाँति

पहचानते थे। उसको हाँफते देख कहने लगे, "बाबू, भागकर आने की क्या आवश्यकता थी।" तुम तो हमको रात के बारह बजे भी कहते तो नाव चला देते।"

"फिर भी मैंने सोचा कि अन्तिम नाव के समय पहुँच जाऊँ तो अच्छा है।"

जब नाव नदी के मध्य में पहुँची, तो निश्चित हो प्रेमनाथ डाकुओं के नेता की आवाज को पहचानने का यत्न करने लगा। इस समय उसको स्मरण हो आया। यह आवाज़ उन युवकों में से उसकी थी जो एक मास से ऊपर हुआ, उससे भर्ती के विषय में बातचीत करता रहा था और जिसने अपना नाम दीनानाथ बताया था।

इस विचार के आते ही वह दीनानाथ की शक्ल-सूरत के आदमी को मुख पर पगड़ी बाँध सामने खड़े होने का चित्र मन में बनाने लगा। ज्यूँ-ज्यूँ वह इस प्रकार विचार करता था उसको अपनी स्मरण-शक्ति पर विश्वास होता जाता था।

रात-भर वह सो नहीं सका। वह सोचता था कि क्या पढ़े-लिखे लोग भी डाके डाल सकते हैं ? उसके विचार में तो यह काम अनपढ़, गँवारों और मूर्खों का है।

अगले दिन उसको लाहौर जाना था और भर्ती कराने का रुपया वसूल करना था। इस कारण उसने विचार किया कि अपना संशय निवारण करने के लिये दीनानाथ से मिलने का यत्न करना चाहिये।

उसने अपनी माँ से भी पूर्ण कथा और अपने मन का संशय वर्णन कर दिया। माँ उसको सुनकर बहुत चिन्ता में पड़ गई। कितनी ही देर तक वह विचार करती रही। एकाएक उसको एक विचार आया। उसने कहा, "प्रेम, तुम कहते हो कि दीनानाथ कोई पढ़ा-लिखा युवक प्रतीत होता है।"

"हाँ माँ ! कपड़ों से अथवा उसके बात करने के ढंग से यही प्रतीत होता था।"

५

प्रेमनाथ अढ़ाई हज़ार रुपयों में से पाँच सौ तहसीलदार के मुन्शी के पास छोड़ शेष दो सहस्र रुपये के नोट जेब में डाल दीनानाथ की खोज में निकल पड़ा। उसने पता दिया था 'कुतुब फ़रोश-सूत्र मंडी बाज़ार'।

दीनानाथ दुकान पर बैठा हुआ था। प्रेमनाथ ने नमस्ते की और सामने जा खड़ा हुआ। दीनानाथ प्रेमनाथ को आया देख विस्मय में उस का मुख देखने लगा। प्रेमनाथ ने उसकी ओर मुस्कराकर देखते हुए कहा, "आपने मुझको पहचाना नहीं ?"

"पहचाना ? हाँ ! पहचाना है। तुम शाहदरा के कानूगो हो।"

"हाँ ! तो बैठने को नहीं कहिएगा। आपने मुझको मिलने को कहा था न ?"

"हाँ, याद आ गया है। बैठिए।" दीनानाथ ने दुकान में जगह बनाते हुए कहा। "उस दिन तुमने यह कहा था, कि यह सोचना कि इस युद्ध में जर्मन को सहायता देनी चाहिये अथवा अंग्रेजों को, एक विद्वान् आदमी का काम है। मैंने तुमको एक पुस्तक देने के लिए यहां बुलाया है। तुम क्या पढ़े हो ? हिन्दी, उर्दू अथवा अंग्रेजी ?"

"मैं तीनों ही भाषायें पढ़ा हूँ। हिन्दी अपनी माँ से पढ़ा हूं। और उर्दू, अंग्रेजी स्कूल में।"

"तो मेरे पास एक किताब है, 'ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' एक अंग्रेज लेखक की ही लिखी है। मैं चाहता हूँ कि तुम उसको पढ़ो।"

"क्या दाम है उसका ?"

"दाम तो तीन रुपये हैं। पर मैं तुमको पढ़ने के लिए दे देता हूँ। पढ़कर दे जाना।"

"धन्यवाद ! मैं वचन देता हूँ कि समाप्त करते ही दे दूंगा। मेरे पास फ़ालतू रुपए हैं भी नहीं। चालीस रुपये में, मुश्किल से रोटी-कपड़े का गुज़र होता ह।"

"और यह जो हज़ारों रुपए भर्ती कराने में मिलते हैं ?"

"यह रुपये मैं अपने नहीं समझता। जैसे आये हैं वैसे ही किसी पुण्य कार्य में लगाने का विचार रखता हूं।"

इतना कह प्रेमनाथ, ध्यान से दीनानाथ के मुख की ओर देखने लगा। आवाज़ से और उसकी आंखों से जो पिछले दिन लपेटी पगड़ी में से दिखाई दे रही थीं वह निश्चय पर पहुंच चुका था कि वह कल के डाकू के सामने बैठा है। अब उसने उसकी आंखों की ओर देखा तो दीनानाथ की आंखें झुक गईं। प्रेमनाथ को अपने अनुमान पर विश्वास हो गया। उसने दीनानाथ के मन में छुपी बात निकालने के लिए कह दिया, "देखिये दीनानाथ जी! हम गरीब आदमी हैं। जिस दिन मेरी नौकरी लगी थी, हमारे पास खाने के लिए एक छटांक भी अन्न नहीं था। मां मेहनत करते-करते थककर चूर हो चुकी थी। उस समय भगवान ने सहायता की और मैं इतनी कम आयु का होता हुआ भी नौकरी पा गया।"

"इस पर भी मैंने निश्चय किया था कि परमात्मा ने जो दिया है उसी पर सन्तोष करूंगा और आज नौकर हुए पांच मास से ऊपर हो गए हैं, मैंने एक पैसा भी रिश्वत का नहीं लिया। मेरे साथी दूसरे कानूगो पांच-सात सौ रुपया महीना कमाते हैं। मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि मैंने यह नहीं किया। अब तक तीन किश्तें भर्ती कराने की पा चुका हूं। पहली दो किश्तों का तीन हज़ार रुपया मैंने मां के चरणों में रखा तो उन्होंने बहन इन्द्रा के विवाह के लिए रख लिया था। अब तीसरी किश्त आने लगी तो फिर मां से पूछा था कि इसका क्या होगा। मां का कहना था कि इन्द्रा के विवाह के लिए काफ़ी हो गया है। अभी हम यह विचार नहीं कर सके हैं कि यह रुपया कहां दें, कि कल एक घटना हो गई।"

"मैं कल शाहदरा जा रहा था कि मार्ग में डाकुओं ने घेर लिया। उनको किसी प्रकार यह सूचना मिल गई थी कि मुझ को अढ़ाई हज़ार रुपया मिलना है और यह समझ कि रुपया जेब में लिए जा रहा हूं,

मुझको पकड़ लिया। उस समय रुपया मेरे पास नहीं था। उनको मेरी तलाशी लेने पर पता चल गया कि मेरी जेब में दो पैसे हैं। उन्होंने मुझको छोड़ दिया।"

"मैं रात-भर सोचता रहा हूँ कि भगवान् जाने उनको क्या आवश्यकता पड़ी थी कि डाका डालने पर उद्यत हो गए थे। यदि उनकी आवश्यकता ऐसी है कि उनको रुपया मिलना ही चाहिए तो मैं रुपया उनको देने का निश्चय कर बैठा हूँ। यह रुपया मुझको आज मिला है। अढाई हजार नहीं दो हजार रुपया है। पाँच सौ तहसीलदार साहब का भाग था वह उन्होंने ले लिया है। मैं मन में विचार कर रहा हूं कि किस प्रकार उन डाकुओं से मिलूं और उनकी आवश्यकता को जानूं, जिससे यदि मन ने माना तो रुपया उनको दे दूं।"

इतना कह प्रेमनाथ दीनानाथ का मुख देखने लगा। दीनानाथ का मुख पीला पड़ गया था। उसकी आँखें जमीन पर गढ़ गई थीं और उसके हाथ काँपते हुए धोती के किनारे की बट्टियाँ वट रहे थे। प्रेमनाथ को गरीबी ने बहुत बातें सिखा दी थीं। इससे उसको यह विश्वास हो गया कि दीनानाथ समझ गया है कि उसका भेद खुल गया है। वह दीनानाथ के बोलने की प्रतीक्षा करता हुआ उसका मुख देखने लगा। कितनी देर तक वह दीनानाथ के बोलने की प्रतीक्षा करता रहा। दीनानाथ के होंठ फड़कते थे पर उसके मुख से आवाज नहीं निकलती थी। बहुत यत्न कर दीनानाथ ने दुकान के भीतर खड़े नौकर को धीरे से कहा, "एक गिलास पानी लाओ।"

पानी आया, दीनानाथ ने पिया और इस प्रकार गला साफ़ कर उसने कहा, "भाई प्रेमनाथ ! उन डाकुओं को कुछ नहीं देना चाहिए। वे ठीक आदमी नहीं हो सकते।"

इस पर प्रेमनाथ ने उसको अपनी माँ की आपबीती सुना दी और कहा, "कभी मुसीबत में भले लोग भी बुरे काम करने पर विवश हो जाते हैं। मैं सोचता था कि क्या जाने उनकी भी कोई ऐसी आवश्यकता

हो। हम दुखिया हैं और हमको दूसरों के दुःख यथाशक्ति स्वयं निवारण करने का प्रयत्न करना चाहिये।"

दीनानाथ की आंखों में तरलता आने लगी थी। वह उठ खड़ा हुआ और प्रेमनाथ से बोला, "गाँव जा रहे हो क्या?"

"मैं उन डाकुओं को ढूँढ़ने निकला हूँ।"

"चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।" उसने अपने नौकर को कहा, "तुम बैठो, मैं तीन घण्टे में लौट आऊँगा।"

वह प्रेमनाथ को लेकर मस्ती दरवाजे की ओर चल पड़ा। प्रेमनाथ ने समझा कि वह उसको रुपया दिलवाने ले जा रहा है। इस कारण वह चुपचाप चल पड़ा। दोनों सूतर मण्डी से गुमटी बाजार और वहाँ से लंगे मण्डी, पश्चात् वाटरवर्क्स के पीछे होकर सुथरों की धर्मशाला के पास से परेड ग्राउण्ड में से होते हुए बादामी बाग़ स्टेशन के सामने से गुज़र, जंगल वाले मार्ग पर जा पहुँचे। जब उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ पिछली सायं प्रेमनाथ को डाकुओं ने घेरा था, प्रेमनाथ खड़ा हो गया। वह दीनानाथ को खड़ा कर बोला, "यहाँ मुझको उन्होंने रोका था। मेरा विश्वास है कि वे पेशावर डाकू नहीं थे। यदि ऐसे होते तो मुझको मार डालते। जिससे उनको कोई पकड़ने वाला न रह जाता।"

दीनानाथ ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। प्रत्युत प्रेमनाथ के हाथ को पकड़कर उसे कृतज्ञता से दबाते हुए कहा, "प्रेमनाथ! मैं हारा, तुम जीते। वह डाकू मैं ही था। तुम सत्य कहते हो कि हमको रुपये की आवश्यकता थी, परन्तु अब मेरे विचार बदल गये हैं और मैं तुमसे रुपया नहीं लूँगा।"

"भैया! क्या मैं जान सकता हूँ कि क्या आवश्यकता थी रुपये की?"

"हां! हमने एक संस्था बनाई है। उस संस्था का नाम है, 'ग़दर पार्टी।' हम में से एक आदमी अमरीका से आया है, वह हमको इकट्ठा कर भारतवर्ष में विप्लव उत्पन्न करने की योजना बनाए हुए है। उस

योजना में एक बात यह भी है कि रुपया डाके डालकर एकत्र किया जाएगा। हमने अभी तक दो डाके डाले हैं। कल तीसरा डाला था परन्तु आज तुम्हारी बात सुन मेरे मन में एक ऐसा विप्लव उत्पन्न हुआ है कि मैं डाकों में विश्वास खो बैठा हूं।"

"पर भैया! रुपये से विप्लव कैसे होगा? विप्लव तो लोगों की मानसिक-अवस्था बदलने से हो सकता है। मन के बदलने से रुपया भी मिलेगा।"

"यही तो मैं तुम्हारी बात से समझ पाया हूँ। हम बलपूर्वक अपना काम करना चाहते हैं। तुमने मेरे मुख पर चपत लगाई है। तुमने मुझको समझा दिया है कि मन की प्रेरणा से पहाड़ भी उमड़ सकते हैं। रुपया तो साधारण वस्तु है।"

"भैया दीनानाथ! मैं सत्य ही रुपया तुमको देने आया था। मुझको अपनी माँ की बात सुन कुछ ऐसा प्रतीत हुआ था कि तुम जैसे सभ्य व्यक्ति जब डाका डालने पर उद्यत हुए हों, तो अवश्य कोई ऐसी विवशता आ पड़ी होगी जिसको टालना हमारा कर्तव्य है। यद्यपि मैं नहीं समझा कि तुम चार आदमी दस-बीस हज़ार रुपया एकत्र कर कैसे विप्लव उत्पन्न कर सकोगे। इस पर भी यह रुपया हाज़िर है। मैंने तो इसको किसी पुण्य-कार्य में लगाना है। यदि तुम समझते हो कि इससे कुछ श्रेष्ठ कार्य हो सकता है तो रुपया हाज़िर है।"

इतना कह प्रेम ने जेब में से दो हज़ार रुपये के नोट निकालकर दीनानाथ के सामने कर दिये। दीनानाथ ने इन नोटों की ओर देखा और फिर उनको हाथ में पकड़ लिया और प्रेमनाथ की जेब में डालकर कहा, "भैया, यह रुपया मेरा हुआ और मैंने यहाँ रखा है। आवश्यकता पर इसे ले लूंगा, जिस काम के लिए कल चाहिए था, आज उसके लिये आवश्यकता नहीं। चलो चलें।"

इतना कह वह उसकी बाँह-में-बाँह डालकर रावी नदी की ओर चल पड़ा। नदी के किनारे पहुंचकर प्रेमनाथ ने दीनानाथ से कहा,

"अब आप जा सकते हैं। आपकी दुकान पर कोई नहीं।"

"अभी एक काम और करना है। माताजी के दर्शन करने हैं। वास्तव में उनकी चरण-रज सिर पर चढ़ाने की इच्छा हो रही है"।

प्रेमनाथ इसका अर्थ नहीं समझा। वह विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। दीनानाथ ने अपना भाव स्पष्ट करते हुए कहा, "जिस मां की कोख से तुम्हारे जैसा पुत्र उत्पन्न हो सकता है, उसके दर्शन करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रेम, चलो मुझे आज तीर्थ-यात्रा करने से मत रोको।"

दोनों नौका पर सवार हो गये।

६

जब भी लाहौर जाना होता था, प्रेमनाथ दीनानाथ की दुकान पर एक चक्कर लगा आता था। दीनानाथ ने भी प्रेम की आर्थिक अवस्था सुधारने में विचार करना अपना कर्तव्य मान लिया।

उक्त घटना के कई दिन पीछे की बात थी। प्रेमनाथ तहसील में अपना काम कर दीनानाथ की दुकान पर जा पहुंचा। वहां कुछ अपरिचित लोग बैठे थे। दीनानाथ वहां नहीं था। वहां पर एक सिख महाशय भी थे। उसने प्रेमनाथ को वापिस लौटते देख आवाज़ दे दी। "प्रेमनाथ जी! आइये, बैठिये, कहां जा रहे हैं?"

"दीनानाथजी से मिलने आया था। वह हैं नहीं और मुझे दूर जाना है।"

सिख महाशय ने मुस्कराकर कहा, "अभी सायंकाल में बहुत समय है। नाव तो अंधेरा हो जाने पर भी मिल जाती है।"

उसको इस प्रकार बातें करते देख प्रेमनाथ समझ गया कि यह भी ग़दर पार्टी का आदमी है। उसने सरदार साहब से कहा, "यदि दीनानाथ जी ने जल्दी आना हो तो कुछ समय तक प्रतीक्षा कर सकता हूं।"

"आते ही होंगे। आइये बैठिये।"

प्रेमनाथ वहां बैठ गया। सरदार ने कहा, "बाबू प्रेमनाथ! आपने हमारी बहुत हानि की है।"

"मैंने अपनी जानकारी में कोई ऐसी बात नहीं की। मुझको समझा दीजिये। मैं उसका बदला चुकाने का यत्न करूँगा।"

"मेरा नाम अर्जुनसिंह है और मैं," उसने प्रेमनाथ के कान के समीप होकर कहा, "अमरीका की ग़दरपार्टी का सदस्य हूँ।"

"तो फिर मैंने आपको क्या हानि पहुंचाई है?"

"आपने हमारे एक विशिष्ट कार्यकर्ता को वरग़ला दिया है। दीनानाथ हमारा एक बहुत ही अच्छा सिपाही था। आपने उसको बाग़ी बना दिया है।

"आप मेरी हंसी उड़ा रहे हैं या मेरी प्रशंसा कर रहे हैं?"

"दोनों में से कुछ नहीं। मैं अपनी और देश की किस्मत को रो रहा हूँ।"

"देखिये सरदार साहब! मेरी आयु अभी-अभी पन्द्रह वर्ष की हुई है। मैं केवल दसवीं श्रेणी तक पढ़ा हूँ। मैं अति-निर्धन हूँ। इस कारण मैं किसी को कैसे वरग़ला सकता हूँ?"

"तुमने दीनानाथ को बहका दिया है।"

"कैसे?"

"उसके मन की ज्योति जगाकर।" दीनानाथ दुकान में आकर उसके पीछे बैठ गया था। बोल उठा, "देखो अर्जुनसिंह, मैं तुमको स्पष्ट कह देता हूँ कि मैं देश की स्वतन्त्रता के लिये त्याग से नहीं डरता, परन्तु प्रेमनाथ ने मेरे ज्ञान-चक्षु खोल दिये हैं। मैं ऐसा समझने लगा हूँ कि अंग्रेजों को भगाकर, किसी अन्य देश वाले को निमन्त्रण देना महामूर्खता होगी। हम इस प्रकार स्वामी बदलने से सुखी नहीं, दुःखी होंगे। यह ज्ञान मुझको प्रेमनाथ ने दिया है। यदि हम यह समझ जाएँगे तो इस युद्ध के समय झगड़ा करना अनुचित मानने लगेंगे।"

"जलते दीपक से दीपक जलता है। बुझे दीपक से दीपक नहीं जला

करता। फिर जिस दीये में तेल ही नहीं, वह क्या जलेगा। पहले मन रूपी दीपक में ज्ञान का तेल डालो, फिर देखोगे कि जलते दीये की लौ लगने मात्र से दीपमाला जगमग-जगमग कर उठेगी।"

अर्जुनसिंह इतनी लम्बी सूझ-बूझ नहीं रखता था। इस कारण दीनानाथ ने बात ज़रा और स्पष्ट करने के लिये कह दिया, "क्रान्ति करने का समय नहीं आया। इस समय हमको तैयारी तो करनी चाहिए, परन्तु कार्य करने का समय युद्ध के पश्चात होगा।"

"तो तैयारी क्या करनी चाहिये ?"

"अपनी और भारतीय जनता की ज्ञान-वृद्धि। क्या आप जानते हैं कि जर्मन, जो फ़ौजी-शक्ति से योरुप पर साम्राज्य बनाकर बैठना चाहता है, हिन्दुस्तान में आकर हम को अपने फ़ौजी-बूटों के नीचे कुचल नहीं देगा ?"

"हम समझते हैं कि कैसर का राज्य बहुत अंशों में अंग्रेजों से अच्छा है।"

"होगा, परन्तु अपने लोगों के लिये। दूसरे लोग, जिन पर वह राज्य करता है, उनकी दशा तो बहुत खराब है। पर मैं तो सरदार साहब, यह कह रहा हूं कि भारत में राज्य बदलना हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए। हमारा उद्देश्य तो भारतीय राज्य स्थापित करना है।"

"हमारा उद्देश्य इस समय यह है कि अंग्रेजों के युद्ध-कार्य में जितना विघ्न डाल सकें, डालें।"

"मेरा और आपका मार्ग पृथक्-पृथक् है। आप जर्मन के सहायक बन रहे हैं। मैं भारतमाता का सपूत बनने का यत्न कर रहा हूं।"

बात यहीं समाप्त होगई। प्रेमनाथ को प्रतीत हुआ कि सरदार अर्जुनसिंह और उसके दो साथी जो वहां बैठे थे दीनानाथ की इस स्पष्ट-वादिता पर प्रसन्न नहीं हैं। इस पर भी दीनानाथ से झगड़ा नहीं करना चाहते थे। दीनानाथ ने अपनी जेब से पांच हजार के नोट निकालकर उनको दिये और कहा, "इतना देने से अब आपका सब रुपया चुकता हो

गया है।"

"पर दीनानाथ, तुमने अपनी ओर से कुछ नहीं दिया और प्रेमनाथ का रुपया बचाकर जो पार्टी की हानि की है उसका बदला भी तो चाहिये।"

"मेरी शक्ति यह है कि मैं आपको दस रुपये मासिक सहायता दूं। सो, दो मास की मैं दे चुका हूं। अब मैं आपके कार्य में विश्वास नहीं रखता, इससे कुछ दे नहीं रहा।"

"तो क्या यह रुपया जो हमने एकत्र किया है हमारे काम में विश्वास रखने वालों से किया है?"

"यह तो डाका डालकर एकत्र हुआ है न? तो मेरे यहां भी तुम डाका डाल सकते हो। पर मैं अपनी इच्छा से अब एक पैसा नहीं दूंगा।"

"बहुत अच्छा।" अर्जुनसिंह ने कहा, "जब पानी नाक तक आ जाएगा तब तुम्हारे जैसे टटपूंजियों पर भी डाका डाल लेंगे।"

इतना कह अर्जुनसिंह रुपया अपनी जेब में रख और अपने साथियों को लेकर चला गया। उनके चले जाने के पश्चात् दीनानाथ ने बहुत ही गम्भीर भाव बनाकर प्रेमनाथ को समीप बुलाकर कहा, "मैं समझता हूं कि तुम लोगों को रुपया घर में नहीं रखना चाहिये। इनकी बातों से ऐसा पता चलता है कि ये लोग तुम्हारे घर में डाका डालेंगे।"

"क्यों? हमने इनका क्या बिगाड़ा है?"

"यह बात नहीं। इनके मस्तिष्क में यह बात समा गई है कि यह अंग्रेजी राज्य पलटने के लिये यत्न कर रहे हैं, और इस काम की श्रेष्ठता इतनी अधिक है कि उसके लिये जिस किसी भांति भी साधन जुटाये जायें उचित ही हैं। तुम्हारे साथ कोई द्वेष नहीं, पर इनको अपने काम के लिये रुपया चाहिये और इनको पता चल गया है कि तुम्हारी माता जी के सन्दूक में पांच हजार रुपया रखा है।"

प्रेमनाथ इस समस्या पर अभी सोच ही रहा था कि दीनानाथ ने अपनी योजना बता दी। उसने कहा—"माताजी ने कहा था, तुम नौकरी

छोड़ने वाले हो। इस कारण मैंने एक योजना सोची है। मोहनलाल रोड स्कूल-कालेजों का मार्ग है। वहाँ एक दुकान का प्रवन्ध कर दिया है। तुम उसमें अपना पांच हज़ार रुपया लगा दो। किताबें, कापियाँ, कलम, दवात और अन्य पढ़ाई के सामान की दुकान खोल दी जाये। अभी तुम नौकरी मत छोड़ो। मेरे पास एक ईमानदार लड़का है। वह वहाँ काम करेगा। जब दुकान चल जायेगी, तुम वहाँ बैठ जाना।"

"पर माताजी वह रुपया काम में नहीं लगायेंगी।"

"वह रुपया तुम उधार दिया हुआ मानना। इससे दो बातें हो जाएंगी। रुपया घर नहीं रहेगा और अर्जुनसिंह के हाथ से बच जाएगा। दूसरे तुम्हारे नौकरी छोड़ने का आयोजन सफल हो जाएगा। मैं इस व्यापार में कुछ ज्ञान रखता हूं। तुम्हारी सहायता कर दूंगा। मोहनलाल रोड इस काम के लिये बहुत अच्छा स्थान है। काम अवश्य चलेगा।"

७

स्वामी निरूपानन्द की शिक्षा का फल हो रहा था। एमिली अपने पति के कामों में अरुचि प्रकट करने लगी थी। उसको यह सब प्रयास व्यर्थ का प्रतीत होने लगा था। एक दिन डिप्टी कमिश्नर को किसी सभा में जाना था और सभा के आयोजकों ने मिसेज़ चोपड़ा को भी बुलाया था। ऐमिली को जाने की इच्छा नहीं थी। इस पर पति-पत्नी में तक़रार हो गया।

"तुम क्यों नहीं जा रहीं ?"

"जाने की आवश्यकता नहीं समझती। आप तो जिलाधीश हैं, आप को जिला के लोगों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए जाना ही है। यह पदाधिकारी होने के नाते आपका कर्तव्य है।"

"पत्नी होने के नाते तुम्हारा भी कुछ कर्तव्य है या नहीं ?"

"सो तो पूरा कर रही हूं। मैं श्रीमान् ए० एन० चोपड़ा साहब की

स्त्री हूँ। लाहौर के डिप्टी कमिश्नर की नहीं।"

"पर आजकल ए० एन० चौपड़ा चौबीस घंटे का सरकारी नौकर है। इस कारण तुमको एक सरकारी नौकर की बीवी होने से सरकारी काम में सहायक बनना पड़ेगा।"

"यह ठीक है कि मैं आपको छोड़ नहीं सकती। इस कारण एक दास की दासी बनने पर विवश हूं। चलिये।"

मिस्टर चौपड़ा ने समझा कि उसने भारी विजय प्राप्त की है। इस कारण अति प्रसन्न हो ऐमिली को साथ ले सभा-स्थान की ओर चल पड़ा। सभा हुई। डिप्टी कमिश्नर बहादुर को फूलों और गोटा-किनारी की मालायें पहनाई गईं। एक अभिनन्दन पत्र पढ़ा गया जिसमें जिला-धीश की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

अभिनन्दन-पत्र पढ़ने वालों ने अंग्रेजी सरकार की प्रशंसा तो की, साथ ही अंग्रेजी रहन-सहन और सभ्यता तथा संस्कृति की भी प्रशंसा की। एक सज्जन, जो वहाँ पर स्कूल में मुख्याध्यापक थे, तो इस सीमा तक चले गये कि हिन्दुस्तानी पोशाक और आचार-विचार की निन्दा भी आरम्भ कर दी। कुछ समय तक तो मिसेज चौपड़ा सुनती रहीं, परन्तु जब मुख्याध्यापक महोदय कहने लगे, "इस असभ्य देश में ज्ञान का प्रकाश लाने वाली सरकार के आप प्रतिनिधि हैं। इस कारण हम आपका अभिनन्दन करते हैं। हम घरेलू कलह में कुत्तों की तरह परस्पर लड़-लड कर एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो रहे थे, तब यहाँ पर भगवती स्वरूप महारानी विक्टोरिया ने दैवी-राज्य की स्थापना कर सुख और शान्ति का प्रसार किया ··।"

ऐमिली इस बात को सहन नहीं कर सकी। उसने मास्टर साहब को बीच में ही टोक दिया। वह स्वयं खड़ी हो गई और वक्ता को बैठा कर स्वयं बोलने लगी।

उसने कहा, "सभ्यगण, आपने जो अभिनन्दन-पत्र मेरे पति और लाहौर के जिलाधीश की सेवा में दिया है उसका उत्तर देने के लिए

साहब ने मुझको आज्ञा दी है। उन सब बातों के लिए, जो आपने मेरे परमप्रिय पति के लिए इस पत्र में तथा अपने भाषणों में कही हैं; हम आपके बहुत कृतज्ञ हैं। वे सरकार द्वारा आप लोगों की सेवा के लिए नियुक्त हुए हैं और यह सुनकर कि आप उनकी सेवाओं का आदर करते हैं हमको अति हर्ष और सन्तोष हुआ है।"

"यह युद्ध का काल है। इस देश की सरकार एक अति बलशाली और विकृत मनोवृत्ति वाले साम्राज्य से युद्ध में उलझ गई है। आपने ब्रिटिश राज्य की जो प्रशंसा की है, उससे यह आपका कर्तव्य हो जाता है कि इस भीड़ के समय आप अपनी सरकार की सहायता करें।"

"इस पर भी मैं आपको अपने मन की एक बात कहना चाहती हूँ। यह ठीक है कि इस देश में अंग्रेजी राज्य स्थापित है। इसमें कारण हिन्दुस्तानियों की राजनीति में अज्ञता थी। राजनीति में अज्ञता का कारण यह नहीं था कि यहां के लोग कुत्तों के तुल्य थे। यह तो यहाँ के लोगों की सीमा से अधिक भलमनसाहत के कारण था।"

"मैं आपको और विशेष रूप से आपके अन्तिम वक्ता को बताना चाहती हूँ कि उन्होंने इस विषय में जो कुछ कहा है, यदि शुद्ध खुशामद से नहीं कहा तो उन्होंने अपनी अज्ञानता का बहुत प्रबल परिचय दिया है। भारत देश में ज्ञान और चरित्र की जितनी महिमा थी और है, उसके लिए योरुप को अभी शताब्दियों, यहां इसके चरणों में बैठकर बहुत कुछ सीखना है।"

"मेरा जन्म इस देश में नहीं हुआ, परन्तु पिछले बारह वर्षों से मैं यहां हूँ और जो कुछ मैंने यहां देखा है उससे चकाचौंध रह गई हूं। दुर्भाग्य की बात है कि सरकारी स्कूलों में पढ़े-लिखे लोग भारत की सर्वोच्च विभूति, यहां के धर्म का अध्ययन तो करते नहीं और योरुप के बाहरी रूप-रंग पर मुग्ध हो यहां की निन्दा करने लगते हैं। मैं आप लोगों को यह चेतावनी देना चाहती हूं कि ऐसे लोगों के विचार को, अधूरे ज्ञान पर निर्मित होने के कारण, वहीं दबा दो। अन्यथा भविष्य में भारत

अपना अमूल्य रत्न अध्यात्मवाद और निःश्रेयस का मार्ग तो खो देगा, और इस रत्न के स्थान पर हाथ में सांसारिक वैभव रूपी कांच का खिलौना पकड़े रह जायगा।"

"अन्त में मैं आप सब लोगों का पुनः धन्यवाद करती हूं और आपको प्रेरणा देती हूं कि आप अपने मेधावी बालकों को भारत की सारगर्भित अध्यात्म विद्या सिखायें। इसमें उनका कल्याण होगा और संसार का भी कल्याण होगा।"

लोगों ने तालियां बजाईं और डिप्टी कमिश्नर बहादुर की अंग्रेज बीबी का एक साधू सन्त के समान उपदेश सुन अति हर्ष प्रकट किया। सभा विसर्जित हुई और लोगों ने प्रतिष्ठित मेहमानों को विदा करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

मार्ग में मिस्टर चोपड़ा ने अपना असन्तोष प्रकट किया। वह इस समय तक अपने मन के भावों को भीतर ही भीतर दबाकर बैठा हुआ था। उसने कहा, "यह आज तुमने क्या किया है?"

"जो उचित समझ आया कह दिया।"

"परन्तु मैंने तुमको उत्तर देने के लिए कब कहा था?"

"मैं आपकी पत्नी होते हुए आपके विचारों को प्रकट करना अपना कर्तव्य मानती हूं।"

"पर ये मेरे विचार नहीं हैं।"

"इस पर भी बात ठीक ही है। ये मूर्ख खुशामदी सरकारी स्कूलों-कालिजों में पढ़े-लिखे अनपढ़ नहीं जानते कि वे अपने ही देश की आत्मा का हनन कर रहे हैं। इंगलेण्ड में यदि कोई स्कूल का अध्यापक इंगलेण्ड के विषय में कुछ ऐसा कहता तो कम-से-कम उसके नौकरी से पृथक होने की आज्ञा तो तुरन्त हो जाती।"

"पर यह इगलैंड नहीं है।"

"ठीक है, पर यहां भी मनुष्य बसते हैं, यहां के लोगों के मन भी उसी मिट्टी के घड़े हुए हैं जिससे इगलैंड के लोगों और बालकों के।"

"मैं समझता हूँ कि मैंने तुमको साथ लाकर भारी भूल की है।"

"क्या हो गया है इससे ?"

"दो-चार ऐसे और व्याख्यान दे डालो और मेरी नौकरी गई।"

"क्या अपने देश की मान-मर्यादा एक व्यक्ति की नौकरी से भी अधिक मूल्य की नहीं है ?"

"तुम नहीं समझती।"

८

एक दिन लाहौर डिवीजन के कमिश्नर महोदय ने मिस्टर चोपड़ा को अपने घर बुलाया। वहां उससे यह कहा, "आपके जिले में डाके की वारदातें अधिक होने लगी हैं। और यह विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि कोई पोलिटीकल पार्टी, पार्टी फंड के लिए डाके डाल रही है। मैं चाहता हूँ कि दो सप्ताह के भीतर इस पार्टी का पता कर इन पर मुकदमा चलना चाहिए।"

डिप्टी कमिश्नर अपनी विलासिता में इतना विलीन था कि उसको यह समाचार विस्मय में डालने वाला सिद्ध हुआ। इस पर भी उसने अपनी अज्ञानता को छिपाने का यत्न करते हुए कहा, हजूर, मैं इस बात से बेखबर नहीं हूं और पूरी कोशिश कर रहा हूं कि ये सबके सब लोग किसी जगह एकत्र हों और पकड़ लिये जाएं।

"मैं आप जैसे राज्य-भक्त और सतर्क पदाधिकारी से यही आशा करता हूँ। अच्छा, एक सप्ताह पश्चात् इस काम में जो तरक्की हो रिपोर्ट कीजियेगा।"

घर आकर उसने इन्सपैक्टर जनरल पुलिस और डिप्टी इन्सपैक्टर जनरल पुलिस को बुला भेजा और उनसे कमिश्नर साहब से दी गई सूचना पर बातचीत की। डिप्टी कमिश्नर ने कहा, "जैसे कैसे भी हो, दो सप्ताह में एक षड्यन्त्र पकड़ लेना चाहिये, पीछे देखा जायगा।"

मिस्टर चोपड़ा को अपनी नेकनामी की आवश्यकता थी। और

पुलिस अफसरों को इस आश्वासन की आवश्यकता थी कि यदि मुकदमा ढीला हुआ तो सरकार उस ढीलेपन पर आँखें मूंद लेगी। परिणाम यह हुआ कि खुफिया पुलिस ने भागदौड़ आरम्भ कर दी।

एक दिन प्रातः चार बजे लाहौर और आस-पास के गांवों में कई स्थानों पर छापे मारे, तालाशियाँ लीं और लगभग एक सौ आदमी पकड़ लिये। अर्जुनसिंह पकड़ लिया गया। दीनानाथ भाग निकला। प्रेमनाथ पकड़ा गया। इस प्रकार इनसे मिलने-जुलने वाले सब लोग पकड़े गये। दीनानाथ अपनी पुस्तकें एक छापेखाने में छपवाया करता था। उसने बंकिम के आनन्दमठ उपन्यास का उर्दू अनुवाद छपवाया था। उस पुस्तक की किताबत करने वाला मुंशी और छापेखाने का मालिक पकड़ लिये गए। पापड़ मंडी में एक और किताबों के छापने वाले लाला चरणदास मेहता थे। वे १९०७ में भारतमाता सभा के सदस्य थे वे भी पकड़ लिये गए।

इस प्रकार एक सौ से ऊपर लोग पकड़कर नौलखा थाने में लाये गए। पुलिस तलाशियों में विक्रेताओं की पुस्तकें छकड़ों पर लाद कर ले गई। अर्जुनसिंह के सन्दूक में से पांच हज़ार के नोट ले गई। एक और के घर से कपड़े और वर्तन उठा लिये गये। प्रेमनाथ के घर में ले जाने योग्य कुछ नहीं था। इस कारण प्रेमनाथ के साथ पुलिस को और कुछ नहीं मिला।

जब प्रातः चार बजे पुलिस ने प्रेमनाथ का दरवाजा खटखटाया तो प्रेमनाथ की माँ स्नान आदि से छुट्टी पा राम-नाम की माला जप रही थी। नीचे दरवाजा खटखटाया जाता सुन वह उठी और खिड़की में से झांककर पूछने लगी, "कौन है ?"

"पुलिस है, दरवाजा खोलो।"

प्रेमनाथ की मां को समझ नहीं आया कि बात क्या है। वह नीचे आई, दरवाजा खोला तो देखा कि एक सौ से ऊपर पुलिसवाले मकान को चारों ओर से घेरे हुए हैं। कुछ आसपास के मकानों पर चढ़े हुए थे।

प्रेमनाथ की माँ ने अचम्भे से पूछा, "क्या चाहते हो ?"

"प्रेमनाथ के वारंट हैं और उसके घर की तलाशी का हुक्म है।"

"वह भौंचक हो पुलिस अफसर का मुख देखती रह गई। उसके मुख से एक शब्द भी नहीं निकला। पुलिस ने प्रेमनाथ की माता को दरवाजे में से एक ओर कर दिया और धड़ाधड़ ऊपर चढ़ गई। प्रेमनाथ स्नान कर रहा था। वह बाहर आया तो पकड़ लिया गया। इन्द्रा जागी तो इतने लोगों को वहाँ देख चीखें मार-मार रोने लगी।

इस समय प्रेम की मां प्रेम के मामा को लेकर वहां चली आई। प्रेम के मामा ने थानेदार से कहा, "आपको तलाशी तब तक आरम्भ नहीं करनी चाहिए थी जब तक स्वयं किसी पास-पड़ोस के आदमी से अपनी तलाशी न करवा लेते।" पर पुलिस वालों को आज्ञा थी कि तलाशी में यदि कोई भी बाधा खड़ी करे तो उसकी न सुनी जाये। इसका अर्थ पुलिस ने समझा कि मनमानी की जाये और आपत्ति उठाने वाले को गाली दी जाए और धमकाया जाए।

इस पर भी प्रेमनाथ के मकान में सिवाय उस पुस्तक के, जो दीनानाथ ने उसको पढ़ने को दी थी, जिसका नाम 'भारत में अंग्रेजी राज्य' था और कोई वस्तु पुलिस को ले जाने को नहीं मिली। इस समय प्रेम के मामा ने फिर कहा कि तलाशी के पर्चे की खानापूरी यहाँ कर ली जाए, परन्तु कौन सुनता था। प्रेमनाथ के मामा को दो-चार सुनाई गईं। थानेदार ने उसके मुख पर एक चपत भी लगा दी और प्रेमनाथ को ले चल दिये।

दीनानाथ के घर में इससे उल्टी बात हुई। सायंकाल जब दीनानाथ दुकान बन्द करके घर, जो मुहल्ला मोहलियां में था, जाने लगा तो उसको ऐसा अनुभव हुआ कि एक आदमी उसके पीछे साये की भांति लगा हुआ है। दीनानाथ ने बंगाल में क्रान्तिकारियों की गिरफ्तारियों का विवरण और सन् १९०७ में श्री अजीतसिंह इत्यादि की गिरफ्तारी का वृत्तान्त पढ़ा था। इससे उसको सन्देह हो गया। वह घर पहुँचा तो उसको वहाँ

"ठीक है ऐमिली ! पर यह सुख और आनन्द जो इस कोठी में तुम्हारे साथ रहकर पा रहा हूं सबसे बड़ा न्याय है, जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती।"

६

ऐमिली को इससे सन्तोष नहीं हुआ। वह मन में प्रेमनाथ के हवालात में रोने-पीटने और उसकी मां के घर पर निःसहाय पड़े होने का चित्र खींच रात भर सोचती रही। प्रातः काल साहब अभी सो ही रहे थे कि वह उठी, मोटर निकलवाई और शाहदरा में जा प्रेमनाथ का मकान ढूंढ़ने लगी। मकान मिलने में कठिनाई नहीं हुई। प्रेमनाथ अभी एक दिन पहले ही पकड़ा गया था और उसके विषय में गाँव भर में चर्चा थी।

ऐमिली ने एक राह पर जाते से पूछा और वह उसको प्रेमनाथ के मकान के नीचे ले गया। प्रेमनाथ की मां को आवाज दी गई। उसने खिड़की में से झांककर देखा और समझ गई। वह नीचे आई और हाथ जोड़कर नमस्कार कर सामने खड़ी हो गई। ऐमिली ने कहा, "मुझको अपने घर पर नहीं ले चलागी ?"

"वहां पर आपके वैठने योग्य स्थान नहीं है ?"

"चलिये ! मैं चलती हूं।"

विवश प्रेमनाथ की मां उसको ऊपर ले गई। मकान काफी साफ-सुथरा था। इस पर भी डिप्टी कमिश्नर के बंगले के बराबर तो किसी प्रकार भी नहीं हो सकता था।

इन्द्रा अभी सो ही रही थी। ऐमिली उसकी चारपाई पर बैठ गई और उसके मुख को देखने लगी। सोये-सोये भी वह गम्भीर सांस लेने लगती थी। इस समय शान्ता सामने खड़ी थी।

ऐमिली ने उसको अपने समीप वैठने को कहा। वह भूमि पर बैठ गई और वोली। "आपको यहां नहीं आना चाहिये था। कल मैं थाने में गई थी। वे आये थे और मुझको देख आंखें दूसरी ओर फेर चले गये। मैं

समझती हूँ कि वे अपने पुत्र की रक्षा करना पसन्द नहीं करेंगे।"

"मैं आपसे यह पूछने आई हूँ कि क्या आपको कुछ भी पता है कि प्रेम का गदर पार्टी से कुछ भी सम्बन्ध था ?"

मैं विश्वास से जानती हूँ कि उसका किसी भी पार्टी से सम्बन्ध नहीं है। दीनानाथ को मैं जानती हूँ। एक भले घर का लड़का है। उससे प्रेम का मेल-जोल अवश्य था।"

"अब तुम्हारा काम कैसे चलेगा ?"

"जैसे पीछे चलता रहा है।"

"तब तो तुम बीस रुपये मासिक उनसे लेती थीं। अब तो तुम वह-भी नहीं लेतीं।"

"उन बीस रुपयों में मेरा कुछ बनता नहीं था। मैं तो स्वयं काम धंधा करती थी।"

इसके पश्चात् दोनों चुपकर गईं और एक दूसरे का मुख देखती रहीं। इस समय इन्द्रा उठ बैठी और विस्मय में इस नई आई हुई का मुख देखने लगी। ऐमिली ने उसका मिलान अपनी लड़की सरस्वती से किया। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उसकी लड़की से अधिक सुन्दर है। इससे उसको ईर्ष्या होने लगी। फिर अपने मन की भावनाओं को दबाकर कहने लगी—"मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूं ?"

"मैं पूजा कर रही थी। आपका यही अनुग्रह होगा कि आप यहां से चली जाएँ।"

"ऐमिली को यह मन की एक विचित्र अवस्था प्रतीत हुई। वह समझती थी कि वह उससे उसके लड़के को छुड़ाने के लिये कहेगी अथवा अपने निर्वाह के लिये कुछ धन मांगेगी।

"लड़के के विषय में आप क्या करना चाहती हैं ?"

"मेरे पास वकील करने के लिये रुपया नहीं है, इस कारण मैं क्या कर सकती हूं। मैं परमात्मा से प्रार्थना करने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकती हूँ ?"

इस बातचीत से ऐमिली उठ खड़ी हुई। उसके मन को कुछ ठेस पहुँची। परन्तु वह मन में सोचती थी कि कुछ किया नहीं जा सकता। शान्ता उसको छोड़ने के लिए नीचे तक आई। परन्तु उसने कुछ कहा नहीं। एकाएक ऐमिली को कुछ याद आया। उसने पूछा, "आपके पास कुछ काल के लिए गुजर करने को रुपया तो होगा ही ?"

"महीने का अन्त है। पर आप इसकी चिन्ता क्यों करती हैं। जिसने बनाया है वह यदि जीवित रखना चाहेगा तो कुछ प्रवन्ध कर ही देगा।"

इस पर कुछ कहने को नहीं रह गया था और ऐमिली मोटर पर सवार हो लाहौर अपनी कोठी पर पहुँच गई। मिस्टर चोपड़ा जागकर ऐमिली के मोटर लेकर कहीं चले जाने पर विस्मय कर रहा था कि वह वापिस आ पहुँची। उसने पूछा, "कहाँ गई थीं ?

"आपकी पहली बीवी से सहानुभूति प्रकट करने।"

"तुम शाहदरा गई थीं ? यह ठीक नहीं किया। कल वह थाने में आई थी। मैंने तो ऐसा भाव बना लिया था कि मैंने उसको पहचाना ही नहीं।"

"आप ऐसा किस प्रकार कर सके थे ? वह बेचारी बहुत ही दुःखी है।"

"उसके दुःखी होने में मुझको सन्देह नहीं। साथ ही मुझको इसमें भी सन्देह नहीं कि यदि मेरा उससे सम्बन्ध प्रकट हुआ तो मेरी नौकरी नहीं रह सकती।"

यह समस्या सुन ऐमिली चुप कर गई। उसी सायंकाल मिस्टर चोपड़ा ने ऐमिली को बताया, "कल पुलिस वालोंने सबको खूब मारा-पीटा है। उनमें से पन्नालाल, सरकारी गवाह बन गया है। वह सब कुछ बक गया है, उसने बताया है कि अर्जुनसिंह इस जत्थे का नेता था और वह स्वयं भी इस जत्थे में शामिल था। उन्होंने तीन स्थानों पर डाके डाले थे और सात हजार के लगभग रुपया लूटा था। उसमें से दो हजार के लगभग खर्च हो गया था और शेष अर्जुनसिंह के पास पड़ा था। इस पार्टी का उद्देश्य यह था कि पाँच हजार रुपये के बम्ब बनवाए जाएंगे और

उनसे पुल रेल की सड़कें और बड़े-बड़े अफसरों की कोठियाँ उड़ा दी जाएंगी।"

ऐमिली ने अपने मन की बात पूछी, "प्रेमनाथ का सम्बन्ध बताया है क्या ?"

"हाँ, कहा है कि प्रेमनाथ भी उनकी पार्टी का सदस्य था और वह भी डाकों में सम्मिलित था।"

ऐमिली इससे विस्मय में मिस्टर चोपड़ा का मुख देखती रह गई।

चोपड़ा ने पूछा, "क्या सोचती हो अब ? बात तो सर्वथा स्पष्ट है। अब कुछ ही दिनों में मुकदमा चलेगा।"

इस पर ऐमिली ने कहा, "मुझको पन्नालाल के बयान पर विश्वास नहीं आता। मेरी सम्मति है कि इस सरकारी गवाह को यहाँ बुलाकर उससे स्वयं जिरह करें।"

"मैं इस प्रकार जाँच में हस्ताक्षेप नहीं कर सकता।"

"आप जिला मैजिस्ट्रेट हैं। आप अपना सन्देह मिटा सकते हैं ?"

"यदि मैंने इस मामले में हस्ताक्षेप किया तो पुलिस मेरी शिकायत गवर्नर के पास कर देगी। और सब कुछ समाप्त हो जाएगा।"

"बहुत ही विचित्र बात है। एक निरपराध लड़का फँसाया जा रहा है और आप मैजिस्ट्रेट होते हुए उसकी सहायता नहीं कर सकते !"

"मैं सरकारी अफसर हूँ। मैं अपराधियों की सहायता के लिए नियुक्त नहीं हूँ।"

"आप निरपराध लोगों की रक्षा के लिये नियुक्त हैं।"

"होगा। मैं तो यह जानता हूँ कि गदर पार्टी वालों ने बहुत उपद्रव मचा रखा था। सो पकड़े गए। इससे मेरी नेकनामी होगी और यदि अब उनमें से बहुत-से छूट गए तो मेरी बदनामी हो जायेगी।"

ऐमिली अपने पति की इस स्वार्थ प्रवृत्ति से सन्तुष्ट नहीं हुई। वह सोच रही थी कि किसी प्रकार प्रेमनाथ की रक्षा करनी चाहिए।

अगले दिन उसने साहब के पेशकार से जो घर पर कागजात इत्यादि

देने और लेने आया करता था, नगर में फौजदारी के योग्य वकील का पता पूछ लिया। सायं वह उसको मिलने चली गई और उसको प्रेमनाथ का मुकद्दमा लड़ने के लिए कह आई। पाँच सौ रुपया पेशगी भी दे आई।

१०

मुकदमा डिप्टी कमिश्नर की अदालत में उपस्थित हुआ। केवल प्रेमनाथ का अपना वकील था। शेष अभियुक्तों के लिये सरकार ने थर्ड रेट वकील नियुक्त कर दिये। प्रेम का वकील एक अंग्रेज था। उसका नाम मिस्टर नार्टन था।

जब मिस्टर नार्टन ने अदालत में उपस्थित हो अपने को प्रेमनाथ का वकील बताया तो डिप्टी कमिश्नर ने अचम्भे में पूछा, "किसने आपको इस काम के लिये नियुक्त किया ?"

"अदालत को इस बात के पूछने की आवश्यकता नहीं है। मैं इंगलैंड की बार का सदस्य हूँ और किसी भी मुकदमे में, किसी की भी ओर से पैरवी कर सकता हूँ।"

इस पर सरकारी वकील ने कहा, "मिस्टर नार्टन, यदि यह बता दें कि उनको किस ने इस काम के लिये लगाया है तो दो अपराधी जो लापता हैं, उनका पता चल जायेगा।"

नार्टन ने कहा, "यह तो तब ही हो सकता है, जब मेरा मित्र मुझ को पकड़ कर अपराधी बनाकर मेरे पर जिरह करे।"

विवश पुलिस अफसरों को सन्तोष करना पड़ा। मुकदमा आरम्भ हुआ और सरकारी वकील ने एक लम्बा-चौड़ा बयान दिया जिसमें बताया कि अमेरिका में यह षड्यंत्र निर्माण किया गया है और वहाँ से चल कर हिन्दुस्तान में पहुँचा है। इस षड्यंत्र का उद्देश्य यह है कि कानून से स्थापित सरकार को अशान्तिमय उपायों से हटाया जाय। इसके लिये ये लोग डाके डालकर रुपया एकत्र करते हैं और फिर रुपये से बम्ब बनाकर सरकारी अफसरों को मारकर और सरकारी इमारतों को गिरा-

कर सरकार के काम को अस्त-व्यस्त करने का विचार रखते हैं।

इसके पश्चात् सरकारी गवाह के बयान हुए। उसने इतना लम्बा बयान दिया कि दिन समाप्त हो गया। प्रेमनाथ की मां अदालत में उपस्थित थी। उसने देखा कि एक अंग्रेज बैरिस्टर प्रेमनाथ की रक्षा के लिये अदालत में उपस्थित है। वह समझती थी कि शायद प्रेम के पिता ने गुप्त रूप में उसको वहां नियुक्त किया है। इस पर भी जब अदालत उठ गई तो वह बैरिस्टर के सामने आकर बोली, "मैं आपका अत्यन्त धन्यवाद करती हूँ। मैं प्रेमनाथ की मां हूँ।"

"तुम ? वह तो कोई और थी जो अपने को उसकी मां कहती थी।"

"कोई अंग्रेज औरत थी क्या ?"

"शक्ल से तो अंग्रेज मालूम होती थी। पर पहरावे से और बोलने से हिन्दुस्तानी मालूम होती थी।"

"वह उसकी विमाता है। उसने आपको फीस दी है क्या ?"

"हां ! उसने वचन दिया है कि पूरे मुकदमे का दो हज़ार देगी। पांच सौ पेशगी दे चुकी है। इस लड़के के पिता का क्या नाम है ?"

"आप उस से ही पूछ लीजियेगा। हम हिन्दुस्तानी औरतें अपने पति का नाम नहीं लेतीं।"

"मैंने सब कागज़ात देखे हैं। यह लड़का निरपराध है। इसको छूट जाना चाहिये।"

"मैं भगवान से आपके लिये प्रार्थना करूँगी।"

मिस्टर नार्टन मुस्कराकर अपनी मोटर पर सवार हो चला गया। प्रेमनाथ की माता विस्मय में उसका मुख देखती रह गई। वह अभी भी उधर ही देख रही थी जिधर मोटर गई थी। इसी समय कैदी बाहर निकलने शुरू हुए। प्रेम भी हथकड़ी लगा हुआ बाहर आया। मां ने आगे बढ़कर प्रेम के सिर पर हाथ फेर आशीर्वाद दिया।

"मां ! कैसे काम चलता होगा ?"

"चिन्ता न करो बेटा। सब ठीक हो जाएगा।" बस, इतनी ही बात

हो सकी और सिपाही कैदियों को कैदियों की गाड़ी में ले गये। प्रेम की मां को शाहदरा जाना था। इस कारण वह विना प्रतीक्षा किये चल पड़ी।

घर पहुंचते-पहुंचते दीये जल चुके थे। उसने इन्द्रा को मामा के घर से बुलाया और अपने मकान का दरवाजा खोल ऊपर चढ़ने लगी थी कि दीनानाथ उसके पीछे आ खड़ा हुआ। उसने धीरे से कहा, "मां जी, ऊपर आ जाऊं ?"

प्रेमनाथ की मां ने घूमकर देखा, पहचाना और फिर असमञ्जस में पड़ गई। कुछ विचार कर बोली, "चलो, तुम आगे चलो। दीनानाथ लपक कर ऊपर चढ़ गया। पीछे प्रेमनाथ की मां इन्द्रा को लेकर दरवाजा बन्द कर ऊपर चली आई। उसने मिट्टी के तेल की कुप्पी जलाई, तो दीनानाथ की लम्बी दाढ़ी और मूंछें देखकर कहा, "मैं तुरन्त पहचान गई थी।"

"मैं आपके साथ रोशनाई दरवाजे से आ रहा हूं, पर आपने एक वार भी आँख उठाकर नहीं देखा।"

"मेरा स्वभाव है कि राह चलती हुए लोगों के मुख पर नहीं देखा करती। सुनाओ, कहां रहते हो अव ?"

"मैं कई दिन के पश्चात् ही लाहौर आया हूं। मोहनलाल रोड वाली दुकान पर गया था। वह लड़का जो वहाँ वैठता है मेरे भाई का लड़का है। पूर्ण विश्वास योग्य है। मैंने आज हिसाव लिया है। दो मास में दो सौ से ऊपर लाभ हुआ है। सो उससे दो सौ रुपया ले आया हूं।"

इतना कह दीनानाथ ने दो सौ रुपये प्रेम की मां को दे दिये और कहा, "अव वह लड़का स्वयं आपके पास आया करेगा और माहवारी कुछ-न-कुछ दे जाया करेगा।"

"दीनानाथ ! सुना है कि तुम्हारी दुकान तो पुलिस वाले ठेलों पर लादकर ले गये हैं। अव गुजर कैसे चलता होगा ?"

"मैंने दिल्ली में एक पुस्तक-विक्रेता की नौकरी कर ली है। वह मुझको सौ रुपया महीना दे देता है और मैं वहां, विशनदास के नाम से

विख्यात हूं।"

"तुम इस रुपये में से कुछ ले लो। या कहो तो तुम्हारे घर पहुंचा दूं।"

"नहीं मां! तुम वहां नहीं जाना। पुलिस तंग करेगी। मैंने रुपया वहां पहुंचाने का प्रबन्ध कर दिया है। आज आपकी बहू को एक सौ रुपया मिल गया होगा।"

रात दीनानाथ प्रेमनाथ की मां के घर पर ही रहा। रात बहुत देर तक वह अपने और प्रेमनाथ के विषय में बातें करता रहा। दीनानाथ ने भारत और इंगलैंड के विषय में बहुत-सी बातें बताईं।

रात दो बजे के लगभग प्रेम की मां ने कहा, "बेटा, अब सो जाओ। कल किस समय जाओगे?"

"अभी जा रहा हूं मां।"

"मुकद्दमा नित्य होता था और प्रेम की मां नित्य अदालत में जाती थी। प्रेम के वकील ने ही सब अपराधियों की रक्षा में भार लेना आरम्भ कर दिया। सरकार की ओर से अपराधियों के वकील इतने घटिया थे कि उनको बात करने का ढंग ही नहीं आता था। डिप्टी कमिश्नर, मिस्टर चोपड़ा चकित था कि नार्टन जैसा महंगा वकील प्रेम की मां कैसे नियुक्त कर सकी है!

नार्टन को पता चल गया कि मुकद्दमे की फीस देने वाली डिप्टी कमिश्नर की बीबी है। उसको सन्देह तो पहले दिन ही हुआ था, परन्तु उसकी साड़ी और हिन्दुस्तानी बोलने का ढंग देख उसको विश्वास नहीं होता था। परन्तु एक दिन वह फीस की दूसरी किश्त देने आई तो तो नार्टन ने उसे पृथक् कमरे में ले जाकर कहा, "अगर मैं गलती नहीं करता तो आप मिसेज़ चोपड़ा हैं?"

"आपने पहचानने में बहुत समय लगा दिया है। मैं तो समझी थी कि आप पहले दिन ही पहचान गये होंगे।"

"पहचान तो गया था, परन्तु आपके कहने से कि आप प्रेमनाथ की मां हैं धोखे में पड़ गया था; फिर आप इतनी अच्छी हिन्दुस्तानी बोलती हैं।"

ऐमिली ने मुस्कराकर कहा, "मैं इस लड़के की विमाता हूं। उसकी मां के साथ उसके पति ने अन्याय किया है। इससे मेरी सहानुभूति उसके साथ है। उसके मन को सन्तोष देने के लिये कि उसके बेटे के लिये अच्छे-से-अच्छे वकील की सेवायें उपस्थित हैं, मैंने यह सब कुछ किया है। मैं चाहती हूं कि रुपये की कमी के कारण उसकी रक्षा ढीली नहीं होनी चाहिए।"

"आप अपने पति से क्यों नहीं कहतीं। मैं सरकारी गवाह पर जिरह करता हूँ। और जब गवाह निरुत्तर हो जाता है अथवा झूठा सिद्ध होने लगता है तो मजिस्ट्रेट उसकी सहायता के लिये बीच में कूद पड़ते हैं। मुझको तो अदालत होस्टाईल, विरोधात्मक व्यवहार वाली प्रतीत होती है।"

"इसमें कारण है। मैं चाहती हूँ कि आप केस को सुदृढ़ करते जायें। सैशन कोर्ट में वे छूट सकें तो भी ठीक है।"

"यत्न कर रहा हूँ। मुकद्दमा कुछ नहीं है। केवल पोलिटिकल मकद्दमा होने से प्रान्त का गवर्नर अभियुक्तों को दंड दिलवाने में रुचि प्रकट कर रहा है।"

"आप यत्न करते जाइये।"

मुकद्दमे की प्रारम्भिक कार्यवाही समाप्त हो गई। सिटी मैजिस्ट्रेट ने, जो उन दिनों डिप्टी कमिश्नर ही होता था, पन्द्रह अभियुक्तों में से दो को छोड़ दिया और शेष तेरह को सेशन कोर्ट के पास भेज दिया। उन तेरह कैदियों के विरुद्ध इण्डियन पीनल कोड की धारा १२०, ३६०, ३६१, ३६२ और १२४ ए लगा दी गई। सब से विचित्र बात यह हुई कि मैजिस्ट्रेट ने प्रेमनाथ के विरुद्ध अपने फैसले में तीन बड़े पृष्ठों में दलील की और घटनाओं को विकृत कर लिखा।

मिस्टर नार्टन ने जब मैजिस्ट्रेट के व्यवहार में इतना विरोध देखा तो उनका मुख लाल हो गया। अर्जुनसिंह की रक्षा में बहुत दुर्बलता थी। दीनानाथ के विरुद्ध कुछ नहीं था। केवल यह बात मुकद्दमे में आई थी कि अर्जुनसिंह के घर से और प्रेमनाथ के घर से किताबें निकली थीं, जिन पर दीनानाथ की दुकान की मोहर लगी हुई थी। मिस्टर नार्टन ने प्रेमनाथ और दीनानाथ की सफाई में एक दिन भर बहस की परन्तु प्रभाव उल्टा हुआ।

मुकद्दमा सेशन कोर्ट में गया और नार्टन को उस अदालत में मुकद्दमा करने के लिये दो हज़ार रुपया और दिया गया। जब ऐमिली उसकी इस नवीन फीस की पहली किश्त देने गई तो मिस्टर नार्टर ने उसके पति के व्यावहार पर बहुत खेद प्रकट किया। उसने कहा कि बहुत आसानी से वह अपने पुत्र को छोड़ सकता था, परन्तु उसके मन की अवस्था पर अचम्भे के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया जा सकता। उसने ऐमिली को मुकद्दमे में त्रुटियाँ दिखाईं और कहा, "यूँ तो मुकद्दमा चल ही नहीं सकता और किसी भी अभियुक्त के विरुद्ध दोष सिद्ध नहीं हुआ परन्तु प्रेमनाथ के विरुद्ध तो कुछ है ही नहीं। मुझ को अचम्भा तो यह है कि इस विषय में एक पिता की स्वभाविक प्रवृत्ति भी मैंने मैजिस्ट्रेट में नहीं देखी।"

११

ऐमिली ने हिन्दुस्तानियों से सम्पर्क तो केवल अपनी जानकारी बढ़ाने के लिये आरम्भ किया था, परन्तु इसका प्रभाव उसके मन पर हुए बिना नहीं रहा। संसार में कोई बात अथवा घटना ऐसी नहीं होती जो अपना न्यूनाधिक प्रभाव समीपवर्ती लोगों पर न छोड़े। प्रभाव तो सब पर होता है, परन्तु कुछ लोगों की आत्माएँ अपने पूर्व जन्म के फलसे पहले ही इतनी जीवित हो चुकी होती हैं; कि उनमें होने वाली घटनाओं की प्रतिक्रिया अधिक उग्र होती है। ऐमिली की आत्मा ऐसी ही प्रतीत होती थी।

हिन्दुस्तान में आने पर उसको मिस्टर चोपड़ा ने नीडोज होटल में ठहराया। इससे उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि हिन्दुस्तान और इंग्लिस्तान में कोई अन्तर नहीं। परन्तु जब उसको पता चला कि उसकी एक सौत भी है, तो वह कुछ चिन्तित हुई। उसने यत्न किया कि उससे मिलकर उसके मन पर उसके पति के दूसरे विवाह की प्रतिक्रिया जाने, परन्तु मिस्टर चोपड़ा ने यह कहकर टाल दिया कि वह अनपढ़ गंवार औरत है। व्यर्थ में उसको गाली देने लगेगी।

जब शान्ता के पति के घर से बिना कुछ लिये और बिना झगड़ा किये चले जाने की सूचना मिली, तो वह विचार करने लगी कि यह अस्वाभाविक प्रतिक्रिया क्यों? इससे उसके मन में पुनः अपनी सौत से मिलकर उसके भाव जानने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसके पति ने फिर यह कह टाल दिया कि वह पगली है। इसके पश्चात् घटनायें द्रुत गति से घटीं। उसके श्वसुर का देहान्त हो गया और वे दोनों रावलपिंडी चले गये।

यदि वह साधारण योरोपियन स्त्रियों की भाँति होती तो अंग्रेजी क्लब में योरोपियनों अथवा योरोपियन-नुमा हिन्दुस्तानियों की संगति से ही सन्तुष्ट रहती, परन्तु कुछ जानने की लालसा तो केवल उन आत्माओं में ही उत्पन्न होती है जो पूर्व जन्म के कर्म से सजीव हो चुके होते हैं। रावलपिंडी में तपोवन की औरतों ने उसकी भावनाओं को वह ठेस लगाई थी कि केवल मात्र हिन्दुस्तान में तमाशा देखने के विचार को छोड़कर वह हिन्दुस्तान को समझने का यत्न करने लगी।

उसकी इस समझने की भूख को गुजरांवाला के साधू ने और उन्नत कर दिया। वह साधू रोटी खाता है; शरीर को चालू रखने के लिये। और इस चालू शरीर का प्रयोग करता है अपनी आत्मा की उन्नति के लिये। एक रथ है, घोड़े हैं, सारथि है और रथ का स्वामी है। रथ और घोड़े रखे जाते हैं स्वामी को कहीं ले जाने के लिये, स्वामी रथ की देख-भाल रथ रखने के लिये नहीं, प्रत्युत कहीं दूर ले जाने के लिये करता

है। उसको यह उदाहरण बहुत पसन्द आया। इससे उसके मन में शरीर क्या है, इन्द्रियाँ और मन क्या है और आत्मा क्या है, यह सब जानने की इच्छा हुई।

गुजरांवाला से उसके पति की बदली लाहौर हुई। यहां पर उसके मन में एक और ठेस पहुँची। जहांगीर के मकबरे में एकाएक उसको सौत का लड़का उसको दिखाई दिया। लड़का स्वस्थ और साफ-सुथरे कपड़े पहने था। उसने देखा कि लड़के के मन में उच्चतम भावनायें और निर्भीकता भी विद्यमान है। वह सोचती थी कि एक मूर्ख, गंवार औरत का बच्चा इतना सभ्य और सुशील कैसे हो सकता है? यह पहला अवसर था जब उसके मन में अपने पति के पक्षपात-पूर्ण विचारों का भास हुआ था।

पश्चात् वह यत्न करती रही कि अपनी सौत से मिले, परन्तु एक उच्चतर सरकारी पदाधिकारी की बीवी होने के कारण पार्टियों, सभाओं और मेहमानों के कारण उसको समय ही नहीं मिलता रहा। एकाएक उसको प्रेम का नौकरी के लिये आना और मिस्टर चोपड़ा का उसको चालीस रुपये मासिक की नौकरी देकर मन में प्रसन्नता अनुभव करना चकित करने वाला सिद्ध हुआ। इससे जहां उसके मन में अपने पति के हृदय में उसकी सौत के लड़के के लिये कोमलता का पता चला वहां चालीस रुपये की न्यूनता का भी भास हुआ। वह सोचती थी, एक डिप्टी कमिश्नर के लड़के का वेतन चालीस रुपये मासिक एक हँसी है।

इसके कुछ ही समय पश्चात् एक और घटना घटी। वह तहसीलदार का और उसके पति का कहना था कि लड़का रिश्वत नहीं ले सकता। इन सब घटनाओं का अर्थ कुछ नहीं होता यदि ऐमिली की अन्तरात्मा में विचारशीलता नहीं होती और फिर उसके विचारों को उचित धारा में ले जाने के लिये स्वामी निरूपानन्द नहीं मिल पाता।

मुकदमे में मिस्टर चोपड़ा का व्यवहार उसके मन में क्रान्ति करने वाला सिद्ध हुआ। केवल मात्र नौकरी रखने के लिये उसने अन्याय

किये। अपने लड़के को फांसी दिलवाने का मार्ग खोल दिया। वह अपने पति को एक अति ही क्षुद्र प्राणी मानने लगी थी।

आज वह अपने पति के व्यवहार पर इतनी लज्जित हुई थी कि नार्टन की बातों का वह उत्तर न दे सकी। वह घर आई तो अपने कमरे में जा कर लेट रही। उसकी इच्छा हो रही थी कि अपने पति से लड़े, परन्तु उसका मुख इस कारण बन्द हो जाता था कि मिस्टर चोपड़ा ने जैसा व्यवहार अपनी पहली स्त्री और बच्चों से किया था ऐसा वह उसके साथ और बच्चों के साथ भी कर सकता था।

मिस्टर चोपड़ा, कुछ देरी से घर आया तो ऐमिली को अपने सोने के कमरे में देख चिन्तित हो वहाँ गया। उसको लेटा हुआ देखकर पूछने लगा, "क्या बात है ? तबीयत तो ठीक है ?"

"नहीं ! ठीक नहीं है। सिर में चक्कर आ रहा है।"

"तो यू-डी-क्लोन लगाओ न। बताओ कहाँ रखा है वह ?"

"बहुत लगा चुकी हूँ ?"

"कब ? गन्ध तो आती नहीं ?"

"जीवन भर लगाती रही हूँ। और सिर में चक्कर फिर भी आता ही है। इतना कहते हुए वह उठकर बैठ गई और उसने कहना जारी रखा, "भला यह बताइये कि अपने आदमी के साथ रियायत तो दूर रही न्याय भी नहीं किया जा सकता न ?"

डिप्टी कमिश्नर चिन्ता के भाव से उसके पलंग के कोने पर बैठकर पूछने लगा, "यह आज क्या हो गया है तुमको ? मैंने किस अपने के साथ न्याय नहीं किया ? शायद तुम प्रेमनाथ की बात करती हो ?"

"अभी और किसी अपने से वास्ता भी तो नहीं पड़ा। उसी की बात तो देखनी है। आज मिस्टर नार्टन से बातचीत हुई थी। उसने पूर्ण मुकदमे पर अपने विचार बताये थे। उसका कहना है कि प्रेम को छोड़ देने पर आपत्ति तो दूर रही, सब लोग आपको न्याय-प्रिय कहते।"

"मैं यह सन्देह नहीं बनने देना चाहता कि मैंने अपने लड़के को

छोड़ दिया है।"

"कितनी भद्दी युक्ति है। आप केवल अपने को नेकनाम बताने के लिये अपने लड़के को फांसी पर लटकाना चाहते हैं। फिर यह नेकनामी किस लिये चाहते हैं ?"

"मैं चाहता हूं कि मेरी नौकरी के साथ सम्बन्ध रखने वाली बातों में तुम दखल न दो।"

"पर मैं तो आपके पुत्र के बारे में कह रही हूं। नौकरी न्याय करने के लिए है, और उसमें आपने अन्याय किया है। यदि यह अन्याय किसी और से होता तो मेरा सम्बन्ध नहीं था। यह आपने अपने लड़के के साथ किया है, इस कारण कह रही हूं।"

"यही तो तुम समझती नहीं। मेरी नौकरी न्याय करने से अधिक सरकार का दबदबा बनाये रखने के लिये है। इन लोगों ने इस दबदबे में विघ्न डालना चाहा है।"

"पहली बात तो यह है कि इस फैसले को देते समय आप मैजिस्ट्रेट थे, डिप्टी कमिश्नर नहीं। दूसरे यह कि दबदबे में विघ्न डालने में प्रेम-नाथ का हाथ है क्या ?"

"है अथवा नहीं, इसके जानने की आवश्यकता नहीं। यह मैं जानता हूं कि यदि प्रेमनाथ को छोड़ देता तो लोग कहते कि मैंने अपने लड़के के साथ रियायत की है।"

यह बात इतनी अयुक्ति-संगत और मन में ग्लानि उत्पन्न करने वाली थी कि ऐमिली ने पुनः पलंग पर लेटते हुए कह दिया, "मुझ को आपसे कुछ नहीं कहना है।"

"पर मुझको कहना है।"

"क्या ?"

"यदि तुम ने प्रेम से सहानुभूति दिखाने में कोई ऐसी बात की जिससे मेरी मान-मर्यादा में धक्का लगा, तो ठीक न होगा।"

"क्या ठीक नहीं होगा ?"

"मुझको तुमसे पृथक् होना होगा।"

"बहुत ही कृतघ्न होंगे आप।"

"बकवास बन्द करो।"

ऐमिली मुख मोड़कर लेट गई। अमरनाथ ने समझा कि उसको पर्याप्त डांटा गया है। इससे उसको वैसे ही छोड़ क्लब में चला गया।

आज नार्टन भी क्लब में आया था। वह प्रायः अंग्रेज समाज से ही सम्बन्ध रखता था। और अफसरों को दूर से ही सलाम कर छुट्टी ले लिया करता था, परन्तु आज ऐमिली के आने पर उसकी रुचि मिस्टर चोपड़ा से बात करने के लिए हो गई थी। यूं तो वह वचन दे चुका था कि वह ऐमिली के इस मुकदमे में रुचि की बात किसी से नहीं कहेगा, परन्तु वह अपनी जानकारी के लिए कि प्रेम को दंड देने में क्या कारण है, बात करने की उत्सुकता को रोक नहीं सका।

पंजाब क्लब का पूरा हाल लांघकर वह मिस्टर चोपड़ा के पास आया। वह हालके एक कोने में बैठा शराब का एक पैग सामने तिपाई पर रखे गम्भीर विचार में मग्न था। मिस्टर नार्टन ने "गुड ईवनिंग मिस्टर चोपड़ा" कहकर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और फिर कहा 'एम आई डिस्टर्बिंग यू।'

"आइये, आइये, मिस्टर नार्टन! बैठिये क्या पीयेंगे?"

"मैंने अभी चाय ली है। धन्यवाद!" नार्टन ने बैठते हुए कहा, "इतने दिन तक मैं आपके समीप नहीं फटका। आप थे हाकिम और मैं था आपके कैदी का वकील। मेरा आपके समीप आना उचित नहीं था। परन्तु इस मुकद्दमे में ऐसी बातें मेरी जानकारी में आई हैं जिनसे मेरी आपसे परिचय बढ़ाने की लालसा जाग उठी है।"

"क्षमा करिये मिस्टर नार्टन! मैं मुकदमे के विषय में आपसे बात करना नहीं चाहता।"

"मुकद्दमे के विषय में मैं कुछ नहीं कहना चाहता। यदि कहना होता तो आपके फैसला लिखने के पहले मिलता। अब तो मरे घोड़े को पीटने

की बात है। मैं मुकद्दमे के विषय में नहीं कह रहा। मैं तो एक औरत के विषयमें कहना चाहता हूँ जो मेरे मुअक्कल की मां है। साफ परन्तु टाकिया-लगे कपड़े पहन बेचारी नित्य पांच मील आने और पांच मील जाने की यात्रा करती रही है। अपने पुत्र से अति मोह है उसका। तभी तो गर्मी, सर्दी, वर्षा, आंधी की परवाह न करती हुई वह घड़ी की सूई की भांति समय पर अदालत के दरवाजे पर आ खड़ी होती थी। अदालत में आपके सामने तीन मास तक खड़ी रही और एक बार भी आपकी अयुक्तिसंगत युक्तियों पर उसने माथे पर बल नहीं आने दिया।"

"कल जब आपने फैसला सुनाया तो उसकी आंखों में तरलता थी। जब वह बाहर निकली तो मैंने उससे कहा, मैसेज चोपड़ा ! मुझको शोक है कि मैं आपके बच्चे को छुड़ा नहीं सका।"

इस पर उसने कहा, "यही तो मेरा उनसे मतभेद है। मैं आत्म-समर्पण करना जानती हूं। और वे आत्म-संरक्षण के लिए उत्सुक रहते हैं। मैं आत्मा की ओर देखती हूं, वे शरीर के उपासक हैं। मैं भावों को मानती हूं वे शब्दों पर अपना ध्यान लगाये रखते हैं।"

"मैं सोच रहा था कि क्या सत्य ही उसके पति मिस्टर चोपड़ा आप हैं ?"

मिस्टर चोपड़ा चुपचाप मिस्टर नार्टन का मुख देखता रहा। उसे चुप देखकर मिस्टर नार्टन ने अपना कहना जारी रखा। "पहले जब वह मुझे मिली थी तो मैं समझा था कि मिस्टर चोपड़ा कोई दूसरे हैं। परन्तु उसने एक दिन मुझसे कहा था कि 'पिता' के सार्वजनिक उत्तर-दायित्व भी हैं। उनको वे भी निभाते हैं। इसी कारण मैंने यह केस बहुत मेहनत से तैयार किया था और अपनी ओर से पूरा यत्न किया था कि पिता यदि पुत्र को छोड़ भी दे तो कोई भी बड़ा अफसर उसमें दोष न निकाल सके।"

"मिस्टर नार्टन ! मैं आपका बड़ा मशकूर हूं। परन्तु मैं आपके मेहनत का फल नहीं निकाल सका। मुझको आपकी सब युक्तियां सारहीन

प्रतीत हुई हैं। एक युक्ति जो आप नहीं समझ सके और जिसका उत्तर आप नहीं जानते वह यह है कि राज्य व्यक्तियों से ऊपर होता है।"

"यह ठीक है, परन्तु एक बात आपको भी स्मरण रखनी चाहिये। वह यह कि राज्य का आधार न्याय है, जब आप राज्य को चलाने के लिए अन्याय का अवलम्बन करते हैं तब राज्य को चलाने पर ही कुठार चलाते हैं।

"न्याय वही है, जिससे लोगों का हित हो।"

"हित वही है, जो न्याय युक्त हो।"

बात इससे आगे चल नहीं सकी। इस समय प्रान्त के गवर्नर कलब में आ गए और सब का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया।

१२

सेशन कोर्ट के मुकद्दमे को दो मास और लग गए। परन्तु परिणाम वही हुआ जो पहली अदालत में हुआ था। सब को दंड हुआ। प्रेमनाथ को सात वर्ष का कठोर दंड हुआ।

इस बार ऐमिली स्वयं वकील साहब से मिलने नहीं आई। उसने एक सहस्र रुपया और भेजा और हाई कोर्ट में अपील के लिए कह दिया। हाईकोर्ट में अपील सुनी गई। अर्जुनसिंह को फाँसी के स्थान जन्म भर कैद का दंड हुआ। अन्य बारह कैदियों का भी दंड कम कर दिया गया। प्रेमनाथ का दंड तीन वर्ष का रह गया। इस दंड में एक वर्ष तो व्यतीत हो चुका था।

इस काल में दीनानाथ छिपा-छिपा घूमता रहा। उसने अपना मकान दिल्ली में ही ले लिया और बिशनदास के नाम से वहाँ विख्यात होगया। एक दिन वह अपनी स्त्री को वहाँ ही ले गया और इस प्रकार नाम बदल कर रहने लगा।

मानसिक वेदना

१

प्रेम की माता के लिये प्रेम का पकड़कर कैद किया जाना बहुत ही दुःखकारक हुआ। जब तक मुकद्दमा चलता रहा वह मन को आशा की भित्ति पर स्थिर रख सकी। परन्तु हाई कोर्ट में अन्तिम निर्णय हो जाने पर वह अपने को सम्हाल न सकी। जिस दिन उसको यह पता चला कि सब प्रकार का प्रयत्न किये जाने पर भी प्रेमनाथ कैद से बच नहीं सका, वह खाट पर पड़ गई। वर्ष भर की भागदौड़ और शरीर की शान्ति को खाने वाली चिन्ता के कारण वह बीमार हो गई। उसकी सेवा के लिये इन्द्रा ही थी। वह बालिका नहीं जानती कि मां को क्या हो रहा है। गांव के हकीम को बुलाकर दिखाया। वह दुशान्दा लिख कर दे गया। उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। पश्चात् सरकारी अस्पताल में लेजाकर दिखाया गया। डाक्टर ने कह दिया तपेदिक है। इस पर पुनः लाहौर के एक हकीम का इलाज होने लगा, पर न ज्वर गया न खांसी।

इस समय एक घटना और घटी। मोहनलाल रोड़ की दुकान पर काम करने वाला नौकर सब कुछ बेचकर कहीं भाग गया। इससे जो थोड़ी-सी आय होती थी वह भी समाप्त हो गई।

प्रेमनाथ के मामा ने अपनी बहिन से पूछा कि उसके पति को समाचार भेज दिया जाय? परन्तु बहिन नहीं मानी। उसका एक ही कहना था कि इन्द्रा का विवाह कहीं कर दिया जाये तो ठीक हो; परन्तु विवाह के लिये बहिन के पास एक पैसा भी नहीं था। इन दिनों इन्द्रा के मामा की हालत भी अच्छी नहीं चल रही थी। इस कारण इन्द्रा के विवाह की बात इन्द्रा की मां के कहने तक ही सीमित रही।

शान्ता की अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जाती थी। किसी प्रकार

का लाभ न देख औषधि बन्द कर दी गई और मृत्यु की धीरज से प्रतीक्षा होने लगी। शान्ता मन में सोचती थी, प्रेम को कैद हुए डेढ़ वर्ष हो गया है। शेष डेढ़ वर्ष में कुछ छूट भी मिलेगी। इस प्रकार एक सवा साल की बात है और तब तक तो वह जी सकेगी। प्रेम के आने पर इन्द्रा का हाथ उसको पकड़ाकर मरने में सुख और शान्ति प्राप्त करेगी। वह अपने मन की शक्ति को संचित कर तब तक जी सकने पर पूर्ण विश्वास रखती थी।

इस समय नित्य प्रातःकाल भगवान का भजन और रामायण का पाठ होता था, जो उसकी तिल-तिल घटती शक्ति को रोकने में सबल हो रहा था।

मास में एक बार प्रेमनाथ से वोर्स्टल जेल में भेंट होती थी। हाई-कोर्ट के अंतिम निर्णय होने के तीन मास तक उसकी माँ भेंट के लिये जाती रही। पीछे वह इतनी निर्बल हो गई कि जा नहीं सकी। वह अपनी शारीरिक शक्ति एक रत्ती भर भी व्यर्थ गंवाना नहीं चाहती थी। वह अपने शरीर को उसके लौट आने तक जीवित रखना ही चाहती थी।

जब वह नहीं गई तो प्रेमनाथ का मामा मिलने गया। उसने प्रेम को माँ की पूर्ण अवस्था से परिचित करा दिया। प्रेम ने माँ को सन्देश भेजा कि वह सब प्रकार से स्वस्थ, है उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये, वह शीघ्र ही लौटकर आएगा।

इस प्रकार प्रतिमास भेंट होने लगी और छः मास व्यतीत हो गये। प्रेम प्रतिमास माँ को सान्त्वना का सन्देश भेजता रहता था। परन्तु माँ की अवस्था दिन प्रतिदिन नीचे-ही-नीचे गिरती गई।

अभी कैद की मियाद में नौ मास शेष थे कि शान्ता को दस्त लग गये। कभी-कभी अचेतनता भी होने लगी। इन्द्रा को बहुत बचाकर रखने का यत्न किया जाता था। परन्तु वह भी सूखकर दिन प्रतिदिन कांटा होती जाती थी। इस समय शाहदरा के डाक्टर ने प्रेम के मामा को बताया कि यदि वह डिप्टी कमिश्नर के पास प्रार्थना करे तो प्रेम को पैरोल पर

मां की सेवा के लिए छोड़ा जा सकता है। प्रेम का मामा एक वकील से मिला। उसने बीस रुपये लेकर एक प्रार्थना-पत्र लिख डिप्टी कमिश्नर की अदालत में लेजाकर उपस्थित कर दिया। डिप्टी कमिश्नर ने प्रार्थना सुनी और उस पर आज्ञा करने के लिये तीन दिन की तारीख डाल दी। इस काल में सरकारी वकील से कहा गया कि वह यदि आपत्ति करना चाहे तो कर सकता है।

उसी सायंकाल डिप्टी कमिश्नर घर गया तो ऐमिली को बुलाकर बोला, "सुना है, प्रेम की मां बहुत बीमार है।"

जब से प्रेम को दंड हुआ था ऐमिली अपने पति से भली भांति बोलती नहीं थी। वह उसके साथ अब क्लब व नाच पर भी जाती नहीं थी। केवल मात्र चाय अथवा खाने के समय दोनों एक दूसरे का दर्शन करते थे। इससे अधिक नहीं। इस विषय पर एक दिन खुलकर वाद-विवाद भी हो चुका था। साहब ने कहा था, "यदि तुम मेरे साथ चल नहीं सकती तो विवाह का क्या लाभ हुआ ?"

"मेरी नुमायिश करने के लिये आपने मुझसे विवाह किया था क्या?"

"नुमायिश नहीं श्रीमती जी ! अपना साथी बनाने के लिये।"

"सो तो मैं हूं। आपके बच्चों को जन्म दिया है। आपके घर का प्रबन्ध देखती हूं। आपके सुख-आराम में सहायक हूं। पर आपकी नौकरी सम्बन्धी सभाओं में अथवा क्लब में जाकर आपके शराबी मित्रों से बातें करने में सहायक नहीं होना चाहती।"

"मैं जब अकेला वहां जाता हूं और दूसरे लोग अपनी बीवियों के साथ होते हैं तो मुझको लज्जा लगती है।"

"तो आप मुझको तलाक देकर दूसरा विवाह कर सकते हैं।"

"पर मैं पूछता हूं कि अब क्या बात हो गई है जो तुम इस प्रकार नाराज़ रहने लगी हो।"

"जब मैं आपके साथ जाती हूं तो लोग मेरी ओर अंगुली कर कहते हैं कि यह औरत है जिसने अपने पति को ऐसा उल्लू बना रखा है कि

वेचारी सौत के बच्चे को कैद करवा दिया है।"

"पर तुम तो जानती हो कि इसमें तुम्हारा कुछ भी दोष नहीं।"

"इसीलिये तो मैं कहती हूं कि मुझको नुमायिश के लिये साथ न ले जाइये। जिनके सन्तोष के लिये आप मुझ को साथ ले जाते हैं वही मुझ को दोषी मानते हैं।"

वात इस प्रकार इस सीमा तक पहुँचकर रह गई। डिप्टी साहब ने यह समझ उसको बताया था कि वह उसको प्रेम को छोड़ने को कहेगी, परन्तु ऐमिली ने इस वत को सुनी अनसुनी कर दिया और कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर मिस्टर चोपड़ा ने कहा, "मैं सोच रहा हूं कि उसे पैरोल पर छोड़ूं अथवा न।"

ऐमिली ने बात बदल कर कहा, "आप क्लब मोटर गाड़ी में जा रहे है क्या ?"

"तो कैसे जाऊँगा वहाँ ?"

"किसी मित्र से कहिये कि वे आकर आपको ले जाएं और फिर रात को छोड़ जाएँ। पहले कई बार ऐसा हो चुका है।"

"तो मोटर तुम को चाहिये ?"

"हाँ।"

"कहाँ जाना है ?"

"श्री स्वामीजी को लेकर कहीं जाना है।"

"यह स्वामियों के चक्कर में तुम कैसे पड़ गई हो ?"

"मैं समझती हूँ कि हिन्दुस्तान का यही प्रसाद है। भाग्य खींचकर यहाँ ले आया है तो इससे लाभ उठा रही हूँ।"

"यह सब व्यर्थ है।"

"तो आप इस व्यर्थ के काम के लिये गाड़ी नहीं देना चाहते ?"

"मैं तुम को न नहीं कर सकता। परन्तु उस धूर्त स्वामी के लिये मेरे मन में कोई स्थान नहीं।"

"पर वे माँगने नहीं आये। मांग तो मैं रही हूँ।"

"तो ले जाओ।"

ऐमिली ने ड्राइवर को बुलाकर मोटर निकलवाई और स्वामी निरूपानन्द के आश्रम पर जा पहुँची। वहां पहुँच उसने स्वामी जी को साथ लेकर शाहदरा जाने का विचार प्रकट किया। "वहां क्या है बेटी?" स्वामीजी ने पूछा।

ऐमिली ने बताया, "आप जानते हैं कि साहब की हिन्दुस्तानी बीवी वहां रहती है। सुना है, वह बहुत बीमार है। आप उसकी चिकित्सा करियेगा न?"

निरूपानन्द इस प्रस्ताव पर चकित रह गया। उसने कुछ विचार कर कहा, "चिकित्सा तो करूंगा, परन्तु मैं पूछता हूँ, तुम को उसके जीवित रहने में क्या रुचि है?"

"स्वामी जी! मैं आपकी पूर्ण शिक्षा का यही निचोड़ समझी हूँ कि सब में एक ही आत्मा विराजमान है। यदि यह बात सत्य है तो सब का सुख-दुःख सब को अनुभव होना चाहिये। प्रायः ऐसा नहीं होता। इसमें कारण है कि प्रायः मनुष्यों में आत्मा की मृत्यु हो चुकी होती है जैसे एक मनुष्य में अर्द्धांग वात हो जाने से मृत अंग में शरीर के अन्य अंगों में होने वाले कष्टों का अनुभव नहीं होता, वैसे ही मनुष्य समाज में वे समाज के सुख-दुःख की प्रतीति नहीं कर पाते, जिनकी आत्मा में पक्षाघात हो चुका होता है।"

"धन्य हो बेटी! अब मैं समझा हूँ कि मेरी शिक्षा निष्फल नहीं जा रही। क्या है तुम्हारी सौत को?"

"मैं नहीं जानती। आज सूचना आई है कि वह बहुत बीमार है।"

"तो अभी चलें?"

"हां, महाराज।"

२

प्रेमनाथ के जेल में पहले कुछ मास तो बहुत ही कठिनाई के व्यतीत हुए। यद्यपि उनका शाहदरा वाला मकान बहुत ही छोटा था और कच्चा था, तथापि उसकी मां की मेहनत और प्रयत्न से बहुत साफ-सुथरा रहता था। घर में मच्छरों का नामो-निशान नहीं था, परन्तु जेल में उसे जिस कोठरी में रखा गया उसमें दो कैदी और थे और तीनों को टट्टी-पेशाब कोठरी के अन्दर ही करना पड़ता था। परिणाम स्वरूप स्थान बहुत ही गंदा हो रहा था। रोटी में उसके साथ मिट्टी मिली होती थी। साग तो एक प्रकार के पत्ते होते थे, जो बहुत ही बुरे स्वाद के बनते थे। इस पर भी काम करने के लिये कभी चक्की चलानी पड़ती थी कभी बान बटना पड़ता था।

कई मास के पश्चात् प्रेमनाथ को निवाड़ बुनने का काम दिया गया और एक वर्ष से ऊपर हो जाने पर उसको मुन्शीगीरी के काम के लिये कार्यालय में लगाया गया। एक बात थी, प्रेमनाथ ने अपनी बुरी हालत और कठोर मेहनत के लिये कभी शिकायत नहीं की थी। यदि किसी दिन काम पूरा नहीं कर पाता था और उसको दंड मिलता था तो भी वह चुपचाप सह लेता था। उसने कभी किसी जेल के अफसर की शिकायत नहीं की थी। इसका परिणाम यह हो रहा था कि धीरे-धीरे उसे काम सुगम मिलता जाता था।

जब तक उसकी मां आती रही वह चक्की पीसता रहा और उसने मां से कभी शिकायत नहीं की थी। वह उसे व्यर्थ में दुःखी करना नहीं चाहता था। मां के बीमार होने की सूचना मिली तो उसे चिन्ता लग गई। परन्तु उसने इस विषय में अपने अफसरों से न तो किसी प्रकार की शिकायत की और न ही पैरोल इत्यादि का विचार मन में उठाया। वह मन में भगवान का भजन कर सदा प्रार्थना करता रहता था कि वह मां को उसके लौटने तक जीवित रखे।। उठते-बैठते चलते-फिरते और

काम करते वह भगवान के नाम की आराधना करता रहता था।

प्रतिमास उसको प्रतीक्षा रहती थी कि अब मां स्वस्थ हो गई होगी और उससे मिलने आएगी। वह उत्सुकता से मुलाकात के दिन की प्रतीक्षा करता रहता था। उसकी निराशा का कोई ठिकाना नहीं होता जब वह मां के स्थान पर अपने मामा को आया देखा करता था।

एक दिन उसका मामा आया और यह कहते हुए कि उसकी मां अभी भी बीमार है, उसके आंसू निकल आये। प्रेम ने अपनी कैद की शेष अवधि गिनी और कहा, "मामा! मां ठीक हो जाएगी। मैं अभी उसके हाथ से सेहरा बंधा विवाह के लिये जाऊंगा। उससे कह देना, वह अभी नहीं जा सकती।"

उसका मामा जानता था कि वह दुःखी मस्तिष्क की इच्छा का प्रदर्शन मात्र है। इस पर भी उसने उसकी मां की वास्तविक अवस्था का वर्णन नहीं किया।

इससे कुछ दिन पीछे ही उसने प्रेम के पैरोल पर छोड़े जाने की प्रार्थना की थी। इन दिनों प्रेमनाथ क्लर्क का काम करता था। इस काम में मेहनत और समय बहुत कम लगता था, इसी से उसे भगवत्-भजन के लिये बहुत समय मिल जाया करता था।

जेल में उसकी कोठरी का एक साथी था, नाम था मनोहर। अपराध था बच्चे के हाथ में से सोने के कड़े उतारते हुए उसको घायल करना। दंड पांच साल कठोर कैद का था। एक और साथी भी था। उसका नाम था रहमान। अपराध था एक लड़की का गला घोंटकर मारने का यत्न। वह उस लड़की को प्रेम करता था, परन्तु उसके माता-पिता ने लड़की का विवाह किसी अन्य से कर दिया था। एक दिन वह लड़की मकान से उतरी तो रहमान अपने मकान के नीचे खड़ा था। दोनों के मकान एक दूसरे के सामने थे। रहमान अपने क्रोध पर काबू नहीं रख सका और लपककर उसकी गर्दन पकड़ झकोड़ने लगा। राह चलतों ने समयपर देख लिया और लड़की को छुड़ा लिया। पर इतने में ही वह अधमरी होगई थी।

पहले तो प्रेमनाथ इन दोनों से घनिष्ठता उत्पन्न नहीं करना चाहता था। परन्तु मनोहर तो उसके पीछे ही पड़ गया। एक दिन प्रेम दिन भर जब चक्की चलाकर लौटा तो उसके हाथों में फफोले पड़े हुए थे और उसका शरीर स्थान-स्थान पर पीड़ा कर रहा था। मनोहर ने उसकी दशा देखी और समझी। फिर उसके अंगों को दबाकर उसको आराम पहुँचाया। हाथों के फफोलों पर पानी लगाया।

उसकी सेवा से प्रेमनाथ पिघल पड़ा। उसने कहा, "मनोहर भैया, तुम इतने दयालु होते हुए भी कैसे इस प्रकार का अपराध कर बैठे थे ?"

मनोहर फूट पड़ा। कहने लगा, "माँ बहुत बीमार थी। डाक्टर देखने के लिये फीस मांगता था। मैं मां का कराहना सुन नहीं सका। कहीं से रुपये लाने के लिये मकान के बाहर आया तो वह बच्चा बाजार से कुछ लेकर चला आ रहा था। मैंने उसको गोदी में उठा लिया, प्यार किया और उसका कड़ा उतारने लगा। वह रो पड़ा, इस पर मैंने जल्दी में कड़ा उतारने में उसकी बाँह घायल कर दी।"

"मां अब कैसी हैं ?"

"वह मर गई हैं।"

"तुम ने एक भूल की भैया। तुम अपनी मां से बहुत प्रेम करते थे न ! परन्तु तुमने यह विचार नहीं किया कि तुम्हारी मां भी तुम से स्नेह करती होगी और जब उसको पता चलेगा कि तुम कैद हो गये हो तो उसके मन पर क्या प्रभाव उत्पन्न होगा।"

मनोहर आंखें नीचे किये बैठा रहा। प्रेम ने फिर कहा, "एक बात और भी विचारणीय थी। तुम अपनी मां के लिये इतना कुछ करने के लिये तैयार हो गए और बच्चे की मां भी थी। वह बच्चे के लिये कितना स्नेह रखती होगी, यह तुमने विचार नहीं किया।"

मनोहर जो अपने भाग्य को कोसता रहता था, प्रेम की विचार-शीलता से अत्यन्त प्रभावित हुआ। रहमान ने जब देखा कि मनोहर, जो दिन रात रोया करता था प्रेम की संगत से सन्तोष अनुभव करने

लगा है, वहुत चकित हुआ। फिर जब प्रेमनाथ को हाथों के फफोलों के कारण ज्वर हो आया और उसको यह सब कुछ चुपचाप सहन करते देखा तो वह भी उसकी ओर आकर्षित होने लगा। एक दिन रहमान ने काम करने से इन्कार कर दिया और उसको जमादारों ने बुरी तरह पीटा। रात को शरीर में वेदना के कारण वह हाय-हाय करता रहा। प्रेम और मनोहर ने रात भर उसकी सेवा और सुश्रूषा में व्यतीत करदी। इससे तीनों एक दूसरे के समीप हो गये।

प्रेम ने कहा- "रहमान भैया! कुछ खुदा का नाम लिया करो।"

"कहाँ है वह? इस आज़ाब में भी अगर वह रहमत नहीं दिखाता तो फिर किस वक्त दिखलायेगा?"

"भैया, वह रहमत ही क्या होगी जो तुमको सुख देकर दूसरों को दुःख दे। तुमने जो किया वह अपने भावों के प्रभावाधीन ही तो किया था, परन्तु तुमने उस लड़की के तथा उसके माता-पिता के भावों का तो विचार नहीं किया। वह परवरदिगार केवल तुम्हारा ही खालक तो नहीं। उसकी तो सब खलकत अपनी है। वह सब का ध्यान भी रखता है।"

"मैं उस लड़की से प्रेम करता था?"

"ठीक है! पर उसके माता-पिता तुमको पसन्द नहीं करते थे। शायद वह लड़की भी तुमसे अधिक अपने माता-पिता को चाहती थी। देखो रहमान, हमारा विचार इस प्रकार है: सब प्राणियों में आत्मा है। सब को सुख-दुःख होता है। हमको सबकी आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझना चाहिए और सदा इस बात का ध्यान करना चाहिये कि किसी को दुःख न हो। स्वयं दुःख सहन कर भी दूसरों को दुःख न देना ही मनुष्य में मनुष्यता का लक्षण है।"

रहमान इतनी गम्भीर बात सोच नहीं सकता था। उसका कहना था, "कुदरत में यह बात नहीं पाई जाती। प्रेमनाथ तुम्हारा उसूल गैर कुदरती है। कुदरत में जिसकी लाठी उसकी भैंस होती है।"

"तुम ठीक कहते हो। पर इन्सान को परमात्मा ने कुदरत पर हकूमत करने के लिये पैदा किया है। मैं कुदरत पर राज्य करना चाहता हूँ। उसका दास बनकर विचरना नहीं चाहता।"

इस प्रकार बातचीत होती रहती थी। एक बार प्रेमनाथ को निवाड़ बुनने से पुनः चक्की पर लगा दिया गया। रहमान कहने लगा, "मैं होता तो इसके खिलाफ़ इज़हार करता।"

"तुम्हारे दृष्टिकोण से ऐसा होना चाहिये। परन्तु मेरा दृष्टिकोण तुमसे भिन्न है। मैं कहता हूँ कि मैं यहाँ कैदी हूँ, अपने पूर्व जन्म के दुष्कर्मों के कारण। मेरे प्रत्येक प्रकार के यत्न करने पर भी मैं कैद होने से बच नहीं सका। इस कारण इस कैद होने के परिणामों को धैर्य से सहन करना ही एक मात्र मार्ग रह गया है।"

"परमात्मा को मानने वाले अपनी अकर्मण्यता को छिपाने का यह बहाना बनाते हैं। 'हिम्मते मरदां, मददे खुदा', को मैं मानता हूँ।"

"ठीक है! मैं भी इसको मानता हूँ और मैंने कैद से बचने के लिये कोई उपाय छोड़ा नहीं। परन्तु उसका जब फल नहीं निकला तो यह मानना ही पड़ता है कि पूर्व जन्म के कर्मों का फल इतना प्रबल है कि इस समय का प्रयास उसके सम्मुख तुच्छ सिद्ध हो रहा है।"

"यह सब भ्रम है प्रेम! इस तरह से संसार नहीं चलता।"

इस वादविवाद से मनोहर में परिवर्तन होता जाता था। वह उससे मंत्र और उपासना के भजन सीखने लगा था। ऐसी अवस्था में एक दिन प्रेमनाथ अपने मामा से मिलकर आया तो नित्य से अधिक गम्भीर दिखाई दिया। मनोहर ने उससे पूछा, "प्रेम भैया, आज क्या हो गया है?"

"माँ की अवस्था बहुत खराब हो गई प्रतीत होती है। आज मामा जी मिलने आये थे और उनके आंसू निकल रहे थे।"

"तो फिर क्या होगा?"

"मेरी स्थिति में एक व्यक्ति भगवान से प्रार्थना करने के अतिरिक्त कर ही क्या सकता है!"

३

ऐमिली स्वामी निरूपानन्द को लेकर शाहदरा जा पहुंची। वह उनको शान्ता के घर ले गई। शान्ता को दिन में तीन-चार दस्त आ जाते थे। ज्वर एक सौ दो दर्जा तक हो जाता था। खांसी और बलगम निरन्तर आती रहती थी। दुर्बलता बहुत हो गई थी। आंखें भीतर धंस चुकी थीं। गाल सूखकर साथ चिपक गये थे और बात करने पर सब दांत दिखाई देने लगते थे।

हालत बहुत बिगड़ चुकी थी। दुर्बलता और आंखों की मन्द ज्योति देख ऐमिली डर गई। प्रेमनाथ के मामा को पता चला तो भागा हुआ आया और इन्द्रा की खाट समीप कर उनको बैठने को कहा। वे बैठे नहीं। स्वामीजी ने नाड़ी देखी, पश्चात् आंखों के कोए और जबान देखी। पेट को देखा और रोग का पूर्ण इतिहास जाना।

निरीक्षण हो जाने के पश्चात् स्वामी जी ने कहा, "इसके बचने का केवल एक ही मार्ग रह गया है कि इसको यहां से हटाकर कहीं पहाड़ पर ले जायें। इस अवस्था में इसको ले जाना सुगम नहीं। कोई परिचारिका चाहिये। औषधि तो मैं अपने पास से दे दूंगा।"

इस सब सम्मति को सुनकर प्रेम का मामा मुख देखता रह गया। वास्तव में इनमें से एक भी वस्तु उपलब्ध नहीं थी। प्रेमनाथ के मामा ने कहा, "महाराज, इन सब बातों में से हम एक भी सम्पन्न नहीं कर सकते। जब मैं अपनी बहिन के पूर्ण इतिहास पर विचार करता हूं तो मेरा मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है। जो कुछ आप कर सकते हैं यहां रहते ही कर दीजिये। हम जीवन भर आपका एहसान मानेंगे।"

स्वामीजी नीचे उतर गये। ऐमिली पीछे रह गई। उसने शान्ता के समीप होकर पूछा, "बहिन! जीना चाहती हो न?"

"चाहने से भी कभी कुछ हुआ है?" शान्ता ने अपनी भर्राई हुई आवाज में कहा।

"मन की शक्ति बहुत ही प्रबल होती है। अपने मन में दृढ़ संकल्प करलो तो फिर शेष भगवान कर देंगे।"

शान्ता ने आँखें मूंद लीं। ऐमिली ने कहा, "अच्छा, मैं देखती हूँ कि क्या किया जा सकता है।"

"बहिन, प्रेम को मिलने की छुट्टी दिलवा दो। मैं शान्ति से मर सकूंगी।"

"मैं उनसे नहीं कहूँगी। वे अच्छे आदमी नहीं हैं।"

इस कथन को सुनने पर शान्ता की आँखें खुल गईं। उनमें क्रोध की कुछ झलक भी दिखाई दी, परन्तु शीघ्र उसने अपने को वस में कर कहा, "इस समय जब मृत्यु सामने साकार दिखाई दे रही है, मेरे कानों में ऐसा क्यों कहती हो ? मैंने उनके विषय में अपने मन में कभी बुरा विचार नहीं किया।"

ऐमिली हिन्दु औरतों के इन भावों को जान चुकी थी। इससे अपने कहने पर लज्जित हो चुप कर गई। पश्चात् उसने बात बदलकर कहा, "स्वामी जी बहुत ही योग्य वैद्य हैं। मुझको विश्वास है कि आप उनकी चिकित्सा से ठीक होने लगेंगी।"

"न नौ मन तेल होगा, न मेनका नाचेगी।"

"इतना कुछ जुटाने का यत्न करूँगी।"

"तुम ? उनसे कह कर ?"

"नहीं ! मेरे अपने कुछ साधन हैं। मैं कल फिर मिलूंगी। अभी औषधि का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।"

जब ऐमिली नीचे आई तो स्वामीजी ने कहा, "यह अब बच सकती हैं पर हजारों का खर्चा है। इसका प्रबन्ध हो सके तो कुछ किया जा सकता है।"

ऐमिली ने कहा, "आप औषधि तो अभी दे दें। शेष घर चल कर विचार किया जाएगा।"

स्वामीजी ने अपने थैले में से एक पोटली निकाली, एक शीशी में से

श्वेत रंग की एक औषधि की चार पुड़ियां बनाकर प्रेम के मामा को देते हुए कहा, "इसको चार-चार घंटे के पीछे मधु में दीजिए। कल पुनः औषधि भेज देंगे।"

प्रेम का मामा औषधि खिलाने ऊपर आया तो स्वामीजी ऐमिली के साथ मोटर में बैठ लाहौर को चल दिए। मार्ग में ऐमिली ने कहा, "मैं चाहती हूं कि डलहौजी में एक कोठी किराये पर ले लीजाए। और कुछ समय के लिए आप वहां चले जाएं। शान्ता का भाई उसको लेकर वहां पहुंच जाएगा। वह वहां रहेगा। मैं खर्च का प्रवन्ध कर दूंगी।"

"तुम कर दोगी ? बहुत खर्चा बैठेगा।"

"आप चिन्ता न करें।"

घर पहुंचकर सबसे पहला काम उसने बैंक में अपना हिसाब देखा। उसके पास बीस हजार से ऊपर जमा था। इस पर उसने अपनी योजना बना डाली।

अगले दिन उसने साढ़े पांच हजार की एक डाज गाड़ी मोल ले ली। उसने इस गाड़ी में सबसे पहला काम यह किया कि स्वामी जी को लेकर पुनः शान्ता को दिखाने ले गई। देखने पर दस्तों में कुछ लाभ प्रतीत हुआ। शेष वैसे ही था। दो दिन की और औषधि दिलवाकर जब वह लौटी तो उसने स्वामी जी के एक शिष्य को रुपया देकर डलहौजी भेज दिया और यह कह दिया कि एक अच्छी-सी कोठी किराये पर लेकर सूचना दे। स्वामी जी से उसने कहा, "आपको कष्ट तो बहुत हुआ है पर अभी थोड़ा कष्ट और करना पड़ेगा। वहां कम से कम एक मास के लिए आप जाकर रोगी को अपनी देखभाल में रखिए।"

सायंकाल एक नई मोटर कोठी में देख अमरनाथ ने समझा कि कोई उससे मिलने आया है। पर जब उसको पता चला कि ऐमिली ने अपने लिए एक गाड़ी खरीदी है तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। बैरे से पता पाकर मिस्टर चोपड़ा ऐमिली के कमरे में जा पहुंचा। वह दिन भर की भाग-दौड़ के कारण थक गई थी, और आराम कर रही थी।

मिस्टर चोपड़ा ने कहा, "ऐमिली डीयर, यह डाज गाड़ी तुम ने मोल ली है ?"

"जी हां।"

"क्या जरूरत थी इसकी ?"

"मुझ को आजकल कुछ इधर-उधर जाना पड़ रहा है और आपके काम में विघ्न डालना उचित न मान एक पृथक् गाड़ी ले ली है। साढ़े पांच हज़ार की मिली है।"

"कौन काम आन पड़ा है ?"

"कल मैं शाहदरा गई थी। आज फिर जाने की आवश्यकता थी। यूं तो मैं पहले ही एक गाड़ी खरीदने का विचार रखती थी। आज एकाएक आवश्यकता आ पड़ने पर खरीद ही ली ।

"शाहदरा में क्या काम था ?"

"आप की बेगम साहिबा बीमार हैं। देखने गई थी।"

"शान्ता को ? तुम वहां क्यों गई थीं ? सुना है उसको तपेदिक हो गया है। कहीं तुम को कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगा ?"

"करेंगे क्या, दोनों बीवियां मर जायेंगी तो नए विवाह के लिए छुट्टी मिल जायेगी।"

"कैसी बातें कर रही हो तुम ? हो क्या गया है आजकल तुमको ?"

"मेरे ज्ञान-चक्षु खुल गए हैं।"

"यह स्वामियों के साथ घूमने का फल है। देखो डीयर, मैं एक बड़ा अफसर हूं, तुम उसकी बीवी हो। तुम को अपनी और अपने पति की मान-मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए।"

"इसीलिए तो भागती फिरती हूं। आपके विचार में मान-मर्याद की रक्षा अफसरों को प्रसन्न करने से होती है। मैं समझती हूं कि अपनी मर्यादा अपने मन में होने से ही बनती है। जिस काम से आत्म-ग्लानि उत्पन्न हो वह दूसरों को अच्छा लगे तो भी उन्नति का सूचक नहीं है। मैं जो कर रही हूं, अपनी अन्तरात्मा से अच्छा समझकर कर रही हूं।"

"और मैं जो कुछ कह रहा हूं वह अपने मन में अच्छा मान कह रहा हूं।"

"मैं आपको उससे मना नहीं करती। इसी प्रकार आप से आशा करती हूं कि आप मुझ को मना न करें।"

दो नदियां जो तेरह वर्षों से साथ-साथ वह रही थीं और लगभग एक वर्ष से पृथक्-पृथक् बहने लगी थीं अब विपरीत दिशाओं में बहने लगीं। अमरनाथ मन में सोचता था कि यह हिन्दुस्तान का वातावरण है, और जो इस में पड़ गया वह न घर का रहा न घाट का। इसी से डरकर उसने एक अंग्रेज लड़की से विवाह किया था, परन्तु जब वह हिन्दुस्तान में आई तो वह भी स्वामियों के चक्कर में पड़ गई।

एक सप्ताह के भीतर डलहौजी में कोठी का प्रबन्ध हो गया। स्वामी निरूपानन्द और शान्ता तथा उसकी भाभी वहां चले गये। चिकित्सा नियमित रूप से होने लगी।

धन ऐमिली व्यय कर रही थी। इस बात का ज्ञान मिस्टर चोपड़ा को था। ऐमिली ने कभी कोई बात चोरी नहीं रखी थी। इसका परिणाम यह हो गया था कि दोनों में एक घर में रहने के अतिरिक्त और कोई सम्बन्ध नहीं रहा था। जब से दूसरी मोटर आई थी तब से यह थोड़ी-सी एक दूसरे पर निर्भरता भी लोप हो गई थी।

ऐमिली की अपनी आय का स्रोत था। उसकी नानी उसके लिए पांच सौ पौंड वार्षिक की आय छोड़ गई थी। वह पहले तो इसमें से अपने पर व्यय कर शेष बचा लिया करती। पीछे उसमें से साधु-सन्तों पर खर्च करने लगी और अब उसने दिल खोलकर अपनी सौत के इलाज में खर्च करना प्रारम्भ कर दिया था।

८

तीन दिन के पश्चात् प्रेमनाथ को पैरोल पर छोड़ने का प्रश्न अदालत में उपस्थित हुआ। सरकारी वकील ने इसका विरोध किया। उसका

कहना था कि एक क्रान्तिकारी, जो अशान्तिमय उपायों से देश में विरोध फैलाना चाहता हो, उसको कैद से जमानत पर छोड़ा नहीं जा सकता। प्रेमनाथ के वकील ने कहा, "प्रार्थना कानून की माँग का विरोध करने के लिये नहीं की गई। यह तो मनुष्यता के नाते दवा करने के लिये की गई है। अपराधी अपनी तीन वर्ष की कैद में से दो वर्ष व्यतीत कर चुका है। दो-चार महीने में वह छूटने वाला है। उस समय पर भी तो उसे छोड़ना ही पड़ेगा। अब उसकी मुनासिब ज़मानत लेकर छोड़ा जा सकता है।"

सरकारी वकील की युक्ति यह थी कि दया का प्रश्न तो शान्ति से रहने वाले नागरिकों के साथ हो सकता है। बाग़ी के लिये कोई दया नहीं दिखाई जा सकती। परिणाम यह हुआ कि प्रेमनाथ के मामा की प्रार्थना अस्वीकार हो गई।

इस समय तक प्रेमनाथ की माँ की चिकित्सा स्वामी निरूपानन्द करने लगे थे और उसके डलहौजी भेजने का प्रबन्ध हो रहा था।

प्रार्थना पंजाब के गवर्नर महोदय से भी की गई, पर वहाँ भी उसको अस्वीकार कर दिया गया। ऐमिली मन में सोचती थी कि यह विचित्र राज्य-प्रपंच है। न न्याय होता है न सहानुभूति का व्यवहार।

जब डलहौजी में चिकित्सा होते हुए एक मास के लगभग हो गया तो एक दिन ऐमिली ने मोटर निकाली और स्वयं चलाती हुई डलहौज़ी जा पहुँची। उसको शान्ता की अवस्था देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। वह ठीक हो रही थी। ज्वर उतर गया था और खाँसी में भी विशेष लाभ प्रतीत होता था। ऐमिली एक सप्ताह भर वहाँ रही। शान्ता देख रही थी कि उस पर रुपया पानी की भाँति व्यय किया जा रहा है। उसके मन में एक बार यह विचार आया कि मिस्टर चोपड़ा यह सब व्यय कर रहे हैं। केवल एक क्रान्तिकारी की माँ से कोई सम्पर्क नहीं है, ऐसा करने के लिये सब खर्चा ऐमिली के द्वारा किया जा रहा है। उसके मुख से एक-दो बार मिस्टर चोपड़ा के लिये, इस सब प्रयास के लिये धन्यवाद

भी निकला, परन्तु तुरन्त ही ऐमिली ने उसका भ्रम दूर कर दिया। उसने कहा, "शान्ता बहिन! आपको मिस्टर चोपड़ा के विषय में यह विदित हो जाना चाहिये कि वे इस सब में कुछ नहीं कर रहे। मेरी नानी ने अपनी वसीयत में मेरे लिये पाँच सौ पौंड वार्षिक की आय छोड़ी है। वह रुपया ही वास्तव में इस समय तुम्हारे काम आ रहा है।"

"पर तुम यह सब मेरे लिये क्यों कर रही हो?"

"अपने मन के सन्तोष के लिये।"

ऐमिली जब डलहौजी गई थी तो वह केवल मिस्टर चोपड़ा की मेज़ पर यह लिखकर रख गई थी कि वह शान्ता को देखने डलहौजी जा रही है। इससे तो मिस्टर चोपड़ा आग-बबूला हो गया। उसने बच्चों को एक स्कूल के बोर्डिंग हाउस में भर्ती करा दिया। सोमनाथ देख रहा था कि उसकी माँ और पिता का सम्बन्ध सहिष्णुता का नहीं रहा और अब माँ की अनुपस्थिति में उनके स्कूल में भर्ती करवाने की बात उसके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ गई।

सरस्वती और रामनाथ अभी छोटे थे। उनको ये सब बातें समझ नहीं आईं और फिर बोर्डिंग हाउस में समवयस्क बच्चों के साथ खेलने-कूदने और रहने की प्रसन्नता में माता-पिता की बात को भूल गये।

जब ऐमिली डलहौजी से लौटी तो बच्चों के बोर्डिंग हाउस में भर्ती किये जाने से उसको अचम्भा हुआ। फिर मन को धैर्य देकर चुप कर रही।

अगले दिन वह मोटर लेकर बच्चों के स्कूल में जा पहुँची। वहाँ वह तीनों को मिली। उसने उनसे पूछा, "सोम, तुम अच्छी तरह से हो न! कुछ कष्ट तो नहीं?" उत्तर सरस्वती और रामनाथ ने दिया, "यहाँ बड़ा मज़ा है, माँ!"

"अच्छी बात!" उसने उनकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "देखो, हमारे घर में टेलीफोन है। कभी जरूरत हो तो कर लेना। अब कुछ चाहिये?"

सरस्वती ने कहा, "माँ, पांच रुपये दे जाओ। मेरी क्रीम की डिबिया

जाने से पूर्व मिस्टर चोपड़ा ने सोम से कहा, "मैं बोर्डिंग हाउस के वार्डन से कह रहा हूँ कि वह औरत फिर आए तो तुम सब को उससे दूर रखा जाए। वह तपेदिक के रोगी के पास रह कर आई है।"

सोमनाथ ने कहा, "पापा, वे कहती थीं कि उनको बीमारी नहीं हो सकती।"

"ठीक है, पर तुम को तो हो सकती है?"

मुझको तपेदिक हो सकता है। तपेदिक का रोगी बच नहीं सकता। ये बातें सोम के मस्तिष्क में घुस गईं। और उसने इस विषय का एक पत्र अपनी मां को लिख दिया। उसने लिखा—

"मम्मी! पापा आये थे। वे कहते थे कि तुम तपेदिक के रोगी को देखकर आई हो। इससे तुम रोग को फैला रही हो और उन्होंने वार्डन को कह दिया है कि तुम हम को न मिल सको।"

"मैं आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगी और तुम बीमार नहीं होगी।"

ऐमिली इस समाचार से बहुत ही परेशान हुई। उसका बच्चों से स्नेह ही था जो उसको मिस्टर चोपड़ा के घर से बाँधे हुए था। मिस्टर चोपड़ा के इस काम से यह बन्धन भी ढीला हो रहा प्रतीत होने लगा। ऐमिली ने एक पत्र तो वार्डन को लिखा और उससे यह पूछा कि क्या यह सत्य है कि मिस्टर चोपड़ा ने बच्चों को उससे मिलना बंद कर दिया है। दूसरा पत्र उसने सोम को लिखा उसमें लिखा—

"प्रिय सोम, मैं ठीक हूँ। बीमार नहीं हूँ। मेरा तुम्हारी विमाता से मिलने जाना मनुष्यता के नाते था। मैं समझती हूँ मेरे कारण ही तुम्हारे पिता ने उसको छोड़ दिया था। उसके सब कष्टों में मैं ही कारण हूं। अतएव मैं उसकी इस कठिन समय में सहायता कर प्रायश्चित्त कर रही हूँ।"

"यदि यह सत्य है कि तुम्हारे पिता ने मेरा तुम से मिलना मना कर दिया है तो मैं मिलने नहीं आऊँगी। यद्यपि मैं जानती हूं कि तुम बीमार नहीं होगे, मैं भी बीमार नहीं हूँ। इस पर भी पापा की आज्ञा तुम को

माननी चाहिये और मुझ को भी।"

"सरस्वती और राम को प्यार देना।"

वार्डन का पत्र आया—

"क्षमा करें! हम को बच्चों के संरक्षक की आज्ञा का आदर करना चाहिये। हम आपके आने और बच्चों से मिलने में आपत्ति नहीं मानते, पर हम विवश हैं।"

बात तय हो गई। ऐमिली ने बच्चों से मिलने जाना भी बंद कर दिया। घर पर पति-पत्नी में तनाव दिन प्रतिदिन बढ़ता ही चला गया।

५

मिस्टर चोपड़ा अब अकेला क्लब में जाता। उसके मित्र कभी उससे पूछते कि मिसेज घर पर ही बैठी क्या करती रहती हैं? तो चोपड़ा कह दिया करता, "जो उसको करना आता है।"

लोग इसका अर्थ यह समझते थे कि उसके बच्चा होने वाला है, परन्तु महीनों पर महीने व्यतीत होने लगे और न बच्चा हुआ और न ही मिसेज चोपड़ा क्लब में अथवा अन्य आयोजनों पर मिस्टर चोपड़ा के साथ दिखाई दीं। इस पर लोगों को 'दाल में कुछ काला' दिखाई देने लगा।

वकील मिस्टर नार्टन भी चोपड़ा की निन्दा फैलाने में कारण बन गया। यद्यपि वह एक शान्त विचारशील प्रकृति का आदमी था तो भी मिस्टर चोपड़ा के व्यवहार से उसके मन को ऐसी ठेस पहुँची थी कि वह उसको मनुष्यता से गिरा हुआ अनुभव करने लगा था। इस कारण जब भी अवसर मिलता वह उसकी निन्दा किए बिना नहीं रहता था।

इसके साथ मिस्टर चोपड़ा दिन-प्रतिदिन अधिक और अधिक शराब पीने लगा और फिर सन्देहात्मक चरित्रवाली स्त्रियों के साथ घूमता दिखाई देने लगा। मिस्टर चोपड़ा की कोठी में भांति-भांति के लोगों का

मे दुर्व्यवस्था ही उत्पन्न होगी।"

इस विवेचना को रहमान नहीं समझ सका। वह वितर-वितर उसका मुख देखता रहा। मनोहर ने बात फिर चला दी, "पर तुम अपने छूटने के इस उपाय को, अर्थात् फौज में भर्ती होने को, प्रयोग क्यों नहीं करते?"

"मेरा माँ के पास जाना अत्यावश्यक है। फौज में भर्ती होने से क्या जाने कई वर्षों तक घर न जा सकूं। इस प्रकार चार महीने में तो छूटूंगा ही।"

परन्तु बात इस प्रकार नहीं हो सकी। रहमान और मनोहर फौज में भर्ती हो गए। प्रेमनाथ की कोठरी में अन्य कैदी लाये गए। जिन से प्रेमनाथ का मन नहीं मिल सका। चार मास के पश्चात् प्रेम के छूटने की तिथि आई। उसको जेल के कपड़े उतार और अपने कपड़े पहन चलने के लिए कहा गया। तीन मास से उसका मामा भी मिलने नहीं आया था। इससे वह अति चिन्तातुर जेल से निकल नगर की ओर चल पड़ा।

वह अभी जेल के फाटक से सौ गज के अन्तर पर भी नहीं गया था कि एक आदमी उसके साथ चलता हुआ कहने लगा, "कहाँ जा रहे हो छोकरे?"

प्रेमनाथ ने उसकी ओर ध्यान से देखा और उसके प्रश्न का प्रयोजन न समझ बिना कुछ कहे चलता गया। इस पर उस आदमी ने फिर कहा, "कहाँ जा रहे हो?"

अब प्रेम से नहीं रह गया, उसने पूछा, "क्या मतलब है आपका इससे?"

"हम लोग बेमददगारों की मदद करते हैं।"

"तुम लोग? कौन हो तुम लोग?"

"बताता हूं, चलो मेरे साथ।"

कुछ दूर पर सड़क के किनारे एक कैम्प लगा था। उसके बाहर एक बोर्ड लगा था। जिस पर लिखा था, 'रिक्रूटमेंट आफिस'। वह आदमी प्रेम की बाँह पकड़कर बोला, "जरा इधर आओ।"

"क्यों ?"

"पता चल जायेगा कि हम तुम्हारे हमदर्द हैं, आओ !" प्रेमनाथ अनिश्चित मन खड़ा था। इस समय कैम्प के अन्दर से तीन पुलिस कान्स्टेबल बाहर निकल आये और प्रेम को बाँह से पकड़कर कैम्प में ले गये। वहां एक आदमी फौजी कपड़े पहने बैठा था। प्रेम को उसके सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। प्रेम को उसने सिर से पाँव तक देखा और फिर सामने रखी कुर्सी पर बैठने को कहा।

प्रेम बैठ गया। इस पर उसने एक छपा फार्म निकाला और प्रेम के सामने मेज़ पर रखकर कहा, "इसके नीचे हस्ताक्षर कर दो।"

"क्यों ?"

"क्यों क्या पूछते हो ? फिर कैद होने का विचार है क्या ?"

"यह क्या है ?"

"यह है रोटी, कपड़ा, सैर-सपाटे और साठ रुपये महीना। तुम्हारे घर वालों को इसके अलावा इमानदारी और मेहनत करने पर इनाम और किसी नहर के किनारे पर मुरब्बे।"

"तो यह भर्ती का दफ्तर है ?"

"हां !"

"पर मैं अभी भर्ती होना नहीं चाहता। मुझे अपनी बीमार मां की सेवा करने के लिये जाना है।"

"वह तुम, इस पर हस्ताक्षर करने के पीछे भी जा सकते हो।"

"देखो जी, मैं तीन वर्ष की कठोर कैद भोगकर आया हूं और मां घर पर बीमार पड़ी हैं। जब तक वह ठीक नहीं हो जाती मैं कहीं नहीं जा सकता।"

"भाई, तेरी मां का इलाज सरकारी तौर पर हो जाएगा। तुमको उसकी टहल सेवा के लिये भी समय मिल सकेगा।"

प्रेमनाथ उठ खड़ा हुआ, "नहीं जी, मैं अभी नहीं भर्ती हो सकता।"

इसपर पुलिस वालों ने उसको पकड़कर पुनः कुर्सी पर बैठा दिया

और बलपूर्वक उसका हाथ पकड़ बाँयें हाथ के अंगूठे पर स्याही लगाकर सामने रखे फार्म के नीचे लगा दिया। इस समय एक आदमी हाथ में एक कागज़ के टुकड़े पर प्रेम का नाम और पता जेल से लिखकर ले आया और उस फौजी अफसर को बता दिया। फौजी अफसर ने फार्म के खाली खाने भर दिये और प्रेमनाथ को सारा फार्म सुना दिया। पीछे उससे बोला, "तुम फौज में भर्ती हो गये हो। अभी तुमको मोटर में बैठाकर सैर कराई जायेगी और छावनी में ले जाकर तुम्हारा नाम और रेजिमैन्ट का नाम बताया जाएगा। फिर तुमको तुम्हारी माँ के पास ले जाया जायेगा।"

"मैंने अपनी इच्छा से फार्म नहीं भरा। इसलिये मैं इसका पाबन्द नहीं हूँ।"

"इन्कार करोगे तो कोर्ट मार्शल किया जायेगा।"

"वह क्या होता है ?"

"तुम पर झूठ बोलने का मुकद्दमा किया जायेगा। हम सब साक्षी करेंगे कि तुमने अपनी इच्छा से भरा है फिर तुमको दण्ड होगा।"

"अजीब परेशानी है। क्या किया है मैंने जो तुम मुझको इस प्रकार तंग कर रहे हो ? जब माँ को पता चलेगा कि मैं युद्ध में लड़ने जा रहा हूँ तो बेचारी के प्राण निकल जायेंगे।"

"जब तुम्हारी माँ को छः महीने का वेतन तीन सौ साठ रुपये मिलेंगे तो वह प्रसन्नता से फूली नहीं समायेगी।"

प्रेमनाथ वहाँ से उठकर भाग जाना चाहता था, परन्तु पाँच आदमी उसको चारों ओर से घेरे हुए बैठे थे।

६

विवश प्रेमनाथ वहाँ बैठा रहा। इस समय सड़क पर से गुज़रता हुआ एक और आदमी लाया गया। उसने जब प्रश्न किये और उसको जब पता चला कि फौज की भर्ती की जा रही है और उसको साठ रुपया

महीना मिलेंगे तो उसने प्रसन्नता से अंगूठा लगा दिया। उसको ऐसा करते देख फौजी अफसर ने प्रेम को सम्बोधन कर काह, "देखो यह मर्द आदमी है। तुम तो लड़कियों की तरह रोने लगे हो।"

दिन के नौ बजे के लगभग दही की लस्सी और साथ मठरियां खाने को दी गयीं। तीन वर्ष पश्चात् प्रेम को मनुष्यों के खाने योग्य कुछ मिला। इससे उसको शान्ति हुई और वह बैठा कुछ सन्तोष अनुभव करने लगा।

इस समय तक दो आदमी और पकड़कर लाये गये। उनको भी समझा-बुझाकर फार्म पर अँगूठे लगा दिए गए। लगभग दिन के ग्यारह बजे, इस प्रकार एकत्र किए गए पांच युवकों को एक फौजी गाड़ी में बैठाकर छावनी ले जाया गया। बारह बजे ये वहां पहुंचे। वहां इनको एक बैरक में लेजाकर भोजन करवाया गया। उस जैसे वहां एक सौ से ऊपर लोग थे जो विभिन्न कैम्पों से आए थे। वहां उनको स्वादिष्ट और पौष्टिक खाना मिला। प्रेम को ऐसा खाना वर्षों उपरान्त मिला था, जिसे खाकर उसे नींद आने लगी थी। पश्चात् उनको एक बैरक में लेजाकर आराम करने को कहा गया। वहां प्रेम दो घंटा भर खूब गहरी नींद सोया। तीन बजे उसको उठाया गया और एक अफसर के सामने उपस्थित किया गया। वहां उसकी डाक्टरी परीक्षा हुई। बिना उससे पूछे और बिना कुछ कहने का अवसर दिए उसका नाम, नाप, तोल और शरीर पर के चिह्न लिख लिए गए।

जब लिखने वाले अफसर ने सबका ब्योरा लिखकर अवकाश पाया तो सायंकाल के छः बज गए थे। वह अफसर यह आज्ञा दे कि ये रिक्रूट जालन्धर कैम्प में जायेंगे जाने लगा, तो प्रेम ने कुछ आगे बढ़कर कहा, "हजूर, मुझको कुछ कहना है।"

"कहो।"

"मैं आज ही जेल से छूटा हूं और छूटते ही मुझको पकड़कर भर्ती कर लिया गया है। मेरी मां सख्त बीमार है। मैं उसको देखने

और उसकी सेवा-सुश्रूषा करने जाना चाहता हूँ।"

"तो तुम आज भर्ती क्यों हुए हो ?"

"मैं अपनी इच्छा से नहीं हुआ। मुझको जबरदस्ती पकड़कर भर्ती किया गया है।"

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"प्रेमनाथ।"

"किस जुरम में कैद थे ?"

"बग़ावत, साज़िश और डाकाजनी में।"

"तुम मेरे साथ मेरी बैरक में आओ।"

प्रेम उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वह आफिसर जब अपने कमरे में पहुँचा तो कमरे का दरवाज़ा बन्द कर कहने लगा, "देखो, मुझे सख्त अफसोस है कि तुम्हारी मर्ज़ी के बिना तुमको भर्ती किया गया है पर मैं अपने तजुरबे से कहता हूँ कि इस समय तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि तुम भर्ती होने से इन्कार न करो। नहीं तो कोर्ट मार्शल कर तुमको पुनः दस साल की कैद की आज्ञा हो जाएगी। 'तुम पहले ही पुलिटिकल कैदी हो। तुम पर दया नहीं की जायेगी। देखो, अगर तुम मेरा कहा मानो तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ कि तुम ट्रेनिंग के पीरियड में अपनी माँ से मिल सकोगे और उसकी सेवा भी कर सकोगे। कहाँ है तुम्हारी माँ ?"

"मेरे कैद होने से पहले वह शाहदरा रहती थी। आज से तीन महीने पहले तक वह वहीं थी। तीन महीने से उसका मेरे पास कोई समाचार नहीं आया।"

"तो ऐसा करो। तुम रात को अपनी बैरक में सोवो। किसी को कुछ बताना नहीं। कल प्रातः आठ बजे मेरे पास आना। मैं तुमको मोटरगाड़ी दूंगा और साथ दो सिपाही दूंगा। वे तुमको शाहदरा ले जाएँगे और वहां से पता कर तुम चले आना। आकर बताना। हम शाहदरा के पास ट्रेनिंग कैम्प खोल रहे हैं। मैं तुम को वहाँ भेज दूंगा।

वहां से तुम मां को नित्य मिल सकोगे और यदि तुमने कहा कि तुमको जबरदस्ती भर्ती किया गया है तो तुम पर फौज में बग़ावत फैलाने के जुर्म का मुक़द्दमा होगा। अंग्रेज अफसर होंगे, वह तुम्हारा पहला मुक़द्दमा देखेंगे और दस वर्ष से कम की क़ैद नहीं देंगे।"

प्रेमनाथ भयभीत भौंचक्का हो अफसर का मुख देखता रह गया। अफसर ने उसकी पीठ ठोकी और कहा, घबराओ नहीं। मां के पास जाने से पहले छः महीने का वेतन भी दिलवा दूंगा। यह तुम अपनी मां को दोगे तो वह बहुत प्रसन्न होगी और तुम को आशीर्वाद देगी। जब तुम युद्ध पर जाओगे तो तुम्हारी मां को हस्पताल में भर्ती कर चिकित्सा भी हो जाएगी।"

प्रेमनाथ दुविधा में फंस गया। वह बाहर आया तो आफिसर ने उसको एक सिपाही के साथ रिक्रूटों की बैरक में भेज दिया। वहाँ उसको रात का खाना मिला-और सोने को चारपाई मिल गई।

अगले दिन चार बजे बिगुल बजा और रिक्रूटों को जगाकर टट्टी-पेशाब के लिये भेजा। वहाँ से उनको एक पक्के बने तालाब में स्नान के लिये ले जाया गया। पश्चात् उनको एक घंटा दौड़ाया गया। इसके पीछे कबड्डी इत्यादि खेलें करवाई गईं। पीछे उनको बैरक में लेजाकर फौजी कपड़े पहनने को दिये गये। बिस्तर दिया गया और खाने के लिये बर्तन दिये गये। वहां से पुनः वे अपनी बैरक में आगये। वहां उनको प्रातः का नाश्ता दिया गया।

प्रेम ने वर्दी पहिनी और उस अफसर के पास चला गया। जिसने उसको मां के पास भिजवाने को कहा था। वह भी अपनी परेड से लौटा था। उसने प्रेम को फौजी वर्दी पहिने देखा तो उसकी पीठ ठोंककर कहा, "बहुत अच्छे मालूम होते हो इन कपड़ों में।"

"अच्छा, देखो मैं तुमको तुम्हारी मां के पास भिजवा देता हूं।" उसने मेज पर रखी घंटी बजाई। बाहर खड़ा सिपाही आया तो उसने उसको जमादार को बुलाने की आज्ञा दी।

वह स्वयं बैठ गया और प्रेमनाथ को सामने खड़ा रहने दिया। पन्द्रह मिनट में जमादार आया। अफसर ने उसको कहा, तीन सिपाही इसको मोटर में शाहदरा ले जाओ।। वहां यह अपनी मां से मिलकर लौट आयेगा। मुन्शी से इसको छः मास का वेतन पेशगी दिलवादो। जिससे अपनी मां को कुछ रुपये दे आए।"

जमादार उसको लेकर बाहर निकल गया। मुन्शी के पास लेजाकर उसको साठ रुपये मासिक के हिसाब से तीन सौ साठ रुपये वेतन के दिलवाकर एक मोटर गाड़ी ले चल पड़े।

प्रेम ऐसा अनुभव कर रहा था कि मानो वह स्वप्न-लोक में विचर रहा है। एक ओर उसको मां की चिन्ता थी, दूसरी ओर वह देख रहा था कि चाहे कुछ हो कानूगो की नौकरी से यह नौकरी बहुत अच्छी है। खाने, पहरने और रहने का प्रबन्ध बहुत उत्तम है। वह मन में विचार कर रहा था कि यदि मां अच्छी हो तो फिर इस नौकरी के करने में हानि ही क्या है!"

मोटर के पुल से रावी पार कर शाहदरे जा पहुँची। गांव में जाकर उसने देखा कि उनके मकान को ताला लगा है। मामा का मकान भी बन्द था। दुकान खुली थी और ज्योति दुकान पर बैठा मिठाई पर से मक्खियां उड़ा रहा रहा।

मोटर तो गांव से बाहर ही छोड़ आये थे। प्रेम अपने साथियों के साथ जब दुकान के सामने खड़ा हुआ तो ज्योति फौजियों को इस प्रकार खड़ा देखकर डर गया। उन दिनों फौजियों से मिलकर दुकान लूट लेने की कई घटनायें हो चुकी थीं। ज्योति घबराकर उठा और शोर मचाने के लिये भागने ही वाला था कि प्रेम ने आवाज़ दी, "ज्योति भैया! कहां जा रहे हो?"

ज्योति ने पहचान लिया और कूदकर दुकान के नीचे उतर आया और 'प्रेम भैया!' "कह गले मिलने लगा, परन्तु रुक गया। बोला, मेरे कपड़े बहुत मैले हैं। तुम्हारे भी मैले हो जावेंगे।

प्रेम ने पकड़कर उसको गले से लगाया और जब मिल चुका तो पूछा, "मां कहां है ?"

"डलहौज़ी गई हैं।"

"क्यों ?"

"वहां इलाज होता है। पिता जी भी गये हैं और अम्मा भी गई हैं। मैं यहां अकेला रहा हूँ।"

"कोई चिट्ठी आती है वहां से ?"

"हां ! कल ही आई थी। बुआ अब ठीक हैं। ज्वर नहीं है। खांसी आती है पर कम है। सैर करने जाती हैं।"

प्रेम को सन्तोष हुआ, पर वह विस्मय कर रहा था कि इतना खर्चा कहां से हो रहा है। उसने पूछा, "वह चिट्ठी कहां है ?"

ज्योति ने अपनी संदूकची में से एक चिट्ठी जो उर्दू में लिखी थी निकालकर दिखाई। यह प्रेम के मामा की लिखी हुई थी। चिट्ठी पर डलहौज़ी का पता लिखा हुआ था।

प्रेमनाथ चिट्ठी लेकर ज्योति यह कहकर कि वह मामा को चिट्ठी लिखेगा चल पड़ा। जब प्रेम और उसकी रखवाली के लिये आए हुए सिपाही वापिस हो कुछ दूर निकल आये तो ज्योति पीछे भागता हुआ आया, "प्रेम भैया ! प्रेम भैया !" वह आवाज़ दे रहा था।

प्रेम ठहर गया और घूमकर देखने लगा। ज्योति ने समीप आ कर कहा, "भैया, वह आई थी ?"

"वह कौन ?"

"वह मेम ! जो लाहौर के बड़े साहब की बीबी है।"

"ओह ! प्रेम ने अचम्भा प्रकटकर पूछा, किस कारण आई थी ?"

"वह ही बुआ जी को डलहौज़ी ले गई है।"

"अच्छा ? यह ठीक नहीं हुआ।"

"पर भैया ! तुम अभी भी कैदी हो क्या ?"

"नहीं ! पर हां।"

"क्या मतलब ?" ज्योति ने पूछा ।

"कुछ नहीं ! देखते नहीं हो कि मैं फौज में भरती हो गया हूं ।"

"सो तो मैं देख रहा हूं । पर छूटे हो या अभी भी कैद हो ?"

"दोनों ।"

ज्योति इस पेचीदा बात का अर्थ नहीं समझ सका । इससे चुप कर रहा । प्रेम गांव से बाहर आ, मोटर पर अपने संरक्षकों के साथ बैठकर लाहौर वापिस चला गया ।

७

प्रेम ने बैरक में पहुंचकर मां को चिट्ठी लिखी और उसमें बताया कि कुछ कारणों से विवश होकर उसने फौज में नौकरी कर ली है । वह तीन सौ रुपया अपने छः महीने का पेशगी वेतन मनीआर्डर कर भेज रहा है । कुछ दिन ट्रेनिंग लेने के पीछे उसको मिलने आने की छुट्टी मिलेगी तब ही वह आ सकेगा ।

उसने यह भी लिखा कि वह ज्योति से मिला था और उससे पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो रहा है । वह तो जेल से छूटते ही मिलने के लिये आता, परन्तु बिना रुपये के आकर क्या करता ? इस कारण उसने नौकरी कर लेना उचित ही समझा । उसकी सबको यथायोग्य नमस्ते मिले । नीचे उसने अपना पता लिख दिया ।

ट्रेनिंग कैम्प शाहदरा खुल गया और पांच सौ रिक्रूट वहां पर तीन महीने की शिक्षा के लिए एकत्र किए गए । शिक्षा में ड्रिल, कसरत, कपड़ा पहनने का तरीका, खाने का तरीका, और अफसरों से बात तथा सैल्यूट करने का ढंग सिखाया जाता था । इसके साथ बन्दूक चलाना और आज्ञानुसार आगे बढ़ना और भागकर पीछे हटना भी बताया जाता था।

प्रेमनाथ को एक दूसरे के पीछे पांच चिट्ठियां मां की ओर से मिलीं। उसने पांचों का उत्तर ऐसे दिया कि जिससे मां को सान्त्वना मिली और उसके भली भांति होने का विश्वास मिला ।

ट्रेनिंग कैम्प में एक आदमी विशनदास के नाम से हाजिरी बोलता था। पहले ही दिन प्रातः की परेड के पश्चात् प्रेम को वह आदमी दीखा और भला प्रतीत हुआ। वह उसको पहचानने के लिये समीप पहुंचा तो चकित रह गया। यह दीनानाथ था। दीनानाथ ने भी उसको देखा और पहचाना, परन्तु मुख पर अंगुली रखकर चुप रहने का संकेत किया। विशनदास अपने कुछ मित्रों के साथ कैम्प को जा रहा था। प्रेमनाथ समझ गया। दीनानाथ फरार था। उसने समझा कि वह अपना पूर्व परिचय वहां प्रकट होने देना नहीं चाहता। इस विचार के आते ही प्रेम मुख दूसरी ओर कर उसके मित्रों की मंडली के पीछे-पीछे चलने लगा। उसका अभिप्राय था कि दीनानाथ के कैम्प का नम्बर जान ले और फिर समय पाकर उससे मिले।

उसी सायंकाल दीनानाथ ने प्रेम से भेंट की और बताया कि उसका नाम दीनानाथ नहीं, प्रत्युत विशनदास है। उसने बताया कि उसके फ़ौज में भर्ती होने के दो प्रयोजन हैं। एक तो अपने वारंट वापिस करवाना और दूसरे फौजियों में देश-भक्ति की धारणा को उत्पन्न करना।

विशनदास ने कहा कि वह अपने फरार होने की बात तब तक लोगों में नहीं फैलने देना चाहता, जब तक वह फौज में नौकरी करता है। युद्ध के पश्चात् वह इस विषय में सरकार के साथ बातचीत करने का विचार रखता है।

"यहां फौजियों में देशभक्ति के प्रचार की बात पहली बात से भी कठिन है। मैं हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों के राज्य की हानियों का वर्णन नहीं कर सकता। आज जो देशमें योग्य और विख्यात लोग हैं उनकी चर्चा तक यहां नहीं हो सकती। फिर यहां पर प्रायः लोग सर्वथा अनपढ़ हैं। उनका जीवन एक पशु के समान अविचारशील और केवल मात्र शरीरी आवश्यकताओं की पूर्ति के अर्थ ही है। उनको यदि मैं यह कहूं कि गांव की ओर चलो, लड़कियों और स्त्रियों से हंसी ठट्ठा करने चलें, तो पागलों की भांति खुशी मनाते हुए चल पड़ेंगे और यदि यह कह दूं कि भारतवर्ष

हमारा देश है और हमारा अधिकार है कि इस देश में मान-मर्यादा से रह सकें, हमारे पूर्वज बहुत ही उन्नत विचारों वाले सुख और शान्ति पूर्वक रहते थे, तो मेरे साथी उदासीन हो ऐसा समझने लगते है कि मैं कोई कुछ ऐसी बात कह रहा हूँ जिससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं।"

"भैया," प्रेमनाथ ने कहा, "तुमको यहाँ देखकर मेरा यह कैम्प का नीरस जीवन रसमय हो जाएगा। मैं सत्य ही अपने को ऐसा पाता था जैसे किसी रेगिस्तान म थोड़ी हरियाली हूँ। अब तुम और मै दो नहीं, ग्यारह हो जायेंगे।"

प्रातः और सायं ट्रेनिंग का कार्य होता था। दोपहर के खाने के पश्चात् और रात के खाने के पीछे मिल-मिलाकर दो-तीन घंटा परस्पर मेल-जोल हो सकता था। विशनदास वर्तमान युग की बातें जानता था और प्रेमनाथ ने माता से पुराण इत्यादि ग्रंथों की कथाएँ सुनी थीं। दोनों ने पहले एक-दूसरे को यह कथायें सुनानी आरम्भ कीं और पीछे उनकी कथाओं के सुनने में रुचि प्रगट करने वालों की संख्या बढ़ने लगी। धीरे-धीरे यह एक प्रकार की विस्तृत कथा-वार्ता की सभा बन गई।

एक दिन कर्नल रघुवीरसिंह इस गोष्ठी में आ पहुँचा। यह उस कैम्प का कमांडिंग आफिसर था। गोरखा जाति का होने से हिन्दु-धर्म पर उसकी अगाध श्रद्धा थी, परन्तु वह फौजी नियन्त्रण को उस ढंग से ही समझता था, जिस ढंग से उसको अंग्रेज अफसरों ने बताया हुआ था। उसने किसी से सुना कि प्रेमनाथ बहुत सुन्दर कथा कहता है। एक दिन वह स्वयं सुनने के लिए चला आया।

प्रेमनाथ कह रहा था, "कल मैंने आपको राम की महिमा का तत्व बताया था। राम के काल में वे लोग जो प्रकृति के उपासक थे, जिनके विचार में शारीरिक सुख और शांति परम लक्ष्य था, असुर कहाते थे। असुर के अर्थ कोई भयंकर शरीर वाले अथवा बड़े-बड़े दांतों वाले या दो तीर सिर वाले लोग नहीं। ये एक विचार विशेष के मानने वाले थे। यह विचार था सांसारिक वैभव को सर्वोपरि मानना। इस कारण अध्या-

त्मवाद के मानने वालों से ये पृथक् थे। राम ने अध्यात्मवाद की जीत कराई और वहाँ पर भगवान के भक्त का राज्य स्थापित किया।

"राम से पूर्व इस पार्थिव सभ्यता के अनुयाइयों का प्रभाव लंका से बढ़ते हुए पंचवटी और विन्ध्य प्रदेश तक आ गया था। राम ने अपने बाल्यकाल में विन्ध्य-प्रदेश को असुरों से रिक्त किया था और फिर अपनी यौवनावस्था में लंका की विजय कर वैदिक संस्कृति को पार्थिव-संस्कृति के आक्रमण से एक दीर्घकाल के लिए सुरक्षित किया था। यही कारण है कि भारतवर्ष के प्रत्येक नगर तथा प्रदेश में राम को भगवान् का अवतार माना जाता है और आज तक उसके गुणानुवाद गाये जाते हैं।"

"आज की बात भगवान कृष्ण की है। कृष्ण वैदिक संस्कृति, जिसकी आत्मा अध्यात्मवाद है, का परम पोषक और सहायक था। उसके काल में भी केवल मात्र सांसारिक उन्नति को ही परम साध्य वस्तु मानने वाले इस देश में उन्नति कर रहे थे। इस विचार-धारा के पोषक भीष्म पितामह इत्यादि कौरव अपना साम्राज्य चला रहे थे। वे कन्धार, यवन देश इत्यादि अन्य विदेशों से विद्वान् लोगों को बुलाकर जनता की विचारधारा को सांसारिक उपभोगों में लगाने का यत्न कर रहे थे। कृष्ण भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति की स्थापना में लग गया। उसने ऐसा प्रपंच रचाया कि चन्द्रवंशियों में ही वैदिक संस्कृति के उपासक उत्पन्न किये। उनका संगठन किया और फिर उनकी विजय कराई। इस सब प्रयास का नाम भारत युद्ध अर्थात् महाभारत प्रसिद्ध हुआ।"

"ययाति एक राजा हुए हैं। वे चन्द्रवंशीय थे, उनका राज्य मध्य-एशिया में कहीं था। ययाति का एक पुत्र यदु था और वह संसार से विरक्त रहकर ज्ञान-ध्यान में अधिक रत रहता था। पिता के विचारों से उसका मतभेद हो गया और पिता ने उसको उत्तराधिकार से वंचित कर अपने छोटे पुत्र पुरु को राज्य दिया।"

"पुरु की सन्तान में बड़े-बड़े पराक्रमी हुए। उनमें तो कई अध्यात्मवादी हुए और कई संसारवादी। भरत जिसके नाम से आज हमारा देश भारत-

वर्ष कहाता है, वैदिक संस्कृति का उपासक हुआ। उसके काल में वेद-विज्ञ ऋषियों की मान-मर्यादा सर्वोपरि थी। स्थान-स्थान पर यज्ञ-हवन, दान-दया का आयोजन होता था। पूर्ण देश ने इस पराक्रमी राजा भरत को अपने हृदय में स्थान दिया हुआ था।"

"परन्तु पश्चिम से विचारों की बाढ़ आई और बड़े-बड़े महापराक्रमी भी अपने विश्वासों से विचलित हो गये। एक ऐसे ही राजा की कथा मैं आपको आज सुनाता हूँ। इस राजा ने विषय-भोग को मानवता से भी ऊँचा माना। और वासना से विवश हो अपनी ही सन्तान की हत्या की।"

"पुरु के वंश में एक राजा शान्तनु हुए। वे शिकार से बड़ी प्रीति रखते थे। इस कारण गंगा के तट पर उन्होंने एक बहुत ही रमणीय विहार बनाया। एक घना जंगल सुरक्षित किया और उसमें भाँति-भाँति के पशु-पक्षी, हिंसक जन्तु इत्यादि पलने दिये और उस जंगल में शिकार खेलने में रत रहने लगे।"

"एक दिन वह शिकार खेलते-खेलते गंगा तट पर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि एक अत्यन्त रूपवती स्त्री खड़ी उन पर मृगनयनों से कटाक्ष कर रही थी। उस कामिनी का सुन्दर रूप, मनोहर वेश और यौवन देखकर राजा शान्तुन को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे उस पर मोहित हो गये। वे उसके पास गये और उससे पूछने लगे, "सुन्दरी, तुम मनुष्य हो, देवता हो, दानव हो, गन्धर्व अथवा किस जाति से हो? तुम जैसी रूपवती मैंने पहले कभी नहीं देखी। मैं तुमसे विवाह करने की अभि-लाषा करने लगा हूं।"

उस सुन्दरी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "जब आप मुझ पर इतना अनुराग करते हैं तो मैं आपसे विवाह करने के लिए उद्यत हूं, परन्तु एक प्रतिज्ञा चाहती हूं।"

"बताओ, क्या प्रतिज्ञा चाहती हो, मैं उसका पालन करूंगा।"

"मैं आपकी पत्नी बनना स्वीकार करती हूं। परन्तु आपको मेरे कामों में हस्ताक्षेप नहीं करना होगा। आपको अधिकार नहीं होगा कि

मेरे कामों से मुझको रोकें। यदि ऐसा करेंगे तो मैं आपको छोड़ जाऊँगी।"

"राजा प्रीति के फांस में पहले ही फँस चुका था। उसको वासना-वश उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहा था। इस कारण बिना विचारे बोल उठा, "मुझको यह प्रतिज्ञा स्वीकार है।"

"उस महारूपवती स्त्री को वे अपने राज्य में ले गये और उसको अपनी परमप्रिया रानी बनाकर महलों में रखा। यह सुन्दरी गंगा के किनारे मिली थी। इस कारण उसका नाम गंगा रखा गया। रानी गंगा के पुत्र हुआ तो वह उसको गंगा में बहा आई। राजा को बहुत बुरा प्रतीत हुआ। परन्तु रानी के चले जाने के भय से राजा कुछ कह नहीं सका। इसी प्रकार एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा और बारी-बारी से सात पुत्र हुए और सातों के सातों उत्पन्न होते ही गंगा में बहा आई।"

"राजा उसके रूप पर मोहित हुआ था और उसको ऐसे बुरे काम से मना नहीं कर सका। आठवां पुत्र हुआ तो राजा अपने मन की भावना को रोक नहीं सका। उसने गंगादेवी को कहा, "यह क्या करती हो रानी ?"

"रानी क्रुद्ध हो गई। उसने वह आठवां पुत्र राजा को दिया और स्वयं अपनी प्रतिज्ञानुसार उसको छोड़ चली गई।"

"यह शान्तनु कौरवों का पुरखा था। इस प्रकार की मनोवृत्ति उन लोगों की थी जिनके विरुद्ध कृष्ण ने भारत-युद्ध करने का और जिनको यह भारत-युद्ध कर जीतने का आयोजन किया था।"

"इन लोगों की हार हुई। वेद, उपनिषद् के ज्ञाता और कर्ममीमांसा के प्रतिपादन कर्ता भगवान् कृष्ण की जीत हुई।"

"जब से सृष्टि बनी है सांसारिक वैभव को ही सब कुछ मानने वालों की उन्नति तो हुई है, परन्तु ह्रास उन्नति से भी शीघ्र हुआ है। आज जर्मन ने विज्ञान में महाउन्नति की है। परन्तु यह उन्नति किसी आध्या-

त्मिक विकास की द्योतक न होने के कारण अवश्य विनाश को प्राप्त होगी। हम भगवान कृष्ण की सेना के सैनिक ऐसे सांसारिक वैभव को नष्ट करने में सहायक होने वाले है।"

"कल फिर इस महाराज शान्तनु की दूसरी कथा कहूँगा, जिससे यह प्रतीत होता है कि गंगादेवी की दुर्घटना से भी शिक्षा ग्रहण न कर, कैसे इस व्यसनी राजा ने एक महान् युद्ध की नींव रखी।"

प्रेमनाथ ने कथा इतनी सरल तथा रोचक भाषा में कही कि सुनने-वाले एक सौ से ऊपर उपस्थित लोग उसकी बात सुनने में मूर्तिवत बैठे रहे।

कर्नल रणवीर जो सबसे पीछे अँधेरे में खड़ा यह कथा सुन रहा था, प्रेमनाथ की वर्णन-शैली से प्रभावित हुआ। उसने कथा की समाप्ति पर अपने समीप खड़े एक सिपाही से पूछा, "इस कथा के कहने वाले का क्या नाम है ?"

"प्रेमनाथ।"

"कथा के पश्चात् उसको कहना कि मेरे कैम्प में हाज़िर होवे।"

वह कर्नल की आज्ञा सुन भयभीत हो गया और कर्नल के वहां से जाते ही सबके बीच में से लाँघकर आगे जा प्रेम के कान में बोला, "भैया, कर्नल तुमको अपने कैम्प में बुला गया है।"

"कब ?"

"अभी कहकर गया है कि कथा के समाप्त होने पर वहां हाज़िर हो जाओ।"

कर्नल रणधीरसिंह देख रहा था कि यह आदमी नेता बनने की शक्ति रखता है और फौज में विचारक नेताओं की आवश्यकता नहीं होती। साथ ही वह यह भी विचार करता था कि इसने जर्मनी की निन्दा किस प्रकार से की है। क्या यह सत्य ही ऐसा विश्वास रखता है, अथवा नीति से जर्मनों के नाश की बात कहता है। इस कारण वह उत्सुकता से प्रेमनाथ के उसके सामने उपस्थित होने की प्रतीक्षा करने लगा।

कथा समाप्त होते ही प्रेमनाथ कैम्प में हाज़िर हुआ। वह फौजी सलामकर अकड़कर सामने खड़ा हुआ तो कर्नल ने सिर से पांव तक उसको देखकर पूछा, "क्या नाम है ?"

"प्रेमनाथ, नम्बर पैंतालीस, ग्रुप दस, कैम्प पन्द्रह बटा पचास।"

"ब्राह्मण हो क्या ?"

"जनाब नहीं ! खत्री हूँ।"

"कथा तो ब्राह्मणों से भी अच्छी कहते हो।"

प्रेमनाथ चुप रहा। इसमें उत्तर देने को कुछ नहीं था। उसे एक नियन्त्रण में अभ्यस्त खड़े देख कर्नल ने पूछा, "हम तुम्हारे कथन की शैली से बहुत प्रसन्न हैं। परन्तु यहां पर जो कुछ तुम कहते हो उसमें आपत्ति-जनक बात भी हो सकती है।"

"मैंने फौजी नियमों को पढ़ लिया है और समझ चुका हूँ। इस कारण ऐसा नहीं करूंगा।"

"पर तुम पर खबरदारी कौन करेगा ? तुम यहां के औसत सिपाही से अधिक समझदार प्रतीत होते हो। तुमको पकड़ने के लिए तुम से अधिक योग्य रिपोर्टर की आवश्यकता होनी चाहिए।"

"पर जनाब, मैं ऐसा क्यों करूंगा जिससे फौजी नियंत्रण टूटे।"

"देखो जी, आज तुमने जर्मन लोगों की निन्दा की। कल तुम अंग्रेजों की निन्दा कर सकते हो।"

"करूंगा तो पकड़ा जाकर दण्ड का भागी बनूंगा।"

"मैं समझता हूँ कि इस प्रकार की कथाओं को बन्दकर अलफ़ लैला की कहानियां सुनानी अच्छी रहेंगी।"

"हजूर, वे तो मुझको आती नहीं। उसके लिए किसी और आदमी को नियुक्त कर दिया जाये।"

"तो यह कहानियां तुम कहां से सीख गये हो ?"

"मेरी मां महाभारत और रामायण का नित्य पाठ किया करती थीं। मैं समीप बैठा सुना करता था।"

"तो तुम्हारी माता बहुत पढ़ी-लिखी औरत है ?"

"वे केवल हिन्दी पढ़ी हैं।"

"अच्छा देखो ! तुम यदि कथा कहना चाहते हो तो उसको वर्तमान काल की बातों से मत मिलाया करो।"

"जैसी आज्ञा।"

"जा सकते हो।"

प्रेमनाथ ने समझा कि वह सुगम छूट गया है। वास्तव में कर्नल ने उसके पूर्व इतिहास की पड़ताल के लिए जांच प्रारम्भ कर दी।

कर्नल से इस बुलावे की सूचना पूर्ण कैम्प में फैल गई और अगले दिन उसकी कथा सुनने के लिये दुगने से भी अधिक लोग एकत्र हो गये। बिशनदास जानता था कि इस प्रकार की सभाएं बहुत दिन नहीं चल सकेंगी। इस कारण उसने इनको मनोरंजन का केन्द्र बनाने का आयोजन कर दिया। उसका एक मित्र चमनलाल गान जानता था। उससे उसने आए हुओं का मनोरंजन करने के लिये कहा। वह मान गया और खड़ा होकर गाना गाने लगा। उसने गाया—

"वगदी ए रावी विच, डेंडा करीड़ दा।
घोड़ी ते चढ़िया लगदा मुंडा अहीर दा।"

ट्रेनिंग कैम्प में इतनी मेहनत करनी पड़ती थी कि थोड़ा-सा मनोरंजन का आयोजन बहुत ही विनोद उत्पन्न करने वाला सिद्ध हुआ। श्रोता-गणों ने "मुंडा अहीर दा" सुनकर तालियां पीटकर फिर सुनाने का आग्रह किया। चमन ने एक और पद सुना दिया—

"वगदी ए रावी विच तैरन बेरियां।
नजरां लगांवदियां कुड़िया ने केरियां॥"

सुनने वालों ने सीटियां बजा-बजा कर इस पद का स्वागत किया। चमन गाता गया—

"वगदी ए रावी विच मछलियाँ सोनियाँ।
शाह जी दी तोंद फुल्ली कर कर बोनियाँ॥

वगदी ए रावी विच फुल्ल गुलाब दा।
मान न करियो मुंडिया झूठे शबाब दा।।"

आज तो रंग जम गया। एक दो मित्रों में प्रारम्भ हुआ वार्तालाप कथा के रूप में बदल गया और कथा से एक मनोरंजन की सभा बन गई। बिशनदास का यह निश्चय था कि जहां भी वह रहेगा और जिस रूप में भी उसको अवसर मिलेगा वह अपने पास-पड़ोस में रहने वालों पर अपने विचारों की छाप लगाए बिना नहीं छोड़ेगा। वह स्वयं कभी कुछ नहीं कहता था। पर लोग उससे पूछते थे और फिर वह उत्तर दिया करता था। आज गाने हुए और बिशनदास ने कहा, कल हीर और रांझा का सांग होगा। इस पर तो पंजाब के रहने वालों के हृदय उत्सुकता से अगले दिन की प्रतीक्षा करने लगे। शायद इस खेल-कूद में कथा-कहानी होती ही नहीं। यदि एक आदमी एक प्रश्न न पूछ लेता। उसने पूछा—

"बाबू बिशनदास, तुमने कल कहा था कि जापान ने न केवल चालीस वर्ष में इतनी उन्नति कर ली है कि रूस जैसी प्रबल शक्ति के दांत खट्टे कर दिये हैं, तो क्या अपने से बड़े देश को पराजित कर सकना ही उन्नति का लक्षण है ?"

प्रश्न बहुत ही जटिल था। इस कारण बिशनदास को बात सम-झानी पड़ी। उसने कहा "एक आदमी की ताकत उसके शरीर की बनावट से होती है। परन्तु उसकी परीक्षा तो तब होती है जब वह किसी को कुश्ती में पछाड़ता है। जैसे व्यक्तियों की ताकत की परीक्षा कुश्तियों के मैदान में होती है, वैसे ही जातियों की उन्नति की परीक्षा युद्ध के समय होती है। जो जाति युद्ध में हार जाती है वह अवश्य पिछड़ी हुई होती है।"

"जर्मन एक उन्नतिशील देश है तो क्या वह जीतेगा ?"

"नहीं ! उन्नति केवल विज्ञान की उन्नति को नहीं कहते। उन्नति तो सर्वतोन्मुखी होनी चाहिए। तब ही जीत हो सकती है।"

इन मनोरंजन की सभाओं से कैम्प के आफिसर घबरा उठे। और उन्होंने आज्ञा देकर सभाओं को बन्द कर दिया। लोगों ने इस आज्ञा को उठाने की प्रार्थना की। परिणाम यह हुआ कि अफसरों को स्वयं मनोरंजन के आयोजन करने पड़े। विशनदास को इससे बहुत शोक हुआ। इस पर भी वह यत्न करता रहता था कि जो कुछ भी है उससे अपना प्रयोजन सिद्ध करे।

अफसरों द्वारा आयोजित आयोजनों में कैम्प में रहने वालों में रुचि कम होने लगी और लोग सायंकाल कैम्प से निकल इधर-उधर घूमने लगे। इससे गाँव में और नदी के किनारों पर फौजियों से नागरिकों के तंग किये जाने की घटनायें बढ़ने लगीं। इन घटनाओं के समाचार दैनिक पत्रों में छपने लगे। सरकार अफसरों को डाँटने लगी। अफसर फौजियों को डाँटने लगे और फौजी भी अपना क्रोध लोगों पर निकालने लगे।

इस समय लाहौर से प्रेमनाथ के विषय में भेजी गई जांच का परिणाम आया, जो बड़े अफसरों को भेज दिया गया। बड़े अफसरों के सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि इस लड़के का क्या किया जाये। यह क्रान्तिकारी रह चुका है। इससे ट्रेनिंग सेन्टर में विद्रोह फैलने की संभावना है। अफ़सरों ने आज्ञा देकर इसको सिक्खों की रैजिमैंट के साथ लगाकर समय से पहले ही फ्रन्ट लाइन पर भेज दिया।

६

ऐमिली प्रतिमास एक-दो दिन के लिये डलहौज़ी जाया करती थी और वहाँ शान्ता के पास रहती थी। इन दिनों शान्ता, जो अब प्रायः ठीक हो चुकी थी ऐमिली के सम्पर्क में आती थी और ऐमिली के मन पर उसके मन की श्रेष्ठता का प्रभाव होता रहता था। ऐमिली ने देखा कि अति कठिन अवस्था में भी शान्ता का धैर्य और शान्ति नहीं छूटी।

जब वह डलहौज़ी को लाई जाने वाली थी तो उसने ऐमिली से कहा

या, "अब यह शरीर इतना जर्जर हो चुका है कि इसको बचाने का प्रयास व्यर्थ है।"

"यह कैसे कहती हो बहिन ?"

"मैं समझती हूं कि प्रथम तो ठीक हो नहीं होऊंगी। और यदि ठीक भी हो गई तो इतनी दुर्बल और रुग्ण रहूंगी कि जीवन का कुछ आनन्द ही नहीं रहेगा। ऐमिली बहिन ! अपना रुपया व्यर्थ न गंवाओ। स्वामी जी से कहो कि जो कुछ औषधि देनी है वह यहां पर रहते हुए ही दे दें। मैं उनकी अत्यन्त कृतज्ञ रहूंगी।"

"मैं इसमें स्वामी जी से बहस नहीं कर सकती। उन्होंने आज्ञा दी है कि आपको पहाड़ पर ले जाना चाहिये। मैंने प्रबन्ध कर दिया है। वे आज्ञा देंगे कि आपको यहां रहना है तो मैं यहां ही रहने का प्रबन्ध कर दूंगी।"

"पर तुम मेरे लिये क्यों कुछ करती हो ?"

"यह भी स्वामी जी से पूछ लेना। मैं तो उनकी ही आज्ञा का पालन कर रही हूं।"

परिणाम यह हुआ कि शान्ता डलहौजी पहुंच गई। वहां जाकर उसको विदित हुआ कि लगभग एक हजार रुपया मासिक का खर्चा हो रहा है। इससे उसको ऐमिली के सन्मुख बहुत ही लज्जित होना पड़ा।

जब ऐमिली डलहौजी आई तो शान्ता जिसकी अवस्था सुधरने लगी थी, उससे बोली, "मैंने इस जन्म में किसी का कर्ज़ा अपने सिर नहीं उठाया। अब तुम मेरे सिर पर इतना बोझा लाद रही हो कि मैं समझती हूं, कई जन्म में भी नहीं उतर सकेगा।"

ऐमिली स्वामी निरूपानन्द की शिक्षा के मनन करने से पुनर्जन्म तथा कर्म-मीमांसा के सिद्धांत को स्वीकार कर चुकी थी। इससे उसने कहा, "पर यह तुम कैसे कहती हो कि मैंने तुम्हारे पिछले जन्म का कुछ नहीं देना ? क्या यह सम्भव नहीं हो सकता कि मैंने तुम्हारा यह सब कुछ और शायद इससे भी अधिक देना हो।"

शान्ता मुस्कराई और बोली, "हम हिन्दुस्तानी तो ऐसी बात कहते हैं पर आप लोग तो ऐसे संस्कारों में पले नहीं। फिर आपको क्यों अपना आराम और सुख छोड़कर दूसरों के लिये इतना कुछ करना चाहिये, यह समझ नहीं आता।"

ऐमिली मुस्कराकर चुप कर रही। महीने पर महीने बीतने लगे। इस समय एकाएक प्रेमनाथ का पत्र आया, जिसमें लिखा था कि वह फौज में भर्ती हो गया है। इस समाचार से शान्ता के स्वास्थ्य के सुधरने में फिर बाधा खड़ी हो गई, परन्तु स्वामी निरूपानन्द के उपदेशों और औषधियों के बल पर पुनः उन्नति आरम्भ हो गई।

प्रेमनाथ के भेजे हुए तीन सौ रुपये आये। वह रुपये उसने ऐमिली के सामने रखते हुए कहा, "किस मुख से कहूँ कि यह ले लो। इसकी उस रक़म से जो आप व्यय कर रही हैं कोई तुलना नहीं। मैं समझती हूँ कि आप इसको जहाँ चाहें दे दें।

ऐमिली समझती थी कि खर्च के मुकाबिले में तीन सौ रुपये की कुछ गणना नहीं। इस पर भी उसने कहा, "यह रुपया प्रेम ने आपके लिये भेजा है। सो यह उसी काम में लगाना चाहिये। इस कारण मैं यह स्वामी जी को दे रही हूँ। वह जिस कार्य में उचित समझेंगे व्यय कर देंगे।"

प्रेमनाथ का पत्र आया था कि तीन मास की ट्रेनिंग समाप्त हो गई है और तीन महीने और हैं। उसके पश्चात् पन्द्रह दिन का अवकाश मिलेगा। उसमें वह मिलने आयेगा, परन्तु वह उस चिट्ठी के दो दिन बाद ही वहां आ पहुँचा। मां उसको देख चकित रह गई। वह उसको सिर पर प्यार देकर पूछने लगी—"तुमने तो लिखा था कि अभी तीन महीने में आओगे ?"

"हां मां ! पर कुछ समझ नहीं आता। मेरी ट्रेनिंग समाप्त होने से पहले ही मुझको एक सिख रैजिमेंट के साथ लगाकर योरुप भेजा जा रहा है। छुट्टी तो केवल पाँच दिन की मिली है। मैं अब शीघ्र ही फ्रन्ट लाइन पर चला जाऊँगा।"

जब प्रेम डलहौज़ी पहुँचा था तब ऐमिली लाहौर में ही थी। डल-हौज़ी में उसकी मां, इन्द्रा, उसकी मामी और स्वामी निरूपानन्द के एक शिष्य रहते थे। प्रेम का मामा शाहदरा में था।

प्रेम दो दिन तक वहाँ रहा। प्रेम की मां को प्रेम के युद्ध पर जाने से चिन्ता लग रही थी, परन्तु ऊपर से वह उस चिन्ता को प्रकट नहीं होने देती थी। इन्द्रा को प्रेम ने तीन वर्ष के पीछे देखा था। वह अब सज्ञान हो गई थी और मां के स्वास्थ्य ठीक होने से उसका भी स्वास्थ्य सुधर रहा था। प्रेम ने मां से कहा, "मां! लोग कहते हैं कि यह युद्ध अभी दो वर्ष और चलेगा। इससे इन्द्रा का प्रबन्ध कर उसका विवाह कर देना।"

"क्या हो सकेगा? मैं जानती नहीं।" उसकी मां ने कहा, "ऐमिली बहिन स्वामी जी से इस विषय में बातचीत कर रही हैं।"

प्रेमनाथ की मां ने प्रेमनाथ से कहा था कि हो सके तो वह लाहौर में ऐमिली से मिले और उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करे।

प्रेम जब लाहौर वापिस आया तो ऐमिली से मिलने गया। डिप्टी कमिश्नर की कोठी में पहुँच चपरासी को बोला, "मिसेज़ चोपड़ा से मिलना है।"

"मिसेज़ चोपड़ा? वे यहां नहीं हैं।"

"कहां हैं? कब मिलेंगी?"

"हम नहीं जानते।"

प्रेमनाथ को अगले दिन बम्बई के लिये विदा होना था। और वह जाने से पहले मिलकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता था। इस कारण चपरासी का उत्तर सुन परेशानी में उसका मुख देख रहा था, कि एक मोटर फर्र करती हुई आई और कोठी की ड्योढ़ी में खड़ी हो गई। प्रेमनाथ घूमा तो उसने देखा कि डिप्टी कमिश्नर मोटर से उतर रहा था। वह झेंप गया और चाहता था कि एक ओर खड़ा हो जाये, दिखाई न दे। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। पूर्व इसके कि वह पीछे हट

सके, मिस्टर चोपड़ा बरामदे में आ खड़ा हुआ। उसने प्रेमनाथ की ओर देखा। प्रेमनाथ की आँखें नीचे झुक गईं। मिस्टर चोपड़ा दो क्षण तक उसकी ओर देखता रहा, पश्चात् उससे बोला, "भीतर आओ।"

प्रेम को सन्देह हुआ कि उसको आने को कहा है अथवा किसी और को। इससे वह मिस्टर चोपड़ा की ओर देखने लगा। इस समय मिस्टर चोपड़ा कोठी के ड्राइंग रूम के दरवाज़े में प्रवेश कर रहा था। प्रेमनाथ यह देखने के लिये कि किसी और को तो नहीं बुलाया, अपने चारों ओर देखने लगा। जब वहाँ सिवाय चपरासी के और किसी को नहीं देखा, तो वह उसके पीछे ड्राइंग रूम में जाकर खड़ा हुआ।

डिप्टी कमिश्नर स्वयं कुर्सी पर बैठ गया और सामने खड़े प्रेमनाथ से पूछने लगा, "किस मतलब से आये हो ?"

"मिसेज़ चोपड़ा से भेंट करना चाहता हूँ ?"

"मिसेज़ चोपड़ा ! तुम्हारा उससे क्या मतलब है ?"

"डलहौज़ी से उनके नाम संदेश लाया हूँ।"

"तो तुम डलहौज़ी से आ रहे हो ?" मिस्टर चोपड़ा ने ऐसे खड़े होकर कहा, जैसे कोई सामने साँप आते देख खड़ा हो जाता हो।

प्रेमनाथ ने इस विस्मय और घबराहट को देखा, परन्तु इसका अर्थ न समझ सकने के कारण चुपचाप खड़ा रहा। मिस्टर चोपड़ा एकाएक बोल उठा, "तुम भी तपेदिक के मरीज़ से छूकर आये हो ? तुम को किसने अन्दर आने दिया है। बाहर हो जाओ !"

प्रेम इस सब मनोद्गार का कारण नहीं समझ सका। इस पर भी उसने धैर्य से उत्तर दिया, "मैं अपने कैम्प से होकर आया हूँ, वहाँ मेरी प्रत्येक प्रकार से परीक्षा कर ली गई है। आप डरिये नहीं, मैं प्रत्येक प्रकार से स्वस्थ हूँ।"

"तुम्हारे कपड़ों में खराबी हो सकती है।"

"ये तो मैंने यहाँ आज ही धोबी से लेकर पहने हैं। क्या आप बता सकते हैं कि मिसेज़ चोपड़ा कहाँ हैं ?"

"वे हैं जहन्नम में। मैं नहीं जानता।"

"तो फिर मैं जाता हूँ। मैं कल युद्ध पर जा रहा हूँ, उनसे मेरी नमस्कार कह दीजियेगा।"

इतना कह वह नमस्कार कर बाहर जाने के लिये घूमा तो मिस्टर चोपड़ा ने कहा, "ठहरो।"

प्रेमनाथ इसका अर्थ नहीं समझ सका। वह फिर खड़ा हो गया मिस्टर चोपड़ा पुनः कुर्सी पर बैठ पूछने लगा, "तुम कब भर्ती हुए थे ?"

"जिस दिन जेल से छूटा था। उसी दिन भर्ती लिया गया था। आज चार महीने होने वाले हैं।"

"तुम्हारी ट्रेनिंग हो गई है क्या ?"

"पूरी तो नहीं हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि युद्ध में आदमियों की आवश्यकता बहुत अधिक हो गई है। यही कारण है कि अधसिखे भेजे जा रहे हैं।"

"पर तुम क्यों जा रहे हो। मैं जानता हूँ कि वहाँ से बचकर नहीं आओगे।"

"मैं अपनी इच्छा से नहीं जा रहा। इस पर भी कोई कारण नहीं कि मैं नहीं बच सकता।"

"यह सब बेहूदा है। तुम्हारी माँ ने तुमको भर्ती होने की स्वीकृति दे दी है क्या ?"

"उससे भर्ती होने के लिये पूछा ही कितने हैं। वास्तव में मुझसे भी किसी ने नहीं पूछा। खैर, छोड़िये इस बात को। दास से दास बनाये जाने के लिये कौन पूछता है।—...मैं जाऊँ क्या ?"

मिस्टर चोपड़ा बहुत परेशान प्रतीत होता था। यही कारण था कि वह प्रेमनाथ से जो कुछ कह रहा था वह अविचारित भावों के वश ही कह रहा था। प्रेमनाथ यद्यपि उसके मन की गहराई तक नहीं पहुँच

सका था तो भी यह तो देख रहा था कि डिप्टी कमिश्नर का व्यवहार सर्वथा अयुक्ति संगत है। एक ओर तो तपेदिक के रोगी से छूकर आने के कारण वह उसको दूषित समझता था। दूसरे उसके फ़ौज में भर्ती हो जाने के कारण चिन्ता करता प्रतीत होता था। फिर वह ऐमिली के विषय में बताना भी नहीं चाहता था और जब उसने पूछा कि वह जाये तो उसका मुख देखता रह गया और उत्तर नहीं दे सका। प्रेमनाथ को मिस्टर चोपड़ा की यह अवस्था अति विचित्र प्रतीत हुई। जब कितनी ही देर तक मिस्टर चोपड़ा ने प्रेम के प्रश्न, 'म जाऊँ' का उत्तर नहीं दिया तो प्रेम ने बहुत नम्रता से फिर पूछा, "आपने कुछ कहने के लिये मुझको भीतर बुलाया था। तो क्या आप कह चुके हैं। क्या मैं जा सकता हूँ ?"

तुम्हारी मां ने मिसेज़ चोपड़ा पर जादू कर रखा है। मैं इससे तंग आ गया हूँ। मैं उसको भी घर से निकाल दूँगा।"

प्रेमनाथ इस आवेशमय कथन को सुनता रहा। जब मिस्टर चोपड़ा कह चुका तो उसने कहा, "मैं अपनी मां से मिलने नहीं जा रहा। हाँ, भारत छोड़ने से पूर्व एक पत्र उनको लिखूँगा। यदि आप कहते हैं कि इस विषय पर आप के विचार उनको लिखूँ तो लिख सकता हूँ।"

"निकल जाओ मेरे कमरे से। तुम लोगों ने मेरा सत्यानाश कर दिया है।"

प्रेमनाथ वहाँ से निकल भागा। वह यह विचार करता था कि कहीं वह उस पर वार न कर बैठे। कोठी के बाहर आ प्रेमनाथ गंभीरतापूर्वक विचार करने लगा कि उसके पिता को हो क्या गया है ? वह कोठी के बाहर खड़ा रहा। उसका विचार था कि मिसेज़ चोपड़ा का पता करने का एक प्रयत्न और करना चाहिये।

कोठी के भीतर से एक आदमी मैले कपड़े पहने निकला। उसके कपड़ों को कोयलों की स्याही लगी देख वह समझ गया कि रसोई खाने का नौकर है। शायद बाज़ार से कुछ खरीदने जा रहा है। जब वह

कोठी से बाहर निकल भुजंग की बस्ती की ओर चल पड़ा तो प्रेमनाथ उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। कोठी से कुछ हट जाने पर वह लम्बे-लम्बे कदम उठाता हुआ उस नौकर के साथ-साथ चलने लगा। जब उसने पूछा, "क्यों जी, डिप्टी कमिश्नर साहब की कोठी में काम करते हो?"

"हाँ।"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"नज़ीर।"

"क्या काम करते हो?"

"रसोईया हूँ।"

"भाई! ये साहब की बीवी आज घर पर नहीं हैं क्या?"

"तुम को बीवी से क्या काम है?"

"डलहौज़ी से एक साहब ने एक सन्देश उनके लिये भेजा है। वह देना है।"

"तो वह खुद ले लेंगी। वह वहीं गई हुई हैं।"

"कब से गई हैं?" प्रेमनाथ ने अपना आशय सिद्ध होते जान पूछा।

"कल गई हैं।"

प्रेमनाथ को और कुछ पूछने को नहीं था। उसको इस बात का शोक था कि वह मिलकर उनका धन्यवाद नहीं कर सका। वह वहां से छावनी की बैरक में चला गया। ट्रेनिंग कैम्प से तो उसको उसी दिन छुट्टी मिल गई थी जिस दिन से उसको फ्रन्ट पर जाने की आज्ञा हुई थी। वह रेजिमेंट जो पटियाला से लाहौर आ रही थी और जिसके साथ उसने फ्रांस में जाना था, छावनी में एकत्र हो रही थी। इसी काल में वह डलहौज़ी हो आया था। उसको कुछ रुपया पेशगी भी मिल गया था, जिससे उसने अपना किट तैयार किया था। वह बिल्कुल तैयार था।

रेजिमेंट एकत्र हुई और उसके साथ उसको अगले दिन मुगलपुरा स्टेशन से बम्बई के लिये एक स्पेशल ट्रेन में सवार होना था।

कर्मों की गहन गति

१

ऐमिली डलहौजी से शान्ता को वापिस लाने के लिये गई थी। लाहौर में एक मकान पुरानी अनारकली बाजार में ले लिया गया था और यह विचार था कि शान्ता अपनी लड़की के साथ वहाँ रहेगी। जिससे स्वामी निरूपानन्द और ऐमिली की देखभाल आसानी से हो सकेगी।

शान्ता को नीचे आने की तैयारी में तीन-चार दिन लग गये। इस बार ऐमिली अपनी मोटर नहीं ले गई थी। इस कारण पठानकोट तक टांगे में आये और यहां से रेल के एक फस्ट क्लास के डिब्बे में सवार हो लाहौर को चल पड़े।

गाड़ी अमृतसर स्टेशन पर दो घंटे भर ठहरी। कारण यह कि लाहौर से दो स्पैशल ट्रेनें फौजियों की आ रही थीं। एक स्पैशल ट्रेन पठानकोट की गाड़ी के एक घंटा भर पीछे आई और जिस प्लेट फार्म पर पठानकोट की गाड़ी खड़ी थी उसके सामने आकर खड़ी हो गई। दोनों के बीच साझा प्लेटफार्म था।

ऐमिली और शान्ता गाड़ी के दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर भीतर लेट रही थीं। इन्द्रा सोकर जाग पड़ी थी और उसने दिल बहलाने के लिये खिड़की खोल ली और प्लेटफार्म पर खोंचे वालों को चलते-फिरते देखने लगी। जब फौजियों की गाड़ी आकर खड़ी हुई तो फौजी उतरकर प्लेटफार्म पर इधर-उधर घूमने लगे। कुछ सिख सिपाही एक खोंचेवाले के चारों ओर घेरा डाल कर खड़े हो गये और उससे मिठाई ले ले कर खाने लगे। इस बीच में खोंचे वाले ने एक सिपाही से, जो मिठाई खाकर जाने लगा था, दाम माँग लिये।

सिपाही खोंचे वाले की ओर ध्यान न कर अपने डिब्बे की ओर चल

पड़ा। खोंचेवाले ने उसकी बांह पकड़कर कहा, "सर्दार साहब, पैसे दे कर जाइये। सिपाही ने बांह छुड़ाते हुए कहा, "कैसे पैसे ?"

इस समय खोंचे के समीप खड़ों में से एक ने खोंचे को ही उलट दिया। थाली, पतीली, बर्तन, सब छन-छन करते हुए प्लेटफार्म पर लुढ़कने लगे। खोंचेवाला उस जाने वाले सिपाही को छोड़ खोंचे के समीप भूमि पर लुढ़कती मिठाई को मुंह बना देखने लगा। इस समय एक सिपाही ने उस खोंचेवाले की टोपी उछाल दी। इस पर वह समझ गया कि उसका कुछ बस नहीं चल सकता। वह चुपचाप अपने खोंचे के बर्तन और टोपी समेटने लगा।

इन्द्रा इस सब तमाशे को देख रही थी। वह उस खोंचेवाले पर बहुत ही दया अनुभव कर रही थी कि इतने में प्लेटफार्म के एक दूसरे कोने में बहुत शोर सुनाई दिया। उसने खिड़कीसे सिर बाहर निकाल कर देखना चाहा कि क्या हुआ है। दूर सिपाहियों का एक झुंड बहुत जोर-जोर से किसी बात पर हँस रहा था। इस समय प्लेटफार्म पर उपस्थित अन्य खोंचेवाले चुपचाप अपने खोंचों को उठा-उठा कर भागने लगे।

इस सब हल्ले को सुन ट्रेन के सब सिपाही प्लेटफार्म पर निकल आये। इन्द्रा को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने प्रेम को भी उन सिपाहियों में देखा है। इससे वह उठकर डिब्बे का दरवाज़ा खोल पंजों के बल खड़ी हो देखने लगी। उसको प्रेम विस्मय में दूर खड़ा दिखाई दिया। उसने जोर से आवाज़ दी, "प्रेम भैया! प्रेम भैया!!"

प्रेम को आवाज़ पहुँची या नहीं, कहा नहीं जा सकता। हाँ, उसके ज़ोर-ज़ोर से पुकारने पर सिपाहियों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया और दस-बारह सिपाही डिब्बे के बाहर खड़े होकर उसकी ओर देख मुस्कराने लगे। इन्द्रा ने उनकी ओर ध्यान न देकर फिर प्रेम को आवाज दी। इस पर एक सिपाही ने कहा, "आओ न, मैं तुमको तुम्हारे प्रेम भैया के पास ले चलूं।"

इन्द्रा ने घूर कर उसकी ओर देखा, तो एक और ने जो डिब्बे के समीप ही खड़ा था उसका हाथ पकड़ खींचना चाहा। इन्द्रा की चीख निकल गई।

इन्द्रा के प्रेम को पुकारने की आवाज़ सुनकर ऐमिली की जाग खुल गई थी। परन्तु वह समझी तब ही जब इन्द्रा ने दूसरी बार प्रेम को आवाज दी। वह उठकर बाहर आ रही थी कि सिपाही ने इन्द्रा को पकड़ कर बाहर घसीटने का यत्न किया। इन्द्रा ने चीखना आरम्भ किया तो ऐमिली ने अपने तकिये के नीचे से अपना पिस्तौल निकाल लिया और उसका घोड़ा चढ़ा इन्द्रा के समीप आ खड़ी हो गई। सिपाही ने इन्द्रा का हाथ छोड़ दिया और लगभग एक सौ सिपाही इस डिब्बे के चारों ओर खड़े हो गये।

ऐमिली ने इन्द्रा को भीतर कर डिब्बे का दरवाज़ा बन्द कर दिया और खिड़की में से पुकारा, "आफिसर ! आफिसर !!"

इस समय तक प्रेम ने इन्द्रा को देख लिया था और वह अपने स्थान से भागता हुआ डिब्बे की ओर आया। डिब्बे के बाहर खड़ी सिपाहियों की भीड़ को चीरता हुआ डिब्बे के बाहर आ खड़ा हुआ, "क्या हुआ है इन्द्रा ?" उसने पूछा।

ऐमिली ने प्रेम को पहले देखा तो था पर उसने कभी बात नहीं की थी। उसको उसने ध्यान से देख डिब्बे का दरवाजा खोल दिया। इन्द्रा सीट पर बैठी हाथ को, जो मुचक गया था, पकड़े रो रही थी। पूर्व इसके कि वह ऐमिली को नमस्कार भी करे, उसने इन्द्रा से पूछा, "क्या हुआ है ?"

इन्द्रा ने कह दिया, "उसने मेरी बाँह पकड़कर मरोड़ी है।" और उसने एक सिख सिपाई की ओर संकेत कर दिया।

प्रेम ने बाहर निकल लपककर उसका कालर पकड़ लिया और कहा, "क्षमा मांगो अपनी बहिन से, बेशर्म न हो तो।"

सिपाही पहले तो लड़ने के लिए तैयार हो गया। पर ऐमिली ने पुनः रिवाल्वर तान लिया। उसने निश्चय कर लिया था कि वह इस सिपाही

को गोली मार अपाहिज कर देगी। परन्तु इसी समय एक अंग्रेज कैप्टिन जो रेजिमेंट के साथ था वहां आ उपस्थित हुआ। उसने प्रेम को आज्ञा दी कि सिपाही को छोड़ दे। प्रेम छोड़ सलाम कर अटेन्शन की हालत में आ खड़ा हो गया। इस समय ऐमिली उस कैप्टिन के समीप पहुँच कर उस सिपाही के अपराध को बताने लगी। कैप्टिन ने अंग्रेजी बोलते हुए ऐमिली को देखा तो वह पहचान गया कि यह कोई अंग्रेज औरत है। उसने पूछा, "क्या मैं आपका नाम, पता जान सकता हूं ?"

जब ऐमिली ने अपना नाम और पता बताया तो कैप्टिन ने सिपाही के अपराध के लिए क्षमा मांगी और कहा कि वह उसको दण्ड देगा। इस पर कैप्टिन ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि अपने-अपने डिब्बे में चले जावें। सब सिपाही अपनी-अपनी गाड़ी की ओर घूम पड़े। प्रेम ने अंग्रेजी में अपनी बहिन और मां से मिलने की स्वीकृति मांगी। कैप्टिन ने अचम्भे में पूछा, "वट ! तुम्हारा यह मतलब है कि ये तुम्हारी मां हैं ? तुम लाहौर के डिप्टी कमिश्नर के लड़के हो ?"

"यैस सर।"

कैप्टिन ने ऐमिली को सलाम की, हाथ मिलाया और वापिस अपने डिब्बे की ओर लौट गया। प्रेमनाथ डिब्बे में अपनी मां के पास जा पहुँचा और चरण-स्पर्श कर ऐमिली के सामने खड़ा होकर कहने लगा, "मुझको आपको मां कहते हुए बहुत मान अनुभव होता है। आशा है आप इससे नाराज नहीं होंगी ?"

ऐमिली ने उसके गाल पर हल्की-सी चपत लगाते हुए कहा, "यू ब्लैंडर फूलो। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे जैसे पुत्र को रखने से किसी औरत को लज्जा अनुभव हो सकती है ?"

"मैं आपसे मिलने के लिए आपकी कोठी पर गया था।"

"तो ?"

"बड़े साहब से भेंट हुई थी।"

"क्या कहते थे ?"

"कहते थे कि मां ने आप पर जादू कर रखा है। पर मम्मी, मुझको कुछ ऐसा लगता है कि उनकी हालत ठीक नहीं। कुछ ऐसी बात है जिसका उनके मन पर भारी बोझा है और वे ठीक सोच-समझ नहीं सकते।"

ऐमिली चिन्तित भाव में चुप रही। प्रेम की मां ने पूछा, "क्या बात हुई है प्रेम ! जिससे तुमने यह परिणाम निकाला है।"

"कुछ ऐसा देखा है मां, जो स्वाभाविक नहीं था। अथवा जो मानवीय के अतिरिक्त था।"

"प्रतीत होता है कि उस दिन बहुत पी गय होंगे।" ऐमिली ने अपनी चिन्ता को मिटाने के लिए कहा।

इससे न तो प्रेम को संतोष हुआ और न ही प्रेम की मां को। प्रेम ने बात बदल इन्द्रा से बात करनी आरम्भ करदी। तुम मुझको कभी चिट्ठी नहीं लिखतीं। अब भी यदि तुमने नहीं लिखी तो आकर तुम्हारी चोटी मरोड़ूंगा।

इन्द्रा ने बात बदल दी, "सुना है कि पेरिस में बहुत अच्छी वस्तुएँ मिलती हैं। मेरे लिए क्या लाओगे ?"

"कुछ तो लाऊँगा ही।"

२

जब फौजियों की गाड़ी जाने लगी तो प्रेम ने जाने से पहले जहां अपनी मां के चरण-स्पर्श किये वहां ऐमिली के भी किये। दोनों ने आशीर्वाद दिया और प्रेम ने इन्द्रा से सिर हिलाकर नमस्ते की और भागकर अपनी गाड़ी में चढ़ गया। जब प्रेम की गाड़ी छूट गई तो शान्ता ने ऐमिली से कहा, "मुझको प्रेम के कहने से चिन्ता लग गई है।"

"कैसी ?" ऐमिली ने पूछा।

"यही कि प्रेम के पिता की तबीयत खराब है। क्या कारण हो सकता है ?"

"देखो बहिन ! मैं तुमको बताती हूँ। मनुष्य के प्रायः रोग मन की विकृत अवस्था से पैदा होते हैं। उनके मन की विकृत अवस्था तो तब से ही थी जब मेरा विवाह हुआ था। मैं अभी युवा थी, भावुकता से पूर्ण थी और स्वप्न-लोक में रहा करती थी। इस कारण उनके मन के विकार का मूल्य नहीं आंक सकी। जब मुझको लाहौर में आकर पता चला कि उनका एक विवाह पहले हो चुका है तो उनको लन्दन में मैजिस्ट्रेट के सम्मुख झूठ बोलने के अपराध में दण्ड दिलवाया जा सकता था। परन्तु मैं समझती थी कि मैं उनसे प्रेम करती हूँ और उस प्रेम की प्रेरणा यह हुई कि मैंने मिस्टर चोपड़ा को केवल क्षमा ही नहीं किया प्रत्युत उनके सुख और आनन्द का जीवन व्यतीत करने में साधन बन गई।"

"उन्होंने आपको घर से निकाल दिया। उस समय मैं इस अपराध की महानता को समझ नहीं सकी और उसमें अपने उत्तरदायित्व को आंक नहीं सकी। आप निकाली ही नहीं गईं प्रत्युत निर्धनता का जीवन व्यतीत करने को विवश की गईं। ये प्रेम और इन्द्रा बहुत अच्छी शिक्षा से विभूषित होने चाहियें थे, परन्तु मैं देखती हूं कि वह केवल मैट्रिक तक पढ़ सका और यह स्कूल में जा ही नहीं सकी। इसके होने में केवल-मात्र कारण उनके मन की विकृत अवस्था ही थी।"

"मिस्टर चोपड़ा सदैव अपने विषय में, अपने सुख और शान्ति के विषय में ही विचार करते रहे हैं। उनकी पूर्ण रुचि और शक्ति अपने अभ्युदय में ही केन्द्रित रही है। उन्होंने कभी किसी दूसरे की सुख-सुविधा की ओर ध्यान नहीं दिया। उनकी इस मनोवृत्ति का ज्ञान मुझको तब हुआ जब मैंने अपने विषय में सोचना आरम्भ किया।"

"एक दिन मेरी क्लब जाने की इच्छा नहीं थी। मैंने न की। वे नाराज हो गये और उनके मुख से निकल गया कि उनका मुझ से विवाह करने का मतलब ही क्या रहा। मेरी आंखों के सामने से पर्दा हट गया। मैं समझ गई कि प्रेम तथा प्रत्येक प्रकार की शारीरिक सुविधा मुझको इस कारण प्राप्त है कि मुझको साथ ले जाकर अर्थात् मेरी नुमाइश कर

अपना प्रयोजन सिद्ध करना है।"

"उस दिन से मैं उनकी बातों और कामों को ध्यान से देखने तथा मनन करने लगी और परिणाम अति भयंकर हुआ। मुझको प्रतीत हुआ कि वे निपट स्वार्थ में रत एक क्षुद्र प्राणी हैं जिसके सम्पर्क में रहकर आत्मा का हनन ही हो सकता है।"

"फिर प्रेम के मुकद्दमे की बात आई। वे मान गये कि प्रेम के विरुद्ध कुछ विशेष प्रमाण नहीं थे, परन्तु वे प्रेम को मुक्त नहीं कर सके, केवल इसलिए कि उनकी अपनी नौकरी और ख्याति संशय में पड़ सकती है। उन्होंने सरकारी गवाह की उन बातों को भी प्रमाणित मान लिया, जिनकी सरकारी वकील अदालत में पुष्टि नहीं कर सका। उन्होंने प्रेम के वकील की सब युक्तियों को इसलिए अमान्य कर दिया कि विद्रोही अपनी बातों को छिपाकर रखते हैं और उन छिपी बातों में अनुमान प्रमाण ही मान्य करना होगा।"

"जब प्रेम को पैरोल पर छोड़ने का प्रश्न आया तो वह अपने ही पुत्र पर दया दिखा सकते थे, परन्तु मैं क्या कहूँ, कहते मन को क्लेश होता है, उन्होंने उसके लिए वह कुछ भी नहीं किया जो एक मजिस्ट्रेट किसी अपरिचित के लिए कर सकता है।"

"उनको तपेदिक से डर इसलिये है कि कहीं उनको बीमारी न लग जाये। ऐसी मानसिक प्रवृत्ति वाले मनुष्य का नीरोग रह सकना ही एक चमत्कार होता।"

"मैं जानती हूँ कि उनकी मेधा-शक्ति क्षीण होती जाती है। उनकी युक्तियां थोथी और काम निराधार होते जाते हैं। और अब वे कुछ अधिक काल तक अपने इस उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त नहीं रह सकते। अंत कहाँ होगा ? कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"हम कुछ नहीं कर सकते क्या उनके लिए?" शांता का प्रश्न था।

"हम क्यों करें। मैं इस प्रकार के प्रयास में कुछ लाभ नहीं समझती।"

शान्ता ने गंभीर भाव धारण कर कहा, "मैं एक बात पूछूं बहिन ! तुम मेरे लिए क्यों इतना कुछ करती हो ?"

"इसलिये कि तुम्हें मेरी मूर्खता के कारण हानि पहुँची है। इसलिये कि तुम्हारी सहायता करने से मेरी आत्मा को सन्तोष मिलता है। तुम्हें सहायता देनी नेकी की सहायता करनी है। उनको इसके सर्वथा विपरीत है।"

"पर मैं उनको उनके मार्ग पर चलने में सहायता देने के लिए नहीं कह रही। मैं तो उनको उनके मार्ग से निकालकर अपने मार्ग पर लाने के लिये यत्न करने की बात कह रही हूँ।"

"यह प्रयत्न तो हो ही रहा है। मैंने उनका त्याग नहीं किया, जैसा उन्होंने आपका कर दिया था। मैं घर में उनके लिए प्रबन्ध में सहायता भी करती रहती हूँ। परन्तु कोई सुधरता इसलिए नहीं कि उसके सुधारने वाले उपस्थित होते हैं। काल, परिस्थिति और पूर्व संस्कार इसमें सुधारकों से अधिक सहायक होते हैं।"

"इस पर भी यत्न करना मनुष्य का कर्तव्य है।"

"अब तुम ही बताओ, जब तुम उनके सम्पर्क में नहीं हो, तो कैसे तुम उनको सन्मार्ग पर लाने में सहायक हो सकती हो। मैं जो उनके साथ रहती हूं, समय-समय पर उनको बताती रहती हूँ। इस पर भी दिन-प्रतिदिन मैं उनसे दूर होती जा रही हूं। ऐसा समय आ सकता है जब मेरा उनका सम्पर्क भी इसी प्रकार टूट जावे, जैसे तुम्हारा उनसे टूट चुका है।"

"मैं समझती हूँ कि आपका उनसे सम्बन्ध इस कारण ढीला हुआ है कि आप मेरी सहायता कर रही हैं। मैं अब लगभग ठीक हूँ। आप मुझ को छोड़कर पुनः उनसे अपना सम्बन्ध दृढ़ कर उनके जीवन पर अपना श्रेष्ठ प्रभाव डाल सकती हैं।"

"यह बात मैं पहले परीक्षा कर देख चुकी हूं। मुझको इस बात का भान कि आपको छोड़कर ठीक नहीं किया गया, रावलपिंडी में हुआ था।

वहाँ के म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन मियाँ अब्दुल सत्तार खाँ की चार बीवियाँ थीं। उनकी सबसे बड़ी बीवी मेरी सहेली बन गई थी। मैंने उसे तथा उसकी सौतों को देखकर यह अभनुव किया था कि बहुपत्नीक पति की मुख्य समस्या पत्नियों के आचार-विचार और योग्यता पर निर्भर है। मैंने पहली बार वहाँ यह अनुभव किया था कि मुझको या तो अपना सम्बन्ध मिस्टर चोपड़ा से तोड़ देना चाहिये था या तुमको घर से निकलने नहीं देना चाहिए था। मैंने भरसक यत्न किया कि तुमको पुनः उनके सामने लाऊँ, परन्तु सफल नहीं हुई।"

"पश्चात् एक बार प्रेम को हमने जहाँगीर के मकबरे में खेलते देखा। मैं उससे बहुत प्रभावित हुई थी और मैंने बहुत ही यत्न किया कि उस लड़के को घर में स्थान दिया जाये और उसकी उच्च शिक्षा का प्रबन्ध किया जाये। परन्तु सब निष्फल हुआ। इसके उपरान्त जब प्रेम को चालीस रुपये की नौकरी मिली तो भी मैंने कहा कि उनका लड़का इतनी घटिया नौकरी करे, यह एक लज्जा की बात है।"

"इन सब प्रयत्नों का उन पर कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि हम दोनों में खाई बढ़ती गई। अब तो यह देखना रह गया है कि इस खाई का सागर कब और कैसे बनता है। मैं सब कुछ के लिये तैयार हूँ।"

"तो तुम समझती हो कि वे खाई के इस पार भी नहीं लाये जा सकते?"

"मेरा कहना है कि उनको इस ओर आने की अथवा हमारे उस ओर जाने की अभी उपयुक्त परिस्थिति उत्पन्न नहीं हुई। शायद किसी समय यह हो सके।"

लाहौर पहुँचकर शान्ता और इन्द्रा को पुरानी अनारकली वाले मकान में ठहरा दिया गया।

३

मिस्टर चोपड़ा का जीवन दिन-प्रतिदिन नीरस और लक्ष्यहीन होता जाता था। युक्ति संस्कारों के आधार पर बनाई जाती है। संस्कार उस वातावरण, जिसमें कोई पलता है, अथवा जैसी शिक्षा किसीको मिलती है, के आधार पर बनते हैं।

मिस्टर अमरनाथ चोपड़ा का पिता लाहौर के उन परिवारों में से था जिनको महाराजा रणजीतसिंह के राज्य के स्तम्भ कहा जाता था। वे स्तम्भ गिरे तो सिक्ख राज्य पंजाब से समाप्त हुआ। सिक्ख राज्य के पश्चात् वे अंग्रेजी राज्य का आधार बन गये।

राय सुलखनमल अभी बीस वर्ष की आयु के थे, जब महाराजा रणजीतसिंह का देहान्त हुआ था। उस समय यह बात लाहौर में प्रसिद्ध हुई थी कि महाराणा को विष देकर मारा गया है। यद्यपि कोई इस विषय को कहता नहीं था, परन्तु जो सरदार अपनी मनमानी करना चाहते थे और महाराजा के कारण कर नहीं पाते थे, वे इस हत्या के करने वाले कहे जाते थे।

राय सुलखनमल के पिता नगर की खत्री बिरादरी के चौधरी थे और जब कभी भी महाराजा को धन की आवश्यकता पड़ती थी एकत्र कर दिया करते थे। उनका महाराजा के यहाँ भारी मान था और नगर में भारी दबदबा। महाराजा के मरने के पश्चात् नगर को सिक्खाशाही से बचाने में बहुत अंशों में उनका हाथ था, परन्तु स्थिति इतनी तीव्र गति से बिगड़ती गई कि एक के पश्चात् दूसरा सिक्ख नेता मारा जाने लगा और सिक्ख खालसा ऊधम मचाने लगे।

महाराजा दलीपसिंह की कई सर्दार हिमायत करते थे। दूसरे पक्ष के लोग यह कहते थे कि दलीपसिंह तो बच्चा है और वास्तव में उसको गद्दी पर बैठाने वाले स्वयं राज्य करना चाहते थे। राय सुलखनमल के पिता राज्य की सुव्यवस्था के लिये महाराजा शेरसिंह के सहायकों में थे और

उसके मारे जाने के पीछे महाराजा गुलाबसिंह के सहायकों में हो गये। एक रात जब वे अपनी साहुकारे की दुकान से घर जा रहे थे तो मार डाले गये। इस पर राय सुलखनमल लाहौर से भागकर कहीं छिप गया। वह अंग्रेजों के राज्य स्थापित हो जाने पर ही वापिस लौटा। जब १८५७ का सिपाही-विद्रोह हुआ तो राय सुलखनमल लाहौर में अपने पिता का कारोबार कर रहा था। उस समय उसके पास विद्रोही लोग सहायता के लिये आये थे, परन्तु उसने बता दिया कि उसके पिता की हत्या के पश्चात् उनके परिवार की अवस्था ऐसी हो गई है कि वे सहायता नहीं दे सकते।

राय सुलखनमल के तीन विवाह हुए थे। पहला विवाह सन् १८५० में किया था। उससे केवल दो लड़कियाँ थीं। उनके विवाह रायसाहब ने बड़ी धूमधाम से किये थे। दूसरा विवाह १८६० में किया था। उसमें से एक लड़का ही हुआ था और तीसरा विवाह इकसठ वर्ष की आयु में १८८० में किया था। इससे ही अमरनाथ चोपड़ा का जन्म १८८३ में हुआ था।

१८८२ में राय सुलखनमल का सम्पर्क श्री स्वामी दयानन्द से हुआ और उसके विचारों में परिवर्तन आया। परन्तु बुढ़ापे में विवाह करने के कारण पहली स्त्रियों के बच्चे बाप का मान नहीं करते थे। अमरनाथ की माँ का देहान्त १८८४ में ही हो गया था और अमरनाथ का पालन उसकी सौतेली माँ के बच्चों और नोकरों द्वारा हुआ। परिणाम यह हुआ कि अमरनाथ बचपन से ही उच्छृंखल और पिता के विचारों से भिन्न बनता गया।

शान्ता के साथ विवाह के पश्चात् तो वह गवर्नमेन्ट कालेज में भर्ती हो गया। वहाँ रईसों के लड़के और अंग्रेज प्रोफेसरों की संगत में वह सर्वथा अभारतीय बन गया। उस काल में ही सीधी-सादी धर्मनिष्ठ शान्ता से उसका झगड़ा होने लगा। विलायत जाकर तो वह योरुपियन सभ्यता से इतना चकाचौंध हुआ कि वह शान्ता को भूल गया।

वह एक दुकान की सेल्ज़-गर्ल के प्रेम में उलझ गया। परन्तु किसी

प्रकार यह समाचार उसके पिता को मिल गया और वह शान्ता को लेकर विलायत जा पहुंचा। वहाँ जाकर डरा-धमकाकर और कुछ ले-देकर अमरनाथ की प्रेमिका से अमरनाथ को छुटकारा दिलवाया और शान्ता के एक लड़की उत्पन्न होने का साधन बनकर हिन्दुस्तान लौट आया। परन्तु रोग तो अमरनाथ की मनोवृत्ति का था। वह सर्वथा अंग्रेज़ी आचार-विचार अपना बैठा था और उसको अंग्रेज़ बीवी, जो उसके साथ क्लब, नाच-तमाशे और शराब पीने में सहयोग दे सके, के बिना जीवन रसहीन लगता था। इस कारण वह ऐमिली जान्सन, एक पढ़ी-लिखी लड़की को विवाह कर ले आया। विवाह कचहरी में हुआ था और अमरनाथ को शपथ लेकर कहना पड़ा था कि उसकी पहले कोई बीवी नहीं है।

जब अमरनाथ लाहौर में आया तो उसके पिता की आयु पचासी वर्ष की हो चुकी थी और जब शान्ता सब कुछ छोड़ अपने वस्त्र ही ले घर से निकल गई तो राय सुलखनमल का देहान्त हो गया।

इसके पश्चात् अमरनाथ के बड़े भाई ने अमरनाथ को पांच हज़ार रुपया और देकर उससे फारखती लिखा ली। इस प्रकार अमरनाथ अपनी अंग्रेज़ बीवी को ले रावलपिंडी चला गया।

अमरनाथ केवल मात्र एक ही शिक्षा ग्रहण कर चुका था और वह थी 'सर्वाइवल ऑफ़ दि फिटैस्ट'। उन दिनों युरोपियन फिलोसफी का यही एक सार था। यह सिद्धान्त स्वार्थ का दूसरा नाम है और अमरनाथ इसका अपनी बुद्धि अनुसार अनुसरण करता हुआ अपना जीवन-निर्वाह कर रहा था। जब वह अपने स्वार्थ के अतिरिक्त किसी दूसरे की चिन्ता नहीं करता था तो उसके आस-पास भी वही लोग एकत्र होते जाते थे जो अपने स्वार्थ को सर्वोपरि मानते थे। उसके साथ सम्पर्क रखने वालों में से जिसने भी परस्वार्थ की ओर ध्यान दिया वह उसकी दृष्टि में पतित हो गया।

यही अवस्था ऐमिली की हुई। रावलपिंडी में तो ऐमिली उसके प्रत्येक प्रकार के व्यवहार में साथ देती रही। क्लब में जाती, थिएटर और

सिनेमा में उसका साथ देती । सभा-समाजों में, जहां डिप्टी-कमिश्नर जाता, वह उसके साथ रहती। दोनों रात सपर के समय शराब पीते और प्रत्येक प्रकार के सुख-आराम और वासना के कार्य में सम्मिलित होते थे, उन दिनों यह समझा जाता था कि बड़े साहब की बीवी साहब की बहुत ही वफादार और प्रिय है।

ऐमिली के विचारों में अन्तर आने लगा तो वह विचार करने लगी कि इस सब भाग-दौड़ का प्रयोजन क्या है? प्रातः उठ बिस्तर पर ही चाय पीकर स्नान आदि से निवृत्त हो ब्रेक-फास्ट कर दिन भर का काम आरम्भ हो जाता था। जहां साहब से मिलने वाले आते थे वहां श्रीमती जी के पास भी लोगों का आना-जाना आरम्भ हो जाता था। कहीं सभा हो रही है तो कहीं राग-रंग। कभी किसी अफ़सर की बीवी आई है तो कभी दूसरे अफ़सर के घर जाना है। फिर लंच का समय हो जाता था। उसके पश्चात् फिर किसी सभा-सोसायटी का डेपुटेशन आ जाता था। साहब कचहरी से लौटते तो क्लब जाना होता था। पश्चात् घर पर डिनर और फिर कहीं नाच, राग, रंग, तमाशे आदि पर। प्रायः रात के बारह-एक बजे घर आकर सोना और प्रातः फिर वही दिनचर्या चल पड़ती थी।

तपोवन में जाने के पश्चात् पहली बार अपने जीवन पर विचार करने की प्रेरणा ऐमिली को हुई। तब से ही पति-पत्नी में पृथकत्व का सूत्रपात हुआ। यह पृथकत्व गुजरांवाला में और भी बढ़ा जब एक साधु से ऐमिली की भेंट हुई और उसने बताया कि संसार के अतिरिक्त भी कुछ है। इस संसार से बाहिर क्या है? यह स्वामी निरूपानन्द ने समझाया और वह समझ सकी। इसके पश्चात् प्रत्येक घटना ने पति-पत्नी में खाई को बड़ा और फिर बड़ा ही किया। दोनों का विचार करने का ढंग भिन्न-भिन्न हो गया।

४

ऐमिली उलहौजी से लौटी तो मिस्टर चोपड़ा कचहरी गये हुए थे। उसने स्नान आदि से निवृत्त होकर भोजन किया और अपने कमरे में जा लेट रही। वह सोच रही थी कि इस प्रकार के जीवन का अन्त कहां होगा। उसके मन में शान्ता का यह कहना बार-बार घूम रहा था कि क्या यह खाई पार नहीं की जा सकती। यदि उसके वस की बात होती तो यह भेदभाव मिट सकता था, परन्तु भेदभाव में सदा दो पक्ष होते हैं और दोनों पक्ष एक उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर कार्य कर सकेंगे, कहना कठिन था। इस पर भी वह यत्न करने के लिए उद्यत थी।

सायंकाल जब चोपड़ा कचहरी से लौटा तो चपरासी ने कहा, "मेम साहबा आई हैं।"

"उनको इत्तला करो कि मैं आ गया हूं।"

चपरासी कहने के लिए कमरे से जाने लगा तो मिस्टर चोपड़ा ने वापिस बुलाया और कहा, "उनको कहना यहां नहीं आयें। मैं वहां आता हूं।"

चपरासी यह सुन जाने लगा तो बोले, "अच्छा ठहरो, मैं स्वयं जाऊंगा।"

चपरासी बाहर बरामदे में चला गया। मिस्टर चोपड़ा अपने कपड़े बदलने के लिए दूसरे कमरे में चला गया। वह अभी कपड़े बदल ही रहा था कि दरवाजे के बाहर से ऐमिली ने आवाज दी, "मैं आ सकती हूं क्या ?"

"यहां ? नहीं !" इतना कह मिस्टर चोपड़ा विचार करने लगा कि उसने उसको बुलाया था और उससे बात स्पष्ट करना चाहता था। अब वह आई है तो बात कर ही ले। परन्तु उसके मस्तिष्क में घूमा हुआ था कि ऐमिली तपेदिक के कीटाणुओं से भर रही है और उनसे छूत लग जाने की सम्भावना है। इस कारण वह विचार कर रहा था कि उससे बात

करे अथवा न ।

ऐमिली ने उसको चुप देख कहा, "देखिए, मैं छः मास से शान्ता जी से मिल रही हूँ । मुझको तो रोग नहीं लगा । फिर आपको रोग क्यों लग जाएगा ?"

"यह बात नहीं । हां, मैं तुम से लान में बैठ बात करूंगा । तुम वहां चलो ।"

ऐमिली मुस्कराई और कोठी के बाहर लान में चली गई । वहां पहुंच चपरासी को कह कुर्सियाँ लगवा दीं । मिस्टर चोपड़ा कपड़े बदल वहाँ आ गया । बैरा ने चाय लगा दी और पति-पत्नी दोनों पीने लगे । ऐमिली ने बताया, "शान्ता अब लगभग ठीक है । उसको ज्वर नहीं हो रहा । खांसी भी अब नहीं होती । दुर्बलता पहले से कम है और वह लाहौर आ गई है ।"

'कहां ठहरी है ?"

"पुरानी अनारकली बाजार में एक मकान ले लिया है । वहां चली गई है ।"

"तुम उसके साथ-साथ आई हो ?"

"और उसका था ही कौन, जो उसके साथ आता ?"

"उसका भाई जो था ।"

"वह बेचारा गरीब अपनी रोटी कमाये या बहन की सेवा-सुश्रूषा करे ? वह शाहदरा में है ।"

"तो यहां उसके पास कौन रहेगा ?"

"एक नौकर रख देना चाहती हूँ । उसका लड़का था, पर भर्ती करने वालों ने जबरदस्ती फौज में भर्ती कर लिया है ।"

"वह आया था । मैंने उसको कोठी से निकाल दिया था ।"

"वह बता रहा था और आपकी मानसिक अवस्था पर चिन्ता प्रकट कर रहा था ।"

"वह मेरे लिए क्यों चिन्ता करेगा ? सब झूठ और फरेब है । मैं

इस भुलावे में नहीं आ सकता। मैंने उनके लिए कुछ किया ही नहीं और मैं उनसे कुछ आशा नहीं रखता।"

"पर देखिये, यह आपको अपना पिता जानता है। इससे एक स्नेहमय पुत्र होने से आपके लिए चिन्ता करता है।"

"धनी आदमियों के लिए सब ऐसे ही झूठ बोला करते हैं। तुम्हारे पीछे मेरे बड़े भाई का छोटा लड़का शौकत आया था। उसका बाप और बड़ा भाई जूआ खिलाते हुए पकड़ लिए गये हैं। वह चाहता था कि मैं उनको छुड़ा दूं। मैंने उससे कहा, "बच्चू, मुझको लाहौर में आये छः-सात वर्ष हो चुके हैं, अब तक तुम कहां थे? कभी मिलने नहीं आये?" तो कहने लगा, "चाचा जी! पहले आपकी आवश्यकता नहीं पड़ी। अब पुलिस वालों ने अकारण फंसा लिया है।"

"ठीक तो कहता था।" ऐमिली ने बीच में टोक कर कहा, "हमने भी तो उनको कभी नहीं बुलाया। यहां हम सैकड़ों दावतें कर चुके हैं, आपने एक बार भी उनकी सुध नहीं ली।"

"मेरे साथ उन्होंने भारी धोखा किया है। केवल पांच हज़ार देकर फारखती लिखवा ली थी।"

"आप इतने पढ़े-लिखे और कानून के जानने वाले होते हुए भी जब उनके जाल में फंस गये, तो फिर गिला करने की क्या आवश्यकता है?"

"तो तुम चाहती हो कि उन जुआरियों को छुड़ा दूं?"

"आप अपने निर्दोष पुत्र को नहीं छोड़ सके, तो उनको क्या छुड़ाइएगा? जैसा मन आये करो। मैं तो यह कहना चाहती हूं कि अब शांता ठीक है। लड़का सिपाही होकर सरकार की वफादारी बजा रहा है। लड़की विवाह के योग्य हो गई है। अब आप उनको अपने घर में रख लीजिये।"

"उनको घर रख लूं? यह कैसे हो सकता है? मैं तुमको भी कुछ दिनों के लिए स्विटजरलैंड को सैर के लिए भेजना चाहता हूं जिससे तुम्हारे भीतर से तपेदिक के कीटाणु निकल सकें और तुम नवीन सी ही

घर में लाकर रखना चाहती हो। यह नहीं होगा। फिर मेरे और उनके 'सोशल स्टेटस' में इतना अन्तर पड़ गया है कि यह असम्भव है।"

"यूं तो यह विवाह ही अनुचित हुआ था। पिताजी सत्तर-वहत्तर के हो गये थे। उनके दिमाग में न जाने क्या सूझा कि एक निर्धन की लड़की को लाहौर के एक रईसजादे से विवाह दिया। मैं सर्वथा अनजान था। विना भावी जीवन की आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिये रहने लगा, परन्तु ज्यूं ही मुझको पता चला कि मैं क्या कुछ बनने वाला हूं, मैंने दूसरा विवाह करने का निश्चय कर लिया।"

"आपके पिताजी ने भूल की, उसका फल आपने उस निःसहाय, निर्दोष अबला को क्या पर्याप्त नहीं दे दिया?"

"पर मैं पूछता हूँ ऐमिली! मैंने तुमसे विवाह इसलिये किया था कि इस वैभवशाली जीवन में तुमको सहभोक्ता बनाऊँगा। तुमको न जाने क्या हो गया है कि स्वयं यह भाग-दौड़कर कष्ट भोग रही हो और मुझ को भी उस आनन्द से वंचित कर रही हो जिसके मैं स्वप्न देखा करता था।"

"यह तो मैं जानती नहीं कि आप कैसे स्वप्न देखा करते थे, पर यह जानती हूं कि जब तक आपके साथ सहभोगी बनी रही अपने जीवन को निस्सार, निरर्थक और अनुपयोगी बनाए रही। ज्यूं ही मुझको प्रतीत हुआ कि कोई भी किया हुआ कर्म निष्फल नहीं जाता और मनुष्य की आत्मा पर एक लकीर छोड़ता जाता है तो मैं कांप उठी। मैं उन लकीरों को जो आपके साथ रहकर मैंने अपनी आत्मा पर बनाई थीं, मिटाने का यत्न करने लगी। उनके कालेपन से मेरा हृदय काँप उठता है।"

"बहुत पाप किए हैं तुमने मेरे साथ रहते हुए?"

"निःसन्देह! इस दुर्लभ मनुष्य-जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ अथवा अनाचार में खोना, पाप नहीं है क्या?"

चोपड़ा हंस पड़ा। उसने चाय समाप्त कर ली थी। ऐमिली अभी पी रही थी। चोपड़ा नैपकिन से हाथ पोंछता हुआ कहने लगा, "तो तुम

बहुत पापिन हो। मुझको भय है कि कहीं मेरी नौका में पत्थर रूप न बन जाओ।"

ऐमिली भी मुस्कराई और बोली, "मन के भावों के दूषित हो जाने का यही परिणाम है। इससे ही लोग रात को दिन और दिन को रात समझने लगते हैं।"

"देखो ! मैं तुमसे यह कहता हूं कि तुम दो-चार मास के लिए स्विट-ज़रलैंड जाने का विचार कर लो। मैं तुमको खर्चे के दस हज़ार रुपये दे सकता हूं।"

"युद्ध दस-पांच दिन में समाप्त होने वाला है। युद्ध समाप्त होते ही तुम्हारे लिये टिकट और कोठी का प्रवन्ध कर दूंगा। छोड़ो इन तपेदिक वालों की संगत। मैं भी छुट्टी का प्रवन्ध कर रहा हूं। युद्ध की समाप्ति पर छुट्टी मिलेगी ही। जब तक तुम इस छूत से रिक्त होवोगी। मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा। हम वहां आनन्द से एक वर्ष तक रह सकेंगे।"

इतना कह मिस्टर चोपड़ा उठ खड़ा हुआ और बोला, "अब मैं क्लब में जा रहा हूं। आशा करता हूं कि तुम दो दिन में अपना निर्णय बता दोगी। मैं पासपोर्ट बनवा रखूंगा और युद्ध समाप्त होते ही तुमको भेज सकूंगा।"

५

स्विटज़रलैंड जाने का और वहां पर दस हज़ार रुपया व्यय करने का सुभीता भारी प्रलोभन था। ऐमिली इस प्रस्ताव से गम्भीर विचार में पड़ गई। उस रात उसको नींद नहीं आई। एक ओर तो वह समझती थी कि उसको बाहर भेजने की योजना मिस्टर चोपड़ा निजी स्वार्थवश कर रहे हैं और इसमें उसको शान्ता से पृथक् करने का आयोजन है। साथ ही वह यह विचार करती थी कि शान्ता को जो भी वह आर्थिक सहायता दे रही थी फिर भी दे सकेगी। सबसे भारी प्रलोभन यह था कि शायद वह मिस्टर चोपड़ा के और अपने भीतर खाई को इस प्रकार मिटा सकेगी।

इस प्रकार रात भर वह अपने देश से बाहर जाने के आयोजन पर विचार करती रही। अगले दिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त हो वह ब्रेकफास्ट के लिये डाइनिंग हाल में गई तो मिस्टर चोपड़ा ने पूछा, "क्या विचार किया है तुमने ?"

"मैं यह सोचती हूँ कि मैं आपके साथ ही चलूँगी। पहले अकेली जाकर क्या करूँगी ? अकेली जाऊँगी तब भी लगभग उतना ही व्यय होगा जितना दोनों के इकट्ठा जाने से। आप कहते थे कि युद्ध बन्द होने वाला है ?"

"हां ! जर्मन फौजों का मोरेल गिर रहा है। वे अब धकेलकर बेल-जियम की सरहद पर ले जाई जा चुकी हैं। यह बात भी चल रही है कि जर्मन के कुछ नागरिकों ने अमेरिका के नागरिकों को 'ट्रूस टर्म्स' बन-वाने के लिये लिखा है और प्रेजिडेन्ट विल्सन ने सब मित्र-राष्ट्रों से इस विषय में बातचीत की है।"

"कब तक बात परिपक्व होने की सम्भावना है ?"

"यदि थोड़ी अकड़कर बात की गई तो अस्थायी शान्ति में कुछ देर हो सकती है, परन्तु वास्तविक शान्ति अधिक चिरस्थायी होगी।"

"यदि सब बात इतनी जल्दी होने वाली हैं तो फिर मेरे अकेली जाने से क्या लाभ है ?"

"तुम समझती नहीं ! तुम्हारे शरीर में जो तपेदिक के कीटाणु धंस गये हैं उनके निकलने के लिये कुछ समय भी तो चाहिए।"

"वह तो यहां भी निकल जाएंगे। अब मैं डलहौजी तो जाऊंगी नहीं।"

"पर यहां रहती हुई तुम शान्ता से मिलने तो जाओगी ही ?"

"वैसे तो हम लाहौर में रहते हैं, जिसमें सहस्रों तपेदिक के रोगी रहते हैं।"

"हम किसी के घर थोड़े ही जाते हैं ?"

"और जो लोग यहां और कचहरी में मिलने आते हैं और आपसे

हाथ मिलाते हैं, उनके विषय में कौन कह सकता है कि किसी रोगी से मिलकर नहीं आये ?"

"कुछ भी हो, तुमको पहले जाना ही होगा।"

इससे ऐमिली को सन्देह हो गया कि दाल में कुछ काला है। वह चुप कर रही। ब्रेकफास्ट समाप्त हुआ तो मिस्टर चोपड़ा लोगों से मिलने के लिये कोठी के ड्राइंग-रूम में चला गया। ऐमिली का विचार बच्चों को मिलने के लिये स्कूल जाने का हो रहा था। इस कारण वह अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिये गई। वहां चपरासी तशतरी में रखी हुई एक चिट्ठी लाया।

ऐमिली ने चिट्ठी उठाकर खोली और पढ़ी। यह बच्चों के स्कूल के वार्डन की लिखी हुई थी। इसमें लिखा था,

"डीयर मिसेज़ चोपड़ा,

"मुझको अभी आपके पति मिस्टर चोपड़ा का एक पत्र मिला है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि आप बीमार हैं और मानसिक विकार से पीड़ित हैं। आप शीघ्र ही अपनी चिकित्सा के लिये स्विटज़रलैंड जाने वाली हैं। इस कारण आप बच्चों को देखने आएंगी। इस पर उन्होंने आज्ञा दी है कि आपको उनकी उपस्थिति के बिना बच्चों से मिलने न दिया जाये।"

"यदि आप आवेंगी तो आपको बच्चों के सामने न करना अति कठिन है। इस कारण पत्र लिखकर पहले ही सूचना दे रहा हूँ कि आप अकेले आने का कष्ट न करें।"

इस पत्र को पढ़कर ऐमिली सन्न रह गई। उसको कुछ ऐसा भास हुआ कि स्विटज़रलैंड भेज यह आदमी मुझको पागल सिद्ध करना चाहता है और शायद वहां किसी पागलखाने में भर्ती करवा देगा।

उसने एक पत्र स्कूल के वार्डन को लिखा। उसमें उसने लिखा, "मेरी इच्छा बच्चों से मिलने आने की थी। अब से पहले बच्चों को खुले लान में मिल लिया करती थी। अब मेरे लिये इस सुख-प्राप्ति की मनाई कर

दी गई है। मैं आपको किसी कठिनाई में नहीं डालना चाहती। इस कारण अब अकेली नहीं आऊँगी।"

उसके मन में सन्देह करने वाली एक और बात हो गई। सदा से विपरीत उस सायंकाल मिस्टर चोपड़ा ने ऐमिली से कहा, "तुम बच्चों को मिलने नहीं चलोगी ?"

"क्यों ?"

"मैं मिलने जा रहा हूँ।"

ऐमिली के मन में एक बात सूझी। उसने कहा, "मुझको आज काम है। मैं स्वामीजी से मिलने जा रही हूँ। आप आज मिल आइये। मै कल मिल आऊँगी।"

"कल किस समय जाओगी ?"

"क्यों, क्या बात है ?"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलने का यत्न करूँगा।"

"मैं तो कल दोपहर के समय, जब स्कूल में विश्रान्ति का समय होता है, जाऊँगी।"

"तो तुम मुझको कचहरी से अपनी मोटर में लेते जाना।"

"पर आप तो अभी जा रहे थे न ?"

"नहीं, तुम्हारे साथ ही जाऊँगा।"

"पर मैं आपके साथ नहीं जाऊँगी।"

"क्यों ?"

"मेरे तपेदिक के कीटाणु आपके अन्दर घुस जाएँगे।"

"साथ-साथ खुली हवा में चलने-फिरने से कुछ नहीं होता।"

"तो स्विट्ज़रलैंड में खुली हवा नहीं है क्या ? देखिये माई डीयर हज़बैंड ! मैं आपके साथ नहीं जाऊँगी। इसका कारण अपने मन से पूछ लीजिये। आपने बच्चों के होस्टल के वार्डन को कुछ लिखा है या नहीं ? मैं आज गई थी और वहां से बैरंग वापिस कर दी गई हूँ।"

ऐमिली ने वार्डन से लिखी चिट्ठी की बात नहीं बताई। इस कारण

बात कुछ बदलकर कही थी। इस पर मिस्टर चोपड़ा ने झेंपते हुए कहा, "तुम अकेली क्यों गई थी ?"

"इस कारण कि वास्तव में मैं पागल नहीं हूं।"

इससे अपनी लज्जा छिपाने के लिये अथवा नक़ली क्रोध दिखाने के लिये, मिस्टर चोपड़ा उठकर बाहर निकल गया। ऐमिली समझ गई कि अपनी झेंप मिटाने के लिये वह चला गया है। अब वह सोच रही थी, क्या बच्चों के लिये कमिश्नर और गवर्नर से मिलकर लाहौर के डिप्टी-कमिश्नर की शिकायत करे। चिरकाल तक वह सोचती रही। अन्त में वह इस निष्कर्ष पर पहुँची कि पहले स्वामीजी से बातचीत करे। इससे विचार न होते हुए भी वह स्वामी निरुपानन्द के आश्रम में पहुंच गई।

स्वामीजी अपने कमरे में बैठे हुए मिलने के लिये आये हुए लोगों से वार्तालाप कर रहे थे। ऐमिली भी सब के पीछे जा बैठी। सब के चले जाने के पश्चात् एकान्त हो गया तो बात होने लगी।

"शान्ता आ गई है ?"

"हां महाराज! अनारकली वाले मकान में ठहरी है। अब आप एक दिन चलकर देख लीजिये तो उसको चलने-फिरने की स्वीकृति दी जाये।"

"एक दिन चलूंगा। और···?"

"साहब मुझको स्विटज़रलैंड भेजने की योजना बना रहे हैं।"

"क्यों ?"

"पूर्ण बात तो बताई नहीं जा सकती। हां, वे यहाँ यह घोषित करते प्रतीत होते हैं कि मेरा मस्तिष्क खराब हो गया है।"

इतना बताकर ऐमिली ने वार्डन का पत्र और उसके पश्चात् मिस्टर चोपड़ा से हुई वार्तालाप सुना दी। इस पर स्वामीजी ने कहा, "बात तो बहुत गम्भीर हो गई है। इस पर भी मेरा तो मार्ग त्याग का है। नहीं मिलने दिया तो नहीं सही। अपनी आत्मोन्नति में संलग्न रहना चाहिये। यह पुत्र, पति, लड़की, माता सब इस संसार से बांधने वाले हैं।"

"तो क्या किया जाये ?"

"निरासक्ति, निर्लेपता अथवा निस्पृहता। इस संसार में सुख से रहने का यही उपाय है।"

"इससे तो किसी दूसरे की भलाई करने में भी अरुचि हो जायेगी।"

"मेरे कहने का अर्थ अकर्मण्यता नहीं है। कर्म किये विना तो रहा नहीं जा सकता। निर्लिप्त होकर कर्म करने से सदैव वह कर्म किया जा सकेगा जिसके लिये आत्मा की प्रेरणा होगी। आत्मा यदि निर्मल होगी तो कल्याणकारी कार्य होंगे ही।"

"देखो देवी! मैं इस विषय में केवल इतनी ही सम्मति दे सकता हूँ कि अपना कर्तव्य विना इस वात का विचार किये कि दूसरा क्या कर रहा है, पालन करते रहना चाहिये।"

"यदि दूसरा धर्म-कार्य में भी वाधा डाले तो?"

"धर्म को विना छोड़े, कार्य करता रहे, और वाधा उपस्थित होने पर वाधा का विरोध करे। विरोध की तीव्रता अपने पर सहन करे, न कि दूसरे पर उसका प्रतिकार करे।"

"यदि यही वात है तो भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध कर कौरवों की हत्या करने के लिये क्यों कहा था ?"

"उद्देश्य हत्या करना नहीं था। उद्देश्य धर्म-कार्य करते रहने का था। उसमें कौरवों ने वाधा डाली तो युद्ध हो गया। युद्ध में कौन मर गया अथवा कौन जीता रहा, विचारणीय विषय नहीं। विचारणीय विषय तो यह है कि युद्ध में धर्म की जय हुई। नास्तिकता, आर्थिकता तथा भौतिकता की पराजय हुई।"

"यही वात एक सीमित क्षेत्र में तुम्हारे साथ भी चल रही है। तुम यह धर्म समझती हो कि शान्ता की सहायता की जाये। श्रीमान् इसमें वाधा डालते हैं। यदि तो तुम समझ जाओ कि सहायता करनी उचित नहीं तो झगड़ा ही नहीं रहता। तुम्हारे इस सहायता करने की आवश्यकता समझने की अवस्था में ही तो झगड़ा हो गया है। तो झगड़े के

परिणामों की ओर ध्यान न देकर सहायता जारी रखो। उस झगड़े में किसको सुख मिलता है और किसको हानि पहुँचती है, यह विचारणीय बात नहीं है। विचारणीय वात यह है कि सहायता मिल रही है या नहीं।"

ऐमिली इस विवेचना से गम्भीर विचार में पड़ गई। इसी विचार में लीन वह घर लौट आई।

६

घर पर मिस्टर चोपड़ा ने कुछ मेहमान खाने पर बुलाये हुए थे। ऐसी अवस्था में मिसेज चोपड़ा नियमानुकूल पृथक् खाना खाया करती थी। मिस्टर चोपड़ा के मेहमान प्रायः शराब पीने वाले और जूआ खेलने वाले होते थे। इस कारण न तो वह पसन्द करता था कि ऐमिली वहाँ उपस्थित हो और न ही ऐमिली ने ऐसे भोजों में सम्मिलित होने की कभी रुचि प्रकट की थी।

आज सदा से भिन्न मिस्टर चोपड़ा ऐमिली के पास आया और कहने लगा, "कमिश्नर महोदय, उनकी बीवी और कुछ अन्य पुरुष और स्त्रियाँ रात के खाने पर आ रही हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम भी वहाँ उपस्थित रहो।"

"मुझको कुछ आपत्ति नहीं है, परन्तु यदि मेरे विषय में कुछ ऐसी बात हुई जैसी स्कूल होस्टल के वार्डन से की है, तो मैं उसका प्रतिशोध करना अपना कर्तव्य समझूँगी।"

"कैसी बात ? मैं कुछ नहीं समझता !"

"आप समझें या न समझें। मैंने आपको सचेत कर दिया है।"

"तुम आज कुछ नर्वस हुई प्रतीत होती हो। मैं कहता हूँ घबराओ नहीं।"

ऐमिली चुप रही। भोजन के समय से पूर्व वह डाइनिंग हाल में पहुँच गई और मेहमानों के स्वागत के लिए द्वार पर खड़ी हो गई। मिस्टर

चोपड़ा उसके साथ खड़े थे।

लगभग बीस लोग आमन्त्रित थे। ये नगर के प्रतिष्ठित लोग और उनकी स्त्रियाँ थीं। सब लोग आये और उनका स्वागत वैसे ही किया गया जैसे होना चाहिए था। केवल कमिश्नर साहब थे, जिनके व्यवहार में ऐमिली को कुछ भिन्नता प्रतीत हुई। जब वह कमिश्नर की बीवी का स्वागत कर रही थी, कमिश्नर चोपड़ा से कह रहे थे, "मैं आपकी मिसेज के उपस्थित होने पर आपको कांग्रेचुलेट करता हूँ।"

मिसेज के उपस्थित के शब्द को ऐमिली ने सुन लिया था। इससे वह सतर्क हो गई। कमिश्नर की बीवी ने भी कहा, "मुझको बहुत प्रसन्नता हुई है आपको अपने स्वागत के लिए खड़ा देख।"

"तो आप आशा नहीं करती थीं ?" इतना कह ऐमिली कमिश्नर की बीवी को कमरे के भीतर उसके लिए उचित स्थान पर ले चली। उसने ऐमिली को बहुत ध्यान से देखकर कहा, "आशा तो करते थे, परंतु आशा विश्वास में अन्तर है न ?"

"मैं समझती हूँ कि अविश्वास करने में कोई कारण नहीं था।"

इस समय कमिश्नर और उनकी बीवी बैठ गये। कमिश्नर के दूसरी ओर मिस्टर चोपड़ा और कमिश्नर की बीवी के समीप मिसेज चोपड़ा बैठ गई। अन्य मेहमान भी बैठ गये। चोपड़ा में यह गुण तो था कि ऐसे अवसरों पर बातों में मनोरञ्जन ले आए।

ऐमिली ने अपने विषय में बात चलने से रोकने का भरसक यत्न किया। वह यह तो समझ गई थी कि मिस्टर चोपड़ा ने गलत बात उसके विषय में प्रचारित कर रखी है। इस पर भी वह अपने व्यवहार को ऐसे बनाये हुए थी जिससे बात इस विषय पर चल ही न सके।

परन्तु बात रुक नहीं सकी। दावत से प्रसन्न हो कमिश्नर महोदय ने मिस्टर चोपड़ा को धन्यवाद दिया और अन्त में कहा, "होप मिसेज चोपड़ा विल एवर रिमेन सो चीयरफुल ऐंड प्लजन्ट, एज टुनाईट।"

ऐमिली ने घूरकर मिस्टर चोपड़ा की ओर देखा तो चोपड़ा की आँखें

झुक गईं। दावत से उठ सब लोग बाहर आने लगे तो ऐमिली ने कमिश्नर की बीवी से पूछा, "आपको मेरे विषय में कुछ खास बात बताई गई प्रतीत होती है ?"

"नहीं ! नहीं ! कुछ नहीं ! आपके इतने काल तक कभी क्लब में न आने पर मिस्टर चोपड़ा ने कहा था कि आपकी तबियत कुछ ठीक नहीं रहती।"

ऐमिली सब समझ गई। वह क्रोध से भर गई थी और मिस्टर चोपड़ा के इस झूठी कथा का भंडा फोड़ने वाली थी। परन्तु स्वामी निरूपानन्द के कहने को स्मरण कर दांतों तले होंठ दबाकर चुप कर रही। इस पर कमिश्नर की बीवी ने कह दिया, "आप स्विटज़रलैंड भी तो जा रही हैं।"

"यह आपको किसने कहा है ?"

"नहीं ! कुछ नहीं ! आप चिन्ता न करें। सब ठीक हो जाएगा। वहाँ बर्न में एक बहुत आरामदेह सैनोटोरियम है। कुछ देर तक वहाँ रहने से आपको आराम मिलेगा।"

"परन्तु मैं तो वहाँ नहीं जा रही।"

"हानि क्या है वहाँ जाने में ?"

"पर मैं तो विचारती हूँ कि वहाँ जाने से लाभ क्या होगा ?"

"सब रोगी ऐसी ही बात करते हैं। खैर ठीक है। गुड नाईट।"

इतना कहकर कमिश्नर की बीवी अपने पति के साथ मोटर में बैठ गई और मोटर चल दी। इसके पश्चात् अन्य मेहमान भी विदा हो गये। जब चोपड़ा और ऐमिली वापिस ड्रॉयिंग रूम में आये तो चोपड़ा खिलखिला कर हँस पड़ा। ऐमिली ने पूछा, "क्या हुआ है ?"

"जो मैं समझता था और अपने अफसरों तथा मित्रों से कह रहा था, वह तुमने आज सिद्ध कर दिया है। तुम्हारा मस्तिष्क बिगड़ गया है। यदि तुमने स्विटज़रलैंड जाने का विरोध किया तो मैं तुमको पागलखाने में डलवा दूंगा।"

अनायास ही ऐमिली के मुख से निकल गया, "रास्कल !"

चोपड़ा फिर हँस पड़ा। ऐमिली अपने कमरे में चली गई।

रात भर वह स्वामी जी के कथन और अपने पति की योजना, जो अब लगभग स्पष्ट हो चुकी थी, पर विचार करती रही। एक बात उसके मन में समा गई थी कि अब इस आदमी के साथ रहना असम्भव हो गया है। वह इतनी विकृत मनोवृत्ति का है कि किसी समय भी कोई अनिष्ट कर सकता है।

उसने भी अपने मन में एक योजना बना ली। प्रातः जब उठी तो वह मन में यह बात निश्चय कर चुकी थी। युद्ध छिड़ गया है। उसने यह समझ लिया था कि युद्ध का विषय है विषय-वासना अथवा आत्मोन्नति। नाच-रंग, शराब, जूआ अथवा त्याग, सेवा और सादगी।"

इतना निश्चय हो जाने पर जो बात अनिश्चित रह गई थी वह युद्ध का ढंग था। इस पर वह निश्चय नहीं कर सकी थी। इस विषय में वह स्वामी जी से राय नहीं लेना चाहती थी। उसको ऐसा भास हो रहा था कि इस युद्ध में नीति से काम लेना पड़ेगा। इस नीति को कोई धोखा भी कह सकता है, इस कारण स्वामी जी से इसकी स्वीकृति लेना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

ब्रेकफास्ट के समय मिस्टर चोपड़ा ने देखा कि ऐमिली गम्भीर और प्रसन्न प्रतीत हो रही है। उसकी आँखों में वह चमक है जो पहले कभी प्रतीत नहीं हुई। शायद विलायत में जब उनके भी कोर्टशिप चल रही थी, ऐसी द्युति उसकी आँखों में थी। चोपड़ा को इस परिवर्तन से प्रसन्नता प्रतीत हुई। खाते हुए उसने पूछा, "मैं समझता हूँ कि तुमको योरुप का जलवायु यहाँ से अधिक अनुकूल बैठेगा।"

"यह तो है ही। मैं इंग्लैंड की रहने वाली हूँ। बचपन में मैं अपनी मौसी के घर रही हूँ और वह रोम में रहती थी। इस कारण वहाँ जाने से मन प्रसन्न होगा और स्वास्थ्य सुधरेगा।"

"तो जाने के लिए अपना किट तैयार कर लो।"

"आज से करूँगी। पर रुपया तो व्यय होगा ही।"

"तो तुम्हारा रुपया क्या हुआ ?"

"सब व्यय हो गया है।"

"यही तो पागलपन है।"

"यह तो हो गया। आज आप एक हज़ार रुपये का चैक लिख दें तो तैयारी आरम्भ हो जाएगी।"

"तो तुम सत्य ही जा रही हो ?"

"आप मुझको भेज रहे हैं न ? मेरे जाने की तो बात ही नहीं उठती।"

मिस्टर चोपड़ा ने एक हज़ार का चेक लिख दिया।

७

शान्ता की भाभी उसके पास लाहौर में रहती थी। घर का सब काम इन्द्रा कर लेती थी। शान्ता प्रायः आराम करती थी। खर्चा ऐमिली दे रही थी। प्रेमनाथ का तीन सौ रुपया ऐमिली ने व्यय होने नहीं दिया था।

शान्ता यद्यपि शारीरिक स्वास्थ्य लाभ कर रही थी तो भी मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं हो रही थी। सबसे बड़ी बात जिसकी उसको चिन्ता थी वह इन्द्रा के विवाह की थी। इसके पश्चात् ऐमिली और मिस्टर चोपड़ा के सम्बन्ध में विषमता भी अपना प्रभाव उत्पन्न कर रही थी। उसका भाई अथवा भान्जा ज्योति प्रायः नित्य समाचार लेने आते रहते थे। उनके घर की अवस्था भी अच्छी नहीं थी।

एक दिन इन्द्रा का मामा आया तो उसने बताया, "दीनानाथ कई बार दुकान पर तुम्हारे स्वास्थ्य की बात पूछ गया है। आज वह पता पूछता था।"

"वह मिलना चाहता है क्या ?"

"हां।"

"तो बता दो, क्या हानि है ?"

"अगले दिन दीनानाथ वहाँ आ गया। दीनानाथ ने चरण-स्पर्श किये और नमस्कार कही। प्रेमनाथ की मां ने कहा, "तो तुम भी भर्ती हो गये हो ?"

"हाँ ! मां जी ! प्रेम ने आपको वताया नहीं क्या ?"

"नहीं ! उसने केवल यह कहा था कि तुम भली भांति हो।"

"मां जी ! आपसे मिलने की इच्छा तो वहुत समय से थी, परन्तु कई कारण ऐसे वनते रहे कि इच्छा पूर्ण नहीं हो सकी। जिस दिन से पता चला कि आप लाहौर में आ गई हैं मिलने का प्रयत्न कर रहा था।"

"अपनी वहू की वात सुनाओ ?"

"ठीक है ! अब उसके दो वच्चे हैं। वड़ा लड़का है और छोटी लड़की।"

"निर्वाह का क्या प्रवन्ध है ?"

"मैंने कुछ रुपया दिल्ली में पैदा किया है। वह में उसके पास छोड़ आया हूँ।"

"माता-पिता कहाँ हैं ?"

"वे दोनों लाहौर में ही हैं। उनके लिए निर्वाह का प्रबन्ध भी हो गया है। मैं आप से मोहनलाल रोड की दुकान के विषय में कहने आया हूं।"

"क्या लाभ होगा उससे ?"

"फिर भी आप सुनिये तो सही। लड़का जो वहाँ बैठता था, वहुत ईमानदार था, परन्तु मेरा भाई, उसका पिता, बेईमान निकला। उसने ही सब गड़वड़ की थी। लड़के को फौज में भर्ती करवा दिया और स्वयं दुकान पर जा बैठा। पीछे दुकान बेचकर रुपया घर रख बैठ गया था।"

"मैंने बहुत यत्न के पश्चात् रुपये का प्रवन्ध कर लिया है। पर आपका पांच हज़ार जो वसूल हुआ है उसको लेकर आप क्या करेंगी ? मैंने उसको एक कारोबार में लगा दिया है। कुछ महीनों में उसकी आय आपको मिलने लगेगी। कराची पोर्ट-ट्रस्ट के हिस्से खरीद लिए हैं। वह

हिस्से आपके नाम के हैं और दिल्ली के नेशनल बैंक आफ इण्डिया में जमा करा दिये हैं। अब आमदन जो लगभग तीन सौ रुपया वार्षिक होगी, आपको मिल जाया करेगी। इसके अतिरिक्त, हिस्सों की कीमत बढ़ सकती है।"

"बेटा, मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। जो तुमने किया है मेरे भले के लिए ही किया होगा। ऐसा मेरा विश्वास है।"

प्रेम की मां को इस समाचार से कुछ सन्तोष हुआ। पश्चात् फौजी जीवन और प्रेमनाथ के विषय में बातचीत होती रही।

इस विषय में ऐमिली के आने पर शान्ता ने बताया तो ऐमिली बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा, "आपकी इस आय की बात सुनकर मेरा चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है। मैं भी आपके लिए कुछ ऐसी ही बात सोच रही थी।

"हमारे साहब ने एक षड्यन्त्र रचा है। मुझको पागल बनाकर कहीं विदेश में भेजने का आयोजन कर दिया है। इस पर उन्होंने मुझको दस हज़ार रुपये खर्चे के लिए देना स्वीकार किया है। उसमें से एक हज़ार रुपया आज दे दिया है। सो मैं वह एक हज़ार आपके पास लेकर आई हूँ। अब मैं उस रकम से किसी सुरक्षित कम्पनी के शेयर्स खरीद रही हूं, जो आपके नाम कर दूंगी।"

"पर मैं पूछती हूं कि आपको यह रुपया अपने निर्वाह के लिए मिल रहा है। आप यह मेरे लिए व्यय कर अपने को व्यर्थ में हानि पहुँचा रही हैं।"

"मेरी एक योजना है और यह रुपया आपके नाम जमा करना उस योजना का एक अंग है।"

"तो तुम जानो तुम्हारा काम जाने। मैं इसमें से एक पैसा भी नहीं छूऊंगी।"

ऐमिली जब से विवाह कर भारत में आई थी तब से ही वह अपनी निजी आय में से बहुत कुछ बचा रही थी और वह समझती थी कि उस

के आश्रय वह अपना शेष जीवन सुगमता से व्यतीत कर सकेगी। साथ ही वह अपनी सत्यनिष्ठा और निर्दोष व्यवहार पर विश्वास रखती थी। उसको विश्वास था कि वह मिस्टर चोपड़ा को अपना दृष्टिकोण समझा कर अपने अनुकूल कर सकेगी। ऐसी परिस्थिति आने तक के लिए वह शान्ता और उसके बच्चों के लिए भी खाने का प्रबन्ध कर देना चाहती थी।

एक बार स्वामी निरूपानन्दजी से इस विषय पर बातचीत हुई थी। 'एक बिगड़े व्यक्ति के सुधारने में कितना काल लगना चाहिये', पर विचार हुआ था। यह मार्ग इतना दुर्गम और विषम माना गया कि इसको पार करने में लगने वाले काल का अनुमान लगाना असम्भव समझा गया। इस कारण इस पथ के पथिक के लिए अपने में असीम सहन-शक्ति उत्पन्न करने की योजना होनी चाहिये।

इस सहन-शक्ति में निर्वाह के लिए धन को एक अंश मान, ऐमिली ने अपने और शान्ता के लिए प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया। यह उसकी योजना का प्रथम चरण था। शान्ता इतनी गिनती-विनती नहीं जानती थी। उसने इसकी आवश्यकता भी नहीं समझी। परन्तु ऐमिली अपनी शिक्षा और संस्कारों में यूरोपियन गति-विधि को रखने के कारण जीवन-योजना में धन के अंश को छोड़ नहीं सकी। इस कारण उसने शान्ता के न कहने पर भी एक सहस्र रुपया जो वह अपने स्विटज़रलैंड जाने की तैयारी के लिए लाई थी शान्ता के नाम जमा करा चली गई।



दीनानाथ इन्द्रा को देख अपने मन में एक विचार बनाने लगा था। वह समझता था कि प्रेमनाथ और उसकी मां के साथ सम्बन्ध बनाने से परिवार की उन्नति ही होगी। इस कारण उसने भाई को, जो लाहौर में उसके माता-पिता के पास ही रहता था, पत्र भेजकर बुलाया और उसके सम्मुख प्रस्ताव रख दिया।

दीनानाथ के भाई का एक ही लड़का था जिसका नाम रमाकान्त था। विश्वनाथ सदा कामचोर और प्रमादी रहा था। दीनानाथ कई वार उसको काम पर लगा चुका था और सदा वह ऐसी भूलें करता रहा था जिससे उसका काम असफल होता रहा। तंग आकर दीनानाथ ने प्रेमनाथ की मां का पांच हजार रुपया लगाकर रमाकान्त को मोहनलाल रोड पर दुकान खुलवा दी थी, परन्तु दीनानाथ के अज्ञातवासी हो जाने पर विश्वनाथ ने अपने लड़के रमाकान्त को फौज में भर्ती हो जाने पर मना लिया और स्वयं उसकी दुकान पर बैठ गया। रमाकान्त के भर्ती होकर लाहौर से बाहर चले जाने पर दुकान बेच डाली और रुपया एकत्र कर आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगा।

दीनानाथ ने विशनदास के नाम से तो दिल्ली में नौकरी की, पश्चात अपना व्यापार करने लगा। युद्धकाल में व्यापार में भारी लाभ हुआ। अब वह चाहता था कि अपने अज्ञातवास को छोड़ पुनः खुले में आ जाय। इसके लिए उसने फौज में भर्ती होना ठीक समझा।

फौज में भर्ती होने से पूर्व उसने अपनी स्त्री को काफी रुपया दिया था। और पांच हजार रुपया प्रेमनाथ की माता का उसके नाम करवा दिया था।

अब उसने भाई के सामने रमाकान्त के विवाह का प्रस्ताव उपस्थित किया। विश्वनाथ इतनी आलसी था कि उसने भविष्य के विषय में कभी विचार ही नहीं किया था। इस कारण जब दीनानाथ ने कहा तो उसने मान लिया। रमाकान्त इस समय बेलजियम की सीमा पर सैंतीसवीं हिन्दुस्तानी फौज में कार्य कर रहा था। यह निश्चय हो गया कि उसके युद्ध से लौट आने पर विवाह का आयोजन कर दिया जायेगा।

शान्ता जहां ऐमिली के अहसान में दबी थी वहां दीनानाथ की सौजन्यता से भी कृतज्ञता अनुभव करती थी। इन्द्रा का प्रबन्ध हो जाने से वह अति प्रसन्न थी। इस प्रकार अपने मन के बोझ को हल्का हो गया अनुभव करने लगी थी। ऐमिली के विषय में वह बहुत चिन्तित रहती

थी। परन्तु उसकी सूझबूझ पर विश्वास कर वह सदा ऐमिली और चोपड़ा के सम्बन्ध में सरसता आजाने की आशा करती थी।

लगभग दो सप्ताह के पश्चात् ऐमिली आई और यह शुभ समाचार लाई कि युद्ध एक-दो दिन में समाप्त होने वाला है। इससे प्रेमनाथ की माँ का बोझा बहुत सीमा तक उतर गया।

ऐमिली ने बताया, "पर मेरे स्विटजरलैंड जाने के लिए भी प्रबन्ध पूर्ण हो रहे हैं। पासपोर्ट बनकर तैयार हो गया है। मेरा सब सामान बँधकर तैयार रखा है। युद्ध के बन्द होते ही शीघ्रातिशीघ्र मेरे लिए जहाज में स्थान लेने का प्रबन्ध किया जाएगा। और मैं हिन्दुस्तान से बाहर भेज दी जाऊंगी।"

"मैं नहीं जानती कि तुम इसको कैसा अनुभव करती हो। मुझको तो यह सब कुछ अस्वाभाविक और विकट प्रतीत हो रहा है। एक स्त्री का वास्तविक स्थान उसके पति के पास है। न तो मिस्टर चोपड़ा को आपको भेजना चाहिए और न आपको यहां से जाना स्वीकार करना चाहिए।"

"आपको यह किसने कहा कि मैंने जाना स्वीकार किया है। मैं तो यह कह रही हूँ कि मेरे जाने का प्रबन्ध हो गया है। शान्ता बहिन! मैं कई दिनों से मन में यह विचार कर रही हूं कि पति-पत्नी का सम्बन्ध क्या है? प्रत्यक्ष में तो केवल शारीरिक सम्बन्ध ही है। दो व्यक्तियों को परस्पर रहना होता है और वे रहते हैं। इस रहने को धर्म का अंग बना दिया गया है। इसमें पवित्रता का रंग डालकर इसको कोई अलौकिक सम्बन्ध कह दिया गया है। क्या यह सब कृत्रिम बातें नहीं? यदि कृत्रिम हैं तो इनकी अवहेलना करना किसी प्रकार भी न तो पाप है और न ही कोई अपराध।"

"फिर मैं सोचती हूँ कि अपने जन्मस्थान से इतनी दूर इस व्यक्ति के पीछे आई हूं। क्यों? क्या यह शारीरिक सम्बन्ध वहाँ के किसी रहने वाले से नहीं बनाया जा सकता था। मैंने यत्न ही नहीं किया। करती

तो में ऐसी नहीं थी कि मुझको वहां कोई पति नहीं मिलता। वह क्या बात थी कि मैंने इंग्लैंड के अनेकों युवकों को छोड़ इस हिन्दुस्तानी पुरुष को ही आत्मसमर्पण कर दिया।"

"जब इस प्रकार सोचती हूं तो इस बात के मानने पर विवश हो जाती हूं कि या तो इस पूर्ण संसार में निष्प्रयोजन घटनाएं हुआ करती हैं, या इस सब के पीछे कोई कारण, कोई उद्देश्य अथवा कोई निमित्त उपस्थित था, अदृश्य होने पर भी जिसकी अवहेलना करनी हमारे वश में नहीं थी।"

"युरोपियन जीवन-मीमांसा इस प्रश्न पर प्रकाश नहीं डालती। न समझ आने वाली बातों को शैतान का काम कहकर प्रश्न को टाला जा सकता है। संसार की घटनाओं को निष्प्रयोजन केवल 'ऐक्सिडेंन्टस' कहकर सहन किया जाता है। अथवा अनेक अन्य प्रकार के वाक्जाल बुनकर मनुष्य के संशयों पर धूल डालने का यत्न किया जाता है। मैं नहीं जानती, क्यों मेरे मन को इनसे सन्तोष नहीं हो रहा।

"इसके विपरीत भगवद्गीता की कर्म-मीमांसा है। उसमें भी इस प्रकार की घटनाओं के कारणों का वर्णन करने का यत्न किया गया है। मैं सोचती हूँ कि इसमें क्या तत्व है? कभी-कभी तो मन में इतना संशय उत्पन्न हो जाता है कि मैं इस जीवन के पूर्ण प्रयास को समुद्र की तरंगों पर तैरती एक छोटी-सी नौका मान इसको अपने अदृश्य भविष्य की ओर स्वयमेव वहने के लिए छोड़ दूं। फिर विचार आता है कि जिसने इसके भविष्य को निश्चित किया है वही तो इस संकटकाल में कार्य करने की प्रेरणा करता है। इससे उस पर विश्वास कर जो समझ में आता है, उस कार्य को करती जाऊं और फल उस प्रेरणा करने वाले पर छोड़ दूं।"

इतना कह ऐमिली चुप कर गई और आंखें मूंदे हुए मन के विचारों में लीन बैठी रही। शान्ता उसके विचारों को सुन स्वयं विचारों के घने जाल में फंसी हुई चुपचाप बैठी थी। एकाएक ऐमिली उठी और बोली,

"मैंने पंजाब नेशनल बैंक के एक हजार रुपये से कुछ हिस्से आपके नाम से खरीदे हैं और वह मैं आपको देने के लिए लाई हूँ। मैं समझती हूँ कि यह धन आपको कुछ-न-कुछ आय अवश्य कर देगा। इसी प्रकार यदि और धन मिस्टर चोपड़ा ने दिया तो आपके नाम जमा करा दूंगी।"

"पर मैं सोचती हूँ कि मैं इस धन को क्यों लूँ ?"

"यह पत्नी के नाते तुम्हारा है। देने वाले ने भूल से मुझको दिया है। मैं, जो उसकी भूल को समझ गई हूँ, सुधार कर रही हूँ।"

"पर तुम्हारे समझने में भी तो भूल हो सकती है।"

"यदि भूल होगी तो जिसकी प्रेरणा से हुई है, वह इसको ठीक कर देगा। मैंने इस विषय पर यथाशक्ति निर्लिप्त भाव से विचार किया है। अपने स्वार्थ को छोड़कर ही मैंने इस बात को समझने का यत्न किया है। अब जो हो सो हो। मैं तो ठीक ही कर रही हूँ।"

६

जब तक ऐमिली घर पहुँची जर्मन युद्ध का अन्त हो गया था। दुनिया के सब मुख्य-मुख्य देशों में तारों द्वारा सन्देश चले गये थे कि युद्ध बन्द करने की घोषणा हो गई है। प्रेजिडेन्ट विल्सन की भेजी गई चौदह शर्तों पर जर्मन के फौजी अफसरों ने हस्ताक्षर कर दिये हैं। और जर्मन सम्राट् जर्मनी छोड़ हालैंड चला गया है।

इस समाचार के लाहौर पहुँचते ही लोगों में प्रसन्नता उत्पन्न हो गई। डिप्टी कमिश्नर की कोठी में प्रसन्नता से भरपूर लोगों का आवागमन आरम्भ हो गया। सरकारी दफ्तर बन्द हो गये और लोग सड़कों पर खुशियाँ मनाते हुए घूमने लगे।

मिस्टर चोपड़ा कचहरी नहीं गया था। घर पर ही उसको यह समाचार मिल गया था। जब ऐमिली शान्ता के यहाँ से लौटकर आई तो कोठी में लोगों की भीड़ देख एक क्षण तक चकित खड़ी रह गई, परन्तु वह अभी मोटर से उतर कर कोठी के अन्दर जा ही रही थी कि लोगों

के मुख से 'आर्मिसटिस' का शब्द सुन समझ गई। वह भीतर गई तो मिस्टर चोपड़ा बहुत से लोगों से हाथ मिला-मिलाकर प्रसन्नता से बधाईयाँ ले और दे रहा था। ऐमिली को आया देख उसने लोगों को वहीं छोड़ उसके समीप आकर कहा, "ऐमिली डीयर! आर्मिसटिस हो गया। मैं तुमको बधाई देता हूं। तुम खुश नहीं हो क्या?"

"मैं बहुत प्रसन्न हूं। अब तो योरोप जाने के लिए जहाज में जगह मिल जाएगी।"

"निःसन्देह! आज मैं नगर के लगभग पांच सौ लोगों को अपनी कोठी में दावत दे रहा हूं। इसके प्रबन्ध की आज्ञा सैसिल होटल वालों को दे दी गई है।"

"बहुत खूब।"

इस समय साथ के कमरे में टैलीफोन की घण्टी बजी। मिस्टर चोपड़ा ऐमिली को छोड़ टैलीफोन सुनने चला गया। इस समय ऐमिली से वहां खड़े कई लोग बातें करने लगे।

"यह समाचार कितना अचानक आया है। हमको तो विश्वास ही नहीं होता था। इसी कारण विश्वास करने के लिए यहां चला आया हूं।" एक चूड़ीदार पायजामा और अंगरखा पहने और बलदार पगड़ी सिर पर बांधे आदमी ने कहा।

"हां, दीवान साहब!" ऐमिली का कहना था, "आशा नहीं थी कि इतनी जल्दी यह आनन्द-दिवस देखने को मिलेगा।"

एक और कहने लगा, "कई दिनों से ऐसे समाचार आ तो रहे थे जिनसे हम ऐसी बात की आशा कर रहे थे, परन्तु इतनी जल्दी आशा नहीं थी। बैलजियम की सरहद से बर्लिन तक फौजों के पहुंचने में एक वर्ष लग जाना एक साधारण-सी बात थी।"

"वास्तव में जर्मन की हार उस दिन आरम्भ हो गई थी जिस दिन अमेरिका मित्र राष्ट्रों की ओर सम्मिलित हुआ था। उसके बाद तो समय की बात रह गई थी।"

इस समय मिस्टर चोपड़ा ने वहां उपस्थित सब लोगों को कहा, "गवर्नर महोदय का यह आदेश आया है कि सब राज्य-भक्त लोगों को चाहिए कि अपने-अपने घरों में आज रात दीपमाला करें। गवर्नर महोदय अपनी पत्नी के साथ इस दीपमाला को देखने आएंगे। मैं भी रात की दावत बन्द कर रहा हूँ। फिर किसी दिन दूँगा। मैं प्रवन्ध करने जा रहा हूँ कि नगर की सब सरकारी इमारतों पर दीपमाला हो सके।"

उसने ऐमिली को सम्बोधन कर कहा, "तुम अपनी कोठी में दीपमाला करवाने का प्रवन्ध करवा दो।"

इतना कह मिस्टर चोपड़ा अपनी मोटर में सवार होकर चला गया और ऐमिली ने कोठी के नौकरों को बुलाकर प्रबन्ध करने को कह दिया।

उस सायंकाल सब सरकारी इमारतों पर दीपमाला हो गई। और पूर्णशहर के लोग उस दीपमाला को देखने के लिये घरों से निकल आये। अनारकली बाजार और माल रोड पर बहुत जोर से दीपमाला हुई थी। और सब से अधिक भीड़ भी इन्हीं मार्गों पर थी। अंग्रेज़ औरतें और मर्द बाहों में बाहें डाले सड़क पर नाचते-गाते फिरते थे और लाखों की संख्या में हिन्दुस्तानी बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष यह उत्सव देखने के लिये घूम रहे थे।

पंजाब का गवर्नर पैदल ही इस सब समारोह में घूम रहा था और गोरे तथा हिन्दुस्तानी लोगों को इस उत्सव मनाने में उत्साहित कर रहा था। फौजी सिपाही हाथों में हाथ डाले हुए सड़कों पर नाच-नाच कर गाते हुए घूम रहे थे। वे गा रहे थे, "लौंग लौंग वे इज टिपोरैरी" (दिल्ली दूर है)।

छावनी में और ट्रेनिंग कैम्पों से सब सिपाहियों को छुट्टी थी और उनको यह आज्ञा दी गई थी कि वे सब लोग शहर में घूमने जावें और इस उत्सव में खुशियां मनावें। प्रत्येक सिपाही को पांच-पांच रुपये इसमें व्यय करने के लिये दिये गये। उन सबको यह भी आज्ञा थी कि इस

उत्सव में कोई झगड़ा-फिसाद न होने दें।

परिणाम यह हुआ कि आर्मिस्टिस की सूचना पर पंजाब की राजधानी लाहौर में ऐसी खुशी मनाई गई, मानों इस युद्ध के जीतने में सबसे अधिक प्रयत्न लाहौर ने ही किया है और उसकी प्रसन्नता भी सब से अधिक लाहौर को ही है।

प्रायः हिन्दुस्तानी दुकानदारों ने, जिनका सम्पर्क अंग्रेज ग्राहकों से था, दीपमाला की थी। ये दुकानदार कुछ तो कमर्शल-बिल्डिंग, पुरानी अनारकली में थे और कुछ मुख्य अनारकली बाजार में। इनके अतिरिक्त हिन्दुस्तानियों ने इस दीपमाला पर कुछ व्यय करना अनावश्यक समझा। इस पर भी दीपमाला देखने वालों में हिन्दुस्तानी भारी संख्या में थे।

पुरानी अनारकली में एक छोटे से मकान पर भी सरसों के तेल के बीस-तीस दीपकों की एक पंक्ति जल रही थी। लोग इस मकान पर उल्लास का यह चिह्न देख-देख मुस्कराते थे। वे इन दीपकों के पीछे छिपी भावना को समझ सकने में असमर्थ थे।

मिस्टर चोपड़ा भी अपनी मोटर में यह देखने के लिये घूम रहा था कि किस-किसने दीपमाला की है और सरकारी इमारतों पर दीपमाला ठीक हो रही है या नहीं। वह भी जब पुरानी अनारकली बाज़ार में से गुज़रा तो इस छोटे से मकान पर थोड़े से दीपक देख चकित रह गया। उसने इस मकान से कुछ ही दूर मोटर खड़ी करली और ड्राइवर को आज्ञा दी कि वह इस मकान के मालिक का नाम पता करे।

ड्राइवर मोटर से उतर कर चला गया। पन्द्रह-बीस मिनट पश्चात् वह लौटकर आया और उसने बताया, "हज़ूर! बाज़ार के लोग नहीं जानते कि इस मकान में कौन रहता है। इतना पता चला है कि वहां एक बीमार औरत रहती है और उसकी एक युवा लड़की है। अभी दो मास के लगभग उनको यहां आये हुआ है। एक फौजी सिपाही उस मकान से उतरा था। मैंने उससे पूछा तो उसने नाम तो नहीं बताया। हां, इतना कहा है कि किसी युद्ध के मोर्चे पर गए हुए पुत्र की मां युद्ध

समाप्त होने की सूचना पर अपने पुत्र की मंगल-कामना कर रही है।

मिस्टर चोपड़ा समझ गया। उसको विश्वास हो गया कि शान्ता अपनी शक्ति के अनुसार अपने पुत्र के शीघ्र घर लौटने की आशा में हर्ष प्रकट कर रही है। रात के दस बजे के लगभग वह अपनी कोठी को लौटा। सारी कोठी जगमग-जगमग कर रही थी। सहस्रों बिजली के हंडे लगवा दिये गये थे और लोगों की भारी भीड़ उस दीपमाला की शोभा देखने के लिये वहाँ खड़ी थी। शान्ता के घर के बीस-तीस दीपकों को स्मरण कर मिस्टर चोपड़ा की हँसी निकल गई। उसने मन में सोचा कि ऐमिली को जाकर शान्ता के टिमटमाते दीपकों की कथा सुनायेगा।

लोगों की भीड़ में से मोटर भीतर ले जाने में कुछ देर लग गई। वह मोटर से उतरा और उसने ऐमिली की मोटर के गैरेज को खाली देख अनुमान लगाया कि वह भी घूमने गई है। वह कोठी में पहुँचा ही था कि ऐमिली की मोटर भी अहाते में दाखिल हुई। मिस्टर चोपड़ा वहीं रुक गया। ऐमिली अपनी मोटर स्वयं चलाया करती थी इससे वह मोटर लेकर स्वयं ही गैरेज में रखने गई। मोटर को वहाँ रख वह कोठी में आई तो मिस्टर चोपड़ा को बरामदे में खड़ा देख वह भी वहाँ आ गई। उसके आते ही चोपड़ा न पूछा, "दीपमालिका देखने गई थी क्या ?"

"हाँ ! रेल का स्टेशन बहुत ही सुन्दर सजा है।"

"और यह हमारी कोठी ?"

"यह तो मुझे आपसे पूछना चाहिये। मैंने ही तो यह सजावट करवाई है। दो हजार रुपया खर्च हो गया है।"

"दो हजार ?" मिस्टर चोपड़ा ने अचम्भे में पूछा।

"मैं समझती हूँ कि इस अनुपात से अनुमान लगाऊँ तो रेल के स्टेशन पर दस हजार से कम व्यय नहीं हुआ होगा। यूँ तो हाईकोर्ट की इमारत भी खूब सजाई गई है।"

"पर तुमने एक मकान नहीं देखा होगा, जिस पर बीस-पच्चीस सरसों

के तेल के दीपक जल रहे थे।"

ऐमिली इसका अर्थ नहीं समझी। वह विस्मय में मिस्टर चोपड़ा का मुख देखने लगी। उसके विस्मय को देख मिस्टर चोपड़ा ने अपनी बात की व्याख्या करदी। "पुरानी अनारकली के बाजार में, कपूर्थला हौस के सामने, एक मकान के छज्जे पर पन्द्रह-बीस दीपक टिमटिमा रहे थे।"

"ओह! समझी! शान्ता बहिन के घर की बात कह रहे हैं। मैं अभी उसको सब दिखाकर घर छोड़कर आई हूँ। आप उसके आनन्द का अनुमान नहीं लगा सकते। प्रेमनाथ के लौटने की आशा की खुशी में बेचारी ने जितने पैसे उसके पास थे उतने दीपक जला दिये हैं,"

"क्या आवश्यकता थी! उन विशाल इमारतों पर सहस्रों दीपकों की जगमग के सामने वह टिमटिमाहट बहुत ही हास्यास्पद प्रतीत होती थी।"

"तो फिर आप उसको दो-तीन सौ रुपया दे आते, जिससे वह हँसी का पात्र न बनती। वह भी तो आपका ही घर है।"

"ऊँह!" मिस्टर चोपड़ा ने नाक चढ़ाकर कहा। ऐमिली की हँसी निकल गई। चोपड़ा ने घूमकर उसको देखा और पूछा, "इसमें हँसी की क्या बात है?"

ऐमिली गंभीर हो गई और कहने लगी, "मैं वास्तव में अपने को पागल हो रही अनुभव कर रही हूँ। आपके इस नाक चढ़ाने पर हंसने की कोई आवश्यकता नहीं थी। रोने की इच्छा होनी चाहिये थी।"

मिस्टर चोपड़ा कोठी के अन्दर की ओर घूम गया। ऐमिली अपने कमरे में चली गई।

१०

एक सप्ताह के भीतर ऐमिली के लिये पासपोर्ट तैयार हो गया। दस हजार रुपये का ड्राफ्ट लायड्स बैंक आफ इंगलैंड के द्वारा ऐमिली को दे दिया गया। जहाज पी० एण्ड ओ० में ऐमिली के लिये सीट रिजर्व

करवा दी गई। इस प्रकार जाने की तिथि निश्चित हो गई।

जिस दिन लाहौर से जाना था, ऐमिली शान्ता से मिलने आई। ऐमिली ने शान्ता से कहा, "मैं आज सायंकाल यहाँ से जा रही हूँ। आशा करती हूँ कि शीघ्र ही फिर आपसे मिल सकूँगी। हाँ, जाने से पूर्व मैं कुछ कागज़ों पर आपके हस्ताक्षर चाहती हूँ।"

"क्या होगा हस्ताक्षरों से ?"

"शायद कुछ नहीं होगा। यदि कुछ होगा तो उसमें आपके हस्ताक्षर सुगमता उत्पन्न कर देंगे। मैं यह हस्ताक्षर बैंक में जमा करा जाऊँगी।"

"यह तुम क्या कर रही हो ? मुझको कुछ समझ नहीं आता। मुझको क्यों इन झगड़ों में घसीटती हो ?"

"कुछ झगड़ा नहीं। मैं यहाँ से जा रही हूँ। नहीं जानती कि हमारे पतिदेव ने मेरे लिये क्या प्रबन्ध किया है। इस कारण मैं अपना सब प्रबन्ध, अपनी वसीयत यहाँ पर ही लिखकर बैंक में रखे जा रही हूँ। उस वसीयत को कार्य में लाने के लिये मैंने आपको अपना प्रतिनिधि बनाया है। इस कारण आपके हस्ताक्षर करवा रही हूँ।"

शान्ता को बात समझ आ गई और उसने हस्ताक्षर कर दिये। इसके पश्चात् शान्ता ने बताया, "प्रेमनाथ का पत्र आया है। मारसेल्ज़ में उनकी फौजें डेरा डाले हुए हैं और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही हैं।"

"उसको पता दे दीजिए कि मुझको यदि फ्रांस में शीघ्र जाने का अवसर मिला तो उससे मिलने का यत्न करूंगी।"

शान्ता ने पत्र निकालकर ऐमिली को दिया। ऐमिली ने वह अपने बटुए में रख लिया। इसके पश्चात् वह बैंक में चली गई। वहाँ वे कागज़ जिन पर उसने अपनी वसीयत लिखी हुई थी, बैंक में जमा करा दिये और मैनेजर को अधिकार लिख दिया कि यदि बैंक को एक वर्ष तक उससे कोई पत्र प्राप्त न हो तो उसकी वसीयत खोलकर अधिकारियों को सूचित कर दी जाय।

मध्याह्न पश्चात् जब वह कोठी में लौटी तो मिस्टर चोपड़ा ने पूछा, "बच्चों को मिलना चाहती हो क्या ?"

"आप मुझको मनुष्य नहीं समझते हो क्या ? मुझ में भी हृदय है, जो अपने बच्चों से स्नेह रखता है।"

"तो चलो तुमको मिला लाऊं ?"

"मैं अकेली क्यों नहीं जा सकती ?"

"मैंने मना कर दिया था।"

"तो उस आज्ञा के रहते मैं मिलने नहीं जाऊँगी। मुझमें भी आत्म-सम्मान है और वह मैं खोना नहीं चाहती।"

"अब इतनी जल्दी वह आज्ञा वापस नहीं ली जा सकती।"

"तो न सही।"

"मैं समझता हूं कि मैं उनको यहीं चिट्ठी लिखकर घर पर बुला लेता हूं।"

"यह बात मुझसे पूछने की नहीं है। मैंने उनको घर से बाहर नहीं निकाला था। इस कारण मैं उनके यहाँ बुलाने में कोई सम्मति नहीं रखती।"

इस पर भी मिस्टर चोपड़ा ने स्कूल के होस्टल के वार्डन को चिट्ठी लिखकर बच्चों को बुलवा लिया। जब वे आये तो ऐमिली अपने कमरे में अपना सामान ठीक करवा रही थी। होल्डोल और सूटकेस और एक सन्दूक आवश्यक सामान का बंधा रखा था। पहनने के कपड़े तैयार रखे थे।

जब बच्चे कोठी में आये तो ऐमिली उनकी आवाज़ से जान गई कि वे आ गये हैं। ऐमिली ने मन में यह निश्चय कर रखा था कि यदि तो बच्चे उनके कमरे में बिना अपने पिता के मिलने आवेंगे तो उनसे बात-चीत करेगी। मिस्टर चोपड़ा के साथ आने पर अथवा बच्चों को मिलने के लिए किसी दूसरे कमरे में बुलाये जाने पर वह बच्चों को देख आयेगी, बात नहीं करेगी।"

जैसी वह आशा करती थी वही हुआ। चोपड़ा ने चपरासी के हाथ कहला भेजा कि सोम आदि आये हैं। इसके उत्तर में ऐमिली ने कहला भेजा, "बहुत अच्छा" और वह उनको मिलने नहीं गई। वह मन में अनुमान लगा रही थी कि पिता तथा बच्चे ड्रायिंग-रूम में बैठे उसको मिलने आने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। इससे उसने आलमारी से एक पुस्तक निकाली और आरामकुर्सी पर बैठ पढ़ने लगी।

ऐमिली का अनुमान ठीक था। मिस्टर चोपड़ा और बच्चे ड्रायिंग-रूम में बैठे हुए ऐमिली की प्रतीक्षा कर रहे थे। सोमनाथ के पूछने पर मिस्टर चोपड़ा ने कहा, "मम्मी ने लम्बी यात्रा पर जाना है। इस कारण आराम कर रही होंगी। अभी आती होंगी।"

सरस्वती ने पूछा, "पापा ! मैं देखूं, मम्मी क्या कर रही हैं ?"

"नहीं ! यहीं बैठो। अभी आ जाती हैं।"

ज्यों-ज्यों माँ के आने में देर हो रही थी बच्चे चंचल होते जा रहे थे। चाय का समय हो गया। चोपड़ा ने कहकर चाय मंगवा दी और बच्चों को साथ लेकर वहाँ जा बैठा। पश्चात् बैरा से ऐमिली को कहला भेजा। बैरा ने आकर कहा, 'मेम साहिबा सो रही हैं।"

"सो रही हैं ?"

बैरा चुप रहा। इसपर चोपड़ा बच्चों को वहीं बैठे रहने को कह ऐमिली के कमरे में चला गया। दरवाजा बन्द था। उसने खटखटाया तो भीतर से आवाज़ आई, "कौन है ?"

"मैं हूं ! श्रीमती जी ! क्या मैं आपके कोप-भवन में आ सकता हूं ?"

"आइये, पधारिये !"

जब मिस्टर चोपड़ा भीतर गया तो उसने देखा, ऐमिली सत्य ही बिस्तर पर लेटी हुई है और उसने कपड़े उतारे हुए हैं। इस पर उसने चिन्ता का भाव दिखाते हुए पूछा, "ऐमिली, क्या बात है ?"

"कुछ नहीं ! मैंने यही उचित समझा कि यहाँ कुछ सो लूं, मार्ग में नींद आयेगी या नहीं ?"

"पर वच्चे वाहर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"तो वे यहां नहीं आ सकते क्या ?"

"मैंने उनको कह रखा है कि तुम्हारे कमरे में आने से वे भी वीमार हो सकते हैं।"

"तो फिर वे न मिलें मुझको। मेरे मन में उनसे मिलने की कोई लालसा नहीं रही।"

"क्यों ? बहुत कठोर-हृदय हो तुम।"

"पागल जो हूँ। दूसरों के वच्चों से स्नेह करती हूँ और अपने वच्चों को वीमार करने के लिए उनको तपेदिक की छूत लगाने के लिए लालायित हूँ। ठीक है न ?"

"चलो, चाय रखी है और वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

'ठहरो, कपड़े पहन लूँ।"

कपड़े पहन वह चोपड़ा के साथ वाहर लान में चली। उसे आया देख वच्चे उठकर उसकी ओर भागकर मिलने आये, परन्तु ऐमिली ने अंगुली से संकेत कर उनको अपने से दूर ही रोक दिया और कहा, "देखो तुम्हारे पिता जी कहते हैं कि मैं वीमार हूं और तुम भी वीमार हो जाओगे।"

ऐमिली ने मुख की इतनी कड़ी मुद्रा वनाई कि सोम आदि माँ का मुख देखकर डर गये और कुछ कदम ही दूर खड़े हो गये। मिस्टर चोपड़ा ने उनको कहा, "बैठ जाओ।"

वे बैठ गये। ऐमिली ने अपने लिए चाय वनानी आरम्भ कर दी। चोपड़ा ने देखा कि ज्यों-ज्यों एमिली के मुख से वह कठोर मुद्रा उतरती जाती है उसकी आँखें तरल होती जाती हैं। ऐसा प्रतीत होने लगा कि उस प्रयत्न से, जो उसने अपने वच्चों को अपने से दूर रखने के लिए किया था, वह थक गई है और इससे उसके आँसू निकल आये हैं।

चोपड़ा का अनुमान था कि वह पिघल जायगी और रोकर अपने वच्चों को गले मिलने का यत्न करेगी, परन्तु इस समय एमिली ने चाय

वहाँ पर एक घटना और घटी। शान्ता, इन्द्रा और शान्ता की भाभी उसको विदा करने के लिये आई हुई थीं। चोपड़ा उनको प्लैटफार्म पर देख झिझका। ऐमिली ने उनको देखा तो सबको छोड़ शान्ता से जा मिली। उसने इन्द्रा को प्यार किया।

मिस्टर चोपड़ा उस समय ऐमिली का सामान रखवाने में लग गया। बच्चे सब ऐमिली, शान्ता इत्यादि के चारों ओर खड़े हो गये। शान्ता ने पूछा, "मैंने यहाँ आकर अच्छा नहीं किया न ?"

"बहुत अच्छा किया है। तुम डरो नहीं। वह तुम को कुछ नहीं कह सकता। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी। आओ मेरे साथ। जब तक गाड़ी नहीं चलती मेरे साथ डिब्बे में बैठो। शान्ता को अपने को कई वर्षों के पश्चात् मिस्टर चोपड़ा के इतने समीप होने पर रोमांच हो आया। वह ऐमिली के साथ डिब्बे में गई तो चोपड़ा ने उसको देख विस्मय प्रकट किया। वह कुली को यह कह, कि मेम साहबा का बिस्तर लगा दो, स्वयं डिब्बे के बाहर चला गया। सोम आदि डिब्बे में ऐमिली के पास बैठ गये। ऐमिली ने सोम को कहा, "सोम, इनको जानते हो ?"

"मम्मी ! कौन हैं ? इनको 'इन्ट्रोड्यूस' करा दो न।"

"सुनो, एक दिन मैंने तुमको बताया था न कि तुम्हारी एक और माता है। वे यही हैं। और ये तुम्हारी बहिन है। इसका ही नाम इन्द्रा है।"

"पर एक दिन मैंने पापा से पूछा था कि मेरी विमाता हैं क्या ? तो उन्होंने कहा था कि मम्मी का दिमाग़ खराब हो गया है। इस कारण चिकित्सा के लिये तुम स्विटज़रलैंड जा रही हो।"

इस बात को सुन शान्ता का मुख लाल हो गया। ऐमिली ने बात सम्हाल ली। उसने कहा, "तुम्हारे पिता इनसे लड़ पड़े हैं। इसी से ऐसी बात करते हैं। ठीक बात वही है जो मैंने कही है।"

सोम विस्मय में सबका मुख देखता रह गया। सरस्वती ने जब सुना कि इन्द्रा उसकी बहिन है तो उसने इन्द्रा का हाथ पकड़कर कहा, "तुम

मेरी वहिन हो तो मुझको मिलने क्यों नहीं आती ?"

"तुम्हारे पापा मना करते हैं।" इन्द्रा ने मुस्कराकर कहा। सरस्वती ने गम्भीर हो कहा, "पापा ने मम्मी को भी मना कर दिया था।" इससे सब हँसने लगे।

इस समय एन्जिन ने सीटी वजाई। ऐमिली के अतिरिक्त सब गाड़ी से उतर आये। गाड़ी हिली तो सबने नमस्ते की। ऐमिली के वच्चों ने हाथ हिलाकर विदा कही।

कुन्दनपुर की परख

१

ऐमिली के लाहौर से चले जाने पर मिस्टर चोपड़ा ने समझा कि उसने अपने पर से और अपने बच्चों पर से एक दुष्ट प्रभाव उत्पन्न करने वाले को हटा दिया है। बच्चे तो उदास थे, परन्तु इस आशा में कि आगामी ग्रीष्म ऋतु के अवकाश में वे स्विटज़रलैंड जाएंगे और वहां मम्मी से मिल सकेंगे, मग्न थे। अगले दिन वे स्कूल चले गये।

मिस्टर चोपड़ा, जबसे उसका ऐमिली से झगड़ा हुआ था, अपने नीरस जीवन को रसमय बनाने के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न करता रहता था। इन उपायों में क्लब में जाकर रात के बारह बजे तक जूआ खेलना, संदिग्ध चरित्र की स्त्रियों के साथ नाच करना, शराब पीना मुख्य थे। उसकी अपनी कोठी में भी जूए और शराब के समारोह होते रहते थे। इस पर भी जब कभी उच्छृंखलता सीमा से बाहर होने लगती तो ऐमिली वहां पहुंचकर सब लोगों को डांट दिया करती थी और मिस्टर चोपड़ा के मित्र जो इन रात्रियों के मनोरंजन में सम्मिलित होने आते थे भाग जाया करते थे।

अब श्रीमती चोपड़ा के चले जाने के पीछे इन मित्रों को बहुत प्रसन्नता हुई। प्रसन्न होने वालों में सब से अधिक हर्ष एक सूरजमोहन को हुआ था। जिस रात मिस्टर चोपड़ा ऐमिली को विदाकर आया था, उसी रात उसकी कोठी में भारी जशन मनाया गया। मिस्टर सूरजमोहन लाहौर का एक प्रख्यात वकील था। केवल जटिल मुकद्दमे ही लिया करता था और फीस करारी लेता था। इस पर भी उसकी आय का सब से बड़ा स्रोत जूआ था। उसके हाथ में लक्ष्मी खेलती थी। जिस रात उसने ताश के पत्ते पकड़ लिए उसके मुकाबिले में खेलने वालों की जेबें खाली होने लगती थीं।

एक बात का वह बहुत विचार रखता था। मिस्टर चोपड़ा की कोठी में कभी चोपड़ा के विरुद्ध नहीं खेलता था। क्लब में वह भले ही मिस्टर चोपड़ा की जेबें खाली करवा ले, पर उसके घर में वह सदैव इस बात का ध्यान रखता था कि मिस्टर चोपड़ा को अवश्य लाभ हो। इससे चोपड़ा उससे प्रसन्न था और अपनी कोठी में ही जूआ खेलने का आयोजन करता था।

मिस्टर सूरजमोहन से उतरकर मिस्टर चोपड़ा के जूआ खेलने और शराब पीने की दावतों में भाग लेने वाली एक श्रीमती मनमोहिनी थी। वह एक अन्य वकील की धर्मपत्नी थी। उसके पति महोदय भी उसके साथ आया करते थे। मनमोहिनी के पति की वकालत कुछ अधिक चलती नहीं थी, परन्तु श्रीमतीजी पर सूरजमोहन की कृपा रहती थी और वह उसको भी कुछ-न-कुछ आय कराता रहता था। कुछ अन्य स्त्री और पुरुष भी थे जो प्रायः क्लब में और चोपड़ा की कोठी में रात्रि के आयोजनों में आते रहते थे।

जिस रात ऐमिली विदा हुई, मिस्टर चोपड़ा स्टेशन से लौट, बच्चों को खाना खिला, सोने को कह, अपने ड्राइंग-रूम में आगया। वहां मिस्टर सूरजमोहन पहले ही उपस्थित था। चोपड़ा के आने पर उसने उठकर उससे हाथ मिलाकर बधाई दी और कहा, "मैं समझता हूं कि आपके जीवन पर से एक काली घटा हट गई है। क्या मैं ग़लत कहता हूं ?"

मिस्टर चोपड़ा अपने मन की बात भलीभाँति जान नहीं सका था। इससे उसने कुछ विचारकर कहा, "अपने मार्ग पर चलने के लिए अवश्य स्वतन्त्रता मिल गई; परन्तु बच्चों के विचार से कभी-कभी अपनी योजना के उचित होने में सन्देह लगता है।"

"यह बच्चों से आपका मोह कब से हुआ है ? आपका मत कि ये कीड़े-मकोड़े तो पैदा होते और मरते हैं, क्या अब बदल गया है ?"

"बुद्धि से तो मैं अब भी ऐसा ही समझता हूं, परन्तु कभी-कभी मन में यह विचार करता हूं कि मैंने बच्चों से मां को पृथक् करने का यह

आयोजन किया है तो हृदय में एक-टीस-सी उठती है।"

"ओह, क्या मुर्गी-सा दिल बना लिया है। मेरा विचार है कि थोड़ी-सी पी डालो, 'मैलन्कोलिया' का मूड समाप्त हो जावेगा।"

इतना कह मिस्टर सूरजमोहन उठा और डाईनिंग-हाल में जा एक स्काच ह्विस्की की बोतल और दो ग्लास उठा लाया। एक ग्लास भर उसने मिस्टर चोपड़ा के सन्मुख रखकर कहा, "मिस्टर चोपड़ा, जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है, मुर्दादिल खाक जिया करते हैं। आरम्भ करिये, अभी मनमोहिनी जी भी आने वाली हैं। अभी उनका टेलीफोन आया था।"

"मिस्टर मोहन", चोपड़ा ने कहा, "ग्यारह हजार ऐमिली ले गई दो हजार बर्न के मिस्टर शच्युमैन को भेज दिया है। और हमारी योजना सफल होने पर पाँच हजार और देने का वचन दिया है। मेरा तो दिवाला निकल गया है।"

सूरजमोहन ने कहा, "आप चिन्ता न करें। यह घाटा तो एक-दो दिन में पूरा हो जायेगा। यह जो जर्मन-विजय का उत्सव] होने वाला है, उसमें नगर की सजावट पर एक लाख के व्यय का प्रोग्राम आपने बनवाया है। यदि आप इसका ठेका मेसर्स श्रीकृष्ण एण्ड सन्ज को दे दें तो मैं आपको तीस प्रतिशत कमीशन दिलवा सकता हूँ।"

"पर उस फर्म का टैण्डर अन्य फर्मों से बीस प्रतिशत अधिक का है?"

"आप उस फर्म को विश्वस्त फर्म कहकर ठेका दिलवा दीजिये, तो मैं कमीशन तेंतीस करवा दूँगा। देखिये मिस्टर चोपड़ा! उसके भाव स्वीकार करने पर सजावट के व्यय का अनुमान एक लाख से सवा लाख का हो जावेगा। उसमें तेंतीस प्रतिशत का मतलब है, चालीस हजार आपका। आपने जो कुछ ऐमिली पर खर्च किया है अथवा करना है, वह अट्ठारह हजार है। शेष जो बाईस हजार बचता है उसमें आपके दास का भाग है। ठीक है न?"

इस समय तक मिस्टर चोपड़ा दो बार ग्लास भरकर ह्विस्की पी

चुका था और उसकी बुद्धि में दुस्साहस और विचारहीनता आ गई थी। इससे उसने कह दिया, "अच्छी बात है। मेरा भाग कैसे मिलेगा ?"

"वह में दिलवा दूँगा।"

इस समय श्रीमती मनमोहिनीदेवी आ गईं। उसके साथ उसका पति था। उसके साथ चार स्त्री-पुरुष और आये और सब बैठकर शराब पीने लगे। सूरजमोहन ने ताश के पत्ते निकाले और बाजी चलने लगी।

जब खेल में दम आगया तो बड़े-बड़े दाँव भी लगने लगे। जिसके पास रुपया समाप्त हो जाता था वह या तो खेलना बन्द कर देता था, या प्रोनोट लिखकर किसी से उधार लेकर काम चलाता था। कुल चौदह-पन्द्रह लोग थे। इस प्रकार यह रात के एक बजे तक चलता रहा। पश्चात् मिस्टर चोपड़ा उठ खड़ा हुआ और सब मेहमान विदा होने लगे।

अगले दिन आठ बजे मिस्टर चोपड़ा जागकर स्नानादि से निवृत्त हो अपने कार्यालय में आ गया। वहाँ पहुँचकर उसने बच्चों को बुलाया, उनको प्यार किया और मोटर में चढ़ा स्कूल भिजवा दिया।

पश्चात् वह अपने काम में लग गया। मिलने के लिये लोगों में मैसर्स श्रीकृष्ण एण्ड संज़ का कार्ड भी था। मिस्टर चोपड़ा को रात वाला सूरजमोहन का प्रस्ताव स्मरण हो आया। उसको याद आ गया कि चालीस हज़ार मिलने की बात है। इससे उसने सबसे पहले उसी को बुलाया और मिस्टर श्रीकृष्ण के साथ सूरजमोहन भीतर आ गया। बात पाँच मिनट में तय हो गई। डिप्टी कमिश्नर ने अपने क्लर्क को कांट्रैक्ट लिख डालने के लिये कह दिया।

इस प्रकार काम चलने लगा।

२

जब ऐमिली की गाड़ी प्लेटफार्म से निकल गई तो शान्ता और इन्द्रा स्टेशन से बाहर निकल आईं। मिस्टर चोपड़ा बिना ध्यान दिये उनके

समीप से गुज़र स्टेशन से बाहर ऐसे आ गया मानो वे एक दूसरे को पहचानते ही नहीं। जब शान्ता घर जाने के लिये टांगेवाले से भाव-ताव कर रही थी, चोपड़ा मोटर पर सवार हो फर्र से निकल गया। मोटर में केवल सोमनाथ था जो उनको टांगेवाले से बात करते देख रहा था।

जब शान्ता टांगे पर सवार होकर चल पड़ी तो इतनी देर तक बलपूर्वक रोके हुए आंसू बह निकले। शान्ता की भाभी ने उसको रोते देखा तो कहा, "शान्ता बीबी ! इस रोने से क्या लाभ होगा। यह आज का अनुभव कोई नवीन तो है नहीं। यह वही है जिसकी अदालत में तीन महीने निरन्तर जाती रही हो और जिसने एक बार भी कोई शब्द सहानुभूति का तुम्हारे लिये नहीं कहा था। यह निर्मोही परम स्वार्थी है। भगवान् तुम्हारा बदला लेगा।"

बदले का शब्द सुन शान्ता के पूर्ण शरीर में कंपकंपी पैदा हो गई। उसने केवल यह कहा, "भगवान करे कि मेरे जीवनकाल में यह न हो।"

"तो तुम उसकी सिफारिश करती हो !" इन्द्रा की मामी ने मुस्कराते हुए कहा।

"हां ! मैं तो यही सोचती हूं कि यदि कोई मेरा पुण्य कर्म है तो उसका फल भी उनको लगे।"

"इस प्रकार तुम चाहती हो कि महाराज गवर्गण्ड की कहावत चरितार्थ कर देवें।"

इस पर इन्द्रा ने कहा, "मां ! ऐसे पिता की सन्तान होना लज्जा की बात नहीं है क्या ?"

"इन्द्रा ! मां ने कुछ ताड़ना के भाव में कहा, "तुम्हारे पिता हैं वे। तुमको उनके विषय में ऐसी बात विचारनी भी पाप है।"

"वह तो ठीक है," इंद्रा की मामी ने कहा, "उनके विषय में हम कुछ बुरा नहीं चाहते। इस पर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि भगवान् न्याय करता है। वह दयालु है। पर दया अपने कोष में से देगा न कि

किसी दूसरे से संचित पुण्य के बल पर ? क्या वह कंगाल है
एक के पुण्य कर्म छीनकर किसी दूसरे को फल देगा ?"

अगले दिन शान्ता ने स्वस्तिवाचन का नियमित पाठ आ
दिया । इसमें उसका प्रयोजन स्पष्ट था । वह सदा भगवान से य
करती थी कि उसके पति का अनिष्ट न हो ।

इन्द्रा के मामा ने एक दिन बताया कि जर्मनी-विजय-महोत्सव
जा रहा है । एक बहुत बड़ा जलूस नगर भर में घूमेगा और सा
में झंडियां लगाई जा रही हैं । सरकार की ओर से सब सरकारं
रतों पर दीपमाला होगी और स्थान-स्थान पर बैंड-बाजे बजेंगे ।
स्थान पर नाच रंग होगा ।"

शान्ता ने कहा, "भैया, सिपाहियों के विषय में कुछ सुना है।
कब लौटकर आवेंगे ?"

"कुछ नहीं ! इस पर भी यह सुना है कि कुछ हिन्दुस्तानी प
जर्मनी में रहेंगी ।"

"देखें, प्रेम कब लौटकर आता है ? क्या दीनानाथ कभी मिला है ?

"उसने अपना नाम अफसरों को बता दिया है और पुलिस उसव
पकड़कर ले गई है । सुना है कि उत्सव के दिन उसके और कई दूसरों वे
विरुद्ध मुकद्दमे उठाये जा रहे हैं ।"

इन्द्रा के मामा ने यह भी बताया, "उस दिन के महोत्सव में लाहौर
भर में पाँच-छः लाख का व्यय होगा । इतनी भारी रक़म में यह खुले
मुँह कहा जा रहा है कि डिप्टी कमिश्नर एक लाख रुपए से ऊपर रिश्वत
ले गया है ।"

"यह बात सत्य कैसे हो सकती है ? भैया आप एक बात करो, जो
कोई भी ऐसी बात किया करे उसका खण्डन कर दिया करो ।"

"बहिन ! मेरी कौन सुनता है ? पूर्ण नगर में यह बात विख्यात
हो रही है और बाल, वृद्ध सब यही कह रहे हैं ।"

इससे शान्ता को प्रतीत हुआ कि कोई अति भयानक घटना घटने

वाली है। परन्तु शान्ता के चाहने से कुछ हो नहीं सकता था। बात यह हुई कि नगर की सजावट के लिए टैंडर मंगवाए गये थे। सबसे कम टैंडर एक अंग्रेज़ कम्पनी 'जौन्सन एण्ड जौन्सन' का था और डिप्टी कमिश्नर ने सबसे ऊंचा टैंडर मैसर्ज श्रीकृष्ण एण्ड सन्ज़ का स्वीकार कर लिया था। जौन्सन एण्ड जौन्सन वालों ने कमिश्नर और गवर्नर के सामने अपील कर दी थी। यह अपील कमिश्नर के पेशकार से तथा अन्य क्लर्कों द्वारा पब्लिक में चली गई।

विजयोत्सव के दो-तीन दिन पहले कमिश्नर क्लब में बैठा था और जौन्सन एण्ड जौन्सन का व्यवस्थापक उनके पास बैठकर अपनी बात बता रहा था। इस समय बिना आयोजन के अथवा नियत योजनानुसार मिस्टर नार्टन भी वहाँ आ बैठा। मिस्टर रैमस्डल जौन्सन ने मिस्टर नार्टन को अपना साक्षी बना लिया। उसने अपना कहना जारी रखा, "श्रीमान्, मिस्टर नार्टन भी बहुत कुछ इस विषय पर प्रकाश डाल सकते हैं। ये भी एक मुकद्दमे में, जिसका सम्बन्ध मिस्टर चोपड़ा के साथ घना रहा है, वकील रहे हैं और इनको मिस्टर चोपड़ा की बहुत-सी बातें पता हैं।"

"मिस्टर चोपड़ा की बीवी ऐमिला जौन्सन मेरी दूर की सम्बन्धी है। एक-दो बार उससे मिलने गया हूँ और चूंकि मिस्टर चोपड़ा का व्यवहार उससे बहुत बुरा था इस कारण वह बहुत दुःखी और परेशान प्रतीत होती थी।"

इस पर कमिश्नर ने मिस्टर नार्टन से पूछा, "मिस्टर चोपड़ा के विषय में आप क्या जानते हैं?"

"मिसेज़ चोपड़ा ने मुझको ग़दर पार्टी के एक मुलज़िम के लिये वकील किया था। वह मुलज़िम धोखे से, मुझको भारी सन्देह है कि मिस्टर चोपड़ा के कहने मात्र से पकड़ लिया गया था। वह मिस्टर चोपड़ा का अपनी हिन्दुस्तानी पत्नी से पुत्र था और किसी कारण से मिस्टर चोपड़ा अपनी उस पत्नी और पुत्र का घोर विरोधी था। लड़के के विरुद्ध कुछ भी प्रमाण नहीं था, इस पर भी उसको सैशन सुपुर्द कर दिया था।"

"मिस्टर चोपड़ा का व्यवहार अपनी अंग्रेज बीवी से भी ऐसा था जैसे किसी पागल पुरुष का होता है। उसको अपने बच्चों से मिलने की मनाही कर दी थी। वह सर्वदा स्वस्थ और मन की अति निर्मल औरत थी। परन्तु मिस्टर चोपड़ा ने उसको दुर्बल मानसिक अवस्था वाली घोषित कर स्विटज़रलेंड भेज दिया है। स्वयं वह शराब पीकर और जूआ खेल-कर अपनी रातें व्यतीत कर रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि नगर के सब गुण्डे, चोर-जुआरी उसकी कोठी में आते-जाते हैं।"

"पंजाब की राजधानी लाहौर के डिप्टी कमिश्नर की इतनी बदनामी तो अंग्रेजी राज्य की जड़ों को हिला देगी। इस पर अब रिश्वत लेने की स्कैंडल चल पड़ी है।"

कमिश्नर ने पूछा, "क्या आप समझते हैं कि मिस्टर चोपड़ा ने इतनी भारी रिश्वत ली होगी ?"

"यह सम्भव है। मिस्टर चोपड़ा के पास, जब उसकी अंग्रेज बीवी स्विटज़रलेंड गई थी, बैंक-बैलेंस में कमी थी। मुझको यह बात एक आकस्मिक घटना से पता चल गई थी। मैं बंगाल बैंक के मैनेजर से मिलने गया था और मिस्टर चोपड़ा वहाँ बैठा था। मुझको देख मिस्टर चोपड़ा उठ खड़ा हुआ और मैनेजर उसको कमरे के बाहर छोड़ने को आया। मैनेजर की कुर्सी के सामने एक रजिस्टर खुला रखा था और मिस्टर ए० एन० चोपड़ा के हिसाब का पन्ना खुला था। मैंने दृष्टि दौड़ाकर देखा तो लाल स्याही में मिस्टर चोपड़ा के नाम के अन्त में डेबिट तीस हज़ार से कुछ ऊपर लिखा था। मैं यह देख चकित रह गया। मेरे विचार में मिस्टर चोपड़ा के हिसाब में चालीस-पचास हज़ार जमा तो अवश्य होने चाहियें थे।"

"मैंने उठकर मिस्टर चोपड़ा के हिसाब को ध्यानपूर्वक देखा तो पता चला कि ग्यारह हज़ार रुपया उसने अपनी बीवी को दिया था। साथ ही एक मिस्टर सूरजमोहन हैं, उसको मिस्टर चोपड़ा ने कई चैक दिये हैं।"

"इस समय मैनेजर साहब भीतर आ गये। मैं और [illegible]क नहीं

देख सका। मेरा विचार है कि आप यदि बैंक के एकाउंट चैक करवाएँ तो जान जायेंगे कि रुपया कहाँ से आ रहा है और किधर जा रहा है।"

"मेरी स्त्री कहती थी कि मिसेज़ चोपड़ा पागल मालूम नहीं होती थी। और उसको वर्न मैन्टल सैनिटोरियम में भेजा गया है।"

"मुझको तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मिस्टर चोपड़ा का किसी औरत से अनुचित सम्बन्ध हो गया है और इस कारण उसने अपनी बीवी को पागल बनाकर बाहर निकाल दिया है। शायद यह रहस्य भी उसका हिसाब देखने से पता चल जावेगा।"

आजकल मिस्टर चोपड़ा क्लब में बहुत कम आता था। इस कारण चीफ-कमिश्नर ने निश्चय कर लिया कि विजयोत्सव के पश्चात् वह उसको बुलाकर बातचीत कर लेगा। इस काल में उसने मिस्टर चोपड़ा के बैंक के हिसाब का निरीक्षण करना उचित समझा।

अगले दिन वह साढ़े दस बजे बंगाल बैंक में जा पहुँचा और मैनेजर से मिस्टर चोपड़ा का हिसाब देखने की माँग की। वह हिसाब को देख चकित रह गया।

जब से मिस्टर चोपड़ा लाहौर आया था तब से लगभग बीस लाख रुपया चोपड़ा के हिसाब में नकद और चैकों द्वारा जमा हुआ था। चैक प्रायः उसके वेतन के थे जो नियमपूर्वक प्रतिमास जमा हो रहे थे। नकद रुपया हज़ारों के अंकों में जमा हुआ था।

पहले चार वर्ष तक बहुत कम रुपया निकाला गया था और खाते में जमा लगभग पन्द्रह लाख हो गया था। पश्चात् १९१४ से रुपया निकलने लगा। इसमें प्रायः रुपया चैकों द्वारा वितरण हुआ। सबसे अधिक चैक दो औरतों के नाम थे। एक श्रीमती मनमोहिनी और दूसरी ज़ेबुल-निसा। कुछ चैक मिस्टर सूरजमोहन के नाम भी थे। बहुत से चैक स्वयं अपने नाम थे। सन् १९१८ में बैंक बैलेंस डैबिट चल रहा था। पश्चात् नवम्बर १९१८ में दो रकमें दस-दस हज़ार की जमा हो गई थीं और अब दिसम्बर के आरम्भ में बीस हज़ार की एक और रकम जमा हो गई

थी। यह सब रुपया कैसे आता था और कहाँ जाता था, बहुत ही सन्देहात्मक था।

सन् १९१७ जून के पश्चात् से लेकर अकाउंट में कर्ज़ा चला आता था। अब एकाएक नवम्बर के पास में कर्ज़ा के स्थान अकाउंट में रुपया जमा था।

कमिश्नर साहब को मनमोहिनी और ज़ैबुलनिसा के विषय में जानने की लालसा हुई। घर जाकर उसने इन्स्पैक्टर-जैनरल आफ पुलिस को बुला भेजा। उसको इन दोनों औरतों के विषय में पूरी जानकारी करने को कह दिया।

३

जर्मनी पर विजय-प्राप्ति का उत्सव भारी धूमधाम से मनाया गया। इंगलैंड और ब्रिटिश साम्राज्य में तो यह समारोह मनाया ही जा रहा था, हिन्दुस्तान के प्रत्येक नगर और गांव में भी इसके उपलक्ष्य में दीपमाला, सभाएँ, आतिशबाजी, कुश्तियाँ और अन्य खेल-तमाशे किये गये। स्कूलों में बच्चों को मिठाई और तमगे दिये गये। पूर्ण देश में रंग-बिरंग की सजावट हुई।

लाहौर में भी ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो कोई स्त्री सजधज कर किसी के स्वागत को तैयार बैठी हो। प्रातःकाल से ही स्कूलों के बच्चे नए-नए कपड़े पहन सड़कों के किनारों पर गवर्नर बहादुर की सवारी देखने के लिये खड़े किये गये। और ठीक आठ बजे गवर्नर की हाथी पर सवारी, उसकी कोठी से चली, और नगर भर में घूमकर ग्यारह बजे किले पर समाप्त हुई।

पश्चात् बच्चों को मिठाई बांटी गई। पूर्ण मार्ग पर झंडियाँ, झंडे, बेल-पत्ते, दरवाज़े, फूलों के तोरण लगाये गये थे और चारों ओर पुलिस और फौज का प्रबन्ध था।

जलूस में पहले तोपखाना था, पीछे घुड़सवार फौजी, उनके पश्चात्

पैदल फौज और पीछे हाथी पर गवर्नर बहादुर। इसके पीछे नगर के कुछ रईस अपनी-अपनी बग्घियों पर सवार थे।

डिप्टी कमिश्नर मिस्टर चोपड़ा सब प्रबन्ध करने पर नियुक्त था। वह बहुत प्रातःकाल से ही घोड़े पर भागदौड़ कर रहा था। सवारों में सबसे आगे घोड़े पर वह ही जा रहा था।

सवारी निकल जाने के पश्चात् स्कूलों के बच्चों को अपने-अपने स्कूल लेजाकर मिठाई दी गई और मेडल बाँटे गये। इस प्रकार प्रातः-काल का कार्यक्रम समाप्त हुआ। उसी सायंकाल किले के बाहर परेड-ग्राउंड पर मेला लगाया गया। मेले में बाजीगरों के तमाशे, सरकस के खेल, नाटक, कुश्तियाँ, झूले इत्यादि मनोरंजन के अनेक आयोजन किये गये।

इसी दिन दोपहर को कई कैदियों को छोड़ा गया। उनमें दीनानाथ भी था। दीनानाथ लाहौर के सेन्ट्रल जेल में बन्दी था। वह छूटते ही प्रेमनाथ की माँ से मिलने गया। जाकर चरण-स्पर्श कर बोला, "माँ जी! मेरा अनुमान ठीक निकला। मैं बिना मुकद्दमा चलाये छोड़ दिया गया हूँ।"

प्रेमनाथ की माँ ने दीनानाथ को आशीर्वाद दिया और कहा, "अब तो तुमको बाल-बच्चों को लेकर लाहौर आ जाना चाहिए।"

"मैं आज ही रात को दिल्ली जा रहा हूँ और आशा करता हूँ कि एक सप्ताह के भीतर ही यहाँ चला आऊंगा। यहाँ आकर कोई काम-काज चालू करने का विचार करूँगा।"

"आज तो यहाँ भारी उत्सव समारोह है। युद्ध-समाप्ति पर तो हमने दीपमाला की थी। वह तो प्रेम के युद्ध लड़ने से बच जाने की प्रसन्नता में थी। आज तो मेरे मन में किसी प्रकार का भी उल्लास नहीं है।"

"यह ठीक तो है। उस दिन जो कुछ हुआ उससे हमारा सम्बन्ध था। परन्तु उसके पश्चात् क्या होगा और क्या हो रहा है, हमारे जानने

की वात नहीं है। लड़ाई वन्द होने से हमारे सम्बन्धी मरने-मारने से वच गये, परन्तु शेष जर्मन की जीत रही अथवा इंगलैंड की, इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"मैं भी कुछ ऐसा ही सोच रही हूँ। इसी कारण आज दीपमाला करने में कुछ उत्साह नहीं हो रहा।"

"प्रेमनाथ का कोई पत्र आया है क्या ?"

"हाँ ! युद्ध-समाप्ति के पश्चात् तीन पत्र आ चुके हैं। उनकी रैजि-मैंट अभी मार्सेल्ज में टिकी है। अन्तिम पत्र में उसने लिखा है कि उनको पन्द्रह दिन की छुट्टी पैरिस इत्यादि जाने की मिली है। उसकी रुचि पैरिस जाने की नहीं हो रही। उसने लिखा है कि मार्सेल्ज में जो वासना-तृप्ति के साधन हैं, पेरिस में उससे कहीं अधिक हैं। इससे मैं तो फ्रांस से निकल स्विटज़रलैंड अथवा इटली जाने की स्वीकृति माँग रहा हूँ। फ्रांस में तो हिन्दुस्तानी सिपाहियों को रेल के भाड़े में रियायत मिल रही है। इटली और स्विटज़रलैंड में ऐसी रियायत नहीं। खर्चे का प्रवन्ध तो है। मुझको कुछ साथी मिल गये हैं जो साथ चलने को तैयार हो गए हैं। यदि वेतन तथा अन्य रियायतें मिल गईं तो मैं रोम, नेपल्ज इत्यादि ऐतिहासिक स्थान देखने जाने का विचार रखता हूँ। भारत में वापिस आने के लिए अभी कुछ मास और लग जावेंगे। यहाँ से आने वाले जहाजों की भारी कमी है।"

"मां जी," दीनानाथ ने कहा, "अव छुट्टी दीजिए। इन्द्रा के विवाह की वात भी रमाकान्त के आने पर होगी। वह वसरा में था। आजकल पता नहीं कहाँ है। सम्भव है आ ही गया हो। अपने माता-पिता जी से मिलने जा रहा हूँ। वहाँ से ही सव पता चल जायगा।"

दीनानाथ दिल्ली चला गया। कुछ ही दिनों में उसका पत्र वहां से आया। उसने लिखा था कि रमाकान्त वापिस हिन्दुस्तान आ गया है। लड़का आजकल दिल्ली में है और विवाह के लिए राजी हो गया है। इस समाचार से प्रेम की मां को जहाँ सन्तोष और प्रसन्नता हुई वहाँ

चिन्ता भी। वह विवाह के प्रबन्ध के लिए साधनों का विचार करने लगी थी।

एक दिन प्रेम की चिट्ठी रोम से आई। उसमें, उसने लिखा, "माँ, यह बहुत ही सुन्दर नगर है। पुरानी इमारतों की भरमार है और सब कुछ अति सुन्दर, विशाल और प्रभावशाली है।

"कल हम 'वलूजियम' देखने गये थे और जानती हो मैंने वहाँ क्या देखा? एक गाईड के साथ मम्मी उस भव्य इमारत को देख रही थीं। मैंने दूर से देखा तो उन्हें पहचान अपनी बुद्धि पर ही सन्देह करने लगा था। कितनी ही देर तक चकित हो देखता रहा। फिर समीप पहुँच देखने गया। इस पर मम्मी ने मुझे पहचान लिया। वे मुझको वहाँ ऐतिहासिक स्थानों की सैर करते देख बहुत प्रसन्न हुईं।"

"रात हम पाँच साथी उनके होटल में आमन्त्रित थे। वहाँ उन्होंने हमको बहुत बढ़िया खाने को दिया। आज प्रातः मैं अकेला उनसे मिलने गया था और उनसे भ्रमण का कारण जानकर दुःख और चिन्ता लग गई है। मैं रेजिमेंट में वापिस जाकर छुट्टी लेने का यत्न करूंगा और स्विटजरलैंड उनके साथ जाकर रहूँगा। वे इस बात के लिए मान गई हैं।"

"हम कल रोम से विदा हो नेपल्ज जा रहे हैं। मम्मी ने इन्द्रा को प्यार और आपको नमस्ते दी है।"

अगले दिन इन्द्रा का मामा हाथ में एक उर्दू का समाचार-पत्र लिए हुए वहाँ आ गया। उसका मुख शोक-ग्रस्त देख शान्ता ने पूछा, "क्या है भैया?"

"क्या बताऊँ बहिन! यह समाचार-पत्र नगर में बिक रहा था। इसमें मिस्टर चोपड़ा के विषय में एक समाचार छपा है।"

"क्या छपा है?"

"लिखा है, 'डिप्टी कमिश्नर के बंगले में हत्या। रात एक बजे के लगभग बंगले के चपरासियों ने गोलियों के चलने की आवाज सुनी तो

भागे हुए भीतर गये। ड्राॅयिंग-रूम में श्रीमती मनमोहिनी और बेगम जेबुलनिसा की लाशें रक्त से लथपथ एक दूसरे के ऊपर पड़ी देखीं। पास एक पिस्तौल पड़ा था जो डिप्टी कमिश्नर बहादुर का था।"

"उस समय ड्राॅयिंग-रूम में और कोई नहीं था। इससे चौकीदार ने हल्ला किया। तो बड़े साहब अपने सोने के कमरे से आँखें मलते हुए बाहर निकल आये।"

"पुलिस इस दुहरी हत्या की जांच कर रही है। अभी किसी को पकड़ा नहीं गया। यह कहा जाता है कि ये दोनों औरतें डिप्टी कमिश्नर बहादुर से घना सम्बन्ध रखती थीं।"

"क्या अन्त का आरम्भ हो गया है?"

"बहिन, धैर्य से भगवान का भजन करना चाहिए। वही जानता है कि ठीक क्या है।"

उस दिन नगर में इन हत्याओं की चर्चा प्रत्येक की ज़बान पर थी। इस हत्या के समाचार के साथ-साथ लोग भाँति-भाँति की कहानियाँ कहते थे। शान्ता जब सब्ज़ी आदि ख़रीदने मार्केट गई तो वहाँ लोगों की भीड़ लगी थी और एक आदमी सुना रहा था, "चोपड़ा की दो विवाहित स्त्रियाँ थीं। उसमें एक जो हिन्स्तानी थी, घर से निकाल दी गई थी और दूसरी जो अंग्रेज़ थी, उसकी चरित्रहीनता देख स्वयं विलायत चली गई है। मिस्टर चोपड़ा की मित्रता इन दोनों औरतों से थी और दोनों रात लड़ पड़ी थीं। मिस्टर चोपड़ा ने क्रोध में आ दोनों को गोली मार दी।"

"दोनों को गोली हृदय-स्थान पर लगी है। और ऐसा कहा जाता है कि दोनों की तुरन्त मृत्यु हो गई थी।"

शान्ता भीड़ के पीछे खड़ी यह कहानी सुनती रही। इस पर एक ने पूछा, "यह सब तुमको किसने कहा है?"

"साहब का चपरासी चीमा हमारा पड़ोसी है। आज बारह बजे तक वह थाने में रहा है। आया तो उसने सब मुहल्ले वालों को यह

कथा सुनाई है।"

इस प्रकार कथा के स्रोत को विश्वस्त मान किसी को सन्देह करने को स्थान नहीं रहा। सब सिर हिलाते हुए चले गये। जब शान्ता तरकारी लेकर लौटी तो वही आदमी और इकट्ठे हुओं को वही कथा सुना रहा था।

४

कमिश्नर महोदय को मनमोहिनी और जेबुलनिसा की हत्या की सूचना रात को ही मिल गई थी। उन्होंने इन्सपैक्टर-जैनरल पुलिस को टेलीफोन से कह दिया, "मिस्टर चोपड़ा को तब तक न पकड़ा जाये जब तक कोई सुदृढ़ प्रमाण न मिल जावे।" इस कारण पुलिस वहाँ पहुँची और उन्होंने ड्राॅयिंग-रूम को ताला लगा दिया और खुफिया पुलिस की जाँच के लिये प्रातःकाल तक कुछ कार्यवाही नहीं की। केवल चौकीदार को हिरासत में ले लिया।

अगले दिन खुफिया पुलिस ने जाँच आरम्भ की। बात इतनी सरल नहीं निकली जितनी कि समझी जाती थी। मिस्टर चोपड़ा का बयान था कि रात कई मित्र उसके घर आये थे। ब्रिज खेलते-खेलते शर्त लगने लगी। मनमोहिनी जीतने लगी और जेबुलनिसा हारने लगी। दोनों रात भर खेलने की जिद् करने लगीं। मेहमान चले गये तो भी दोनों खेलती रहीं। इस समय मिस्टर चोपड़ा ने भी उनसे छुट्टी ले ली और उनको ड्राॅयिंग-रूम में छोड़ सोने चला गया। वह जाकर कपड़े उतार गहरी नींद में सो गया। जब पिस्तौल चलने का शब्द सुनकर जागा और चौकीदार का शोर सुन बाहर आया तो उसको हत्याओं का पता चला। पूछने पर मिस्टर चोपड़ा ने बताया कि उसका किसी पर सन्देह नहीं है। पिस्तौल उसके स्टडी-रूम-की मेज़ के दराज़ में रहता है। रात दराज़ की चाबी उसके साथ लगी रह गई थी। मेरे मित्रों को पता है कि मैं पिस्तौल वहाँ रखता हूँ।

मिस्टर चोपड़ा ने उन लोगों के नाम लिखा दिये जो रात आये थे। उनमें न तो मनमोहिनी के पति का नाम था और न ही सूरजमोहन का। जेबुलनिसा अविवाहित स्त्री थी।

इसके पश्चात् मनमोहिनी के पति और सूरजमोहन के बयान हुए और पश्चात् अन्य ब्रिज खेलने के लिये उपस्थित लोगों के भी बयान लिये गये। सबने डिप्टी कमिश्नर के बयान का समर्थन किया। सूरजमोहन और मनमोहिनी के पति ने बताया कि वे दोनों एक कॉकटेल पार्टी पर गये हुए थे।

सब कुछ लिखकर सी० आई० डी० का इन्स्पेक्टर मिस्टर रजनीकान्त बैनर्जी अपने कार्यालय में लौट आया और आराम से बैठकर सब बयानों को पढ़ गम्भीर विचार में पड़ गया। पिस्तौल उसके सामने रखा था। जो गोलियां मृत स्त्रियों के शरीर से निकली थीं वे भी सामने रखी थीं। शेष चार गोलियाँ पिस्तौल में रखीं थीं। उसने बारी-बारी सब वस्तुओं को देखा और फिर गम्भीरतापूर्वक सोचने लगा। वह कई कथायें अपने मन में बसाकर रद्द कर चुका था और और अभी किसी भाँति भी अन्तिम परिणाम पर नहीं पहुँचा था कि इसी समय मिस्टर नार्टन ने अपना कार्ड भीतर उसके पास भेजा।

उसने सब सामान उठवाकर मेज़ की दराज़ में रखवा दिया और तब मिस्टर नार्टन को बुला लिया। हाथ मिलाकर जब मिस्टर नार्टन कुर्सी पर बैठ गया तो मिस्टर बैनर्जी ने प्रश्नभरी दृष्टि से वकील महोदय की ओर देखा।

"मैं कल रात की हत्याओं के विषय में कुछ बात करने आया हूँ।"

"हूँ!" मिस्टर बैनर्जी ने कहा।

"एक आदमी जो ज़ेबुलनिसा में रुचि रखता है और अपने को उसका सम्बन्धी कहता है, मुझसे उसके हत्यारे को पकड़ने में सहायता देने के लिये कह रहा है।"

"हूँ?"

"मैं पंजाब बार का एक विख्यात वकील हूँ और मैं आपको अपनी सेवायें देता हूँ।"

"हूँ।"

"इसी प्रयोजन से मैं आपके पास आया हूँ।"

अब मिस्टर बैनर्जी ने मुख खोला। उसने कहा, "आपको यह विदित होना चाहिये कि हम पुलिस वाले वकीलों से बहुत परहेज़ करते हैं।"

"इस पर भी आप मुकद्दमा अदालत में भेज नहीं सकते जब तक सरकारी वकील से स्वीकृति न ले लें। मैं आपसे सहायता लेने नहीं आया। मैं सहायता देने आया हूँ। आपको यदि यह स्वीकार नहीं तो मैं विवश हूँ। मैं स्वतन्त्र रूप से खोज करूँगा और अदालत की सहायत करूँगा।"

"मेरे मन्ज़ूर करने या न करने की बात नहीं। मैं अपनी खोज में एक वकील की युक्तियों से, जो किसी की ओर से नियुक्त हुआ है, प्रभावित नहीं होना चाहता।"

"तो इसका मतलब यह है कि आप मेरा सहयोग स्वीकार नहीं करेंगे। मुझको आप पर दया आती है। अच्छी बात। गुड बाई!"

इतना कह नार्टन ने उठकर मिलाने के लिये हाथ बढ़ा दिया। मिस्टर बैनर्जी ने हाथ मिलाया नहीं, प्रत्युत यह कहा, "आप बैठिये मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

"हाँ, पूछिये?"

"वह कौन आदमी है जो आपको इस मुकद्दमे में लगा रहा है?"

"ज़ेबुलनिसा की मौसी है जो लंडे बाज़ार में पेशा करती है।"

"उसका नाम-पता लिख दीजिये।"

मिस्टर नार्टन ने एक कागज़ के टुकड़े पर सब कुछ लिख दिया।

"अब आप जा सकते हैं।"

मिस्टर नार्टन मुस्कराया और चलने के लिये उठ खड़ा हुआ। मिस्टर

बैनर्जी ने पूछा, "आप मुस्करा क्यों रहे हैं ?

"इसलिये कि आपने पूछी तो वह भी व्यर्थ की बात। आप हमारे को पा नहीं सकेंगे। देखिए मिस्टर बैनर्जी, यह कोई पुलिटीकल केस नहीं है और यदि अपने प्रमाण भली भांति एकत्र नहीं किये तो अपराधी बच जावेगा।"

"यह मैं जानता हूँ।"

"अच्छी बात है। अब अदालत में मिलेंगे।"

महीनों की खोज के बाद पुलिस ने इन हत्याओं की यह कथा निर्माण की कि दोनों जूआ खेलती-खेलती लड़ पड़ी थीं और दोनों में से एक ने उठ कर स्टडी-रूम से पिस्तौल निकाल लिया और दूसरी को मार डाला। इसी समय फांसी के भयानक दण्ड से बचने के लिये स्वयं आत्म-हत्या कर ली।

पुलिस ने इन हत्याओं के मुकद्दमे को हत्या और आत्महत्या, जिस में हत्यारा स्वयं भी मर चुका है लिखकर फाइल कर दिया।

तीन मास व्यतीत हो जाने पर मिस्टर नार्टन ने हाईकोर्ट में प्रार्थना की कि "जेबुलनिसा की मौसी मुमताज, जेबुलनिसा के हत्यारे श्री ए० एन० चोपड़ा पर दफा तीन सौ दो का मुद्दमा चलाने की आज्ञा चाहती है। इस प्रार्थना-पत्र में यह लिखा था कि चूंकि मिस्टर चोपड़ा ज़िला मैजिस्ट्रेट है और पुलिस के भी अफसर हैं, इस कारण पुलिस ने हत्यारे को पकड़ उसपर मुकद्दमा करने में सुस्ती की है।"

"इस घटना का डिप्टी कमिश्नर की कोठी पर होना मात्र और हत्यायें डिप्टी कमिश्नर के पिस्तौल से होना इस बात की मांग करता है कि डिप्टी कमिश्नर को अपराधी के कटघरे में खड़ाकर मुकद्दमा चलाया जाए। जिससे मृत के सम्बन्धियों को सन्तोष हो कि अपराधी को उचित दंड मिल गया है।"

"प्रार्थी के पास ऐसे प्रमाण हैं कि हत्यायें मिस्टर ए० एन० चोपड़ा के हाथों हुई हैं। इन प्रमाणों को पुलिस के सामने रखने के लिये प्रार्थी

का वकील पुलिस के पास पहुँचा था, परन्तु पुलिस ने उससे सहायता लेने से इन्कार कर दिया था।"

"न्याय और शान्ति के राज्य की प्रतिष्ठा के लिये यह आवश्यक है कि इस मुकद्दमें की मैजिस्टीरियल जाँच खुली अदालत में आरम्भ की जाये।"

हाई कोर्ट ने इस प्रार्थना-पत्र पर प्रकाश डालने के लिये पंजाब सरकार के ऐडवोकेट-जैनरल को निमंत्रण दिया। वह उपस्थित हुआ और उसने कह दिया कि प्रमाणों के अभाव में किसी पर मुकद्दमा नहीं चलाया गया। इस पर चीफ जस्टिस ने पूछा, "इसी जिला-पुलिस के अतिरिक्त किसी को जांच पर लगाया गया था क्या ?"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"आवश्यकता नहीं समझी गई।"

"यदि मिस्टर चोपड़ा इन हत्याओं में लिप्त हो तो क्या यह सम्भव नहीं कि वह जांच में बाधा डाल सकता है ?"

"यह एक ख्याली प्रश्न है ? मिस्टर चोपड़ा हत्याओं में लिप्त नहीं माना गया।"

"हत्यायें उसकी पिस्तौल से हुई हैं क्या ?"

"हाँ, यह केवल असावधानी का परिणाम है जिसके लिये केवल डिपार्टमैन्टल चेतावनी आवश्यक समझी गई है।"

"हत्याओं के समय क्या चोपड़ा के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति कोठी में पाया गया था ?"

"नहीं ! परन्तु ऐसा माना गया है कि हत्यारे ने आत्मघात कर लिया है।"

इस बयान के उत्तर में मिस्टर नार्टन ने कहा, "मुकद्दमा किसी स्वतन्त्र अदालत में चलना चाहिये और हत्यारे के विरुद्ध प्रमाण, जो हमारे पास हैं, सुनने चाहियें। यदि प्रारम्भिक जाँच में प्रमाण, विश्वस्त

न माने जायें तो अपराधी सेशन कोर्ट में भेजा जाये। काफी प्रमाण हैं जो यह प्रकट करते हैं कि हत्यारा दोनों मृतों से कोई पृथक् है। पुलिस ने जांच के समय असावधानी से काम लिया है। इसका प्रमाण मेरा स्वयं प्रमाण लेकर मिस्टर बैनर्जी के पास जाना और उनका मेरी सहायता लेने से इन्कार कर देना है।"

हाईकोर्ट ने निर्णय दे दिया कि मुकद्दमा हाईकोर्ट की स्पेशल बेंच के सामने हाईकोर्ट की 'ओरिजिनल साईड' पर होगा।

इस समाचार ने देश भर में सनसनी उत्पन्न कर दी।

५

रोम से आई चिट्ठी के एक मास अनन्तर प्रेमनाथ का एक पत्र बर्न से आया। उसने लिखा, "मुझको रेजिमैन्ट से छः मास की अवैतनिक छुट्टी मिल गई है। मैं तुरन्त ही वहां से बर्न चला आया हूं। परन्तु यहां बताये पते पर और अन्य सब होटलों में ढूंढ़ने पर मम्मी का पता नहीं चला। मैं अभी यहां पर ही हूं और यत्न कर रहा हूं कि मम्मी का पता करूँ। यहां की पुलिस मेरी सहायता कर रही है।"

"अभी तक तो यह पता चला है कि एक स्त्री जिसका नाम ऐमिली चोपड़ा है और जिसके पास हिन्दुस्तान की सरकार का पासपोर्ट था, रोम से जनेवा और जनेवा से इटली की सीमा पार कर स्विटजरलैंड में आई थी। पश्चात् वह कहां गई है कुछ पता नहीं चल रहा।"

"जीवित अथवा मृत, जैसा भी हो उसको ढूंढ़ने का यत्न किया जा रहा है। मेरे पास रुपये कम हो रहे हैं, परन्तु मुझको एक अंग्रेज होटल में बैरे का काम मिल गया है। आशा करता हूं कि मैं कुछ ही काल यहां रहकर मम्मी की खोज करवा सकूंगा।"

यह समाचार और भी दुःखकारक सिद्ध हुआ। शान्ता के पास रुपये भेजने को नहीं थे। साथ ही उसके अपने निर्वाह के लिये भी कठिनाई उत्पन्न हो रही थी। वह चाहती थी कि ऐमिली के दिये रुपयों को न

छूए, परन्तु विवशता बढ़ती जाती थी और वह इस विषय में विचार कर रही थी।

शान्ता ने दीनानाथ को पत्र लिखकर बुला लिया और इन्द्रा के विवाह का बैंक से रुपया निकालने का प्रबन्ध कर लिया।

इन्द्रा का विवाह हो गया। दीनानाथ के कहने पर उसके भाई ने बिना किसी प्रकार के दहेज के विवाह स्वीकार कर लिया। इस विवाह के समय शान्ता ने एक पत्र इन्द्रा के पिता मिस्टर चोपड़ा को लिखा था, परन्तु वह नहीं आया और न ही उसने कोई उत्तर दिया। इससे शान्ता को विस्मय नहीं हुआ। वह ऐसी ही आशा करती थी। इस पर भी वह अपना कर्तव्य समझती थी कि लड़की के पिता को सूचित कर दे।

अभी ऐमिली के विषय में चिन्ता लगी ही हुई थी कि समाचार पत्र में मिस्टर नार्टन के हाईकोर्ट में प्रार्थना का समाचार प्रकाशित हुआ। यद्यपि इन्द्रा के विवाह पर मिस्टर चोपड़ा के आशीर्वाद तक न भेजने की कटुता विद्यमान थी, तो भी वह इस समाचार से प्रसन्न नहीं हुई।

दो दिन के पश्चात् उसे यह समाचार मिला कि मिस्टर चोपड़ा के बंगले पर हुई हत्याओं का मुकद्दमा हाईकोर्ट की स्पेशल बेंच के सामने होगा। बेंच नियुक्त हो गई और मुकद्दमे की तिथि निश्चित हो गई।

शान्ता इस समाचार से अपने मन की विचित्र अवस्था पाती थी। उसको इस मुकद्दमे से प्रसन्नता तो हुई नहीं पर कोई चिन्ता का कारण है अथवा चिन्ता करने की आवश्यकता है, यह नहीं समझ सकी।

आजकल वह अकेली थी और करने को कुछ नहीं था। गीता, रामायण का पाठ करना, पूजा-पाठ में लगे रहने और भोजन-व्यवस्था बनाये रखने के अतिरिक्त और कुछ भी काम नहीं था। इससे चित्त उदास रहने लगा था।

जिस दिन से डिप्टी कमिश्नर के बंगले में हुई हत्याओं का मुकद्दम

आरम्भ हुआ उस दिन से ही वह नित्य मुकद्दमे में रुचि लेने लगी। नियम से वह समाचार-पत्र खरीदती और किसी से पढ़वाती। समाचार प्रायः अंग्रेजी के 'ट्रिब्यून' पत्र में छपते थे।

पहले ही दिन मिस्टर नार्टन ने अपने मुकद्दमे को उपस्थित करते हुए कहा, "घटना इस प्रकार हुई---

"रात के पौने एक बजे चौकीदार ने गोली चलने की आवाज़ सुनी और वह भागकर भीतर गया। उसने देखा कि दो शव लहू से लथपथ ड्राइंग-रूम में पड़े हैं।"

"चपरासी ने शोर मचाया।"

"मिस्टर चोपड़ा स्लीपिंग-सूट पहने सोने के कमरे में से आँखें मलते हुए निकले।"

"यह घटना है जो हुई। इस पर पुलिस की जांच मुझको आज तक प्राप्त नहीं हुई। यह कहा गया है कि चूँकि पुलिस मुकद्दमा नहीं चला रही इस कारण पुलिस को विवश नहीं किया जा सकता कि वह अपनी जांच अदालत में उपस्थित करे।"

"माई लार्ड! यह व्यवहार कानून से ठीक होते हुए भी अदालत को न्याय करने में रुकावट डालने के बराबर है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस जांच पर सरकार से नियुक्त बैनर्जी साक्षी के रूप में बुलाये जायें।"

मिस्टर बैनर्जी साक्षी देने के लिये उपस्थित हुआ तो मिस्टर नार्टन ने उस पर प्रश्न करने आरम्भ कर दिये।

"आपको इस जाँच के लिये स्पेशल एलाऊँस क्या मिला है?"

"चूँकि जांच में लाहौर से कहीं बाहिर नहीं जाना पड़ा, इस कारण टांगा-भाड़े के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला।"

"आपको वेतन कितना मिलता है?"

"सात सौ पच्चीस रुपये मासिक।"

"आप प्रति मास अपना वेतन बैंक में जमा करा देते हैं और फिर

उसमें से खर्चे के लिये धन निकालते हैं। मैं समझता हूँ यह आपका स्वभाव है। आपका हिसाब किस बैंक में है ?"

"बंगाल में।"

"इस मुकद्दमे की जाँच के लिये आपकी नियुक्ति किस तारीख से हुई थी ?"

"नवम्बर की तीस तारीख से मैं इस कार्य में लगा था।"

"हाँ ! तो देखिए मिस्टर बैनर्जी, आपके बैंक में हिसाब की यह प्रतिलिपि है। दिसम्बर मास से लेकर आज मई मास तक आपके खाते में प्रतिमास सातसौ पच्चीस रुपये तो जमा हैं, पर खर्चे के लिये कुछ नहीं निकाला। क्या आप बता सकते हैं कि यह पाँच मास तक आपका खाना-पीना कहाँ से चलता रहा है ?"

"मैंने अपनी कुछ जायदाद बंगाल में बेची है। उससे खर्चा चलता रहा है।"

"ठीक है। उस जायदाद का पूरा विवरण आप यहाँ जमा करा सकते हैं क्या ?"

"उसका इस मुकद्दमे से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"अच्छा, यह बताइये कि श्रीमती मनमोहिनी और जेबुलनिसा के सामने ब्रिज खेलने का ताश मिला ?"

"इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया।"

"उनके सामने अथवा जेब में कोई रुपया निकला ?"

बैनर्जी चुप रहा।

"आपने मालूम किया कि कितनी गोलियां चली थीं ?"

"दो।"

"पिस्तौल में कितने चैम्बर खाली थे ?"

"दो।"

"शरीर में से कार्तूस कितने मिले ?"

"दोनों के शरीर में से एक-एक।"

"पर दो दिन पीछे एक कार्तूस चौकीदार ने बरामदे की दीवार से निकालकर आपको दिया था, क्या यह ठीक है ?"

"हाँ।"

"उसके विषय में आपने जाँच की कि वह कैसे और कहाँ से आया ?"

"वह हत्या की घटना के साथ सम्बन्ध रखता प्रतीत नहीं होता था।"

"आपने मिस्टर चोपड़ा से पूछा कि वे कितने बजे सोने चले गये थे?

"बारह बजे के लगभग।"

"घटना कितने बजे घटी ?"

"पौने एक बजे।"

"तो पौन घंटे में मिस्टर चोपड़ा इतनी गहरी नींद सो गये कि वह आँखें मलते हुए निकले ?"

"चौकीदार ने यही कहा है।"

"कोठी की तलाशी ली गई ?"

"किसलिये !"

"यह देखने के लिए कि कोई हत्यारा वहाँ छिपा है अथवा नहीं ?"

"नहीं।"

६

इस प्रकार घंटे के उपरांत घंटा और दिन के उपरांत दिन इन प्रश्नोत्तरों में व्यतीत होने लगे। श्री बेनर्जी के पश्चात् पुलिस इन्स्पेक्टर और पीछे कोठी के चपरासी के बयान हुए। श्रीमती मनमोहिनी के पति, जेबुलनिसा की मौसी, और मिस्टर सूरजमोहन के बयान हुए। अन्त में मिस्टर चोपड़ा के बयान हुए।

मुकद्दमे की प्रगति से जनसाधारण के मन में यह अंकित होता जाता था कि मिस्टर चोपड़ा इन हत्याओं से सम्बन्ध रखता है। इस कारण मिस्टर चोपड़ा के बयान के दिन अदालत का कमरा दर्शकों से तथा वकीलों से खचाखच भरा हुआ था। दर्शकों में शांता भी एक कोने में कुर्सी पर

चिंतित भाव बनाये बैठी थी।

मिस्टर नार्टन आज भली भाँति तैयार होकर आया था। उसने अपने सामने रखी फाइल को अदालत के बैठने से पहले भली भाँति देख लिया था। जब अदालत बैठ गई तो उसने अपने प्रश्न पूछने आरम्भ किये। मिस्टर नार्टन ने पूछाः—

"आपके कितने विवाह हो चुके हैं?"

"इसका मुकद्दमों के साथ कुछ सम्बन्ध नहीं। इस कारण मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता।"

"माई लार्ड! किसी मनुष्य द्वारा दूसरे की हत्या एक मानसिक कृत्य है। हत्यारे के मन की विकृत अवस्था का उससे की गई हत्या से सम्बन्ध होता है। मैं मिस्टर चोपड़ा के जीवन की घटनाओं से यह सिद्ध करना चाहता हूँ, कि उसमें विकार है और उस विकारयुक्त अवस्था में ऐसी-ऐसी परिस्थितियाँ आईं कि जिनका प्रभाव हत्या होने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता। इस कारण मैं यह प्रश्न पूछ रहा हूँ। यद्यपि इन घटनाओं का कोई सम्बन्ध नहीं, परन्तु जीवन की घटनाओं ने ऐसी मन की अवस्था बनाई है जिसमें हत्यायें हो गई हैं। मुझको प्रश्न पछने की स्वीकृति दी जावे।"

न्यायाधीश ने कहा, "हम मिस्टर नार्टन की कठिनाइयों को समझते हैं। वह बिना पुलिस की सहायता से इन नृशंस हत्याओं का रहस्योद्घाटन कर रहे हैं। इस कठिनाई का अनुभव करते हुए हम उसको स्वीकृति देते हैं कि वह जो उचित समझे पूछ सकता है।"

"हाँ, तो मिस्टर चोपड़ा! आपकी कितनी बीवियाँ हैं?"

"मैं उत्तर देने से इन्कार करता हूँ।"

"आपका पहला विवाह किस सन् में हुआ था?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपका दूसरा विवाह किस सन् में हुआ और कहाँ पर हुआ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपकी पहली स्त्री से कितनी सन्तानें हैं ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपकी लड़की की शादी दो मास हुए हुई थी क्या ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपको निमन्त्रण मिला था क्या ?"

कोई उत्तर नहीं दिया गया।

"आप विवाह पर नहीं गये थे न ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपने अपनी पहली बीवी में कोई आपत्तिजनक बात देखी है क्या ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपका दूसरा विवाह कोर्ट में हुआ था क्या ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

आपने मजिस्ट्रेट के सामने शपथ खाकर कहा था कि आपकी पहली कोई बीवी नहीं ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

"आपने दूसरी बीवी को स्विटज़रलैंड भेज दिया है न ?"

उत्तर नहीं दिया गया।

इस समय न्यायाधीश ने कहा, "मिस्टर चोपड़ा, इन सब बातों का उत्तर न देने से आपकी मानसिक अवस्था का एक भयानक चित्र बनता जाता है। मैं आपको सचेत कर रहा हूँ।"

इस चेतावनी से मिस्टर चोपड़ा घबरा उठा। उसका मुख विवर्ण हो गया और उसके होंठ फड़कने लगे। मिस्टर नार्टन ने इसे अपनी विजय समझ पुनः पूछा, "आपकी दूसरी बीवी स्विटज़रलैंड भेज दी गई है क्या ?"

"वह पागल हो गई थी।"

"तो उसको अकेले क्यों भेजा है ?"

"वह मुझसे लड़ती थी।"

"उससे आपके कितने बच्चे हैं ?"

"तीन।"

"सबसे बड़ा कितना बड़ा है ?"

"लगभग तेरह वर्ष का।"

"उसको आपने अपनी मां को मिलने से मना कर दिया था ?"

"हां, वह पागल हो गई थी।"

"माई लार्ड ! मैं आपका इतना समय लेने के लिए क्षमा चाहता हूं, परन्तु जो कुछ मैं आगे पूछना चाहता हूं यह उसकी पृष्ठभूमि है।"

इस पर उसने पुनः मिस्टर चोपड़ा से पूछना आरम्भ कर दिया।

"आपके बैंक के हिसाब में नवम्बर मास के अंत में तीस हज़ार कर्ज़ा लिखा है। क्या यह ठीक है ?"

"होगा।"

"नवम्बर और दिसम्बर मास में आपने चालीस हज़ार निकलवाया है। इसमें ग्यारह हज़ार तो आपने अपनी स्त्री को दिया था, शेष किसको और किस काम के लिए दिया था ?"

"मुझको याद नहीं कि मैंने क्या दिया था, और क्या लिया था।"

"पर इस चमत्कार को तो आप बता सकते हैं कि तीस हज़ार कर्ज़ा के स्थान बीस हज़ार जमा भी हो गया।"

"मुझको कुछ पता नहीं कि यह क्या हुआ ?"

"फिर एकाएक आपका बैंक-बैलेंस बढ़कर साठ हज़ार हो गया है, यह कैसे हुआ ?"

"मैं बता चुका हूं।"

"आपने बहुत से चैक जेबुलनिसा और मनमोहिनी को दिये हैं। ये किस बात के बदले में हैं ?"

"जूए में हार के रुपये होंगे।"

"जिस रात हत्यायें हुई थीं, उस रात आप कुछ हारे थे या जीते थे ?"

"जहाँ तक मुझको स्मरण है, मैं बराबर रहा था।"

"उस घटना के पश्चात् आपके यहाँ कुछ लोग एकत्र हुए थे या नहीं ?"

"नहीं।"

"पर आपका बैंक-बैलेंस निरन्तर कम होता गया है, यह क्यों ?"

"मेरी बीवी को रुपये की ज़रूरत पड़ती रही है।"

"किस बीवी को ?"

मिस्टर चोपड़ा घबरा उठा था। इस पर भी मन को दृढ़ करते हुए बोला, "जो स्विटज़रलैंड गई हैं ?"

"यह रुपया आप किस सूरत में भेजते थे। बैंक-ड्राफ्ट से अथवा दस्ती ?"

इस पर मिस्टर चोपड़ा के माथे पर पसीने की बूंदें दिखाई देने लगीं। मिस्टर नार्टन ने मिस्टर चोपड़ा को चुप देख अदालत से कहा, "गवाह थक गया मालूम होता है। यदि इसको एक ग्लास पानी का मिल जाय तो यह मेरे प्रश्नों का सही उत्तर अधिक अच्छी तरह दे सकेगा।"

एक ग्लास पानी पीकर मिस्टर चोपड़ा ने नार्टन के प्रश्न के उत्तर में कहा, "मैंने अपनी बीवी को सीधे रुपया नहीं भेजा। सैनिटोरियम के डाक्टर मिस्टर शच्यूमैन की मार्फत भेजा है। उसका पता है, मैन्टल सैनिटोरियम बर्न।"

"हत्या की रात मनमोहिनी और ज़ेबुलनिसा के पास कितना-कितना रुपया था ?"

"मनमोहिनी और ज़ेबुलनिसा के पास कम-से-कम हज़ार रुपया था, जब मैं उनको खेलते हुए छोड़कर सोने गया था। वह रुपया कहाँ गया मैं नहीं जानता। मैंने केवल एक गोली का शब्द सुना। पहली गोली का शब्द शायद मेरे जागने से पहले हुआ हो। जब मैं चौकीदार के हल्ला करने पर ड्राइंग रूम में आया, तब नीचे मनमोहिनी थी और ऊपर ज़ेबुलनिसा। पिस्तौल पृथक् हटकर पड़ा था।"

मिस्टर चोपड़ा के पश्चात् शान्ता के बयान हुए। उसने अपने विवाह की कथा वर्णन की और फिर घर से निकाले जाने की बात बताई। पश्चात् उसके लड़के प्रेमनाथ के पकड़े जाने और फौज में भर्ती हो जाने की कथा बताई। उसने यह भी बताया कि बीस रुपया मासिक खर्च वह कई वर्षों से नहीं ले रही। अन्त में उसने प्रेमनाथ के पत्र जो बर्न से आये थे सुना दिये। अन्तिम पत्र में प्रेमनाथ ने लिखा था, "यहाँ मैन्टल सैनिटोरियम नामक कोई संस्था नहीं। डाक्टर शच्यूमैन नाम का बर्न में कोई व्यक्ति नहीं रहता। यहाँ की पुलिस खोज रही है और आज ही यहाँ के पुलिस इन्स्पेक्टर ने मुझे विश्वास दिलाया है कि वह मिसेज चोपड़ा का पता पाए बिना शान्ति से नहीं बैठेगा। वे उस आदमी का पता पा गये हैं जो डाक्टर शच्यूमैन के नाम से हिन्दुस्तान से रुपया पा रहा है।"

७

इन सब बयानों को लेने में अदालत को डेढ़ मास से अधिक लग गया। मिस्टर चोपड़ा के बयान होने के पश्चात् उसको सरकार ने अपनी पदवी पर काम करने से रोक दिया था। उसको सैक्रेटरी आफ स्टेट का यह पत्र मिला था, "चूंकि आपके विरुद्ध भारी आरोप हैं और उन आरोपों के विषय में पंजाब हाईकोर्ट में जांज हो रही है, इस कारण आपको नौकरी करने से, बिना वेतन के रोका जा रहा है। मुकद्दमे के निर्णय के पश्चात् आपको नौकरी पर पुनः लगाने पर भी विचार किया जायेगा।"

उसी दिन हाईकोर्ट ने मिस्टर चोपड़ा को पकड़ने के लिए वारंट निकाले थे। चोपड़ा लाहौर से भाग गया, परन्तु एक झूठे नाम से बम्बई में एक जहाज पर सवार होता हुआ पकड़ लिया गया। वह पकड़ कर लाहौर में लाया गया और अदालत में उपस्थित किया गया।

मिस्टर चोपड़ा ने मिस्टर सूरजमोहन का अपना वकील नियुक्त किया। मिस्टर नार्टन ने इस मुकद्दमे में तीन दिन तक बहस की। उसके

वक्तव्य का निष्कर्ष यह था कि "मिस्टर चोपड़ा अपनी छोटी अवस्था से ही अपराधी है। छोटी-छोटी बातों को छोड़कर भी उसने मिस ऐमिली जान्सन को यह धोखा दिया कि उसका पहले कोई विवाह नहीं हुआ था और उसकी पहले कोई पत्नी नहीं थी। मिस्टर चोपड़ा ने लन्दन के मैजिस्ट्रेट के सम्मुख झूठ बोला। दूसरा अपराध यह किया कि पहली बीवी को जिसके दो बच्चे थे, केवल बीस रुपये महीना देकर घर से निकाल दिया। ज्यूं-ज्यूं मिस्टर चोपड़ा बड़े होते गये उनकी दिमागी हालत बिगड़ती गई और मिसेज़ ऐमिली चोपड़ा के इनके ठीक रास्ते पर लाने के प्रयत्न करने पर उसके भी विरुद्ध हो गए। यहाँ तक कि उसको पागल घोषित किया और उसको बच्चों से भी मिलने से मना कर दिया। अन्त में बच्चों की मां को स्विटजरलैंड में एक मेन्टल हौस्पिटल भेजने के बहाने उसको चरित्रहीन लोगों के हाथ सौंप दिया। मिस्टर शच्यूमैन को मिस्टर चोपड़ा रुपया भेजते हैं, इस कारण कि वह उसकी बीवी को कहीं कैद कर रखे।"

"मिसेज ऐमिली चोपड़ा के हिन्दुस्तान से जाने के पहले ही मिस्टर चोपड़ा की संगत नगर के बुरे चरित्र के लोगों से हो गई थी। ऐसा मालूम होता है कि इनकी अंग्रेज बीवी इन शराब पीनेवालों और जूआ खेलने वालों का कोठी में आना पसन्द नहीं करती थी। तभी उसको यहां से भगा देने का प्रबन्ध कर दिया गया।"

"मिसेज ऐमिली चोपड़ा के यहाँ से चले जानेपर जूएबाजों का प्रभाव मिस्टर चोपड़ा पर बढ़ गया और वे लोग इससे अधिक और अधिक रुपया खेंचने लगे। एक सीमा आई जब मिस्टर चोपड़ा इन जूएबाजों का और अधिक रुपया देने में असमर्थ हो गए और उसी असमर्थता का परिणाम ये हत्यायें हुईं।"

"माई लार्ड! यहाँ तक तो बात सर्वथा स्पष्ट हो गई है। मिस्टर चोपड़ा को हत्याओं के होने का ज्ञान था। और उसकी इनके होने में सहायता भी थी। जो बात अभी तक सिद्ध नहीं हो सकी वह यह है कि

पिस्तौल किसने चलाया। मृतों में से किसी ने पिस्तौल चलाया है ऐसा सिद्ध नहीं होता। इसके विपरीत पिस्तौल का एक दम दो बार चलने और शायद तीन बार चलने से यह सिद्ध होता है कि मृतों में से किसी ने भी पिस्तौल नहीं चलाया।"

"पिस्तौल किसी मृत के हाथ में नहीं था। वह दूर पड़ा था। और मृतों के दाहिनी ओर नहीं बाईं ओर पड़ा था। साथ ही तीसरी गोली किसने चलाई यह भी बात स्पष्ट नहीं हुई। इस पर भी इतना तो स्पष्ट हो गया है कि मिस्टर चोपड़ा इंडियन क्रिमिनल कोड की धारा १०८, हत्या करने में सहायता करने का अपराधी है। इसको धारा १०८ और ३०२ के अधीन सैशन कोर्ट में जाँच के लिए भेज देना चाहिए।"

इसके पश्चात् मिस्टर सुरजमोहन ने मिस्टर चोपड़ा की रक्षा में बहस की। उसका कहना था कि मिस्टर चोपड़ा का अपनी स्त्रियों से कैसा व्यवहार है, वह इस मुकद्दमे से सम्बन्ध नहीं रखता। जहाँ तक उसकी आय और व्यय की बात है वह उसकी अपनी निज की बात है। इन हत्याओं से उसका सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका। कोई नहीं जानता कि गोली किसने चलाई है? मिस्टर चोपड़ा को उस गोली चलाने वाले का पता था, यह सिद्ध नहीं हो सका। इस प्रकार मिस्टर चोपड़ा किसी प्रकार से भी दोषी सिद्ध नहीं हो सके और अदालत को उनको मुक्त कर देना चाहिये।

परन्तु अदालत का निर्णय मिस्टर नार्टन के अनुकूल ही हुआ। अदालत ने इतना और कहा कि लाहौर का डिप्टीकमिश्नर जैसा उत्तर-दायित्व पूर्ण पदाधिकारी इतनी भूलें अनजाने में करे जिससे उसकी कोठी में दो-दो हत्यायें हो जायें, समझ में नहीं आता। फिर मृतों के पास न तो ताश मिली न रुपया, यह प्रकट करता है कि वे वहाँ पर जूआ नहीं खेल रही थीं। यह अधिक सम्भव प्रतीत होता है कि वे मिस्टर चोपड़ा से रुपया मांग रही थीं और मिस्टर चोपड़ा ने गोली मारकर मार डाला। इन औरतों के साथ कोई तीसरा आदमी था, जो भागा है और उसको

मार डालने के लिये तीसरी गोली चलाई गई थी। वह आदमी भाग गया है। उसके पाप इतने अधिक हैं कि खुले में अपना नाम प्रकट करने से डरता है।

इस तमाम मुकद्दमे में जो सबसे अधिक दुःख की बात है वह यह कि पुलिस ने अपराधी को पकड़ने का कुछ भी यत्न नहीं किया। यह भी शायद इस कारण है कि जिले का बड़ा हाकिम ही अपराधी है। हम मिस्टर चोपड़ा को सैशन कोर्ट में मुकद्दमे की आगे की जाँच के लिए भेजते हैं। हमारे विचार में अपराधी ने इंडियन पीनल कोड की धारा १०८, ३०२ और ३०३ के अनुसार अपराध किये हैं।

मुकद्दमा सैशन कोर्ट में गया। मिस्टर चोपड़ा को अब अपनी जान की चिन्ता होने लगी। इस कारण उसने कलकत्ता और इंगलैंड से वकीलों को बुला लिया। और वह अपनी सफाई का प्रबन्ध करने लगा।

मिस्टर चोपड़ा का धन धड़ाधड़ व्यय होने लगा। वकील, साक्षी, जेल के अफसरों, पुलिस के अफसरों को रिश्वत और अन्य अनेकों प्रकार के व्यय होने लगे। आमदन शून्य हो गई। मिस्टर चोपड़ा ने पचास हज़ार की बीमा पालिसी ली हुई थी। वह पेडअप करनी पड़ी। पश्चात् उस पालिसी पर रुपया उधार लेना पड़ा। मुकदमा समाप्त होने तक मिस्टर चोपड़ा अपनी सब सम्पत्ति व्यय करके मित्रों से चन्दे इकट्ठे कर भी व्यय कर चुका था।

इस सब कुछ व्यय करने का फल कुछ नहीं निकला। मुकद्दमा ढीला होने के स्थान सैशन कोर्ट में जाकर और भी दृढ़ हो गया। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मिस्टर शच्यूमैन के नाम से एक व्यक्ति के उन्हीं दिनों नीडोज़ होटेल में ठहरे होने की सूचना मिल गई।

उस आदमी की लाहौर में उपस्थिति, हत्या के दिन एक महान् खोज मानी गई। परन्तु वह आदमी उस दिन कोठी में था, यह सिद्ध नहीं हो सका। मिस्टर चोपड़ा के लिये इस बात का पता होना बुरा ही सिद्ध हुआ। इस सन्देह के होने पर कि गोली चलानेवाला शच्यूमैन

था, मिस्टर चोपड़ा की हत्याओं में सहायता सिद्ध हो जाती थी। इस कारण जहाँ नार्टन का पूर्ण बल इस बात पर था कि वह ढूंढ़ा जाये, वहाँ चोपड़ा के वकील मिस्टर शच्यूमॅन के लाहौर होने की घटना को अनावश्यक बताने में जोर देने लगे।

मुकद्दमा अभी सैशन कोर्ट में चल ही रहा था कि जनेवा से ऐमिली का तार आ गया। उसमें लिखा था कि वह कहे जाने वाले शच्यूमॅन के पंजे से छूट गई है। वह आदमी भी पकड़ लिया गया है।

८

अमृतसर स्टेशन पर प्रेमनाथ का उस सिख सिपाही के साथ जिसने इन्द्रा का हाथ पकड़कर घसीटा था, लड़ने के लिये तैयार हो जाना उसकी ख्याति का कारण बन गया। इस पर उस रेजिमेंट के कप्तान को जब यह पता चला कि वह लाहौर के डिप्टी कमिश्नर का लड़का है, तो उसकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ गई।

उस सिख सिपाही को जिसने इन्द्रा पर हाथ उठाया था दो दिन तक जेर-हिरासत में रहने का दंड दिया गया। पश्चात् प्रेमनाथ अपनी कहानियाँ सुनाने की योग्यता से दिन प्रतिदिन विख्यात होने लगा। जब तक रेजिमेंट मारसेल्ज पहुँची प्रेमनाथ अपनी रेजिमेंट में सब का प्रिय, विश्वस्त और सम्मानित हो चुका था।

मारसेल्ज में पहुँचने के दिन ही युद्ध-विराम सन्धि पर हस्ताक्षर हुए थे। इस कारण प्रेमनाथ वाली रेजिमेंट को अन्य कई रेजिमेंटों के साथ वहीं ठहरने की आज्ञा आ गई।

विजयोत्सव वाले दिन, प्रेमनाथ वाली रेजिमेंट को नगर में घूमने की छुट्टी मिली। सब सिपाहियों को उस दिन जेब खर्च के लिये रुपये मिले, इस कारण रेजिमेंट के सिपाहियों की टोलियाँ नगर की सजावट और उत्सव देखने के लिये घूमने लगीं।

प्रेमनाथ वाली टोली में चार सिपाही थे। इनमें एक बसाखासिंह

सिपाही था जिसकी प्रेमनाथ के साथ घनिष्ठता बहुत हद्द तक बढ़ गई थी। प्रेमनाथ बसाखासिंह की बाँह में बाँह डालकर मारसेल्ज की गलियों में चल निकला।

मारसेल्ज में उस दिन छुट्टी मनाई गई थी। लोग बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, युवक, युवतियाँ नये-नये कपड़े पहन झुंडों-के-झुंड गाते-बजाते, नाच-रंग मनाते, हँसी-मजाक करते हुए सड़कों पर, पार्कों में, समुद्र-तट पर तथा अन्य दर्शनीय स्थानों पर घूम रहे थे।

उस दिन फ्रांस भर में अमेरिकन और हिन्दुस्तानी सिपाहियों की भारी मान-प्रतिष्ठा थी। सब के अन्तरात्मा यह मानते थे कि उनके देश की ईंट से ईंट बजाने से बचानेवाले यही सिपाही थे। फ्रांस के नगर-नगर और गाँव-गाँव में जहाँ-जहाँ इन देशों के सिपाही दिखाई दिये, वहाँ के लोगों ने उनको खिलाया-पिलाया और वहां की स्त्रियों ने उनके साथ नाच किया और उनकी बहादुरी पर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। मारसेल्ज में भी हिन्दुस्तानी सिपाहियों की बाँहों में बाहें डाल वहाँ की स्त्रियों ने सिपाहियों को मारसेल्ज़ के दर्शनीय स्थानों की सैर कराई।

प्रेमनाथ और बसाखासिंह घूमते हुए, 'सी बीच' पर पहुँच गये। वहाँ लोगों की इतनी भीड़ थी कि वे अपने साथियों से पृथक् हो गये। समुद्र के तट पर एक खुले मैदान में एक बैंड बज रहा था। और सब लोग मानयुक्त मुद्रा में खड़े उस बैंड के साथ गीत के पद गा रहे थे। प्रेमनाथ भी अपने साथी के साथ वहाँ जा खड़ा हुआ। और लोगों को एक अतुल उत्साह से यह गीत गाते देख समझ गया कि यह कोई राष्ट्रीय भावना का गीत है।

गीत समाप्त हुआ तो बैंड ने कोई नाच की ध्वनि बजाई। इसके बजते ही सहस्रों नर-नारी परस्पर कमर में हाथ डाल नाच करने लगे। एक बहुत मोटी फ्रांसीसी औरत आई और इनको फ्रांसीसी भाषा में कुछ कहने लगी। जब प्रेमनाथ और बसाखासिंह विस्मय में उसके कहने का अर्थ समझने का यत्न करने लगे, तो उस औरत ने बसाखासिंह को दूसरे

नाचते हुए जोड़ों की ओर संकेत किया और उसकी कमर में हाथ डाल उसको नाचने के लिये ले गई। प्रेमनाथ बसाखासिंह की वेढंगी गति और घबराहट को देख खिलखिला कर हँसने लगा। अन्य लोग भी उस मोटी स्त्री को झल्ले बसाखासिंह के साथ बेमिले कदमों के साथ चक्कर काटते देख, हँसने लगे। वह औरत जबरदस्त प्रतीत होती थी। दो-तीन चक्करों में ही बसाखासिंह उस औरत के साथ भीड़ में विलुप्त हो गया।

प्रेमनाथ अकेला खड़ा-खड़ा लोगों को विजयोत्सव के आनन्द में पागलों की भाँति नाचते-कूदते देख बहुत ही विस्मय कर रहा था। इस समय एक लड़की उसके पास आई और अंग्रेजी में बोली, "आई शैल बी ग्लैड टु हैव ए टर्न विद यू।"

पहले तो प्रेमनाथ ने समझा कि वह किसी अन्य व्यक्ति को, जो उसके पीछे खड़ा है, कह रही है। उसने घूमकर देखा कि वह किस को कह रही है। उसके पीछे कोई खड़ा नहीं था। उसके सब साथी इस समय किसी न किसी साथिन को पा गये थे। उसकी इस परेशानी को देख वह लड़की हँसकर बोली, "आई एम स्पीकिंग टु यू।"

प्रेमनाथ ने अब उस लड़की को देखा, वह सर्वथा कुमारी सोलह-सत्रह वर्ष की प्रतीत होती थी। प्रेमनाथ ने कठिनाई से अपनी झिझक निकाल कर कहा, "मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। पर मैं नाचना नहीं जानता।"

"तो इस इतने बड़े जन-समूह में और कौन जानता है? सब बेताल नाच-गा रहे हैं।"

इतना कह उसने अपना हाथ उसकी कमर में डाल दिया और दूसरे हाथ को पकड़कर नाचने के लिये उसको घुमाने लगी। विवश प्रेमनाथ ने भी उसकी कमर में हाथ डाल उसकी नकल उतारनी शुरू कर दी। दो मिनट में ही प्रेमनाथ के मस्तिष्क में बाजे की ध्वनि और लय समा गई और उसको अपने नाचने पर स्वयं ही विस्मय होने लगा।

पाँच मिनट तक बैंड बजता रहा और इतने काल में तो प्रेमनाथ इस प्रकार के कम्युनिटी डांस में अपने को नाच जाननेवाला समझने लगा।

जब बैंड बन्द हुआ तो उस लड़की ने कमर से हाथ निकाल लिया और मुस्कराती हुई उसकी आँखों में देखने लगी। प्रेम ने उसकी आँखों में एक विशेष ज्योति देखी तो उसके पूर्ण शरीर में रोमांच हो आया। प्रेमनाथ को चुपचाप कृतज्ञता के भाव में अपनी ओर देखते हुए उस लड़की ने कहा, "आप तो स्वर-लय को समझते प्रतीत होते हैं।"

"मैं आपका कृतज्ञ हूँ। यह तो आपकी कृपा है। वास्तव में मेरे लिये नाचने का जीवन में यह प्रथम अवसर है।"

"आपके देश में क्या लोग नाचते-गाते नहीं ?"

"हमारे यहाँ लोग गाते हैं। कहीं-कहीं नाचते भी हैं, परन्तु पुरुष-पुरुषों के साथ और स्त्रियाँ-स्त्रियों के साथ नाचती हैं।"

इस समय सब लोग इधर-उधर घूमने लगे थे। उस लड़की ने प्रेम की बाँह में बाँह डाल कर कहा, "आओ, समुद्र तट तक चलें। फिर जब बैंड बजेगा तो नाचने आवेंगे।"

प्रेमनाथ उसके साथ चलता हुआ बोला, "आप अंग्रेज़ी बोलती हैं, जो यहाँ एक विचित्र बात है।"

"नहीं ! मारसेल्ज़ में कुछ अंग्रेजी व्यापारी भी रहते हैं। मेरी माँ उनमें से एक की लड़की है। मैं एक फ्रांसीसी पत्र के सम्पादक की लड़की हूँ। मैंने अंग्रेजी माँ से पढ़ी है और फ्रांसीसी अपने पिता से। हिन्दुस्तानी सिपाहियों में भी तो कम हैं, जो अंग्रेज़ी बोल सकते हैं। मेरा विचार है कि आप अपनी फौज में कोई अफसर हैं।"

"नहीं, मैं एक साधारण सिपाही हूँ। परन्तु कुछ पढ़ा-लिखा हूँ।"

"आपने फ्रांस तो भली भाँति देख लिया होगा ?"

"नहीं ! हमारी रेजिमेंन्ट को यहाँ पहुँचे अभी पन्द्रह दिन के लगभग हुए हैं। जिस दिन हमारा जहाज़ यहाँ पहुँचा था, उसी दिन युद्ध बन्द होगया था। तब से हम लोग यहीं पड़े हैं।"

उस समय ये समुद्र तट पर जा पहुँचे थे। समुद्र सर्वथा शान्त था और उसकी छोटी-छोटी लहरें जहाँ ये खड़े थे, पाँवों को आकर छू रही

थीं। नाल वर्ण समुद्र का विशाल दृश्य देखने को असंख्य लोगों की भीड़ खड़ी थी। समुद्र की छाती पर दूर जंगी जहाज़ खड़े इस विशालकाय सागर पर खिलौने मात्र प्रतीत होते थे। बाईं ओर माल उतारने और लादने के लिए गोदियाँ बनी थीं और वहाँ पर कई जहाज़ लंगर डाले पड़े थे।

लड़की उसको घसीटती हुई एक स्टाल पर ले गई, जिसमें काफी और मिठाई बिक रही थी। "आप काफी पीजियेगा! उसने पूछा।"

"मैंने आज तक नहीं पी। कैसी होती है?"

"आइये! देखिये कैसी होती है।"

"दोनों स्टाल पर जा खड़े हुए। कुछ मिठाई और एक-एक प्याला काफी का सामने रख लिया। काफी पीकर प्रेम ने कहा, "अजीब स्वाद है इसका?"

"हाँ! इससे शरीर की थकावट दूर होती है और चित्त में स्फूर्ति आती है।"

प्रेमनाथ ने अनुभव किया कि सत्य ही यह चित्त को स्थिर करने वाली वस्तु है। इस समय साहस कर उसने लड़की की ओर देखा। उसे उसमें कुछ विशेष आकर्षण प्रतीत हुआ। इसने अन्य लड़कियों की तरह शृङ्गार नहीं किया हुआ था। कपड़े भी साधारण परन्तु साफ-सुथरे पहने हुए थे।

जब काफी पी चुके तो प्रेमनाथ ने दाम देना चाहा, परन्तु उसने देने नहीं दिया। उसने कहा, "आज फ्राँसीसी जाति हिन्दुस्तानियों और अमरीकनों का आतिथ्य कर रही है। हम लोग आपका, हमारी भीर के समय सहायता करने के लिए, सत्कार कर रहे हैं।"

प्रेमनाथ चुप रहा। उस लड़की ने दाम दिया ही था कि नाच के मैदान में बैंड बजने लगा। लड़की ने कहा, "चलो, नाचें।"

दोनों बाँह में बाँह डालकर उस ओर चल पड़े। मार्ग में प्रेमनाथ ने पूछा, "आपको नाचना बहुत प्यारा लगता है?"

"यह हमारे जीवन का एक अंग है। कोई ऐसा अवसर, जिसमें नाचने

को मिले हम छोड़ना नहीं चाहते ।"

"पर मेरे जैसे भद्दे आदमी के साथ नाचने में आपको क्या आनन्द आता होगा ?"

"यह भी एक मज़ा है। पर आप गीत को लय को समझते हैं। इस कारण कुछ वुरा प्रतीत नहीं होता।"

जब वे नाच रहे थे, तो प्रेम की दृष्टि बसाखासिंह की ओर गई। वह अभी भी उस मोटी औरत के साथ लटकता हुआ-सा घूम रहा था। जब प्रेमनाथ नाचता हुआ उसके पास पहुँचा तो उसने पंजाबी में कहा, "प्रेम भापा ! मेरा साथी तुम्हारे से जबरदस्त है।"

"बाबा ! तुम भी मेरे से जबरदस्त हो।"

इस पर दोनों हँसने लगे। जब बसाखासिंह की साथिन उसको घसीटती हुई कुछ दूर ले गई, तो प्रेम की साथिन ने पूछा, "क्या कहता था आपका साथी ?"

"आपके शील और सौन्दर्य की प्रशंसा करता था।"

इससे उस लड़की का मुख लज्जा से लाल हो गया। कुछ देर तक दोनों इस बात का विचार करते रहे। प्रेम मन में सोच रहा था कि यह क्या कह दिया है उसने ? कुछ काल में लड़की ने अपने चित्त के संतुलन को ठीक कर पूछा, "और आप मेरे विषय में क्या समझते हैं ?"

"सत्य बताऊँ ?"

"हाँ।"

"बिल्कुल आपकी आयु और लम्बाई-चौड़ाई की मेरी एक बहन है। मैं तो जब आपकी ओर देखता हूँ तो आप मुझको वही मालूम होती हैं। वह मुझको बहुत प्यारी है।"

इस मूक प्रशंसा और स्नेह के भाव को सुन उस लड़की के शरीर में रोमांच हो आया। उसका मन पुनः मनोद्गारों से भर गया और तरल हो उठी। उसके मुख से केवल यह निकला, "बहुत अच्छे हैं आप। क्या मैं आपका नाम जान सकती हूँ ?"

"हाँ ! क्यों नहीं ?" प्रेम ने अपना नाम बताया तो उस लड़की ने भी अपना नाम और पता दे दिया। उसने कहा, "मेरा नाम है मिली-डी-ला-म्यूरी।" इसके पश्चात् उसने अपने घर का पता बताया।

इस बार नाच बन्द होने पर म्यूरी प्रेम को उस भीड़ से बाहर ले गई। उसने कहा, "यदि आपको आपत्ति न हो तो किसी पार्क में चलें। वहाँ कुछ समय तक बैठेंगे।"

प्रेम ने आपत्ति नहीं उठाई। वह चुपचाप उसके साथ चल पड़ा। वहाँ से वे एक ट्राम कार में चढ़ कर दूर जा पहुँचे।

५

उस पार्क में एक बेंच पर बैठ मिली म्यूरी ने अपना जीवन-इतिहास सुना दिया। वह बहुत थोड़ा और सरल था। उसने बताया, "मेरा पिता पत्रों में संवाद भेजा करता है और उसी से अपनी जीविकोपार्जन करता है। माँ एक अंग्रेज सौदागर की लड़की है और अपनी निजी आय रखती है। माता-पिता दोनों अपनी-अपनी आय पर निर्वाह करते हैं, और बहुत प्रेम से रहते हैं। मैं भी अब एक दुकान पर नौकरी करती हूं और अपना निर्वाह स्वयं कर सकती हूं। मैं माँ के पास रहती हूं परन्तु अपना बोर्ड तथा लौजिंग का खर्चा देती हूँ। हमारी दुकान में बहुत अंग्रेज ग्राहक आते हैं और मैं उनसे अंग्रेजी में बात करती हूं। इससे मुझको अंग्रेजी का अच्छा अभ्यास हो गया है।"

"मेरे मन में यह इच्छा थी कि किसी अमरीकन अथवा हिन्दुस्तानी सिपाही का मनोरंजन कर अपने देश के उनके प्रति ऋण को कम करने का यत्न करूं; परन्तु यह दाढ़ी-मूंछ वाले हिन्दुस्तानी देख मैं डरती थी, कि कहीं ये लोग मुझको कच्चा ही न चबा जावें, फिर आप दिखाई दिये पर आपके साथ भी एक दाढ़ी वाला सिपाही था इस कारण आपको समीप से देखती रही, परन्तु आपसे बात करने का साहस नहीं कर सकी। इतने में वह मोटी औरत आपके साथी को ऐसे पकड़कर ले गई मानो

किसी बैल को गले में कोई रस्सा डाल कर ले जाता है। तब मैंने आपके पास आ बातें करने का साहस किया। मैंने अंग्रेजी में बात इस कारण की थी कि कोई शब्द तो आप समझ ही सकेंगे। मुझको यह देख बहुत ही प्रसन्नता हुई कि आप अंग्रेजी बोल भी सकते हैं।"

प्रेमनाथ ने भी अपना परिचय दे दिया। उसने इस बात पर विशेष बल दिया कि वह बहुत ही निर्धन है, उसकी माता मेहनत कर अपना निर्वाह करती है। मिलो न इस सब कथा को सुनकर और बिना इस ओर ध्यान दिये कि वह निर्धन है, कहा, "आप अपनी बहिन इन्द्रा के विषय में बतायें। क्या वह सुन्दर है?"

"हाँ, इतनी ही जितनी आप हैं।"

"तब तो कुछ भी नहीं।"

"मैं समझता हूँ वह लाखों में एक है। यदि मैं दिखा सकता तो आपको पता चलता।"

"तो दिखा क्यों नहीं सकते?"

"वह यहाँ से सात हजार मील दूर है। मैं यह स्वप्न में भी आशा नहीं कर सकता कि उसको यहाँ ला सकूँगा।"

"उसको नहीं ला सकते तो मुझको ही ले चलिये। आपकी बहिन, जो लाखों में एक है, को देखने की लालसा मेरे मन में जाग उठी है।"

"बात तो वही हुई। जब उसको नहीं ला सकता तो आपको कैसे ले जा सकता हूँ?"

'मैं तो स्वयं आपके साथ चल सकती हूँ। मेरे पास कुछ धन जमा हो गया है।"

"यहाँ से जाने में कितना टिकट लगता होगा?"

"मैं पता कर लूँगी। आप ले चलेंगे क्या?"

'जब आप साधन-सम्पन्न हैं, तो फिर मुझ से पूछने की क्या बात है?"

"मेरे पास जाने भर के लिये होगा, पर वापिस लौटने के लिये कुछ

नहीं होगा ।"

"तब तो बहुत कठिनाई होगी । मेरा वेतन तो केवल निर्वाह के लिये ही हो सकेगा । शेष बचता ही कुछ नहीं ।"

"तो मैं सोचती हूँ कि वहाँ ही रह जाऊँगी । आपकी बहिन, जो एक चमत्कार है, को जो देखना है ?"

प्रेमनाथ उसके इस कहने को हँसी समझ कहने लगा, "मैं हृदय से चाहता हूँ कि ऐसा हो सके ।"

"क्या हो सके ?"

"यही कि आप हिन्दुस्तान में चलें, और फिर वहाँ से वापिस आना न चाहें ।"

"इससे आपको क्या मिलेगा ?"

"हमारे देश में अच्छे लोग कम हैं । उनमें एक की वृद्धि होगी । यह एक भारी लाभ की बात होगी । मैं एक अंग्रेज औरत को जानता हूँ और वह भी हिन्दुस्तान में गई और अब उस भूमि को पवित्र कर रही है ।"

"आपकी क्या हैं वह ?"

"मेरी माता-तुल्य हैं । वहाँ उनको कष्ट है पर वे हिन्दुस्तान को छोड़ना नहीं चाहतीं । ऐसा प्रतीत होता है कि वे वहाँ की मिट्टी में ही रंग गई हैं । उनमें और किसी भी श्रेष्ठ भारतीय महिला में अन्तर नहीं रहा ।"

इस प्रकार से बातें चलती रहीं । रात के खाने के समय मिली उसको एक रैस्टोंरा में ले गई । वहाँ उन्होंने इकट्ठे भोजन किया और पश्चात् वे वहाँ से बाहर निकल फौजी कैम्प की ओर चल पड़े । मार्ग में मिली उसको पुनः मिलने के लिये कहने लगी ।

"दिल तो चाहता है । आपसे मिलकर चित्त बहुत प्रसन्न हो रहा है । मैं अपने को सौभाग्यवान् समझता हूँ कि आपसे परिचय हुआ है, परन्तु आपका समय व्यर्थ न जाये और साथ ही मैं तो पराधीन हूँ । मैं

नहीं जानता कि कल इस नगर में रहूँगा भी या नहीं।"

"यदि आपको आपत्ति न हो तो कल सायं चाय के समय इसी रैस्टोरां में आ जायें। मैं ठीक पांच बजे वहाँ मिलूंगी। यदि न आ सके तो यह मेरे पिता का पता है, इस पते पर आप लिख सकते हैं। आपका समाचार पाकर मुझको बहुत ही प्रसन्नता होगी।

प्रेमनाथ जब तक उस नगर में रहा, मिली म्यूरी से मिलता रहा। यह एक निश्चित कार्यक्रम हो गया था कि दोनों सायं की चाय इकट्ठे पीते थे। और फिर समुद्र तट पर घूमने जाते थे और रात का भोजन कर पृथक्-पृथक् हो जाते थे।

प्रेमनाथ इटली की सैर को गया तो रोम में उसकी ऐमिली से भेंट हुई और वहां से लौटने पर वह अपने मस्तिष्क में छुट्टी लेने की योजना से भर रहा था। इस कारण आने पर उसने पत्र भेजकर मिली म्यूरी को सूचना भेजी और सायंकाल उससे मिलने गया। दोनों मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और उस सायंकाल वे बहुत देर तक बातें करते रहे। प्रेमनाथ ने अपनी इटली-यात्रा का वर्णन करते हुए कहा, "मैंने आपसे एक अंग्रेज औरत का उल्लेख किया था। याद है आपको?"

"हां! जो आपकी माता-तुल्य हैं। ठीक है न?" मिली ने मुस्कराते हुए कहा।

"हां! वे आजकल योरुप आई हुई हैं। मैं उनसे रोम में मिला था। यदि यहाँ से छुट्टी मिली तो उनसे मिलने के लिये बर्न जाऊँगा और फिर कुछ समय तक उनके साथ रहूँगा।"

"तो मैं आपकी मां-तुल्य उन महिला के दर्शन कर सकूंगी।"

"मुझको विश्वास है कि उनको आपसे मिल कर भारी प्रसन्नता होगी।"

"सत्य? आप किसी दूसरे की बात कैसे जानते हैं?"

"वे बहुत ही कोमल हृदय रखती हैं। उनकी मुझ पर बहुत ही कृपा है।"

"आपका कोई सम्बन्ध है उनके साथ ?"

"हां ! वे मेरे पिता की दूसरी पत्नी हैं।"

"ओह !" मिली का मुख खुला का खुला रह गया।

"हाँ, हमारे देश में एक पुरुष एक ही समय नें एक से अधिक पत्नियाँ रख सकता है।"

"सत्य ? यह तो जंगलीपन है।"

"हां ! परन्तु ऐसा है। और मेरे पिता ने दूसरा विवाह भी किया था।"

"तो आपकी मां ने तलाक क्यों नहीं दे दिया ?"

"तलाक का वहाँ रिवाज नहीं। हमारे यहां औरतें सब प्रकार का कष्ट सहन कर लेती हैं पर एक बार विवाह हो जाने पर पति को तलाक नहीं देतीं।"

"और पति तलाक दे दे तो ?"

'कानून से तो वह भी तलाक नहीं दे सकता, पर हां, पति-पत्नी परस्पर सम्बन्ध-विच्छेद कर सकते हैं। पत्नी दूसरा विवाह नहीं कर सकती परन्तु पति कर सकता है।"

"मैं तो इस प्रथा को पसन्द नहीं करती।"

"मेरी विमाता भी जब हिन्दुस्तान में गई थीं एसा ही मानती थीं, परन्तु अब तो वे मेरी माता को पुनः पिता जी के घर ले जाने का यत्न करती थीं।"

"सत्य ? बहुत विचित्र औरत है।"

"हां ! बहुत ही विचित्र है।"

प्रेमनाथ को छुट्टी लेने में दो मास लग गये। उसको बिना वेतन से छुट्टी मिली। कुछ रुपया शेष वेतन का लेकर वह बर्न जाने को तैयार हो गया। जाने से पूर्व वह मिली से मिलने गया। मिली ने उसको तैयार देख कहा, "तो आप अपनी विमाता के पास जा रहे हैं ?"

"हां ! चलो, आपको भी ले चलूं।"

"इस प्रकार नहीं। आप वहाँ जाइये, उनसे पूछकर लिखियेगा कि वे क्या कहती हैं। मैं एक बार वहाँ गई तो फिर लौटकर मारसेल्ज नहीं आऊँगी ? उनके साथ ही रहना चाहूँगी।"

"ओह ! क्यों, बिना जाने-बूझे ही उनसे प्रेम हो गया है क्या ?"

"यदि आपका कहना ठीक है कि उनका हृदय बहुत ही कोमल है तो उनके पास उनकी लड़की बन रहने में भला होगा।"

प्रेमनाथ विस्मय में उसका मुख देखता ही रह गया। मिली ने प्रेम को विदा करते हुए आग्रह किया कि वह पत्र अवश्य लिखे।

१०

प्रेमनाथ वर्न पहुँचा तो वह डाक्टर शच्युमैन के मैन्टल सैनिटोरियम को ढूँढ़ने लगा। ऐसी कोई संस्था वहाँ नहीं थी। वह एक होटल में जाकर रहने लगा। कई दिन तक ढूँढ़ने पर भी जब उसको ऐमिली का पता नहीं मिला, तो उसने अपने होटल के मैनेजर से बातचीत की। मैनेजर ने उसको पुलिस में रिपोर्ट करने की राय दी। पुलिस में रिपोर्ट लिखाई गई तो खोज आरम्भ हो गई।

इस काल में प्रेमनाथ के पास खर्चा चुक गया पर वह बिना पुलिस की खोज का परिणाम जाने, वहाँ से जाना नहीं चाहता था। उसने अपनी कठिनाई अपने होटल के मैनेजर से कही, तो उसको एक बड़े होटल में, जिसमें प्रायः अंग्रेज ठहरा करते थे, वेटर के रूप में नौकर करवा दिया। इस प्रकार उसको लगभग पन्द्रह रुपए नित्य की आय होने लगी। इसमें से वह पांच रुपये नित्य तो अपने होटल में व्यय कर देता था और शेष ऐमिली की खोज में व्यय कर देता था।

एक सप्ताह की खोज के उपरान्त पुलिस को यह पता चला कि मिसेज चोपड़ा इटली की सरहद पार कर स्विटजरलैंड आई थीं, परन्तु पीछे उनका पता नहीं चला। इससे पुलिस ने ऐमिली की खोज तेजी से आरम्भ कर दी।

प्रेमनाथ ने अपनी पूर्ण परिस्थिति मिली म्यूरी को लिखकर भेज दी, इसके दो सप्ताह पीछे मिली बर्न में आ पहुँची। प्रेमनाथ उसको देखकर प्रसन्न भी हुआ और विस्मित भी। उसने कहा, "मम्मी तो अभी मिली नहीं, तो अब आप किसकी लड़की बनने आई हैं।"

"मैं आपकी माँ की खोज में सहायता करने आई हूँ।"

"आपका अति धन्यवाद है इसके लिए, परन्तु क्या करें, कैसे हो सकेगा ? मैं स्वयं नहीं जानता।"

मिली भी उसी होटल में ठहर गई जहाँ प्रेमनाथ ठहरा हुआ था। मिली के आने से प्रेमनाथ को सबसे बड़ा सुभीता यह हुआ कि वह अब मिली के द्वारा स्विट्जरलैंड के अफसरों से फ्रांसीसी भाषा में बातचीत कर सकता था। इसके अतिरिक्त मिली एक ऐसा साथी सिद्ध हुई जिसके साथ वह जीवन की अन्तरतम बातें कर सकता था।

मिली को एक दुकान पर नौकरी मिल गई थी। प्रेमनाथ को सप्ताह में एक दिन का अवकाश मिल जाता था और उस दिन वह और मिली दोनों नगर से बाहर दूर पहाड़ों, घाटियों, नदी-नालों और प्राकृतिक सौंदर्य के अन्य स्थानों पर घूमने निकल जाते थे। अपने लंच का थैला कन्धे पर डाल, आठ-दस मील बाहर निकल जाना और वहाँ किसी नदी-नाले के किनारे बैठ घंटों आकाश की ओर देखते हुए व्यतीत करना अथवा अतीत काल की बातों की कटुता अथवा माधुर्य का स्वाद लेना, यह अवकाश के दिन का कार्य होता था।

उनकी बातों में एक बात का अभाव रहता था। वह था भविष्य। इस विषय में दोनों मन में क्या सोचते थे, कहना कठिन है। शायद आगे क्या होना है अथवा क्या होना चाहिये, कहने से डरते थे।

एक दिन नदी के किनारे एक सपाट पत्थर पर एक पहलू पर लेटी हुई मिली बता रही थी, "मैं एक दिन अपनी माँ के साथ मारसेल्ज से बीस मील के अन्तर पर एक गाँव में गई थी। माँ कई वर्षों के पीछे विश्राम के लिए अवकाश पा सकी थी। हम एक मित्र के घर में, मूल्य

देकर रहनेवाले मेहमान थे। एक दिन घूमते हुए एक जिप्सी-कैम्प के पास पहुँच गये तो एक वृद्धा जिप्सी ने हमसे भीख माँगी। माँ ने दो पैसे दिये तो वड़बड़ाने लगी। मेरी ओर बहुत ध्यान से देखने के पीछे बोली, "यह लड़की भूमि पर टिकी हुई नहीं है। इसके पाँव में चक्कर हैं। और जब तक इसकी जड़ भूमि में नहीं जाती, यह दर-दर स्थानों पर घूमा करेगी।"

"मैं उसकी भविष्यवाणी को आज ठीक होते अनुभव कर रही हूँ। मैं अब घर से निकल आई हूँ और शायद पुनः अपने जन्म-स्थान में जाने का अवसर नहीं मिलेगा।"

"क्यों।"

"मेरा मन कुछ ऐसा ही कहता है। कम से कम यह स्थान मारसेल्ज़ से अधिक साफ़-सुथरा, सुन्दर और सुख-सुविधा युक्त है। मैं समझती हूँ कि यदि कोई बलपूर्वक मुझको यहाँ से न निकाले और यहाँ खाने-पहनने को मिलता रहे तो फिर किसलिए लौटकर वापिस जाऊँगी?"

"मैं", प्रेमनाथ ने गम्भीर होकर कहा, "इसके विपरीत अनुभव कर रहा हूँ, लाहौर, जहाँ का मैं रहनेवाला हूँ, यहाँ से कई गुणा अधिक गन्दा नगर है। इस पर भी वहाँ कुछ है जो मुझे आवाहन कर रहा है। मेरी आत्मा उस ओर जाने के लिए तड़प रही है। मेरी माँ है, जो मुझसे बहुत स्नेह करती है। बहिन है वह भी बहुत ही भोली-भाली प्रतीत होती है। मैं उनसे मिलने की भारी लालसा रखता हूँ। मेरे लिये मनुष्य-मनुष्य का संबंध अधिक आकर्षण का है और यह सुन्दर स्थानों और दृश्यों से सम्बन्ध, गौण है। फिर इन मनुष्यों के सम्बन्ध से भी ऊपर, आचार-विचार की अनुकूलता है। हम अपने को एक जाति के सदस्य मानते हैं, इस कारण नहीं कि हम किसी एक स्थान पर उत्पन्न हुए हैं, अथवा हमको किसी स्थान के नदी-नाले, पहाड़-घाटियों से अधिक मोह है। जातियाँ भौगोलिक सीमाओं से नहीं बनतीं। प्रत्येक जाति के आचरण में एक धुरि होती है, उससे बँधा हुआ व्यक्ति उस जाति में होता है। हिंदू जाति में कुछ ऐसी

सैद्धांतिक धुरियाँ हैं, जिनके चारों ओर हिंदू समाज चक्कर काट रहा है। इस कारण मैं उस समाज का एक अंग होने से उस जाति की परिधि में घूमने में ही आनन्द अनुभव करता हूँ। जब तक मैं उन सिद्धान्तों को श्रेठ मानता हूँ, मैं हिन्दू-समाज के भीतर हूँ। इससे उस समाज में रहने की मेरी इच्छा बनी रहती है।

"मैं इन बातों को नहीं मानती। मैं आत्मा की प्रेरणा को मुख्य मानती हूँ।"

"प्रेरणा संस्कारों के बल पर बनती है। संस्कार वातावरण से अथवा पूर्वजन्म के कर्मफल से बनते हैं। इससे प्रेरणा जातीय-संस्कारों से ही चलती है।"

"यही तो मैं समझ नहीं पाती। मैं एक फ्रांसीसी लड़की हूँ। एक ईसाई परिवार में उत्पन्न हुई हूँ। परन्तु आपसे ऐसा लगाव हो गया है कि आपकी माँ की खोज में आपकी सहायता करने चली आई हूं।"

"हम लोग इसको पूर्व जन्म की प्रबल प्रेरणा का फल मानते हैं। मैं आपको एक बात बताता हूं। मेरी विमाता, ऐमिली चोपड़ा मुझको जानती नहीं थी। मेरी माँ उनके पिता जी के घर आने से पहले वहाँ से चली आई थीं। मैं एक दिन एक पार्क में अपने साथियों के साथ खेल रहा था। वे पिताजी के और बच्चों के साथ वहाँ पिकनिक पर आई हुई थीं। हमारे खेलने की एक वस्तु उनको जा लगी। वे क्रोध में भरी हुई उठीं और मुझको एक चपत लगाकर डांटने लगीं। मेरे हाथ में एक डंडा था। मैंने प्रतिकार के भाव से उठाया परन्तु मेरे संस्कारों ने मेरे हाथ को रोक दिया। मैंने डंडा नीचे कर कहा, "आप औरत हैं, आप पर हाथ नहीं चलाऊंगा।"

"यह कहना संस्कारों के अधीन एक सिद्धांत का प्रतिपादन है। यह अनेक जातियों में पाया जाता है, इस कारण अनेक जातियों के सदस्य परस्पर ऐक्य अनुभव करते हैं। इससे वे एक दूसरे के समीप आ जाते हैं और तत्पश्चात् एक दूसरे से मोह करने लगते हैं। इस घटना ने भी मेरी

विमाता को मेरी ओर आकर्षित किया। बिना मेरे विषय में कुछ अधिक जाने उनको सहानुभूति मेरे साथ हो गई। यह सहानुभूति उनकी ओर से एक महान् कृपा और दया का रूप धारण कर चुकी है।"

"शायद आप ठीक कहते हैं।" इतना कह मिली सीधी हो आकाश की ओर देखती हुई गम्भीर विचार में डूब गई। वह प्रेम के साथ अपने स्नेह-सूत्र के आरम्भ को स्मरण कर रही थी। जब उसने पूछा था कि वह उसको सुन्दर समझता है अथवा नहीं, तो उसने कहा था कि वह उसको अपनी वहिन के समान दिखाई देती है। यह साधारण-सी बात थी जिसने उसके सोते हुए संस्कारों को जाग्रत कर उसकी ओर आकर्षित कर दिया था और अब वह उसको अपना आधार मान उसके आश्रय पर स्थिर भूमि पर टिकना चाहती थी।

११

स्विटजरलैंड की पुलिस को ऐमिली की खोज करने में कई मास लग गये। यह पुलिस की अयोग्यता मानी गई कि वह एक परदेसी का पता नहीं कर सकी। लापता परदेसी ऐमिली है अथवा कोई अन्य व्यक्ति यह प्रश्न नहीं था। बात यह थी कि कोई भी परदेसी स्विटज़रलैंड में आये और आवश्यकता पड़ने पर उसका पता न चले, यह एक राज्य के प्रबंध की त्रुटि का सूचक है। कभी कोई विदेशी आकर राजनैतिक गड़बड़ भी मचा सकता है। इस कारण देश भर की पुलिस ऐमिली की खोज में लग गई।

पता लगाना कठिन हो जाता, यदि ऐमिली का पति मिस्टर चोपड़ा प्रतिमास नियम से शच्यूमैन को रुपये न भेजता। शच्यूमैन के नाम ड्राफ्ट आते थे जो स्विस नेशनल बैंक से वसूल होते थे। न तो मिस्टर चोपड़ा को और न ही शच्यूमैन को यह बात स्वप्न में आ सकती थी कि प्रेम-नाथ स्विटज़रलैंड पहुंचकर ऐमिली की खोज के लिए वहाँ की पुलिस को आग्रह करने लगेगा। फिर एक फ्रांसीसी लड़की मिल जायेगी जो प्रेमनाथ

की सहायता के लिए आ डटेगी। दूसरी ओर यह भी समझा नहीं जा सकता था कि लाहौर में मिस्टर चोपड़ा की कोठी में दो-दो हत्यायें हो जावेंगी और नार्टन जैसा योग्य वकील मुकद्दमे को इस प्रकार चला सकेगा जैसा उसने चलाया था। ये सब बातें मिस्टर चोपड़ा और शच्यूमैन की समझ में नहीं आई थीं। इस कारण शच्यूमैन का पता लगाना सम्भव हो सका।

स्विटज़रलैंड की पुलिस ने देश के सब बैंकों पर पहरे बैठा दिये और नियत प्रबन्ध से जब वह ड्राफ्ट का रुपया लेने आया तो पुलिस उसके पीछे लग गई। इसके पश्चात् पुलिस ने उसके मकान की और उसकी गतिविधि की देख-भाल आरम्भ कर दी।

उस दिन प्रेमनाथ को यह सूचना मिल गई थी कि शच्यूमैन का पता चल गया है, अब ऐमिली का पता लगे बिना नहीं रहेगा। एक दिन छुट्टी का दिन था, प्रेमनाथ मिली के साथ घूमने जाने वाला था कि एक पुलिस का इन्स्पेक्टर साधारण नागरिकों के कपड़ों में उसके पास आया और कहने लगा, "ऐमिली चोपड़ा को आप पहचान सकते हैं तो शीघ्र चलिए।"

प्रेमनाथ तैयार हो गया। मिली भी साथ तैयार हो गई। पुलिस इन्स्पेक्टर के पास कार थी। वह इन दोनों को साथ लेकर बर्न से लग-भग दस मील के अंतर पर एक गांव में ले गया। वहाँ मोटर एक मकान के सामने खड़ी कर दी गई। मकान का दरवाज़ा खटखटाया गया तो एक बुढ़िया ने खोलकर पूछा, "क्या है?"

"ये सब पागल को देखने आये हैं।"

"कल डाक्टर आया था और कह गया है कि उसको बार-बार लोगों के सम्मुख लाने से उसकी अवस्था बिगड़ जायगी। उसने कहा है कि मैंने फिर किसी को दिखाया तो वह उसको किसी और के घर ले जाकर रखेगा।"

"तुमको कितनी आय होती है उसके रखने से?"

"सौ मार्क्स प्रतिमास। इसके साथ जितना कुछ उसके खाने-पीने को मिलता है उसमें से मेरे खाने को बच जाता है।"

"हम इतनी आय तो तुमको दो बोर्डर रखकर करा देंगे ? मिस्टर प्रेम, इसको दस मार्क्स अभी दे दो।"

प्रेम ने दस रुपये का नोट निकाल कर देते हुए कहा, "हम फिर दुबारा देखने नहीं आयेंगे। तुम इस विषय में डाक्टर से मत कहना।"

"बुढ़िया मान गई। तीनों भीतर घुस गये। उनके मकान के भीतर आते ही बुढ़िया ने मकान का दरवाजा बन्द कर लिया। पश्चात् उनको लेकर मकान के नीचे तहखाने में जहाँ कभी पुरानी शराब रखी जाती होगी, ले गई। तहखाने को भी ताला लगा हुआ था। ताला खोला गया। भीतर बिजली का लैम्प जल रहा था। प्रेम ने देखा कि सामने एक औरत खुले बाल और फटे कपड़ों में बैठी हुई है। प्रेम भीतर जाने लगा तो बूढ़ी औरत ने रोककर कहा, "खबरदार रहना, यह घातक आक्रमण भी कर देती है।" प्रेम ने हाथ से उस बुढ़िया को एक ओर कर दिया और भीतर चला गया। पुलिस इन्स्पेक्टर ने जेब से पिस्तौल निकाल लिया। मिली उस औरत की भयानक अवस्था देख डर गई। प्रेम डरा नहीं और उस औरत के सामने जा खड़ा हुआ। यद्यपि औरत के रूप और रंग में भारी विकृति आ चुकी थी तो भी प्रेम ने उसको पहचान लिया। वह मुख नीचे लटकाए भूमि की ओर देख रही थी। बाल खुले और उसके मुख के चारों ओर उड़ रहे थे। आँखों में घबराहट और अस्थिरता थी। कपड़े स्थान-स्थान पर फटे हुए थे।

ज्यूं ही प्रेमनाथ ने उसको पहचाना, उसने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये आवाज दी, "मम्मी! मम्मी!!"

ऐमिली ने सिर उठाया और उसको देखा। पश्चात् एक विकराल हंसी हँसती हुई उठ खड़ी हुई और दोनों हाथ उठा बोली, "आज तुमको खा जाऊँगी। नहीं छोड़ूँगी।"

यह कह वह प्रेमनाथ की ओर लपकी। प्रेम सतर्क खड़ा था। उसन

दो पग पीछे हटकर उसकी झपट में आने से अपने को बचा लिया। ऐमिली अपने हाथ से अपने विचार से, अपने शिकार को निकल गया देखकर अन्यमनस्क भाव में पुनः उसकी ओर देखने लगी। प्रेम न उसकी स्मृति को पुनर्जीवित करने के लिये फिर कहा, "मम्मी! मम्मी!! मैं प्रेमनाथ हूँ।"

इस बार वह पुनः हँसी और इधर-उधर देखने लगी। पश्चात् एकाएक वह कुर्सी उठा जिस पर वह बैठी थी, प्रेमनाथ का सिर फोड़ने के लिये दौड़ी। प्रेमनाथ परिस्थिति को भली भाँति समझ गया था और दो पग पीछे हट गया। ऐमिली ने कुर्सी फेंकी, प्रेमनाथ एक ओर हट गया। कुर्सी दूर जा गिरी, इस पर वह फिर हँसने लगी और जोर-जोर से कहने लगी, "कब तक बचोगे मुझसे ? एक दिन तुमको खा जाऊँगी। कच्चा चबा जाऊँगी ?"

अब वह पुनः उसकी गर्दन पकड़ने के लिये हाथ फैलाकर भागी। प्रेमनाथ ने फिर एक ओर हटकर अपने को बचा लिया। परन्तु जिस वेग से ऐमिली उसकी ओर आई थी, उसको रोक नहीं सकी और अपने ही बोझ से वह लुढ़क कर गिर पड़ी। इससे उसको चोट लगी और वह उठ नहीं सकी। इस समय वह पुनः उसके समीप बैठकर बोला "मम्मी! मैं प्रेमनाथ हूँ। मेरी ओर देखो। मैं प्रेमनाथ हूँ।"

अपनी चोट के कारण अथवा किसी और विवशता से वह उठ नहीं सकी। इससे वह रोने लगी। इससे प्रेमनाथ उसके समीप पहुँच गया, और उसका हाथ उठाकर अपने दोनों हाथों की हथेलियों में रखकर बहुत ही नम्रता के भाव में बोला, "मुझको पहचाना है मम्मी ?"

इस समय मिली कमरे के भीतर आ गई और पुलिस इन्स्पेक्टर भी उसके पीछे आकर खड़ा हो गया। इन सब लोगों को देख ऐमिली भयभीत हो इन सबकी ओर देखने लगी। एकाएक वह मिली की ओर देखने लगी। इसके पश्चात् उसके मुख पर भय की मुद्रा तीव्र हो उठी। उसने बहुत जोर लगाकर, मानो कहने में कठिनाई अनुभव कर रही हो,

कहा, "तुम इन्द्रा ! तुम भी यहाँ आगई हो। चली जाओ, यहाँ न ठहरो। बहुत कष्ट है यहाँ।"

इतना कह वह अपने सिर को पकड़कर बैठ गई। इन्स्पेक्टर ने प्रेम-नाथ को कहा, "आइये, बाहर आइये।"

"मैं इनको एक क्षण के लिये भी छोड़ना नहीं चाहता।"

"ठीक है ! पर इसके लिये इनको यहाँ से निकालने का प्रबन्ध करना पड़ेगा। यह स्थान स्वास्थ्यप्रद नहीं है।"

प्रेमनाथ उठा और मिली को लेकर बाहर चला आया। घर की मालकिन बुढ़िया ने तहखाने का ताला लगा दिया। बाहर आकर इन्स्पेक्टर ने अपनी पौकेट बुक से एक पन्ना फाड़ डाला और उस पर पेन्सिल से कुछ लिख डाला। वह लिखा पर्चा प्रेमनाथ को देकर कहा, "इसे गांव के थाने में ले जाओ। थानेदार को कहोगे तो वह कुछ सिपाही तुम्हारे साथ एक आज्ञा-पत्र लिखकर भेज देगा। शीघ्र करो। मैं चाहता हूं कि सायंकाल शच्यूमेन के यहाँ आने से पूर्व हम यहाँ सब प्रबन्ध कर लें। उसको भी यहाँ पर ही पकड़ना ठीक रहेगा।"

१२

ऐमिली को बर्न के एक सिविल हस्पताल में रखा गया। और डाक्टरों की देख-रेख में उसकी चिकित्सा होने लगी। शच्यूमैन उसी सायंकाल पकड़ लिया गया। प्रेमनाथ और मिली ऐमिली से नित्य मिलने जाने लगे। डाक्टरों की यह सम्मति थी कि ऐमिली को ऐसी नशे की वस्तु दी जाती रही है जिससे उसके मस्तिष्क की अवस्था सर्वथा पागल-सी हो गई है। अस्पताल में उसको नशा उतारने की दवाई दी गई और उसकी भोजन-व्यवस्था सुधारने का यत्न किया किया।

प्रेम और मिली नित्य सायंकाल एक घंटा भर उसके पास जा सकते थे। पहले ही दिन जब वे गये तो ऐमिली हस्पताल में भी उनको मारने दौड़ी, परन्तु वहाँ उसको पलंग के साथ बांध रखा था। इसके

उसकी अवस्था सुधरने लगी। प्रति दिन कुछ न कुछ सुधार उसके स्वास्थ्य में होता दिखाई देने लगा। लगभग एक सप्ताह पश्चात् ऐमिली ने प्रेम-नाथ को पहचाना।

उस दिन जब वे दोनों उसके पलंग के पास पहुंचे तो ऐमिली की धुंधली स्मृति में प्रेमनाथ का धुंधला-सा चित्र बन आया। उसने कहा, "तुम कौन हो ? मैंने तुमको कहीं देखा है।"

प्रेम और मिली उसको सर्वथा शान्त देख उसके पलंग के समीप कुर्सियों पर बैठ गये। प्रेम ने उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा, "मम्मी ! मैं प्रेमनाथ हूँ। शान्ता बहन को भूल गई हो क्या ?"

ऐमिली ने दोनों हाथों में सिर को पकड़ कर कहा, "कुछ याद नहीं पड़ता। यह कौन स्थान है ? यहाँ के लोग कहते हैं कि यह हस्पताल है। पर मैं कहती हूँ कि यहाँ मुझको कैद क्यों कर रखा है ?"

"मम्मी, तुम कैद नहीं हो। पर तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था। इस कारण तुम को बर्न के हस्पताल में रखा है।"

पश्चात् वह फिर गम्भीर होकर कुछ विचार करने लगी। प्रेम ने बहुत बातें एक ही दिन कहनी उचित नहीं समझीं। कुछ काल के पश्चात् ऐमिली ने एकाएक मिली की ओर देखकर कहा, "यह कौन है ? सर-स्वती इतनी बड़ी नहीं हो सकती।"

"यह सरस्वती नहीं है। इसका नाम मिली डी-ला-म्यूरी है।"

इस पर वह पुनः अपने मस्तिष्क को पकड़कर विचार करने लगी। फिर वह बोली, "मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ।"

"कहाँ ?"

"बर्न मैंटल सैनिटोरियम में। मेरे लिए वहाँ एक स्थान रिज़र्व है। मेरा स्वास्थ्य वहाँ जा कर ठीक हो जायेगा।"

"यही वह हस्पताल है। यहाँ आपका स्वास्थ्य ठीक हो रहा है।"

इस समय पुनः ऐमिली के मस्तिष्क में धुंधलापन आ गया।

एक सप्ताह और व्यतीत होते-होते ऐमिली को पिछली बात याद

प्राने लगी। उसने प्रेम से कहा, "बहुत धोखा हुआ है मुझसे। मैं समझी थी कि सीता की भांति केवल देश-निकाला है। मुझको पता न था कि मुझको मार डालने की योजना है।"

"कैसे हुआ है यह ?"

"मैं याद करती हूँ, पर ठीक पता नहीं चलता कि कब, किस समय मैं सो गई और फिर अति भयानक स्वप्न मेरे सामने आने लगे।"

कई दिन पीछे उसको कुछ और बातें स्मरण हो आईं। उसने बताया, "मैं रोम से वीनिस चली गई। वहां से जनेवा और जनेवा में मुझको डाक्टर शच्यूमैन मिल गये। मैंने जब बताया कि मैं बर्न के एक डाक्टर शच्यूमैन के पास जा रही हूं तो उसने कहा कि वह ही है। चलिये, दोनों इकट्ठे ही चलेंगे।"

"वहां से हम चले। रेल में इटली की सीमा पार करते समय मेरे कागज़ात देखे गए। मेरे हस्ताक्षर और फोटो ली गई। इसी प्रकार डाक्टर साहब के भी कागज़ात देखे गये। मुझको अचम्भा हुआ जब उन कागजों में उनका नाम मोइयोर रौशिली लिखा निकला। जब हम सीमा पार कर इधर आए तो मैंने अपना सन्देह कह दिया। उसने हँस कर उत्तर दिया, "मैं फ्रांस और इटली में इसी नाम से विख्यात हूँ। पर मेरा असली नाम शच्यूमैन है। आपको मेरे सैनिटोरियम में चलकर सब बात मालूम हो जावेगी। उसी दिन प्रातःकाल ब्रेकफास्ट के समय मेरा दूध ब्रेकफास्ट से पृथक् आया। मैंने बैरा से पूछा भी, यह पीछे क्यों रह गया था ? तो उसने उत्तर दिया, भूल गया था।"

"उस दूध के पीने से मेरा सिर भारी होने लगा। मैंने डाक्टर से कहा तो उसने अपने बैग में से एक औषधि देते हुए कहा, हम इस समय दस हजार फीट की ऊँचाई पर जा रहे हैं, ऐसा होता ही है।"

"उस दवाई के खाने से मुझको नींद आ गई। मेरी जाग वहां जाकर खुली जहां हमने उतरना था। डाक्टर ने बताया कि अगला स्टेशन बर्न है। पर हमारा सैनिटोरियम यहां से समीप पड़ेगा। हम दोनों उतर

आए। कुलियों ने सामान उतारा और हम स्टेशन से बाहर खड़ी टैक्सी में बैठ गए। गाड़ी में जाते-जाते मुझको पुनः नींद आने लगी। मैं सो गई और अनेकों स्वप्नों को देखने के पश्चात् यहाँ आकर नींद खुली है।"

"क्या मैं लाहौर लिख दूँ कि अब आप ठीक हैं ?"

"किसको ?"

"माता जी को।"

"हाँ, पर मिस्टर चोपड़ा को न लिखना। अभी मैंने निश्चय नहीं किया कि वापिस लाहौर जाऊँ या नहीं।"

इस बातचीत के लगभग एक सप्ताह पीछे की बात है कि लाहौर से प्रेमनाथ को पत्र आया। उसमें मिस्टर चोपड़ा पर चल रहे मुकद्दमे का उल्लेख था। चिट्ठी में लिखा था कि शच्यूमैन मिस्टर चोपड़ा की कोठी में होने वाली हत्याओं के दिन लाहौर नीडोज़ होटल में ठहरा हुआ था। इससे यह सन्देह होने लगा कि शायद ये हत्यायें उसी आदमी ने की हैं।

इस पत्र का उत्तर ऐमिली ने स्वस्थ होकर जनेवा से तार द्वारा दिया। इस तार के पहुँचने पर मिस्टर नार्टन ने लाहौर से तार दिया कि हम शच्यूमैन को हिन्दुस्तान में भेजे जाने की मांग स्विस सरकार से कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान की माँग स्विस सरकार से यह है कि शच्यूमैन ने हिन्दुस्तान में हत्यायें की हैं, वे हत्यायें किसी पुलिटिकल उद्देश्य से नहीं की गईं। इस कारण इस हत्यारे को जांच के लिए हिन्दुस्तान भेज दिया जाए। स्विस सरकार की नीति यह थी कि किसी भी देश का राजनीतिक कैदी स्विटज़रलैंड में सुरक्षित है। चरित्र सम्बन्धी अपराधी यदि स्विटज़रलैंड का हो तो विदेशी सरकार को नहीं दिया जायेगा, परन्तु चरित्र सम्बन्धी विदेशी अपराधी उसके देश में रक्षा नहीं पा सकता।

इस कारण हिन्दुस्तान की इस माँग पर यह जाँच की गई कि शच्यूमैन किस देश का नागरिक है। जाँच करने पर पता चला कि वह स्विस नागरिक नहीं है। वास्तव में वह किसी भी देश का नागरिक नहीं था।

वह एक जिप्सी कबीले का लड़का था, जो कबीला स्विटज़रलैंड, इटली, आस्ट्रिया, हंगरी और जर्मनी में घूमा करता था। यह जाँच करने पर शच्यूमैन को हिन्दुस्तान सरकार के पास भेज दिया गया।

इस समय तक ऐमिली पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त कर चुकी थी। प्रेमनाथ और मिली दोनों उसके साथ थे। जनेवा में ऐमिली ने यह निश्चय किया कि वह हिन्दुस्तान वापिस जायेगी और मिस्टर चोपड़ा के मुकद्दमे में सहायता करेगी।

ऐमिली का यह निर्णय सुन प्रेमनाथ ने पूछा, "आप किसकी सहायता करने जा रही हैं ?"

मिली म्यूरी भी पास ही बैठी एक फ्रेंच नावल पढ़ रही थी। ऐमिली के इस निर्णय को सुन वह भी समीप आ गई और ऐमिली का प्रेम के प्रश्न पर उत्तर सुनने के लिए पुस्तक छोड़ दत्तचित्त हो गई।

ऐमिली ने उत्तर देने से पूर्व मिली से पूछा, "मेरे उत्तर में तुम को भी रुचि है क्या ?"

"हाँ मम्मी !" वह भी ऐमिली को इसी तरह पुकारा करती थी। "मेरा भविष्य इनसे बंधा प्रतीत होता है। आपके जाने पर इनका यहाँ से जाना और मेरा भविष्य निर्भर है।"

"तो सुनो ! मैं पहले जहाज़ से, जिसमें स्थान मिल जाये, जाने का प्रबन्ध कर रही हूँ।"

"और आप ?" उसने प्रेम की ओर देखकर पूछा।

"मैं इनके साथ ही हिन्दुस्तान चला जाऊँगा।"

"और मेरे लिए आप क्या कहते हैं ?"

"यह तो एक बार आपने स्वयं कहा था कि आपके पास जाने भर के लिए खर्चा है और आने का नहीं। तो चले चलिए। पीछे देखा जायेगा।"

"ठीक है ! मैं आज ही अपने बैंकर्ज को लिख देती हूँ। मेरे पास तीन सौ लूईस हैं। इनसे कुछ न कुछ प्रबन्ध हो ही जायेगा।"

"पर मैं तुमसे पूछती हूं।" ऐमिली ने मिली से पूछा, "तुम ——
साथ किस रूप में जा रही हो ?"

"जिस रूप में ये ले जायें।"

"बताओ, प्रेम क्या विचार है तुम्हारा।"

"मम्मी, ये कहती हैं कि मेरे साथ विवाह करगी।"

"और तुम क्या कहते हो ?"

"मुझको यह बहुत अच्छी लगती है।"

"परन्तु मिली, एक बात तुमको समझ लेनी चाहिये। हिन्दुस्तान यूरोप से सर्वथा भिन्न देश है। वहाँ का रहन-सहन और विचारधारा यूरोप जैसी नहीं है। वहां यह भाषा, जो तुम समझ सकती हो और बोलती हो, प्रायः लोग नहीं जानते।"

मिली विस्मय में ऐमिली का मुख देखती रह गई। वह इसका अर्थ नहीं समझ सकी। पश्चात् समझने के लिए उसने पूछा, "मम्मी, एक बात पूछूं ?"

"हां, पूछो !"

"आपको वह देश पसन्द है ?"

"देश तो अच्छा नहीं, प्रकृति ने तो ठीक बनाया है परन्तु मनुष्य ने उसको सुखमय बनाने में कुछ नहीं किया। यहां शीत का बाहुल्य होने पर भी मनुष्य ने इसे आराम देनेवाला बना रखा है। परन्तु मिली, मैं देश की बात नहीं कर रही। देश में रहनेवालों की बात कहती हूं।"

"वे कैसे हैं।"

"जो तो युरोपियन बनने का यत्न नहीं कर रहे, वे ठीक हैं। कई अंशों में तो वे लोग युरोपियनों से भी अच्छे हैं। परन्तु जो लोग युरोपियन बनने की नकल कर रहे हैं, वे अपने आचार के आधार को छोड़ पतित होते जाते हैं। आचार-विचार देश की वायु के अनुकूल होने चाहियें।"

"ये कैसे हैं ?" मिल्ली ने प्रेम की ओर संकेत करते हुए पूछा।

"स्वच्छ सोना है", ऐमिली ने मुस्कराते हुए कहा।

"तो मेरा निर्णय हिन्दुस्तान जाने का अन्तिम है।"

"यदि जाना चाहती हो, हिन्दुस्तानी आज से ही सीखना आरम्भ कर दो। जिस देश को अपना निवास-स्थान बनाना चाहती हो, उसकी भाषा को सीखे बिना सुख और रस मिल नहीं सकेगा।"

"यह तो मैंने स्विटज़रलैंड से ही सीखनी आरम्भ करदी है।"

"तब तो ठीक है, तुम दोनों का विवाह लाहौर में चलकर ही हो सकेगा।"

मिली उठकर पुनः दूर अपनी कुर्सी पर जा बैठी और अपनी पुस्तक खोलकर पढ़ने लगी। ऐमिली ने बताया कि वह न्याय की सहायता करने जा रही है। यहाँ बैठी हुई वह नहीं जान सकी कि न्याय किस ओर है।

कर्म फल टारे नहीं टरे

१

शच्यूमैन के लाहौर पहुँचने में तीन मास लग गये। जब तक व
वहाँ नहीं आया, तब तक मुकद्दमा स्थगित रहा। उसके आ जाने
मिस्टर नार्टन का मुकद्दमा पूर्ण हो गया। उसने शच्यूमैन की पहचा
नीडोज होटल के कर्मचारियों से करवा दी और होटल के रजिस्टर
उसकी उपस्थिति लाहौर में उस दिन सिद्ध कर दी, जिस दिन हत्या
हुई थीं। शच्यूमैन का मिस्टर चोपड़ा से मिलने जाना भी चपरासियों
प्रमाणित करा दिया गया।

शच्यूमैन हत्याओं के अगले दिन नीडोज होटल से चला गया था
और तीसरे दिन बम्बई से जहाज में सवार होकर विडसी के लिये च
पड़ा। मिस्टर नार्टन से पुलिस का सहयोग स्थापित नहीं हो सका, अन्यथ
डांट-डपटकर कोई-न-कोई सरकारी गवाह बना लिया जाता, जो ठी
गोली चलने के समय की बात बता सकता।

ऐमिली भी लाहौर आ पहुंची थी। वह नीडोज होटल में ठह
थी। उसका पहला काम था मिस्टर नार्टन और सूरजमोहन से मिलक
मुकद्दमे की पूरी परिस्थिति को जानना। जब वह इन दोनों से मिस्ट
चोपड़ा के पक्ष-विपक्ष की बात जान रही थी, तब शान्ता भी उससे मिल
कर अपने मन की बात कह रही थी।

शान्ता का कहना था, "मैंने मुकद्दमे की वह सब बातें जानी हैं, जो
मेरी समझ में आ सकती हैं। मै समझती हूँ कि मिस्टर चोपड़ा इन
हत्याओं के विषय में निरपराध हैं। क्योंकि पुलिस ने इस मुकद्दमे में
उदासीनता प्रकट की है, इस कारण मिस्टर चोपड़ा की सफाई नहीं
हो रही।"

ऐमिली शान्ता की इस मनोवृत्ति को देख बहुत चकित रह गई, उसने विस्मय में पूछा, "आप क्या चाहती हैं कि मिस्टर चोपड़ा बच जायें ?"

"बच जायें अथवा न बचें, इससे मेरा सम्बन्ध नहीं। वह मेरे बच्चों का पिता है। इस कारण उसको अन्याय से दंड दिये जाने का विरोध कर रही हूँ।"

"क्या उसने बच्चों के साथ पिता-सा व्यवहार किया है ?"

"यह उनका कार्य है। उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि हम भी अपने कर्तव्य का पालन न करें।"

"हमारा क्या कर्तव्य है ? क्या उस आदमी को, जिसने हमारे बच्चों के साथ न्याय नहीं किया, अकारण बचाने का यत्न करें ? यह कर्तव्य है अथवा अकर्तव्य ?"

"यह प्रश्न पृथक् है। जिस बात का दंड उनको दिया जा रहा है उस बात में वे दोषी नहीं हैं। एक अपराध का दंड किसी काल्पनिक अपराध के लिये कहाँ तक उचित है ?"

"कर्मों की गति अति गहन है। सब लोग इसको नहीं समझ सकते। एक कर्म के बार-बार करने से विशेष मनोवृत्ति बन जाती है, जो फिर अन्य कर्मों के करने में कारण बन जाती है, इसलिये यह कहना कि उस मनोवृत्ति से उत्पन्न एक कार्य का फल उसी से उत्पन्न किसी अन्य कार्य के फल से नहीं मिलना चाहिये, ठीक मालूम नहीं होता। फल मनोवृत्ति को मिलता है कर्म तो साधन मात्र बन जाता है।

"देखो बहिन ऐमिली ! मैं तो यह कह रही हूँ कि उनकी मनोवृत्ति की परीक्षा नहीं हो रही। मनोवृत्ति पर मुकद्दमा होता तो उसकी बात विचारणीय थी। उसके औचित्य अथवा अनौचित्य पर मतभेद हो सकता है। इस समय विचारणीय और मुकद्दमे का विषय है कि उन्होंने हत्यायें करवाई हैं अथवा नहीं ? इस विषय में मेरी समझ में वह निर्दोष हैं।"

"पर प्रकृति ने उनकी विकृत प्रवृत्ति का जो फल निश्चय किया है,

उसमें हम क्यों हस्ताक्षेप करें ? परमात्मा के किसी कार्य को करने का ढंग विचित्र होता है। हम क्षुद्र जीव इसको समझ नहीं सकते।"

"यही तो मैं कहती हूं। पुलिस और मिस्टर नार्टन को व्यर्थ में प्रकृति के कामों में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिये।"

इससे ऐमिली शान्ता का मुख विस्मय में देखती रह गई। शान्ता न पुनः अपनी बात समझाने का यत्न किया, "न्याय की मांग है कि हत्याओं के विषय में निर्णय किया जाये। शेष जो कुछ भी उसका अपराध है, वह जब अदालत से विचारणीय हो तो अदालत से और यदि प्रकृति के सम्मुख विचारणीय हो तो प्रकृति से उनका फल मिलना चाहिये।"

ऐमिली को समझ नहीं आया। इस पर भी वह इस विषय में विचार करने पर विवश हो गई। शान्ता से इस भेंट के पश्चात् वह दूसरे ही ढंग से विचार करने लगी। उसी सायंकाल जब मिस्टर नार्टन आया तो उसने कहा—

"मिस्टर नार्टन ! आपने जिस योग्यता से यह मुकद्दमा खड़ा किया है उसकी तो श्लाघा ही करनी चाहिये। परन्तु क्या यह ग़लत है कि अभी तक भी हत्यारों के रहस्य को आप खोल नहीं सके ?"

मिस्टर नार्टन ने उत्तर में कहा, "मैं तो मन में यह समझ चुका हूँ कि मिस्टर चोपड़ा एक घृणित जन्तु है। वह इस संसार में विष-बीज है। उसको जलाकर भस्म कर देने में ही मानव-समाज का हित है। मैं तो मिस्टर चोपड़ा को संसार से बाहर करने का यत्न कर रहा हूँ। हत्यायें तो गौण स्तर की वस्तुएँ हैं। मुख्य बात है वह प्रेरणा, जिससे हत्याओं के होने के लिये वातावरण तैयार हुआ।"

"यह प्रकृति के बहाव को आप बाँध लगाना चाहते हैं। जितना सीमित कार्य आपको मिला है उसी तक अपने यत्न को सीमित क्यों नहीं रखते ?"

मिस्टर नार्टन ऐमिली के इस प्रश्न पर चकित रह गया। वह तो यह समझा था कि मिस्टर चोपड़ा के कारण जितना कष्ट उसको हुआ

है, उसके प्रतिकार में वह चोपड़ा का येन केन प्रकारेण सत्यानाश चाहेगी। परन्तु यह मनोवृत्ति उसको अस्वाभाविक प्रतीत हुई। वह यह विचार ही नहीं सकता था कि कैसे वह मिस्टर चोपड़ा जैसे आदमी की रक्षा के लिये युक्ति कर सकती है।

उसने कहा, "देखिये मिसेज़ चोपड़ा! मेरी मिस्टर चोपड़ा के साथ न तो मैत्री है न ही द्वेष। मेरी तो सत्य, न्याय, धर्म, भलमनसाहत और शान्ति से मित्रता है। मैं अपनी कानूनी और सफलता प्राप्त करने की योग्यता से इनका संसार में बोलबाला करने के लिये प्रयोग कर रहा हूं। ज़ेबुलनिसा की मौसी ने मुझको इस मुकद्दमे के लिये केवल दो हज़ार रुपया दिया है और मैंने जो समय और मेहनत इस पर लगाई है वह इस रक़म से कहीं अधिक है। मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह संसार में शान्ति के अंशों की घोषणा करने के लिए कर रहा हूं। मिस्टर चोपड़ा इस विचार से संसार में रहने योग्य व्यक्ति नहीं है।"

इतना कह वह उठकर चला गया। ऐमिली इस विचारधारा को सुन चकित रह गई। वह स्वयं डाँवाडोल अवस्था में थी। कभी तो उसके मन में आता था कि मिस्टर चोपड़ा फाँसी चढ़ता है तो चढ़ जाये। उसको इससे क्या प्रयोजन है? कभी वह समझती थी कि यदि हत्यारा मिस्टर चोपड़ा नहीं है तो उसे क्यों हत्यारा घोषित किया जाये? इसके साथ ही वह अपना शच्युमैन द्वारा किया अपमान और दुर्व्यवहार याद करती थी, तो समझती थी कि मिस्टर चोपड़ा सत्य ही फाँसी दिये जाने योग्य है। परन्तु वह जब शान्ता की ओर देखती थी, तो पुनः अथाह विचार-सागर में तैरने लगती थी।

इस समय बच्चों के स्कूल से उनसे मिल सकने की स्वीकृति आ गई। उसने आते ही स्कूल के प्रिन्सिपल को लिखा था कि वह बच्चों से मिलने आना चाहती है। इस पर प्रिन्सिपल ने जेल में मिस्टर चोपड़ा से पूछा था। इसमें तीन दिन लग गये थे। इस कारण वह अभी बच्चों से मिलने नहीं जा सकी थी।

इस स्वीकृति के आते ही वह टैक्सी लेकर स्कूल में जा पहुंची और सोमा आदि आये तो वह भागकर उनसे गले मिली। बच्चे जानते नहीं थे कि उनकी मां से क्या और कैसे बीती है। हां, वे अपने पिता के जेल में चले जाने का समाचार जानते थे। यही कारण था कि मां से गले मिल कर रोने लगे थे।

ऐमिली ने उनको प्यार किया और उनके रोने का कारण पूछा। उसको सन्देह था कि वे उसके कष्टों से परिचित हैं। सोम ने जब कहा "मम्मी, पिता जी पकड़े गये हैं।" तो वह समझ गई।

उसने कहा, "हाँ! इसी कारण में योरुप से लौट आई हूं।"

"तो अब तुम उनको छुड़ा लोगी?"

ऐमिली इस प्रश्न से असमंजस में पड़ गई। उसने धीरे से कहा "मैं इसमें क्या कर सकती हूं?"

"जब पिता जी अफसर थे तो तुम उनके साथ बड़े-बड़े अफसरों से मिलने जाया करती थीं और अब तुम आ गई हो तो उनसे मिलकर पिता जी को छुड़ा लोगी।"

"पर वे मेरा कहना मानेंगे?"

"तो मुलाकात का लाभ ही क्या हुआ?"

"पर सोम, यदि उन्होंने हत्यायें की होंगी, तो फिर अफसर लोग कैसे छोड़ेंगे?"

"पर उन्होंने हत्यायें नहीं कीं।"

"यह तुम कैसे कहते हो?"

"हमारे पिता जी ऐसी बात नहीं कर सकते।"

"तुमको विश्वास है?"

"तो मम्मी! तुमको विश्वास नहीं क्या?"

"मैं यह नहीं कह रही। मैं पूछती हूं कि परमात्मा के विषय में जानते हो क्या?"

"वह कौन है?"

"गोड को समझते हो क्या ?"

"हाँ ! जिसका बेटा प्रभु यीशु मसीह है।"

"तो उससे प्रार्थना करो। वह नेक आदमियों की रक्षा करता है।"

इससे सोम और दूसरे बच्चे भी अपनी माँ का मुख देखने लगे। ऐमिली ने उसको कहा, "वह, मेरा अभिप्राय भगवान से है, सर्व-शक्तिमान् है। वह सत्य और न्याय का पक्षपाती है। इस कारण बेटा, उससे प्रातः-सायं प्रार्थना किया करो। वह हम लोगों की अवश्य सुन लेगा।"

सरस्वती ने कहा, "मम्मी, अब हमको पाकेट मनी नहीं मिलता। वार्डन साहब कहते हैं कि हमारा खर्चा भी नहीं आ रहा।"

"मैं जाने से पूर्व सब बात निश्चय कर जाऊँगी।"

रामनाथ ने कुछ माँग उपस्थित नहीं की। जब ऐमिली ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो राम ?"

उसने माँ के मुख की ओर देखते हुए कहा, "मैं इस स्कूल में पढ़ना नहीं चाहता।"

"क्यों ?"

"मेरा दिल यहाँ नहीं लगता। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

"अच्छी बात। प्रवन्ध करूँगी।"

जब ऐमिली बच्चों से विदा होने लगी तो प्रिन्सिपल ने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की। इस कारण वह उससे मिलने चली गई। प्रिन्सिपल ने बच्चों का स्कूल का बिल जो पन्द्रह सौ रुपये के लगभग हो गया था, ऐमिली को देते हुए कहा, "यह कौन देगा ?"

"वही, जिसकी आज्ञा से तुमने बच्चों को मुझसे मिलने से भी मना कर दिया था।"

"पर वह तो अब क़ैद है।"

"मैं इसमें क्या कर सकती हूँ। तुमने मेरी मिलने की इच्छा की पूर्ति तब तक नहीं की जब तक वहाँ से स्वीकृति नहीं आ गई।"

"मैंने आपके पत्र के साथ यह बिल मिस्टर चोपड़ा के पास भेजा था,

उसने लिखा है कि हम लोग तुम से बातचीत करें।"

"पिछले बिल के विषय में मैं कहां से दूं, मैं नहीं जानती। यदि भविष्य में वे आपको इनका खर्चा नहीं दे सकते तो मैं सोचूंगी कि मैं दे सकती हूं या नहीं। यदि नहीं दे सकूंगी तो बच्चों को आपके स्कूल से उठा लूंगी।"

"पिछले व्यय के लिये हम क्या करें?"

"आप आजतक मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं मानते थे। इस कारण मैं आज तक के बिल देने का उत्तरदायित्व नहीं मानती।"

प्रिन्सिपल इस युक्ति से निरुत्तर हो गया। इस पर उसने कहा, "जब हमको स्कूल का शुल्क और भोजनादि का व्यय नहीं मिला, तब हम चाहते तो बच्चों को धक्के मारकर सड़क पर निकाल देते। परन्तु बड़े माता-पिता के बच्चे निःसहाय कहां जायें, हम नहीं जानते थे। दया के भाव से हमने उनको चार महीने से निःशुल्क रखा हुआ है। आपके बच्चे हैं। आपको अब इनका उत्तरदायित्व अपने सिर पर लेना चाहिये।"

"मैं इस सब बात को समझती हूं। यह भी समझती हूं कि आपने उस समय कितना क्रूर व्यवहार अपनाया था, परन्तु मैं तो उस बात को छोड़ती हूं। कठिनाई यह है कि मैं नहीं जानती कि मेरे पास इस महंगी शिक्षा के देने को पैसा होगा या नहीं। मैं अपनी परिस्थिति का अनुमान एक-दो दिन में लगाकर आपसे बात-चीत करूँगी।"

२

ऐमिली के लिये यह एक और समस्या उत्पन्न होगई थी। वह बच्चों को स्कूल में रखे तो चार सौ रुपये मासिक के लगभग व्यय होता था। घर ले जाये तो होटल में इतना भोजन पर ही व्यय हो जायेगा। इस अवस्था में उसको घर बनाना पड़ेगा। कोई मकान रहने योग्य लेना होगा। वह अपनी इस और अनेक अन्य कठिनाइयों का कटु अनुभव मन

में कर रही थी और अभी तक इनके सुलझाने का उपाय समझ नहीं पाई थी।

वहाँ से चल वह मिस्टर चोपड़ा से भेंट करने जेल में जा पहुँची। ऐमिली मिस्टर चोपड़ा को देख चकित रह गई। वह बहुत ही दुर्बल हो गया था और उसकी मानसिक अवस्था में भारी अन्तर पड़ गया था। मिस्टर चोपड़ा आया तो बिना बोले सामने कुर्सी पर बैठ गया। ऐमिली ने बात आरम्भ कर दी, "आपका स्वास्थ्य कैसा है ?"

"छोड़ो इस बात को। इस दिखावे की बात से कुछ लाभ नहीं। मिस्टर सूरजमोहन मुझको कल मिला था और कह रहा था कि तुम मिस्टर नार्टन की मेरे विरुद्ध सहायता कर रही हो।"

"मैं समझती थी कि आपके पाप का घड़ा भर गया है और अब डूबे बिना नहीं रहेगा। जो कुछ आपने मेरे साथ किया है उसका फल यही होना चाहिये था कि आपकी डूबती नौका को शीघ्र डूबने में सहायता देती, परन्तु......"

ऐमिली चुप हो गम्भीर विचार में पड़ गई। जब कितनी ही देर तक वह नहीं बोली तो चोपड़ा ने पूछा, "परन्तु क्या ? कहो न। रुक क्यों गई हो ?"

"मैं सोच रही थी कि वह पवित्र नाम आपके सामने लूँ भी या नहीं। अब सुनो, शान्ता देवी की यह इच्छा है कि मैं आपको छुड़ाने में सहायता दूँ। मुझको मिस्टर नार्टन ने बताया है कि वह कई बार उसके पास भी जाकर दया की प्रार्थना कर चुकी है। उस देवी को अभी भी विश्वास है कि आपने हत्यायें नहीं कीं।"

"इसके साथ आपका पुत्र सोमनाथ रो-रो कर मुझको कह रहा था, कि मैं आपको बचाऊँ। इस कारण मैं अपने दृढ़ संकल्प से जिसको लेकर मैं जनेवा से यहाँ आई थी, बदल रही हूं।"

"पर तुम क्या कर सकोगी ?"

"यदि आप मुझको अपनी पूर्ण कथा, सत्य-सत्य बता दें और बता

दें कि किसने हत्या की है, तो मैं आपको बचाने की योजना बना सकती हूँ।"

"और यदि तुमने मुझसे भेद लेकर मुझको ही फंसा दिया तो ?"

"यदि मुझ पर विश्वास नहीं तो मत बताइये। मैं बिना जाने जो कुछ कर सकूँगी, करूँगी।"

"मुझको विचारने का अवसर दो।"

"हाँ! कहिये तो कल-परसों फिर आऊँ ?"

"आना। मैं सोच रखूंगा। एक बात बता देना चाहता हूँ कि हत्यायें मैंने नहीं कीं। अभी और कुछ नहीं बताऊँगा।"

"अच्छी बात है। मैं फिर कल आऊँगी। एक बात और है, बच्चों के लिये स्कूल की फीस का लगभग पन्द्रह सौ रुपया हो गया है। वह मैं कहाँ से दूँ ?"

"मैं जब कैद हुआ था, मेरे पास नक़द बीस हज़ार रुपया था और अब मैंने अपनी पचास हज़ार की पालसी पेड-अप करवा ली है। वह ग्यारह हज़ार की पेड़-अप हुई है। उस पर सात हज़ार का कर्ज़ा लिया जा सकेगा। सब मिल कर सत्ताईस हज़ार रुपया हुआ। सूरजमोहन से पूछ लेना, कितना उसके पास शेष बचा है। मुकद्दमा तो अभी सेशन कोर्ट में चलेगा। फिर हाईकोर्ट में और फिर मेरा बस चला तो प्रिवि-कौन्सिल में भी। इस सब के लिये सत्ताईस हज़ार कुछ भी नहीं।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि बच्चों की शिक्षा बंद करनी पड़ेगी।"

"मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"ठीक है। मैं यह भी निपट लूंगी। बच्चों को वहाँ से निकाल लेना पड़ेगा। शहर के भीतर कोई मकान लेना पड़ेगा और किसी न किसी प्रकार निर्वाह करना पड़ेगा।"

यह भेंट मिस्टर चोपड़ा के मन में विपरीत प्रभाव करने वाली सिद्ध हुई। उसको सन्देह हो गया कि उसका भेद लेकर उस ही के विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी। अगले दिन उसने सूरजमोहन से ऐमिली की

बात बताई तो सूरजमोहन ने भी कहा, "वह क्या कह सकती है? न तो वह वकील है, न ही धनवान्, आखिर वह किस प्रकार सहायता कर सकती है? जब तक यह न बताये तब तक वास्तविक भेद नहीं बताना चाहिये।"

मिस्टर चोपड़ा इससे सतर्क हो गया और अगले दिन जब ऐमिली आई तो चोपड़ा ने कह दिया, "मैं केवल इतना ही बता सकता हूँ कि हत्यायें मैंने नहीं कीं।"

"इतना तो मुझको पहले भी मालूम था।" ऐमिली ने क्रोध में दांत पीसते हुए कहा। इस समय भी इस पुरुष को अपनी स्त्री पर अविश्वास करते देख वह अति दुःख से अपने होंठों को चबाती हुई खड़ी रह गई।

उसने केवल यही कहा, "इस पर भी जो मेरे वश में है सो करूंगी। अपने बच्चों को इस लांछन से बचाने के लिये कि वे किसी हत्यारे की सन्तान हैं, मैं भरसक यत्न करूँगी कि आप छूट जायें।"

"अच्छा, अब मैं चलती हूँ। पुनः हाईकोर्ट में दर्शन होंगे।" अगले दिन उसने बाँसमंडी अनारकली में एक मकान ले लिया। बच्चों को स्कूल से उठा लिया और उनका पिछला खर्चा जो बारह सौ रुपये के लगभग बनता था स्कूल वालों को दे दिया।

३

प्रेमनाथ के लाहौर आ जाने से जो प्रसन्नता उसकी माता को हुई उसका पारावार नहीं था। सबसे विस्मय-कारक बात मिली का साथ होना था। मिली डी० ला० म्यूरी, प्रेमनाथ की माँ के मकान में ठहरी थी। यद्यपि उसको लाहौर का रहन-सहन और प्रेमनाथ की आर्थिक व्यवस्था भली भाँति विदित थी तो भी फ्रांस के सामने इनकी अवस्था इतनी हीन थी कि कुछ दिन तक तो वह अचम्भे में अपनी वर्तमान और भावी अवस्था पर विचार करती रही।

प्रेमनाथ को लाहौर आकर पता चला कि इन्द्रा का विवाह हो चुका है। इससे उसको हार्दिक प्रसन्नता हुई। मिली का उसने माँ को केवल मात्र यह परिचय दिया था, "माँ, यह मेरी परिचित् लड़की है। बहुत ही नेक और समझदार है। भारतवर्ष में आई है। वहाँ इसने मम्मा की खोज में और टहल-सेवा में बहुत ही सहायता की थी।"

प्रेमनाथ ने अपना विचार विवाह करने का अभी नहीं बताया। वह समझता था कि मिली को कुछ दिन वहाँ रहकर उनके घर की बातों को जानने और समझने का अवसर मिलना चाहिये। पीछे विवाह की बात होगी। मिली प्रेम की माँ के साथ सोने लगी।

मिली को पहले तो हिन्दुस्तानी जीवन-स्तर और फिर वहाँ के रहने का ढंग कुछ विचित्र प्रतीत हुआ। साथ वह यह देखकर चकित रह गई कि हिन्दुस्तानी लड़कियाँ और औरतें घर से बाहर का कोई काम नहीं करतीं। यहाँ का पहरावा और भोजन भी उसको कुछ पसन्द नहीं आया। इन सब बातों के कारण वह गम्भीर विचार में पड़ चुप रह गई।

प्रेमनाथ की माँ के घर का काम इतना संक्षिप्त था कि सब काम मिली के प्रातः उठने से पहले ही हो चुका होता था। जब मिली आँखें मलती हुई उठती थी, घर की सफाई और प्रातः का अल्पाहार बनकर तैयार हो जाता था।

जब उसने प्रेमनाथ के साथ हिन्दुस्तान आने का निश्चय किया था तब से ही उसने हिन्दुस्तानी सीखनी आरम्भ कर दी थी और अभी तक प्रेमनाथ से एक घंटा नित्य सीख रही थी। इस कारण अब वह कुछ-कुछ बातें माता जी से कर सकती थी। एक दिन उसने प्रातः उठकर खाटपर आँखें मलते हुए कहा, "माता जी! मुझको प्रातः उठा लेतीं तो मैं भी काम करती।"

"क्या करती बेटी?"

"सफाई।"

"राम ! राम ! तुम हमारी मेहमान हो। तुमसे हम ऐसा काम नहीं करा सकते।"

"पर प्रेम की बहू से तो कराते न ?"

"उसकी बात दूसरी है। वह घर की मालकिन होती।"

"बहुत बड़ी पदवी आप दे देंगी ?"

"हाँ, और उत्तरदायित्व भी। अपने बेटे की जान उसके हाथ सौंप दूंगी।"

"इतना बड़ा उत्तरदायित्व तो किसी बहुत ही भाग्शाली लड़की को मिलेगा।"

"पर बेटी, हम बहुत निर्धन भी हैं। हमारे निर्वाह का अभी कोई पक्का प्रबन्ध नहीं है। प्रेम एक दुकान खोलने का विचार कर रहा है। तब लोग समझेंगे कि हमारे घर का भी कोई व्यवसाय है।"

"तो अब फौज की नौकरी नहीं करनी ?"

"वह तो छूट चुकी है। युद्ध समाप्त हुए एक वर्ष होने जा रहा है। हिन्दुस्तान में फौजें तोड़ी जा रही हैं। जो अधसिखी थीं और जिनने रण-भूमि नहीं देखी, वे तोड़ी जा चुकी हैं।"

"आपके निर्वाह का स्रोत क्या है ?"

"कराची पोर्ट ट्रस्ट के कुछ हिस्से खरीदे हुए हैं। उनकी आय से निर्वाह होता है।"

"क्या हम कुछ काम नहीं कर सकते ?"

"करते तो हैं। घर का सब काम मैं करती हूं। जिससे प्रेम को बाहर का काम करने का अवकाश रहे।"

"परन्तु इससे तो समय व्यतीत नहीं होता। कुछ ऐसा काम करना चाहिए जिससे कुछ धनोपार्जन भी हो।"

"अच्छी बात है।"

अगले दिन पांच रुपये व्यय कर प्रेम की मां एक चर्खा और आठ आने की रुई खरीद लाई। वह स्वयं सूत कातने लगी। मिलों के लिये

यह एक नवीन वस्तु थी। उसने बच्चों की किताबों में बूढ़ी स्त्रियों के सूत कातने की कहानी पढ़ी थी। परन्तु उसने इस यन्त्र को कभी देखा व छुआ तक नहीं था। प्रेम की माँ पंजाब की स्त्रियों की भाँति अच्छा बारीक सूत कातना जानती थी। उसने लगभग एक घंटा भर काता और उस काल में दो गुच्छों भर सूत कातकर रख दिया।

मिली ने भी चलाने का यत्न किया। उसने अनुभव किया कि यह काम बहुत अभ्यास रखता है। इस पर भी प्रेम की माता को यह कार्य सुगमता से करते देख वह स्वयं भी प्रयत्न करती रही। पहले दिन तो रूई खराब करने और तकली को टेढ़ा कर देने के अतिरिक्त वह कुछ नहीं कर सकी। अपने काम का फल खराब हुई रूई और खड़-खड़ करते तकले को देख वह परेशान हो रही थी कि प्रेम की माँ रामायण का पाठ समाप्त कर वहाँ आई और उसको इस अवस्था में देख हँस पड़ी, "क्या हुआ है बेटी ?"

"देखिये तो क्या हो गया है, माँ जी !" उसने चर्खा घुमाकर दिखाया।

प्रेम की माँ हँस पड़ी। उसने कहा, "कोई भी कार्य बिना तपस्या के सिद्ध नहीं होता। धैर्य से करती जाओ। निश्चय कर सकोगी।"

"वह तो ठीक है। पर इसका क्या होगा ?" उसने टेढ़े हुए तकले की ओर संकेत कर पूछा।

"यह ठीक हो जावेगा।"

प्रेम की माँ ने तकले को निकाला और सिल के ऊपर रखकर एक साफ पत्थर से रगड़कर सीधा कर दिया। पंजाब में स्त्रियाँ इस साधारण परन्तु बहुत ही आवश्यक क्रिया को जानती हैं। पाँच मिनट में तकला सीधा कर चर्खे में चढ़ा और थोड़ा सूत कात तकले की परीक्षा कर मिली को पुनः बिगाड़ने के लिये दे दिया।

प्रेमनाथ माँ और मिली की परस्पर बातचीत सुना करता था।

आज मिली को चर्खे के साथ जुता देख हँस पड़ा, "यह क्या हो रहा है मिली ?"

"यह चाहती थी कि धन कमानेवाला काम किया जाये ! हम जैसे साधनहीन मनुष्यों के लिये यह काम ही उपलब्ध है।" माँ ने कहा।

"इससे क्या मिलेगा ?"

"यदि एक आदमी दो घंटा नित्य इसको काता करे तो अपने लिये आवश्यक कपड़ों का सूत तो कात सकता है।"

"लाभ कितना होगा ?"

"आधी कीमत पर कपड़ा मिल सकेगा।"

"यह तो कुछ न हुआ।"

"जिस योग्य हूँ, उतना ही तो कमा सकती हूँ ?"

"पर माँ जी ! मैं तो इसके लिये कह रहा हूँ। मारसेल्ज़ में यह पचास रुपये के लगभग एक सप्ताह में कमा लेती थी।"

"तो जब मारसेल्ज़ जायेगी, उतना फिर कमा लेगी। यहां तो भले घर की लड़कियाँ दुकानों पर काम नहीं करतीं।"

"पर इसने वहां जाना है क्या ? कब जाना है ?"

माँ ने मिली की ओर, प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा, तो मिली ने पूनी में से तार निकालते हुए कहा, "मेरे पास वापिस जाने के लिये समय नहीं है।" इतना कहते-कहते तार टूट गया। इस पर उल्हाने की मुद्रा बनाकर उसने प्रेमनाथ की ओर देखा और कहा, "देखिये न ! मारसेल्ज़ जाने के नाम से तार टूट गई है। वहाँ जाने की बात बनती दिखाई नहीं देती।"

प्रेमनाथ बात को इस प्रश्न पर लाना चाहता था। इससे वह माँ और मिली के सामने चटाई पर बैठ गया और बोला, "वहाँ जाने का समय नहीं। चर्खा कातने से तो जीवन भर अवकाश नहीं मिलेगा।"

"तो न मिले ! मुझको वहाँ जाने के लिये कोई विवश कर रहा है क्या ?"

अब प्रेम की माँ ने बात स्पष्ट करने के लिये कहा, "देखो बेटी, इस देश में तुम्हारी आयु की लड़कियों का विवाह हो जाता है। यदि तुमको अपने देश नहीं जाना तो तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करना पड़ेगा।"

"तो कर दीजिये न, माँ जी!"

"पर तुम्हारी जात-बिरादरी का लड़का ढूँढ़ने में यहाँ कठिनाई होगी।"

"क्यों? मुझको तो यहाँ अपनी जात-बिरादरी के लोग बहुत से दिखाई देते हैं।"

"मैं घर से बाहर कम निकलती हूँ। इस कारण देख नहीं पाती और फिर तुम लोग अपना वर आप ढूंढ़ लेती हो।"

"मैं यही सोच रही थी कि मेरी इस धृष्टता को आप किस दृष्टि से देखेंगी।"

"अपने-अपने देश का रिवाज़ है बेटी! इन्द्रा के लिये वर ढूँढ़ा तो उसने विवाह के पीछे ही उसका मुंह देखा था। अब चिट्ठी-पत्री से पता चलता है कि दोनों एक दूसरे से प्रसन्न हैं। तुम्हारे देश में तुम लोग जैसा करती हो वैसा यहाँ भी कर सकती हो। बताओ, कोई लड़का है तुम्हारी दृष्टि में?"

"तो मैं उससे कहूँगी कि आपसे मिलकर मेरे विषय में बात करले। अब यहाँ मेरी माँ तो आप ही हैं न?"

"हाँ! मैं एक और कन्यादान कर बहुत पुण्य की भागी बनूंगी।"

अगले दिन मिली ने प्रेमनाथ के साथ माल पर घूमते हुए कहा, "कल माता जी मेरी बात समझ नहीं पायीं।"

"तुमने जो कहा था सो तो वह समझ गई थीं। और जो तुमने नहीं कहा था सो कैसे समझ सकती थीं?"

"मेरे कहने का अर्थ निकल सकता था।"

"किसी दूसरे की बेटी के वर के विषय में बिना कहे कैसे कोई अनु-

मान लगा सकता है।"

"तो मैं अभी आपकी मां की वेटी नहीं बनी क्या?"

"यही तो कठिनाई है। माँ की वेटी विवाह के पीछे बनोगी।"

"तो विवाह कर दीजिये, जिससे वे माँ जी का अधिकार पा जावें।"

"यही तो वे कहती हैं। तुमने वर को उनके पास भेजने को कहा है न?"

"और वर को ही तो कह रही हूँ। देखिये, मैंने अपना निर्णय जनेवा में ही दे दिया था।"

"परन्तु तुमने वहाँ हमारी निर्धनता को देखा नहीं था।"

"मैं तो इसको निर्धनता नहीं मानती। इसको सादगी कहते हैं और यह मुझको पसन्द है।"

"तुम यहाँ आने के पीछे कई दिन तक चिन्तित प्रतीत होती रही हो। इससे मैंने समझा था कि शायद तुम्हारे विचारों में परिवर्तन हो रहा है।"

"परिवर्तन तो प्रतिदिन होते रहते हैं। परन्तु मेरे मन के परिवर्तन तो मुझको आपके समीप ही ले जा रहे हैं। आपकी माता जी का सौम्य व्यवहार, धर्म और भगवान में निष्ठा, सत्याचरण और सादगी निःसन्देह अति प्रिय प्रतीत हुई हैं।"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि मैं माँ से कहूँ?"

"मुझसे कहलाते आपको लज्जा नहीं लगेगी?"

"ठीक है। मैं समय पाकर बात करूँगा।"

४

ऐमिली ने मकान लिया और बच्चों को उसमें बुला लिया। इस प्रकार एक कार्य से निवृत्त हो वह मुकद्दमे के विषय में सोचने लगी। वह सूरजमोहन के पास गई तो उसने बात करनी पसन्द नहीं की। उसने जब

यह पूछा, "मिस्टर चोपड़ा के छूटने की सम्भावना क्या है," तो सूरज-मोहन बोला—

"कुछ नहीं ! परिस्थिति ऐसी है कि मिस्टर चोपड़ा के अतिरिक्त कोई दूसरा हत्यारा प्रतीत ही नहीं होता। मिस्टर चोपड़ा दण्ड से बच नहीं सकते। हाईकोर्ट की बेंच ने मुकद्दमे के विषय में अपनी सम्मति लिखते हुए मिस्टर चोपड़ा के विरुद्ध इतना लिखा है कि अब उसका बच निकलना असम्भव है।"

ऐमिली वहाँ से निराश लौटी। उसे एक बात सूझी। उसने एक सागरचन्द नाम के साधारण बैरिस्टर से कहा कि वह अपने को शच्यूमैन का वकील घोषित कर उससे भेंट करे और उससे रहस्य प्रतीत करने का यत्न करे।

शच्यूमैन परदेस में किसी को अपना सहायक नहीं पाता था। इस कारण जब जेल के दारोगा ने उसको बुलाकर कहा कि उसका वकील उससे बातचीत करने आया है, तो वह अवाक् मुख दारोगा का मुख देखता रह गया। मुलाकात के कमरे में, एक गंदमी रंग के सूट-बूट पहने, दुबले-पतले आदमी को देख पूछने लगा, "आप मेरे वकील हैं ?"

"हाँ।"

"किसने भेजा है आपको।"

"मिसेज़ चोपड़ा ने।"

"मुझको उस पर विश्वास नहीं।"

"यह स्वाभाविक है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आप मुझसे सत्यता का व्यवहार करेंगे तो मैं आपको इन हत्याओं से बचाने का यत्न करूँगा। जहाँ तक आपके विरुद्ध मिसेज़ चोपड़ा का आरोप है, वह नहीं लगाया जायेगा।"

"मुझको इसका विश्वास कैसे होगा ?"

"मिसेज़ चोपड़ा के बयान अदालत में होने वाले हैं। वह आपके विरुद्ध कुछ नहीं कहेंगी। परन्तु यह तब हो सकेगा यदि आप सब भेद,

हत्याओं के विषय में, बता देंगे।"

"आपको यह किसने बताया है कि मैं हत्याओं के विषय में कुछ जानता हूँ?"

"मिस्टर चोपड़ा ने नये बयान दिये हैं, जिनमें उन्होंने सब दोष आप पर फेंकने का यत्न किया है। साथ ही चौकीदार ने आपको पहचान लिया है और उसके भी दुबारा बयान होनेवाले हैं?"

"मुझको इसका विश्वास नहीं होता।"

"मिसेज़ चोपड़ा का यह कहना है कि आपके सैनिटोरियम की कथा प्रेमनाथ, मिली डी-ला-म्यूरी और वह स्वयं बताकर एक ओर, और चोपड़ा दूसरी ओर यह बयान देकर कि तुमने पिस्तौल उसकी दराज से निकाली और दोनों औरतों पर चलाई और फिर चपरासी को डराने के लिये बरामदे में गोली चलाई, तुमको फाँसी दिलवा देंगे। यदि यहाँ की बात तुम बता दो तो योरुप की बात मिसेज़ चोपड़ा नहीं कहेंगी।"

"बात यह है कि मिस्टर नार्टन के सब प्रकार का यत्न करने पर भी मुकद्दमा नहीं बना। हम लोग आशा करते हैं कि हम सब छूट जायेंगे। मैं यदि अपने साथियों के साथ दगा करूं और फिर बचूं भी नहीं तो बात और भी बिगड़ जायेगी।"

"यदि हम तुमको सरकारी गवाह बनवा दें तो।"

"पुलिस तो मुकद्दमे में रुचि प्रकट नहीं कर रही। फिर सरकारी गवाह की बात ही नहीं बन सकती।"

वकील को यह बात समझ में आई कि दोनों अभियुक्त एक दूसरे की राय से काम कर रहे हैं। इस राय में उनका वकील भी सम्मिलित है। इससे यह सिद्ध होता है कि वकील भी हत्याओं के षड्यन्त्र में सम्मिलित है। वह मिस्टर चोपड़ा का मित्र था। जूआ खेलने और शराब पीने में उसका साथी था। मनमोहिनी के पति का भी मित्र है। इस कारण इन अभियुक्तों को छोड़ अन्य लोगों से भेद जानने का यत्न करना चाहिये।

इस विचार से उसने मिस्टर शच्यूमॅन से कहा, "मैं इस मुकद्दमे में

वास्तविक दोषी को पकड़वाने में रुचि रखता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि हत्यारा आप दोनों में से कोई नहीं है। परन्तु यदि मैं सफल नहीं हुआ तो आप फाँसी पर लटकेंगे और मिस्टर चोपड़ा जीवन भर की कैद भोगेंगे। मिसेज चोपड़ा यह चाहती थीं कि यदि वास्तविक हत्यारे का पता चल जाये तो आपको बचाने का यत्न किया जा सकता है।"

शच्यूमैन नहीं माना। इस पर भी मिस्टर चोपड़ा और शच्यूमैन की बातों से यह पता चल गया था कि असली हत्यारे को दोनों जानते हैं और वह उनके विचार में बच जावेगा।

तीन महीने पश्चात् मुकद्दमा सैशन कोर्ट में पुनः आरम्भ हुआ। शच्यूमैन के बयान हुए, "बर्लिन का पी०एच०डी० हूँ। मैंने साईकोलोजी का बहुत अध्ययन किया है। मैं बम्बई में था जब मुझको मिस्टर चोपड़ा की चिट्ठी मिली कि उनकी स्त्री का मस्तिष्क खराब हो गया है। उसका इलाज करने के लिए मुझको कहा गया। मैंने इनको स्विटज़रलैंड की जलवायु में भेजने का आग्रह किया। वे मान गये और मिसेज चोपड़ा वहाँ भेज दी गईं। वहाँ मैंने इनको एक हाऊसकीपर की देखरेख में रखा। वहाँ इनकी अवस्था कुछ अधिक बिगड़ गई थी। पीछे मुझको पकड़ लिया गया। मैं नहीं जानता क्यों?"

इस पर मिस्टर नार्टन से प्रश्नोत्तर हुए। इसमें उसने बताया कि अपनी स्त्री को भेजने में मिस्टर चोपड़ा का बहुत खर्चा हो गया था। इस कारण उसको दस हज़ार रुपया मिसेज चोपड़ा को दस वर्ष तक रखने के लिये देने में देर हुई और वह टिका रहा। मिसेज चोपड़ा का प्रोग्राम इटली के कई नगरों को देखते हुए जाने का था। इस कारण मुझको यहाँ ठहरकर रुपया प्राप्त करने के लिये समय था।"

"तुमको रुपया कब मिला?"

"मुझको रुपया मेरे यहाँ से जाने के दो दिन पहले मिल चुका था। मेरे जहाज़ के जाने में समय था। इस कारण मैं यहीं ठहरा रहा।"

"तो आपने हिन्दुस्तान के कौन-कौन से नगर देखे हैं?"

"बम्बई और लाहौर।"

"तो इतनी दूर आप केवल ये दोनों नगर देखने आये थे ?"

"मैं तो केवल बम्बई देखकर ही चला जाने वाला था। मिस्टर चोपड़ा का पत्र मिला तो मैं और ठहर गया और लाहौर देखने चला आया।"

मिस्टर नार्टन के प्रश्न पूछने के पश्चात् मिस्टर सागरचन्द ने शच्यूमैन से प्रश्न पूछने की स्वीकृति प्राप्त कर ली। उसने पूछा, "हत्या के दिन आपको एक चैक दस सहस्र रुपए का देने के लिए एक आदमी आया था। वह कौन था ?"

"मैं उसको नहीं जानता।"

"आपने वह चैक वापिस क्यों कर दिया था ?"

"मैंने वापिस नहीं किया था। इस आदमी ने मुझ से चैक पर हस्ताक्षर ले लिये थे और कहा था कि नकद रुपया लाकर वह देगा।"

"आपने दस सहस्र रुपये के लिये अनजान आदमी पर विश्वास कैसे किया ?"

शच्यूमैन घबरा गया। इस पर वकील ने पूछा, "अब आप बताइये कि वह आदमी कौन था।"

"मैंने उसको मिस्टर चोपड़ा के घर कई बार देखा था।"

"आप उसका नाम जानते हैं ? बता दीजिये।"

"मैं नाम नहीं जानता।"

"देखिये, आपने उस चैक पर लिखा था, "प्लीज़ पे दी अमाउंट टू........।"

"मुझको स्मरण नहीं।"

"यह जो रुपया आपको दिया गया था, यह किस बात का था। जब आप कह चुके हैं कि आपको दो दिन पूर्व रुपया मिल चुका था ?"

इससे शच्यूमैन के माथे पर पसीने की बूँदें आने लगीं। इस पर बैरिस्टर साहब ने कहा, "क्या यह रुपया इन हत्याओं के करने के लिए था ?"

"मत बताओ। कानून तो खून का बदला खून से लेगा। अब वह
। हो या कोई दूसरा, मुझको इससे क्या!"

५

शान्ता नित्य ऐमिली से मिलकर मुकद्दमे की प्रगति का पता लेती
ती थी। जिस दिन से यह चैक का मामला हुआ उसी दिन शान्ता को
ा चल गया। ऐमिली भी इस बात से परेशान प्रतीत होती था। शान्ता
पूछा, "अब क्या होगा?"

"बात यह है कि मैं उनसे कई बार कह चुकी हूँ कि असली हत्यारे
। पता बता दें तो फिर नार्टन इत्यादि को कहकर मुकद्दमे की गतिविधि
र्ली जा सकती है। परन्तु उनकी बुद्धि में यह बात समाती ही नहीं।
यही कहते हैं कि यदि उन्होंने असली अपराधी का नाम बता दिया तो
न उनको भली-भाँति फँसा सकेंगे। वे मुझ पर अथवा किसी पर भी
श्वास नहीं करते।"

शान्ता ने कहा, "क्या था और क्या हो गया? कहाँ से चले और
हाँ पहुंच गये हैं। देखो बहिन! हमको किसी दूसरे के कामों से अपना
र्तव्य-निर्माण नहीं करना। हमको तो अपना कर्तव्य अपने विचार से
नाना है।"

"ठीक है। पर मैं सोचती हूँ कि अपने साधारण से साधनों को इस
र्थ के प्रयास पर क्यों व्यय कर दूँ। सोम ने इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा
है, वह पास हो जावेगा। उसको भी किसी काम पर लगाने के लिये
ाधनों की आवश्यकता होगी।"

"तो वह कालेज में पढ़ेगा नहीं?"

"क्या लाभ होगा? एक तो उसको उच्चशिक्षा देने के लिये धन
हीं है, फिर वह शिक्षा प्राप्त कर किसी सरकारी उच्च पद पर नियुक्त
हीं हो सकेगा। उसके पिता की करतूतों की परछाईं उसके जीवन
र मँडराती रहेगी। मैंने तो एक बात विचार की है। सोम के परीक्षा

पास करने पर उसको और प्रेम को साझेदारी में पुस्तकों की दुकान करवा दूँ। प्रेम ने मुझसे कहा है कि वह मोहनलाल रोड पर दुकान करना चाहता है। मैं चाहती हूँ कि अनारकली बाजार में दुकान करवा दी जाये।"

शान्ता चुप रही। इस पर ऐमिली ने पूछा, "प्रेम का विवाह कब कर रही हो?"

"इस प्रकार विवाह कैसे होगा? कौन लड़की देगा हमको?"

"क्यों, प्रेम ने कुछ कहा नहीं?"

"क्या नहीं कहा?"

"उसको तो बीवी मिल गई है। बहिन! तुम भी बिल्कुल भोली हो। देख नहीं रही कि सात हजार मील से चलकर कोई लड़की ऐसे थोड़े ही आई है।"

"तो आपका मतलब मिली से है। उसने अभी उस दिन कहा था कि वह एक लड़के से विवाह करना चाहती है और उस लड़के से कहेगी कि मुझसे मिलकर निश्चय करे।"

"तो वह लड़का मिला नहीं तुमको?"

"अभी तक तो नहीं मिला।"

ऐमिली हँस पड़ी। उसने कहा, "वह लड़की आपके सामने पहेली डाल गई है और तुम उसकी पहेली को समझ नहीं सकी।"

"तो तुम्हारा अभिप्राय है कि वह प्रेम से विवाह करना चाहती है?"

"हाँ, और प्रेम उससे करना चाहता है।"

शान्ता का मुख प्रफुल्लित हो उठा। उसने कहा, "लड़की तो अच्छी है। स्वभाव की अति शील और सभ्यता से बात करती है। बहुत मेहनत करती है। आजकल चर्खा कातने का अभ्यास करती रहती है। पर क्या उन्होंने तुमसे यह सब कुछ कहा है?"

"हाँ! वहाँ से आते समय यह सब कुछ निश्चय हो चुका था।"

"तो मेरा बेटा मुझसे हँसी कर रहा था। आज जाकर उसके कान

खीचूंगी।"

सोम, सरस्वती और राम बाजार से घूमकर आये तो शान्ता के चारों ओर बैठकर उसे तंग करने लगे। कहने लगे, "मौसी! भजन सुनाओ न आज।"

शान्ता मीरा और कबीर के भजन गाया करती थी। एक बार वे उसके घर गये थे और वहां उसको भजन गाते सुन आये थे। सोम ने कहा, "मौसी! गाओ न।"

"बेटा! भजन तो मैं अपने घर ही गाती हूँ। वहां चलो, सुनाऊँगी।"

इस पर राम गर्दन से लटककर बोला, "यहाँ क्यों नहीं?"

"तुम्हारी मम्मी पसन्द नहीं करेंगी।"

"मम्मी!" अब सरस्वती ने उसके गले में बाँह डालकर कहा, "मम्मी, तुम कहो न, ये बहुत अच्छा गाती हैं।"

ऐमिली ने बात टालते हुए कहा, "देखो, ये अपने घर जा रही हैं। इनके साथ चले जाओ। वहां प्रेम भैया की सगाई की बात हो रही है। मिठाई भी मिलेगी और भजन भी सुनना।"

"तब तो तुम भी वहाँ चलो।" सोम ने कहा, "तो तुम प्रेम भैया की सगाई पर नहीं चलोगी?"

ऐमिली हंस पड़ी। फिर कुछ सोचकर बोली "मैं पुष्प-मालायें और कुछ भेंट लेकर आती हूँ।"

विवश शान्ता और सोम आदि चल पड़े। जब मकान पर पहुँचे तो मिली और प्रेमी भी सायंकाल की सैर कर लौट रहे थे। शान्ता ने दरवाज़ा खोला तो वे भी आ पहुँचे। शान्ता ने कहा, "ऊपर आओ प्रेम! तुमको आज दंड देने आई हूँ। तुमने मुझसे धोखा किया है?"

"क्या दंड है मां!" प्रेम ने चिन्ता के भाव से मां की ओर देखकर पूछा। सोम इसका अर्थ न समझकर विस्मय से मौसी का मुख देखने लगा था।

सब ऊपर गये तो शान्ता ने कहा, "मिली! इधर आओ तो।"

मिली पास गई तो उसको अपने सामने चटाई पर बैठाया और प्रेम को सामने खड़ा कर कहा, "तुमको दंड तो पीछे दूंगी। तुमने इतने दिन तक जो मुझको उल्लू बनाया है। पहले देखो, ये सोम इत्यादि तुमसे मिठाई खाने आये हैं। बाजार से पांच रुपये की मिठाई ले आओ। देखो! जल्दी आना। देर की तो दंड दुगना हो जावेगा। जाओ जल्दी जाओ।"

प्रेम विस्मय से मुख देखता हुआ खड़ा रह गया। प्रेम की मां ने अपनी अंटी में से पांच रुपये का नोट निकालकर प्रेम को दिया और कहा, "बढ़िया मिठाई लाना। लाहौरी दरवाजे के बाहर से। जाओ न!"

"पर मां! क्या हो गया है आज। मुझको दंड मिलेगा और सोम को मिठाई?"

मिली हंस पड़ी और प्रेम समझ गया। वह मिठाई लेने भाग खड़ा हुआ। जब वह चला गया तो मां ने मिली के सिर पर हाथ फेरकर कहा, "चिरंजीवी होवो बेटी, मुझको पहले बताया क्यों नहीं? देखो सोम, ये हैं तुम्हारी भाभी।"

"मिली! यह भाभी हैं। ओ, तब तो मजा रहेगा। बरात लेकर कहीं जाना नहीं पड़ेगा।" अब सरस्वती ने मिली के गले में बांह डालकर उसकी ठुड्डी ऊपर उठाकर कहा, "भाभी, देखो तो हमारी ओर। देखो न! हमसे लड़ोगी तो नहीं?"

मिली ने जोर से आँखें मीच लीं। इस पर सब हंसने लगे। अब राम ने कहा, "मौसी, अब गाना सुनाओ।"

"हां, भगवान का धन्यवाद करना चाहिए न। तो सब बैठ जाओ। मैं गाती हूं। तुम भी मेरे पीछे-पीछे गाना।" सब मिली के चारों ओर बैठ गये। शान्ता ने अपने छैने निकाल लिये और उनको घंटी की भाँति बजाकर गाने लगी।

"प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो,
समदर्शी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो। प्रभु मेरे······
उसके साथ बच्चे भी गाने लगे—

"समदर्शी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो। प्रभु मेरे ·····"

इस प्रकार गाना चल रहा था। शान्ता साथ-साथ छैने वजाती थी और गाती थी। वच्चे भी तालियों से ताल दे-देकर गा रहे थे।

इस समय ऐमिली मिठाई और फूलों की मालायें लेकर आ गई। उसने शान्ता के पास बच्चों को बैठ गाते और तालियां वजाते देखा तो खिलखिलाकर हँस पड़ी। इससे सब गाना छोड़ उसकी ओर देखने लगे। उसने मिली को सबके बीच बैठे देख पूछा, "प्रेम कहां है?"

सोम ने उत्तर दिया, "भैया मिठाई लेने गये हैं।"

"मम्मी" सरस्वती ने कहा, "यह भाभी हैं।" उसने मिली के गले में बांहें डाल दीं।

"तुमको पसन्द है?"

"हां। मुझको बहुत प्यारी लगती है।"

६

प्रेमनाथ का विवाह मिली से हो गया। विवाह आर्य समाज के पुरोहित ने कराया और मिली का हिन्दुस्तानी नाम, बहुत विचारोपरांत, दमयन्ती रखा गया। विवाह के तुरन्त पीछे प्रेम और सोम के लिए कमर्शल बिल्डिग में एक दुकान का प्रबन्ध कर दिया गया, जिसमें पुस्तक-भण्डार खोल दिया गया।

सैशन कोर्ट में मुकद्दमे का निर्णय मिस्टर चोपड़ा और शच्यूमैन के विरुद्ध हुआ। निर्णय में यह कहा गया कि शच्यूमैन ने हत्या की और मिस्टर चोपड़ा ने कराई है। शच्यूमैन को फाँसी दिये जाने की आज्ञा हुई और चोपड़ा को आजन्म कैद।

इस समाचार से नगर में धूम मच गई। प्रायः लोग इस निर्णय से सन्तोष अनुभव करते थे। कोई बिरला ही ऐसा था जो मिस्टर चोपड़ा से सहानुभूति रखता था। शान्ता और ऐमिली पर इसका प्रभाव भिन्न-भिन्न हुआ। शान्ता का विचार था कि ऐमिली अथवा उसने स्वयं जो

भी प्रयत्न किया था, उसमें यद्यपि सफलता नहीं हुई तो भी करने योग्य था। वैसे वह समझती थी कि जो कुछ भी होता है वह भले के लिये ही होता है। इस कारण जिस समय निर्णय का पता चला, वह चुपचाप बैठी रह गई।

ऐमिली को न्यायालय का निर्णय सुन क्रोध चढ़ आया। वह न्यायालय पर क्रोध नहीं कर रही थी। उसका क्रोध मिस्टर चोपड़ा पर था। उसने अपने रहस्य में उसको भागीदार नहीं बनाया था।

निर्णय के पश्चात् वह उससे मिलने गई तो चोपड़ा ने अपने किये पर शोक प्रकट करने के स्थान पर ऐमिली को गाली देनी प्रारम्भ कर दी, "तुम जैसी बदकार औरत का मैं मुख नहीं देखना चाहता।"

"क्यों ?" ऐमिली ने यह गाली सुन आँखों में आँसू भरकर कहा, "मैंने क्या किया है इसमें ? आपने मुझ पर विश्वास नहीं किया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो कोई भी आपकी सहायता करता रहा है वह आपके विपरीत पड़ती रही है। वह चैक की बात आपकी सहायता कर सकती थी। यदि आप वह नाम बता देते जिसके नाम वह चैक ऐन्डोर्स किया गया था। आपने वह क्यों नहीं बताया ?

"उस चैक का इस घटना से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"तो आपके वकील को यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिये थी।"

"वह बदमाश का बच्चा सब रुपया खर्च कर गया है।"

"सूरजमोहन ?"

"हाँ।"

"और मेरा मन कहता है कि वही हत्यारा है।"

"नहीं ! यह बात नहीं। पर इससे अब क्या लाभ ?"

हाईकोर्ट में अपील की गई। इसमें कलकत्ता से मिस्टर दास, बैरिस्टर बुलाये गये। वह एक हज़ार रुपया रोज़ पर बहस करने आया। तीन दिन तक बहस हुई। इसके विपरीत मिस्टर नार्टन ने स्वयं हाईकोर्ट में बहस की।

हाईकोर्ट में बहस का कुछ परिणाम नहीं हुआ। दण्ड ज्यूं का त्यूं रहा। इसके पश्चात् प्रिवि कौंसिल में अपील की गई। वहाँ पर बहस और सिफारिश दोनों की गईं और इसका परिणाम यह हुआ कि प्रिवि-कौंसिल ने यह बात मान ली कि मिस्टर चोपड़ा दण्डनीय है परन्तु कानून का अभिप्राय केवल सात वर्ष कैद के दण्ड से पूर्ण हो जावेगा। जहाँ तक शच्यूमैन का सम्बन्ध था, उसको प्राणदण्ड बदलकर आजीवन कैद का दण्ड दे दिया गया।

बात यहाँ आकर टिक गई। सूरजमोहन ने हिसाब दिया। मुकद्दमे पर अड़तीस हज़ार रुपये व्यय हुए थे। ग्यारह हज़ार उसने अपने मित्रों से उधार लेकर व्यय किया था। इस समय समस्या बहुत स्पष्ट थी। प्रेम के पिता को अब उधार की चिन्ता की आवश्यकता नहीं थी। सात वर्ष तक के लिए वह कैद कर दिया गया था। शच्यूमैन को कालेपानी भेज दिया गया था।

अब शान्ता और ऐमिली इकट्ठी रहती थीं। शान्ता के बच्चे भली-भाँति जीवन में स्थिर हो चुके थे। ऐमिली के बच्चों में सोम ही दुकान पर बैठा था, सरस्वती और राम अभी तक स्कूल में पढ़ते थे। इस पर भी शान्ता अपनी पूर्ण शक्ति से घर को साफ-सुथरा रखती थी। इससे भी अधिक यह बात थी कि शान्ता और ऐमिली दोनों परस्पर बहिनों की भाँति रहती थीं। कभी भी एक दूसरे से ईर्ष्या और द्वेष का प्रश्न नहीं था।

७

इस घटना के छः वर्ष पीछे की बात है। अमरनाथ चोपड़ा लाहौर सैन्ट्रल जेल से छूटा तो उसके सब बाल सफेद हो चुके थे। मुख पर झुरियाँ पड़ चुकी थीं। आँखों की ज्योति क्षीण हो चुकी थी। कमर टेढ़ी और हाथों में कम्प वायु का प्रकोप हो गया था।

प्रेम और सोम मोटर लेकर पिता को लेने जा पहुँचे। मिस्टर चोपड़ा

जेल से निकला तो दोनों ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा, "आइये पिताजी, गाड़ी लाये हैं।"

"क्यों ?" मिस्टर चोपड़ा ने आश्चर्य से पूछा।

"आपको घर ले चलने के लिए।"

"वहाँ कौन-कौन हैं ?"

"सब हैं। सोमनाथ है, रामनाथ है, सोम का विवाह हो चुका है। रामनाथ की सगाई हो चुकी है।" प्रेम ने उत्तर दिया।

"तुम्हारी माता ?"

"दोनों माताएँ हैं। वे आतीं, परन्तु आपके छूटने से उनको इतनी खुशी हुई है कि वे आ नहीं सकीं।"

"सरस्वती कहाँ है ?"

"उसका विवाह हो गया है। वह बम्बई रहती है।"

यह सुन चोपड़ा खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने हँसने के पश्चात् कहा, "भाग जाओ तुम दोनों, मैंने उन दोनों औरतों को मारा था और तुमको भी मार डालूंगा।"

मिस्टर चोपड़ा की बात सुन और उसकी आँखों में अस्थिरता देख लड़कों को उसके बिगड़े मस्तिष्क का आभास हुआ। उन्होंने एक बार पुनः अपने पिता को चलने के लिए कहा, परन्तु जब वह उनको वास्तव में

धक्का दे घर से भाग खड़ा हुआ ।

बहुत कठिनाई से उसको पकड़कर वापिस लाया गया और बांध कर रखा गया। ज्यूं-ज्यूं उसकी चिकित्सा और सेवा-सुश्रूषा की गई त्यूं-त्यूं उसका उन्माद बढ़ता गया। कई बार उसने ऐमिली को घायल किया और एक बार समय पाकर तो उसने शान्ता का गला घोंट देना चाहा । यदि प्रेम समीप न होता तो एक और हत्या का भागी बन जाता ।

अन्त में यही उचित समझा गया कि मिस्टर चोपड़ा को पागलखाने में भर्ती करा दिया जाये ।